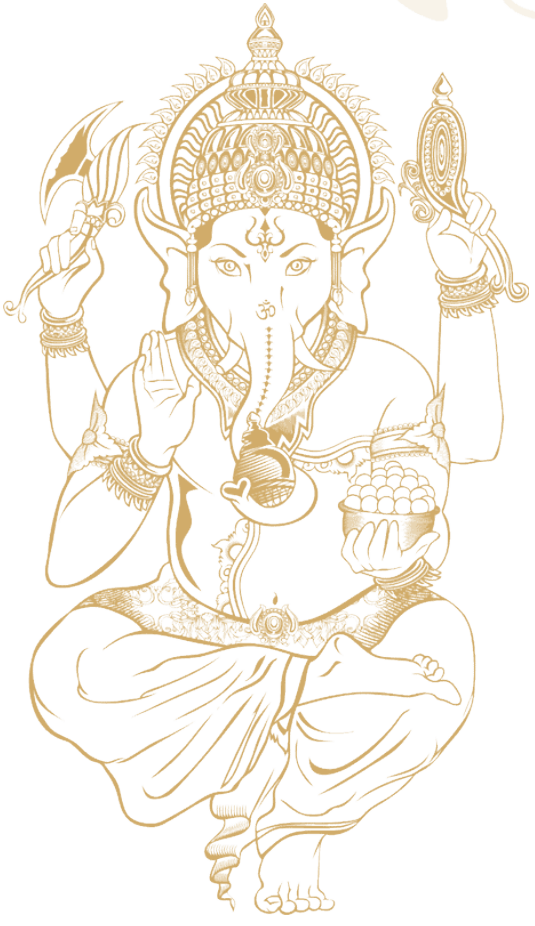

Deepti Matai

11 Jun 2011

12:30 PM

Mumbai

Model: Web-BhriguPatrika

Order No: 121147001

सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती हैं। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा ?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं है।

लिंग	स्त्रीलिंग
जन्म तिथि	**11/06/2011**
दिन	शनिवार
जन्म समय	**12:30:00 घंटे**
इष्ट	16:12:48 घटी
स्थान	**Mumbai**
राज्य	Maharashtra
देश	India

अक्षांश	18:58:00 उत्तर
रेखांश	72:50:00 पूर्व
मध्य रेखांश	82:30:00 पूर्व
स्थानिक संस्कार	-00:38:40 घंटे
ग्रीष्म संस्कार	00:00:00 घंटे
स्थानिक समय	11:51:20 घंटे
वेलान्तर	00:00:28 घंटे
साम्पातिक काल	05:08:26 घंटे
सूर्योदय	06:00:52 घंटे
सूर्यास्त	19:15:37 घंटे
दिनमान	13:14:44 घंटे
सूर्य स्थिति(अयन)	उत्तरायण
सूर्य स्थिति(गोल)	उत्तर
ऋतु	ग्रीष्म
सूर्य के अंश	26:01:21 वृष
लग्न के अंश	23:46:24 सिंह

अवकहड़ा चक्र

लग्न-लग्नाधिपति	सिंह - सूर्य
राशि-स्वामी	**कन्या - बुध**
नक्षत्र-चरण	**चित्रा - 1**
नक्षत्र स्वामी	मंगल
योग	वरियान
करण	गर
गण	राक्षस
योनि	व्याघ्र
नाड़ी	मध्य
वर्ण	वैश्य
वश्य	मानव
वर्ग	मूषक
युँजा	मध्य
हंसक	भूमि
जन्म नामाक्षर	पे-पैनी
पाया(राशि-नक्षत्र)	रजत - रजत
सूर्य राशि(पाश्चात्य)	मिथुन

पंचांग

दादा का नाम _____:
पिता का नाम _____:
माता का नाम _____:
जाति _____:
गोत्र _____:

कैलेंडर	वर्ष	मास	तिथि/प्रविष्टे
राष्ट्रीय	शक : 1933	ज्येष्ठ	21
पंजाबी	संवत : 2068	ज्येष्ठ	28
बंगाली	सन् : 1418	ज्येष्ठ	27
तमिल	संवत : 2068	वैकासी	28
केरल	कोल्लम : 1186	इदवम	28
नेपाली	संवत : 2068	ज्येष्ठ	28
चैत्रादि	संवत : 2068	ज्येष्ठ	शुक्ल 10
कार्तिकादि	संवत : 2068	ज्येष्ठ	शुक्ल 10

पंचांग

सूर्योदय कालीन तिथि _____: 10
तिथि समाप्ति काल _____: 13:33:55
जन्म तिथि _____: 10
सूर्योदय कालीन नक्षत्र _____: हस्त
नक्षत्र समाप्ति काल _____: 09:01:03 घंटे
जन्म योग _____: चित्रा
सूर्योदय कालीन योग _____: वरियान
योग समाप्ति काल _____: 25:50:36 घंटे
जन्म योग _____: वरियान
सूर्योदय कालीन करण _____: गर
करण समाप्ति काल _____: 13:33:55 घंटे
जन्म करण _____: गर
भयात _____: 08:42:21
भभोग _____: 55:27:00
भोग्य दशा काल _____: मंगल 5 वर्ष 10 मा 25 दि

घात चक्र

मास _____: भाद्रपद
तिथि _____: 5-10-15
दिन _____: शनिवार
नक्षत्र _____: श्रवण
योग _____: शुक्ल
करण _____: कौलव
प्रहर _____: 1
वर्ग _____: मार्जार
लग्न _____: मीन
सूर्य _____: मेष
चन्द्र _____: वृश्चिक
मंगल _____: वृष
बुध _____: मीन
गुरु _____: मिथुन
शुक्र _____: कर्क
शनि _____: मीन
राहु _____: सिंह

जन्म कुण्डली

लग्न कुंडली

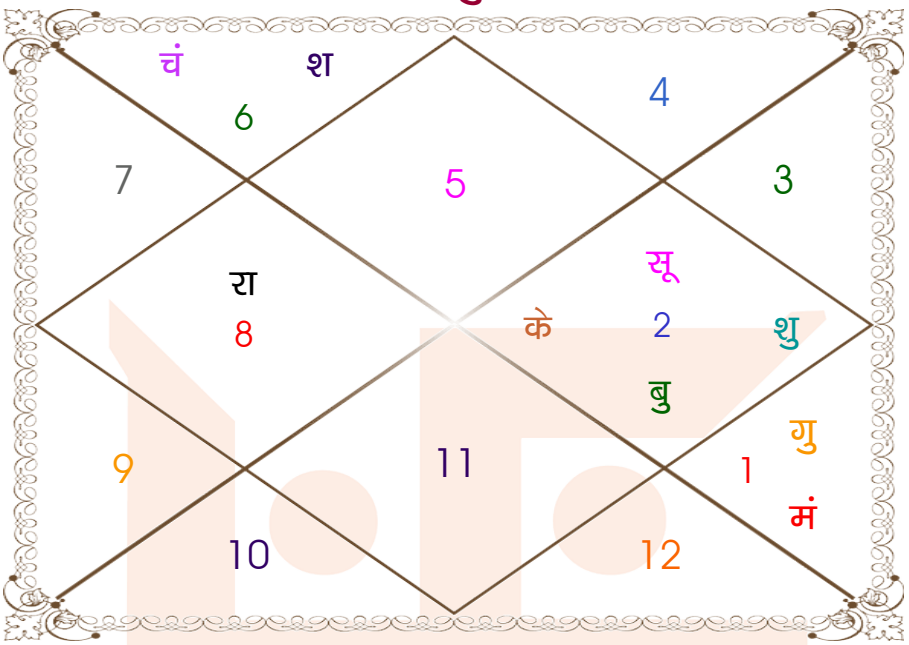

चन्द्र कुंडली

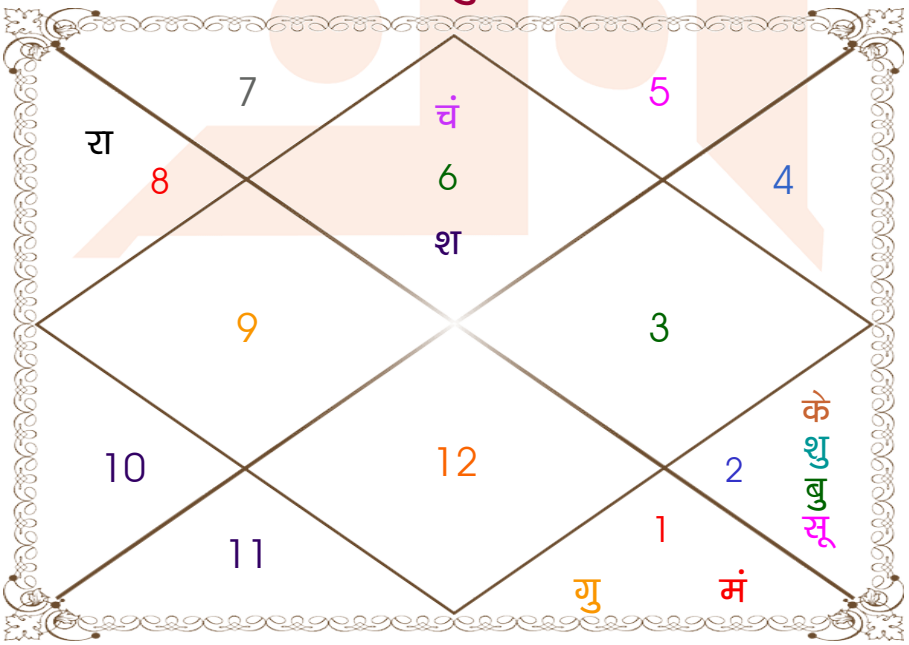

लग्न कुण्डली और दशा

लग्न कुंडली

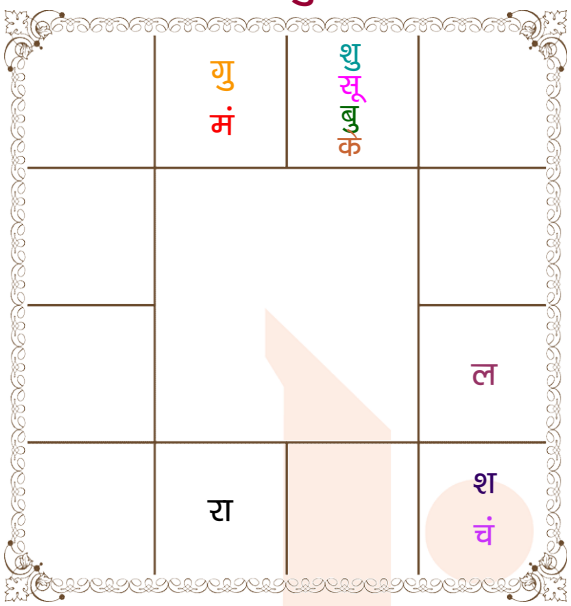

लग्न कुंडली

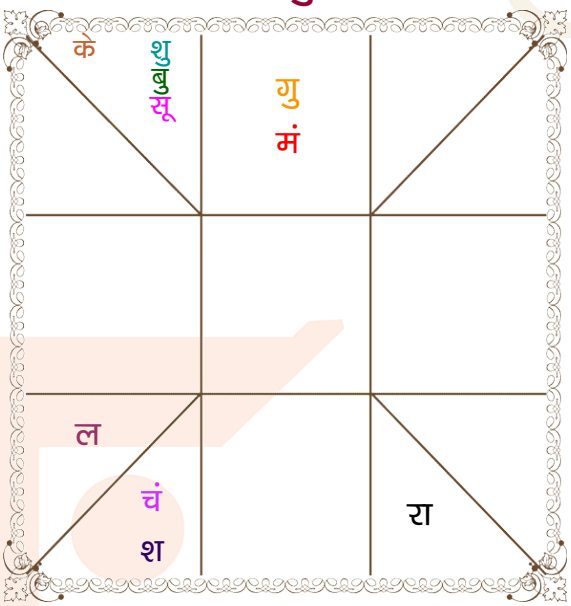

विंशोत्तरी

मंगल 5वर्ष 10मा 25दि

मंगल

11/06/2011

07/05/2130

मंगल	06/05/2017
राहु	06/05/2035
गुरु	06/05/2051
शनि	06/05/2070
बुध	06/05/2087
केतु	06/05/2094
शुक्र	07/05/2114
सूर्य	06/05/2120
चन्द्र	07/05/2130

योगिनी

मंगला 0वर्ष 10मा 3दि

भद्रिका

14/04/2021

14/04/2026

भद्रिका	24/12/2021
उल्का	24/10/2022
सिद्धा	14/10/2023
संकटा	23/11/2024
मंगला	13/01/2025
पिंगला	24/04/2025
धान्या	24/09/2025
भ्रामरी	14/04/2026

ग्रह स्पष्ट तथा उनकी स्थिति

ग्रह	व	अ	राशि	अंश	गति	नक्षत्र	पद	नं.	रा	न	अं.	स्थिति
लग्न			सिंह	23:46:24	340:52:41	पू०फाल्गुनी	4	11	सूर्य	शुक्र	शनि	---
सूर्य			वृष	26:01:21	00:57:21	मृगशिरा	1	5	शुक्र	मंगल	राहु	शत्रु राशि
चंद्र			कन्या	25:25:29	14:25:03	चित्रा	1	14	बुध	मंगल	राहु	मित्र राशि
मंगल			मेष	28:54:04	00:43:30	कृतिका	1	3	मंगल	सूर्य	मंगल	स्वराशि
बुध		अ	वृष	23:54:38	02:11:46	मृगशिरा	1	5	शुक्र	मंगल	मंगल	मित्र राशि
गुरु			मेष	07:19:44	00:11:48	अश्विनी	3	1	मंगल	केतु	राहु	मित्र राशि
शुक्र			वृष	08:02:21	01:13:05	कृतिका	4	3	शुक्र	सूर्य	शुक्र	स्वराशि
शनि	व		कन्या	16:25:32	00:00:11	हस्त	2	13	बुध	चंद्र	शनि	मित्र राशि
राहु			वृश्चि	29:25:40	00:00:03	ज्येष्ठा	4	18	मंगल	बुध	शनि	शत्रु राशि
केतु			वृष	29:25:40	00:00:03	मृगशिरा	2	5	शुक्र	मंगल	शनि	सम राशि
हर्ष			मीन	10:12:42	00:01:22	उ०भाद्रपद	3	26	गुरु	शनि	शुक्र	---
नेप	व		कुंभ	06:53:18	00:00:16	शतभिषा	1	24	शनि	राहु	राहु	---
प्लूटो	व		धनु	12:36:17	00:01:27	मूल	4	19	गुरु	केतु	बुध	---
दशम भाव			वृष	24:07:26	--	मृगशिरा	--	5	शुक्र	मंगल	राहु	--

व - वक्री स - स्थिर
अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त
राहु : स्पष्ट

चित्रपक्षीय अयनांश : 24:01:17

लग्न-चलित

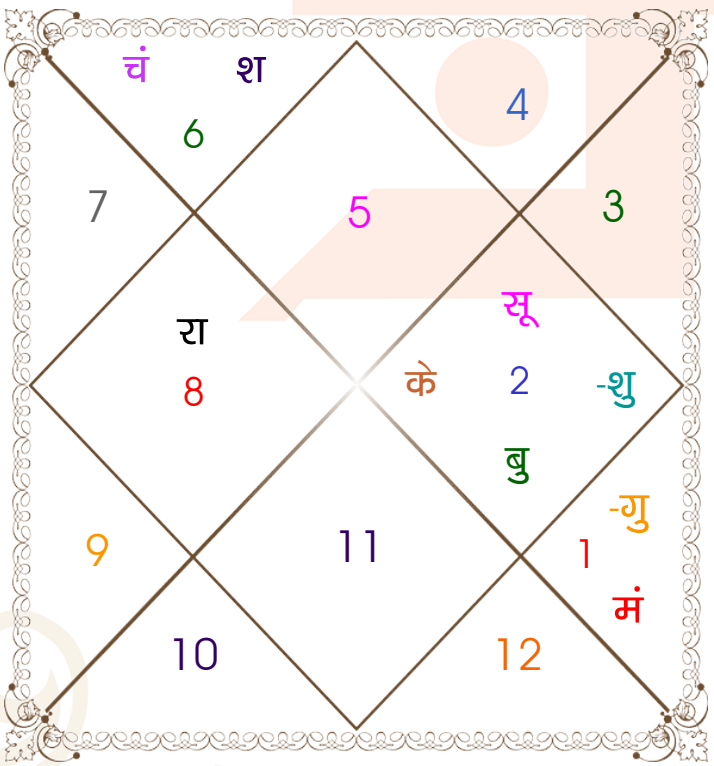

चन्द्र कुंडली

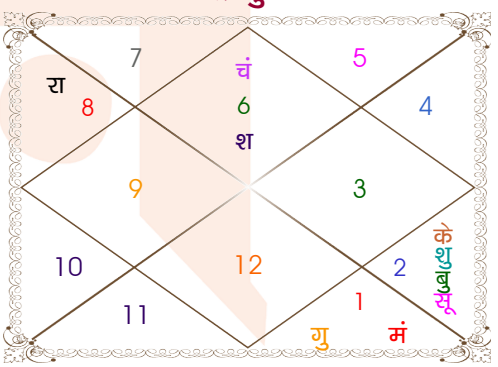

नवमांश कुंडली

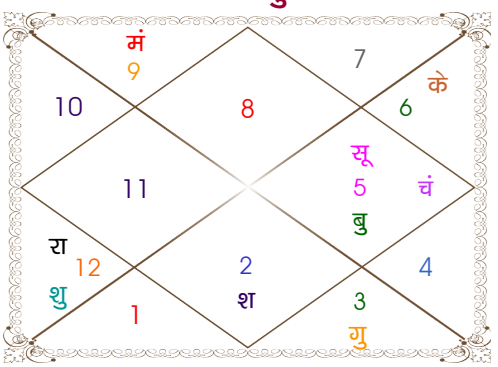

चलित तथा निरयण भाव चलित

चलित अंश

भाव	भाव संधि		भाव मध्य	
1	सिंह	08:49:54	सिंह	23:46:24
2	कन्या	08:49:54	कन्या	23:53:25
3	तुला	08:56:55	तुला	24:00:25
4	वृश्चिक	09:03:56	वृश्चिक	24:07:26
5	धनु	09:03:56	धनु	24:00:25
6	मकर	08:56:55	मकर	23:53:25
7	कुम्भ	08:49:54	कुम्भ	23:46:24
8	मीन	08:49:54	मीन	23:53:25
9	मेष	08:56:55	मेष	24:00:25
10	वृष	09:03:56	वृष	24:07:26
11	मिथुन	09:03:56	मिथुन	24:00:25
12	कर्क	08:56:55	कर्क	23:53:25

निरयण भाव चलित

भाव	राशि	अंश
1	सिंह	23:46:24
2	कन्या	22:53:13
3	तुला	23:32:11
4	वृश्चिक	24:07:26
5	धनु	24:15:26
6	मकर	24:15:53
7	कुम्भ	23:46:24
8	मीन	22:53:13
9	मेष	23:32:11
10	वृष	24:07:26
11	मिथुन	24:15:26
12	कर्क	24:15:53

तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढ़ा	उत्तराषाढ़ा	श्रवण
धनिष्ठा	शतभिषा	पू०भाद्रपद	उ०भाद्रपद	रेवती	अश्विनी	भरणी	कृतिका	रोहिणी
मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा	पू०फाल्गुनी	उ०फाल्गुनी	हस्त

चलित कुंडली

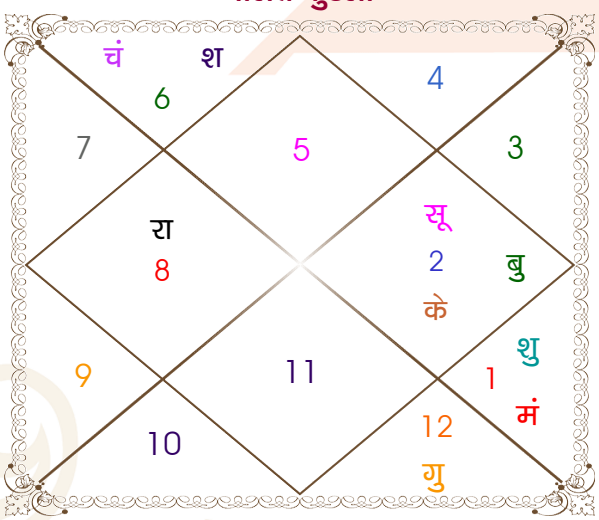

भाव कुंडली

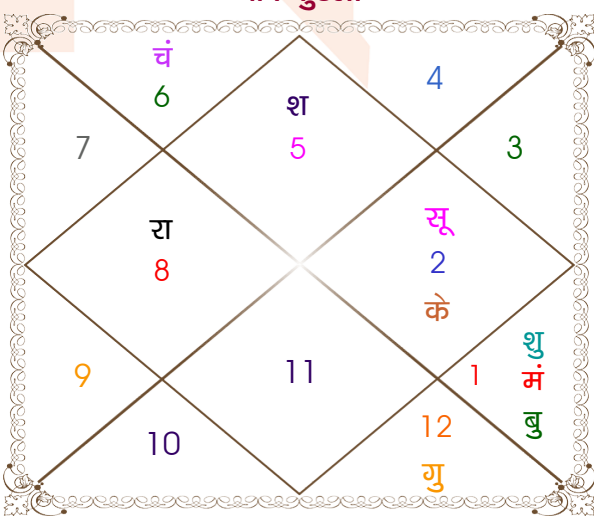

कारक,अवस्था,रश्मि

ग्रह	------ कारक ------			------- अवस्था -------			
	चर	स्थिर	बालादि	दीप्तादि	शयनादि	रश्मि	ग्रह बल
सूर्य	अमात्य	पितृ	बाल	खल	नेत्रपाणि	2.98	95 %
चंद्र	भ्रातृ	मातृ	बाल	मुदित	सभा	1.88	70 %
मंगल	आत्मा	भ्रातृ	मृत	स्वस्थ	आगम	3.71	51 %
बुध	मातृ	ज्ञाति	कुमार	विकल	नेत्रपाणि	0.00	15 %
गुरु	कलत्र	धन	कुमार	मुदित	उपवेशन	3.59	34 %
शुक्र	ज्ञाति	कलत्र	वृद्ध	स्वस्थ	गमन	9.26	36 %
शनि	पुत्र	आयु	युवा	मुदित	नृत्यलिप्सा	4.07	32 %
राहु	---	ज्ञान	बाल	खल	कौतुक	0.00	64 %
केतु	---	मोक्ष	बाल	निपीदित	आगम	0.00	64 %
कुल						25.49	

तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढ़ा	उत्तराषाढ़ा	श्रवण
धनिष्ठा	शतभिषा	पू०भाद्रपद	उ०भाद्रपद	रेवती	अश्विनी	भरणी	कृतिका	रोहिणी
मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा	पू०फाल्गुनी	उ०फाल्गुनी	हस्त

चलित कुंडली

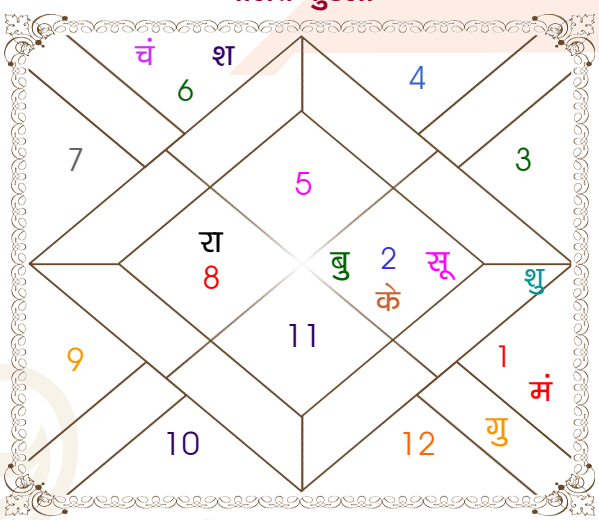

लग्न-चलित

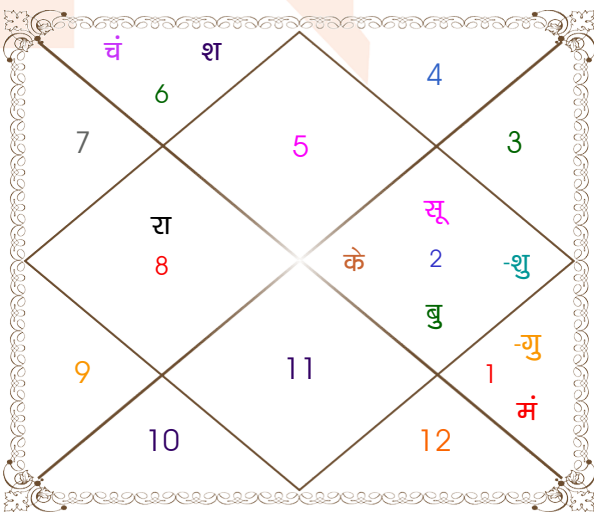

सुदर्शन चक्र

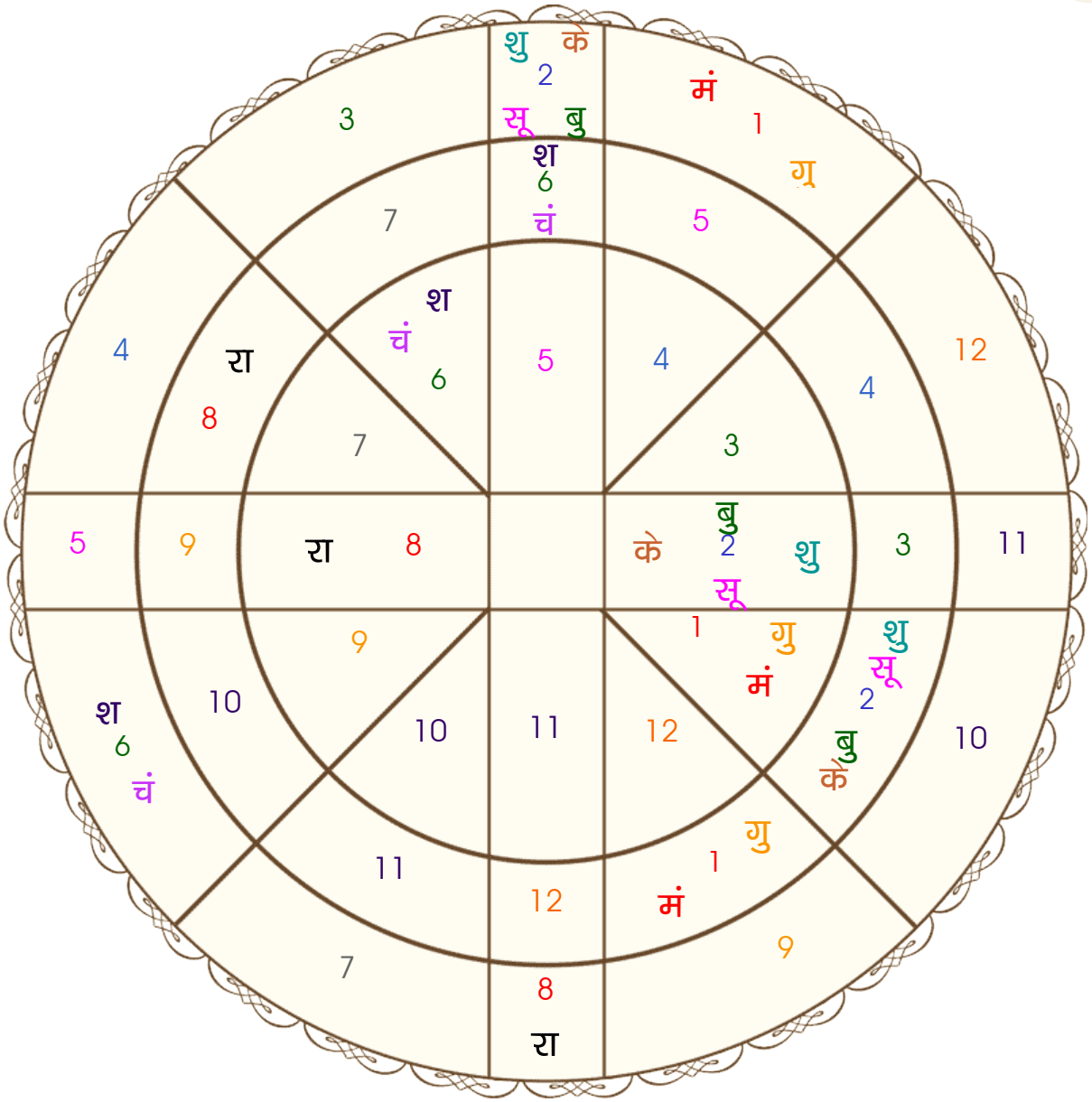

नोटः सुदर्शन चक्र कमानुसार बाहरी वृत से अन्तः वृत तक सूर्य, चन्द्र एवं जन्मांग कुंडलियों में ग्रहों की तुलनात्मक स्थिति दर्शाता है। किसी भाव का विचार करने के लिए उस भाव को प्रकट करने वाली तीनों राशियों का विचार करना चाहिए।

भोग्य दशा काल : मंगल 5 वर्ष 10 मास 4 दिन

ग्रह

ग्रह	व	राशि	अंश	रा	न	अं.	प्र.
सूर्य		वृष	26:07:56	शुक्र	मंगल	गुरु	गुरु
चंद्र		कन्या	25:32:04	बुध	मंगल	राहु	शुक्र
मंगल		मेष	29:00:39	मंगल	सूर्य	मंगल	शुक्र
बुध		वृष	24:01:13	शुक्र	मंगल	मंगल	सूर्य
गुरु		मेष	07:26:19	मंगल	केतु	राहु	चंद्र
शुक्र		वृष	08:08:56	शुक्र	सूर्य	शुक्र	सूर्य
शनि	व	कन्या	16:32:07	बुध	चंद्र	शनि	शुक्र
राहु		वृश्चि	29:32:15	मंगल	बुध	शनि	राहु
केतु		वृष	29:32:15	शुक्र	मंगल	शनि	राहु
हर्ष		मीन	10:19:17	गुरु	शनि	शुक्र	केतु
नेप	व	कुंभ	06:59:53	शनि	राहु	राहु	गुरु
प्लूटो	व	धनु	12:42:52	गुरु	केतु	बुध	राहु

निरयण भाव

भाव	राशि	अंश	रा	न	अं.	प्र.
1	सिंह	23:52:59	सूर्य	शुक्र	शनि	गुरु
2	कन्या	22:59:48	बुध	चंद्र	सूर्य	शनि
3	तुला	23:38:46	शुक्र	गुरु	शनि	गुरु
4	वृश्चि	24:14:01	मंगल	बुध	राहु	राहु
5	धनु	24:22:01	गुरु	शुक्र	बुध	केतु
6	मक	24:22:28	शनि	मंगल	राहु	राहु
7	कुंभ	23:52:59	शनि	गुरु	शनि	गुरु
8	मीन	22:59:48	गुरु	बुध	चंद्र	बुध
9	मेष	23:38:46	मंगल	शुक्र	शनि	राहु
10	वृष	24:14:01	शुक्र	मंगल	राहु	राहु
11	मिथु	24:22:01	बुध	गुरु	बुध	शुक्र
12	कर्क	24:22:28	चंद्र	बुध	राहु	राहु

के.पी. अयनांश : 23:54:42

फॉरच्युना : धनु 23:17:08

लग्न कुंडली

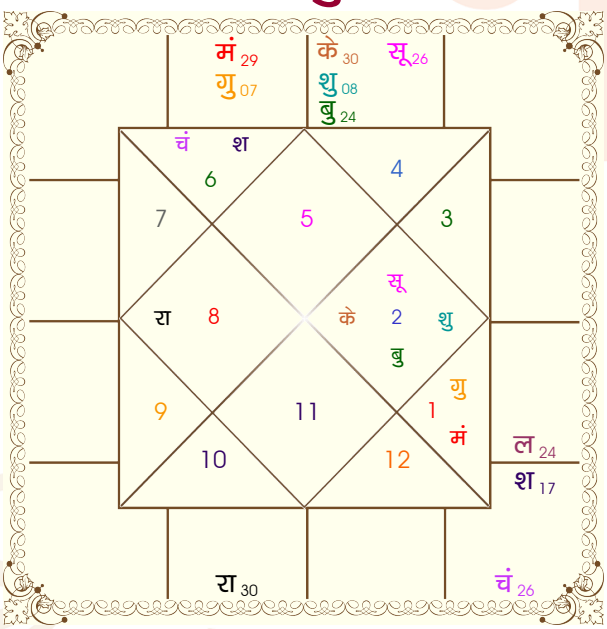

भाव कुंडली

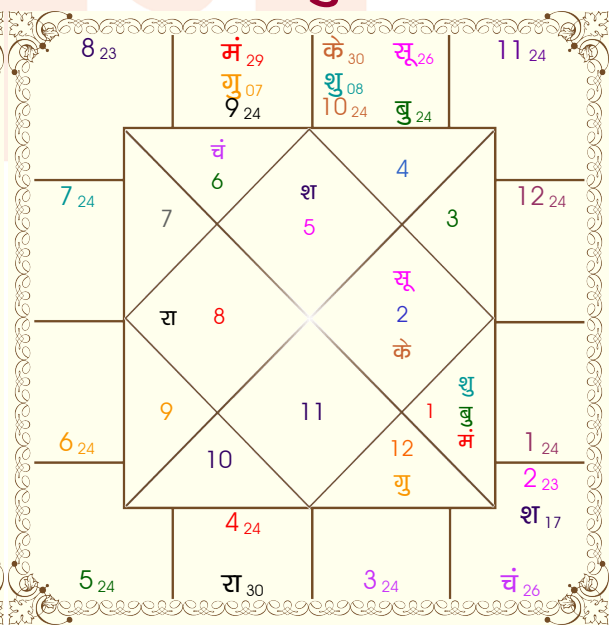

कारकत्व एवं स्वामित्व

भाव कारक

भाव	ग्रह
1	सूर्य- मंगल- शुक्र- शनि,
2	चंद्र, बुध- शनि, राहु-
3	शुक्र-
4	सूर्य- चंद्र- मंगल- बुध- राहु, केतु-
5	गुरु-
6	शनि-
7	शनि-
8	गुरु,
9	सूर्य+ चंद्र+ मंगल, बुध+ शुक्र, राहु, केतु+
10	सूर्य, मंगल, गुरु, शुक्र+ केतु,
11	बुध- राहु-
12	चंद्र- शनि-

ग्रह कारकत्व

ग्रह	भाव
सूर्य	1- 4- 9+ 10,
चंद्र	2, 4- 9+ 12-
मंगल	1- 4- 9, 10,
बुध	2- 4- 9+ 11-
गुरु	5- 8, 10,
शुक्र	1- 3- 9, 10+
शनि	1, 2, 6- 7- 12-
राहु	2- 4, 9, 11-
केतु	4- 9+ 10,

स्वामित्व

लग्न नक्षत्र स्वामी	शुक्र
लग्न राशि स्वामी	सूर्य
राशि नक्षत्र स्वामी	मंगल
राशि स्वामी	बुध
वार स्वामी	शनि
लग्न अन्तर स्वामी	शनि
राशि अन्तर स्वामी	राहु

कारकत्व-सारिणी

भाव	स्थित ग्रह के नक्षत्र में	स्थित ग्रह	स्वामी के नक्षत्र में	स्वामी
1	--	श	मं शु	सू
2	श	चं	रा	बु
3	--	--	--	शु
4	--	रा	सू चं बु के	मं
5	--	--	--	गु
6	--	--	--	श
7	--	--	--	श
8	--	गु	--	गु
9	सू चं बु रा के	मं बु शु	सू चं बु के	मं
10	मं गु शु	सू के	--	शु
11	--	--	रा	बु
12	--	--	श	चं

ग्रह कारक सारिणी-1

ग्रह	भावाधिपति	नक्षत्राधिपति	स्थित	भाव
सूर्य	1	---	वृष	10
चंद्र	12	2	कन्या	2
मंगल	4,9	6,10	मेष	9
बुध	2,11	4,8,12	वृष	9
गुरु	5,8	3,7,11	मेष	8
शुक्र	3,10	1,5,9	वृष	9
शनि	6,7	---	कन्या	1
राहु	---	---	वृश्चिक	4
केतु	---	---	वृष	10

ग्रह कारक सारिणी-2

ग्रह	भावाधि भाव	नक्षत्राधि भाव	स्थित भाव	स्वामित्व	अन्तर स्वामी	स्थित भाव
सूर्य	4,9	6,10	9	5,8	3,7,11	8
चंद्र	4,9	6,10	9	---	---	4
मंगल	1	---	10	4,9	6,10	9
बुध	4,9	6,10	9	4,9	6,10	9
गुरु	---	---	10	---	---	4
शुक्र	1	---	10	3,10	1,5,9	9
शनि	12	2	2	6,7	---	1
राहु	2,11	4,8,12	9	6,7	---	1
केतु	4,9	6,10	9	6,7	---	1

ग्रह दृष्टि विचार

दृष्य ग्रह

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु	हर्ष	नेप	प्लूटो
	56.02	175.42	28.90	53.91	7.33	38.04	166.43	239.43	59.43	340.21	306.89	252.60
सूर्य	--	पंच	--	युति	--	--	--	सप्त	युति	--	--	--
56.02	0.00	2.96	0.00	9.76	0.00	0.00	0.00	9.37	9.37	0.00	0.00	0.00
चंद्र	--	--	--	--	सप्त	--	युति	तृती	--	--	--	--
175.42	0.00	0.00	0.00	0.00	3.19	0.00	5.88	1.50	0.00	0.00	0.00	0.00
मंगल	--	--	--	--	--	युति	--	8वां	--	--	--	8वां
28.90	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	5.76	0.00	9.98	0.00	0.00	0.00	1.35
बुध	युति	पंच	--	--	--	--	--	सप्त	युति	--	--	--
53.91	9.76	2.77	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	8.38	8.38	0.00	0.00	0.00
गुरु	--	सप्त	--	--	--	--	--	9वां	--	--	--	9वां
7.33	0.00	3.19	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	6.77	0.00	0.00	0.00	8.51
शुक्र	--	--	युति	--	--	--	--	--	--	--	--	--
38.04	0.00	0.00	5.76	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
शनि	--	युति	--	--	--	--	--	3रा	--	सप्त	--	चतु
166.43	0.00	5.88	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	2.08	0.00	7.96	0.00	1.62
राहु	सप्त	--	षष्ठ	सप्त	--	--	--	--	सप्त	--	--	युति
239.43	9.37	0.00	0.68	8.38	0.00	0.00	0.00	0.00	10.00	0.00	0.00	1.90
केतु	युति	पंच	--	युति	--	--	--	सप्त	--	--	--	सप्त
59.43	9.37	1.50	0.00	8.38	0.00	0.00	0.00	10.00	0.00	0.00	0.00	1.90
हर्ष	--	--	--	--	--	तृती	सप्त	--	--	--	--	--
340.21	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	2.53	7.96	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
नेप	--	--	--	--	तृती	चतु	--	--	--	--	--	--
306.89	0.00	0.00	0.00	0.00	2.98	2.86	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
प्लूटो	--	--	--	--	पंच	--	--	युति	सप्त	चतु	तृती	--
252.60	0.00	0.00	0.00	0.00	0.57	0.00	0.00	1.90	1.90	2.43	0.22	0.00

1. उपरोक्त गणना के लिए निम्नलिखित दृष्टियां एवं मान लिए गए हैं :

संक्षिप्त - दृष्टि	अंश	कालांश	अंक	संक्षिप्त - दृष्टि	अंश	कालांश	अंक
युति - युति	0	15	10	सप्त - सप्तम	180	15	10
पंच - पंचम	120	6	3	चतु - चतुर्थ	90	6	3
तृती - तृतीय	60	6	3	अष्ट - अष्टमांश	45	1	1
नवां - नवमांश	40	1	1	पंचा - पंचमांश	72	1	1
अष्टां - अष्टचतुर्थांश	135	1	1	षष्ठ - षष्ठ	150	1	1

विशेष दृष्टियां - मंगल की चतुर्थ एवं अष्टम, बृहस्पति की पंचम एवं नवम तथा शनि की तृतीय एवं दशम दृष्टि के कालांश 15 तथा अंक 10 माने गये हैं।

2. उपरोक्त तालिका दृष्टि एवं अंक दर्शाती हैं। अंको की गणना ग्रह की दृष्टि बिंदु से दूरी को लेकर कोज्या सूत्र के आधार पर की गई है।

भाव मध्य दृष्टि विचार

दृष्य भाव

	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
	143.77	173.89	204.01	234.12	264.01	293.89	323.77	353.89	24.01	54.12	84.01	113.89
सूर्य	--	पंच	--	सप्त	--	--	--	--	--	युति	--	तृती
56.02	0.00	2.54	0.00	9.80	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	9.80	0.00	2.54
चंद्र	--	--	--	तृती	चतु	पंच	--	सप्त	--	--	--	--
175.42	0.00	0.00	0.00	2.83	2.80	2.76	0.00	9.87	0.00	0.00	0.00	0.00
मंगल	पंच	--	--	8वां	--	--	--	--	युति	--	तृती	4था
28.90	0.68	0.00	0.00	8.77	0.00	0.00	0.00	0.00	8.72	0.00	0.86	8.65
बुध	चतु	पंच	षष्ठ	--	--	--	--	--	--	युति	--	तृती
53.91	3.00	3.00	0.99	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	10.00	0.00	3.00
गुरु	--	सप्त	--	9वां	--	--	--	युति	--	--	--	5वां
7.33	0.00	1.63	0.00	1.87	0.00	0.00	0.00	1.63	0.00	0.00	0.00	1.63
शुक्र	--	अष्टां	सप्त	--	--	--	--	--	युति	--	अष्ट	--
38.04	0.00	0.23	1.01	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	1.01	0.00	0.05	0.00
शनि	--	युति	--	3रा	--	--	--	सप्त	--	--	10वा	--
166.43	0.00	7.10	0.00	6.92	0.00	0.00	0.00	7.10	0.00	0.00	7.01	0.00
राहु	--	--	--	युति	--	तृती	चतु	--	--	सप्त	--	--
239.43	0.00	0.00	0.00	8.50	0.00	0.36	0.27	0.00	0.00	8.50	0.00	0.00
केतु	चतु	पंच	--	सप्त	--	--	--	--	--	युति	--	तृती
59.43	0.27	0.36	0.00	8.50	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	8.50	0.00	0.36
हर्ष	--	सप्त	--	--	--	--	--	युति	--	--	--	--
340.21	0.00	1.38	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	1.38	0.00	0.00	0.00	0.00
नेप	--	--	--	--	--	युति	--	--	--	--	--	सप्त
306.89	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	2.08	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	2.08
प्लूटो	--	--	--	--	युति	--	पंचा	--	--	--	सप्त	--
252.60	0.00	0.00	0.00	0.00	3.68	0.00	0.26	0.00	0.00	0.00	3.68	0.00

1. उपरोक्त गणना के लिए निम्नलिखित दृष्टियां एवं मान लिए गए हैं :

संक्षिप्त - दृष्टि	अंश	कालांश	अंक	संक्षिप्त - दृष्टि	अंश	कालांश	अंक
युति - युति	0	15	10	सप्त - सप्तम	180	15	10
पंच - पंचम	120	6	3	चतु - चतुर्थ	90	6	3
तृती - तृतीय	60	6	3	अष्ट - अष्टमांश	45	1	1
नवां - नवमांश	40	1	1	पंचा - पंचमांश	72	1	1
अष्टां - अष्टचतुर्थांश	135	1	1	षष्ठ - षष्ठ	150	1	1

विशेष दृष्टियां - मंगल की चतुर्थ एवं अष्टम, बृहस्पति की पंचम एवं नवम तथा शनि की तृतीय एवं दशम दृष्टि के कालांश 15 तथा अंक 10 माने गये हैं।

2. उपरोक्त तालिका दृष्टि एवं अंक दर्शाती हैं। अंको की गणना ग्रह की दृष्टि बिंदु से दूरी को लेकर कोज्या सूत्र के आधार पर की गई है।

भाव दृष्टि विचार

दृष्य भाव

	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
	143.77	172.89	203.54	234.12	264.26	294.26	323.77	352.89	23.54	54.12	84.26	114.26
सूर्य	--	पंच	--	सप्त	--	--	--	--	--	युति	--	तृती
56.02	0.00	2.04	0.00	9.80	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	9.80	0.00	2.69
चंद्र	--	--	--	तृती	चतु	पंच	--	सप्त	--	--	--	--
175.42	0.00	0.00	0.00	2.83	2.86	2.86	0.00	9.65	0.00	0.00	0.00	0.00
मंगल	पंच	--	--	8वां	--	--	--	--	युति	--	तृती	4था
28.90	0.68	0.00	0.00	8.77	0.00	0.00	0.00	0.00	8.46	0.00	1.04	8.84
बुध	चतु	पंच	षष्ठ	--	--	--	--	--	--	युति	--	तृती
53.91	3.00	2.89	0.83	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	10.00	0.00	2.99
गुरु	--	सप्त	--	9वां	--	--	--	युति	--	--	--	5वां
7.33	0.00	0.58	0.00	1.87	0.00	0.00	0.00	0.58	0.00	0.00	0.00	2.01
शुक्र	--	अष्टां	सप्त	--	--	--	--	--	युति	--	--	--
38.04	0.00	0.97	0.52	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.52	0.00	0.00	0.00
शनि	--	युति	--	3रा	--	--	--	सप्त	--	--	10वा	--
166.43	0.00	7.80	0.00	6.92	0.00	0.00	0.00	7.80	0.00	0.00	6.82	0.00
राहु	--	--	--	युति	--	तृती	चतु	--	--	सप्त	--	--
239.43	0.00	0.00	0.00	8.50	0.00	0.65	0.27	0.00	0.00	8.50	0.00	0.00
केतु	चतु	--	--	सप्त	--	--	--	--	--	युति	--	तृती
59.43	0.27	0.00	0.00	8.50	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	8.50	0.00	0.65
हर्ष	--	सप्त	--	--	--	--	--	युति	--	--	--	अष्टां
340.21	0.00	2.41	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	2.41	0.00	0.00	0.00	0.08
नेप	--	--	--	--	--	युति	--	अष्ट	--	--	--	सप्त
306.89	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	2.46	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	2.46
प्लूटो	--	--	--	--	युति	--	पंचा	--	--	--	सप्त	--
252.60	0.00	0.00	0.00	0.00	3.43	0.00	0.26	0.00	0.00	0.00	3.43	0.00

1. उपरोक्त गणना के लिए निम्नलिखित दृष्टियां एवं मान लिए गए हैं :

संक्षिप्त - दृष्टि	अंश	कालांश	अंक	संक्षिप्त - दृष्टि	अंश	कालांश	अंक
युति - युति	0	15	10	सप्त - सप्तम	180	15	10
पंच - पंचम	120	6	3	चतु - चतुर्थ	90	6	3
तृती - तृतीय	60	6	3	अष्ट - अष्टमांश	45	1	1
नवां - नवमांश	40	1	1	पंचा - पंचमांश	72	1	1
अष्टां - अष्टचतुर्थांश	135	1	1	षष्ठ - षष्ठ	150	1	1

विशेष दृष्टियां - मंगल की चतुर्थ एवं अष्टम, बृहस्पति की पंचम एवं नवम तथा शनि की तृतीय एवं दशम दृष्टि के कालांश 15 तथा अंक 10 माने गये हैं।

2. उपरोक्त तालिका दृष्टि एवं अंक दर्शाती हैं। अंको की गणना ग्रह की दृष्टि बिंदु से दूरी को लेकर कोज्या सूत्र के आधार पर की गई है।

षोडशवर्ग चक्र

वर्गीय कुंडलियां लग्न कुंडली का विस्तार होती हैं। प्रत्येक कुंडली का एक विशेष लक्ष्य होता है, जैसा कि निम्न कुंडलियों के साथ वर्णन किया गया है। विस्तृत रूप से यह जानने के लिए कि ये कुंडलियां कौन से विषय का प्रतिनिधित्व करती हैं, इनका अध्ययन मूल लग्न कुंडली के साथ किया जाना चाहिए। बहरहाल, ये कुंडलियां विशेष सावधानी से देखी जानी चाहिएं, क्योंकि यहां ग्रहों की दृष्टि नहीं होती। सामान्यतः ग्रह का आचरण उस राशि या भाव तक सीमित रहता है जिनमें वे इन वर्गीय कुंडलियों में स्थित हैं।

सूर्य कुंडली

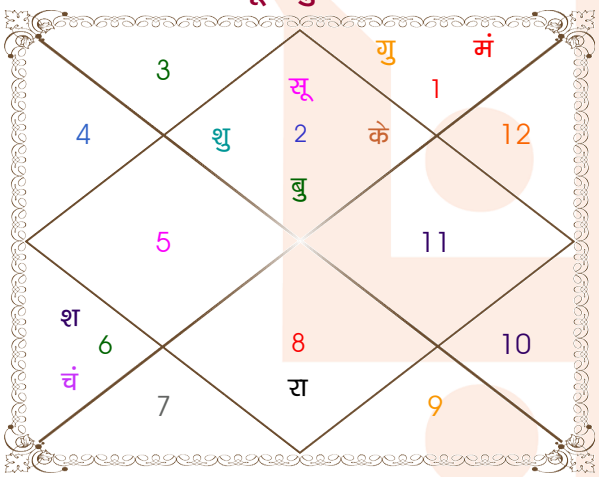

आत्मविचारः

चन्द्र कुंडली

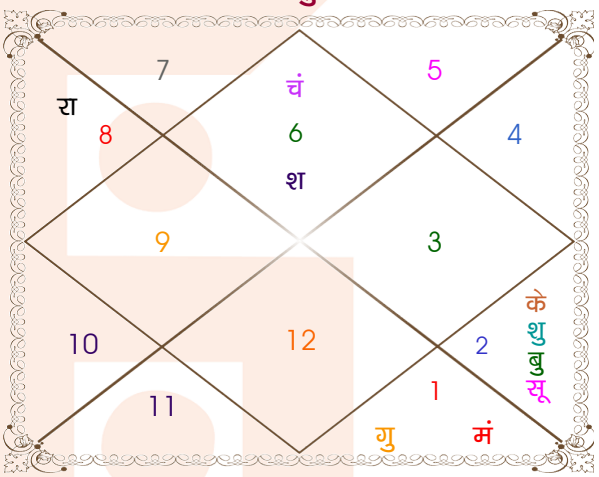

मनोबलविचारः

लग्न कुंडली

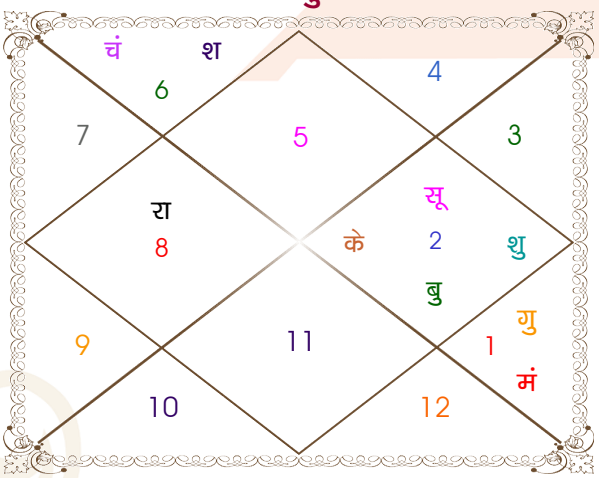

देह विचारः

होरा कुंडली

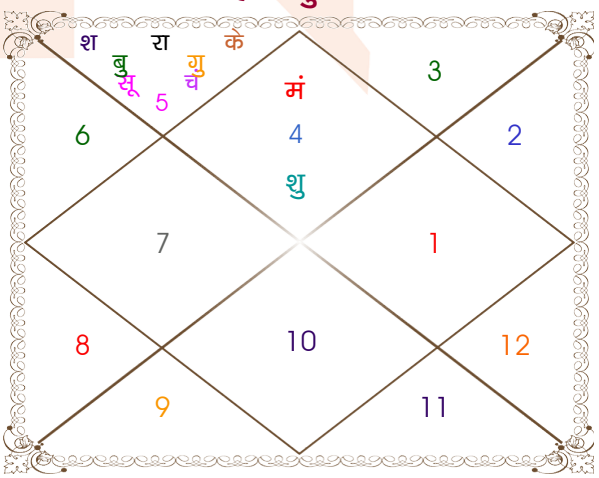

सम्पदाविचारः

षोडशवर्ग चक्र

द्रेष्काण कुंडली

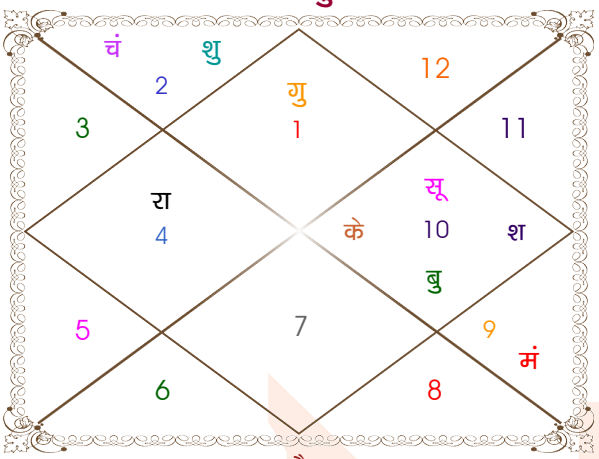

भातृसौख्यम

चतुर्थांश कुंडली

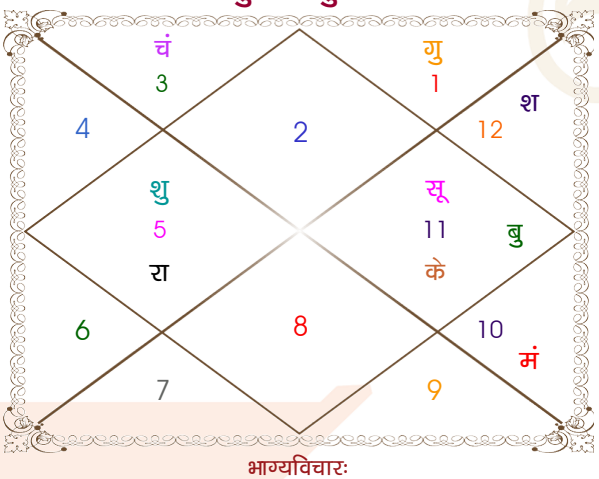

भाग्यविचारः

पंचमांश कुंडली

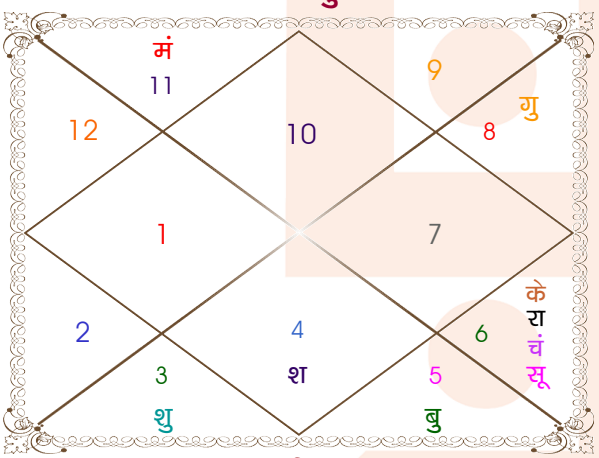

ज्ञानविचारः

षष्ठांश कुंडली

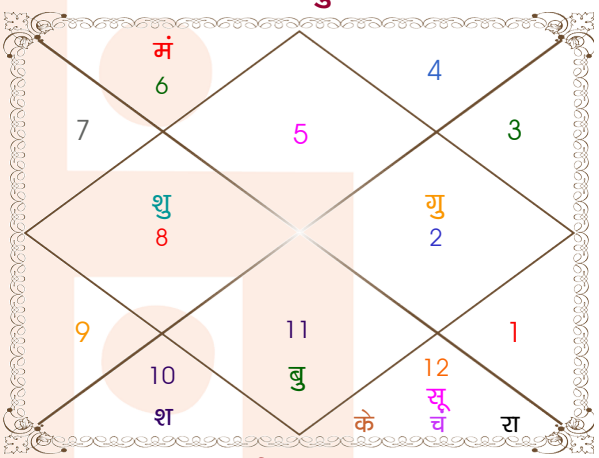

रिपुज्ञानम्

सप्तमांश कुंडली

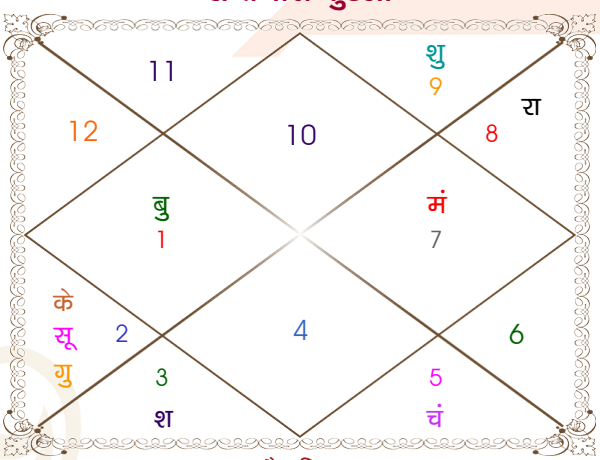

पुत्रपौत्रादिज्ञानम्

अष्टमांश कुंडली

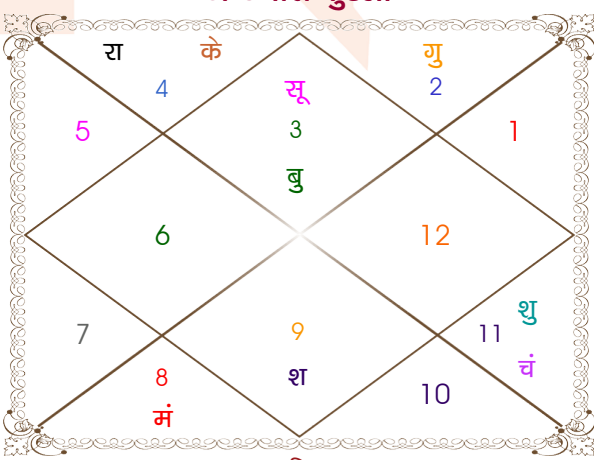

आयुविचारः

षोडशवर्ग चक्र

नवमांश कुंडली

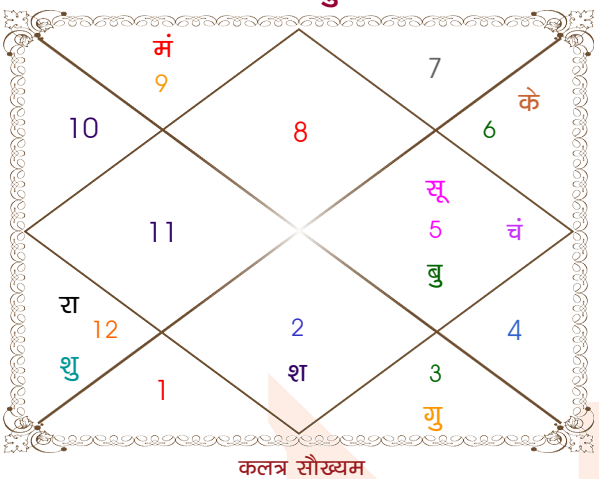

कलत्र सौख्यम

दशमांश कुंडली

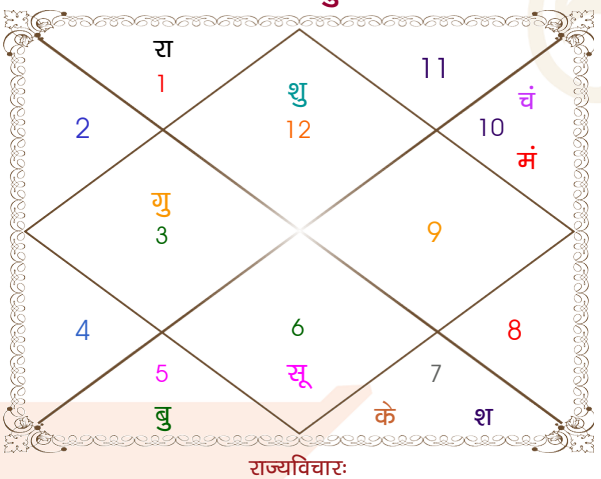

राज्यविचारः

एकादशांश कुंडली

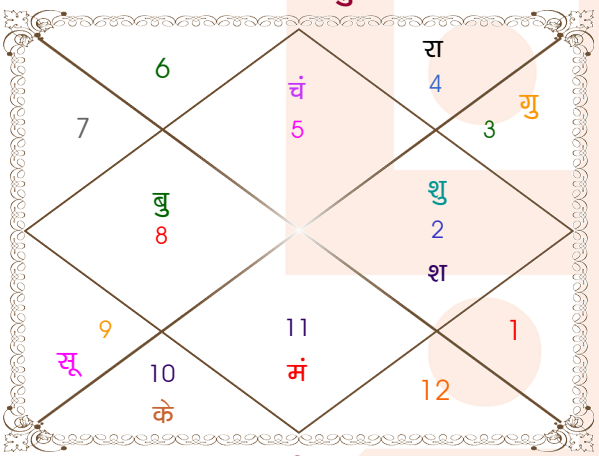

लाभविचारः

द्वादशांश कुंडली

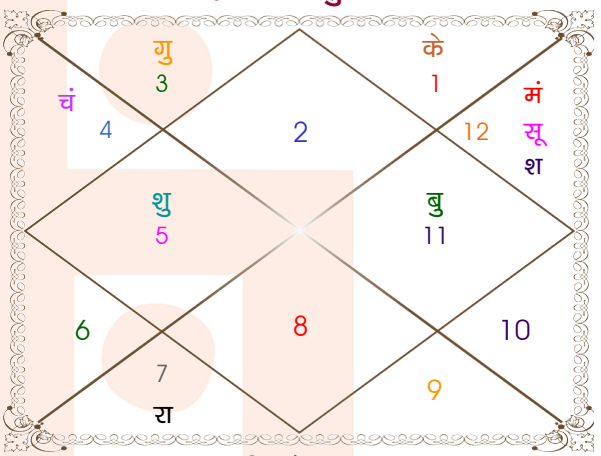

पितृसौख्यम

षोडशांश कुंडली

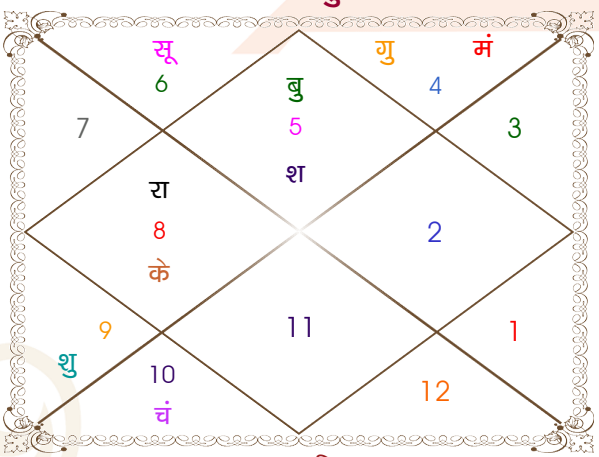

वाहनसुखविचारः

विंशांश कुंडली

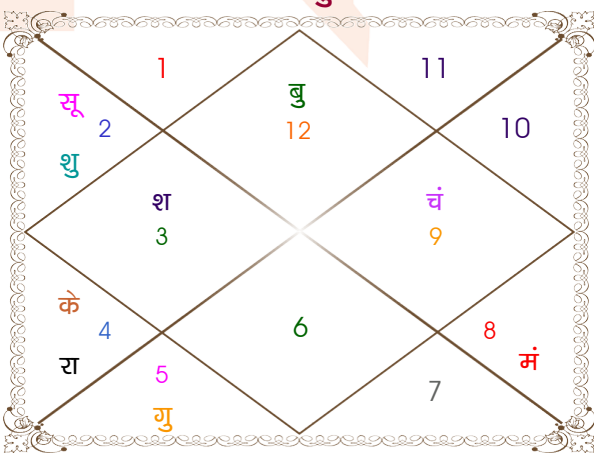

उपासनाज्ञानम्

षोडशवर्ग चक्र

चतुर्विंशांश कुंडली

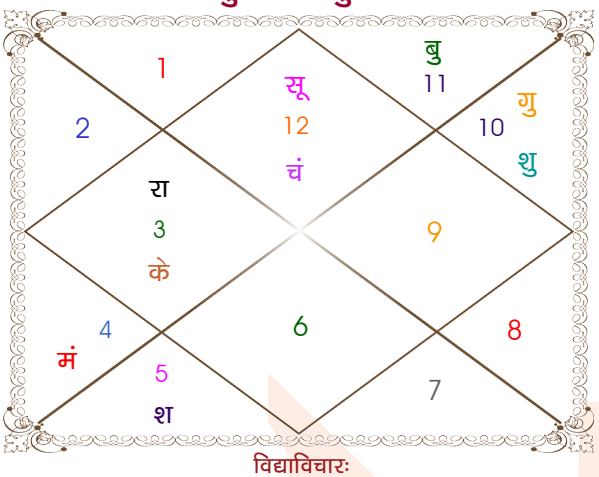

विद्याविचारः

सप्तविंशांश कुंडली

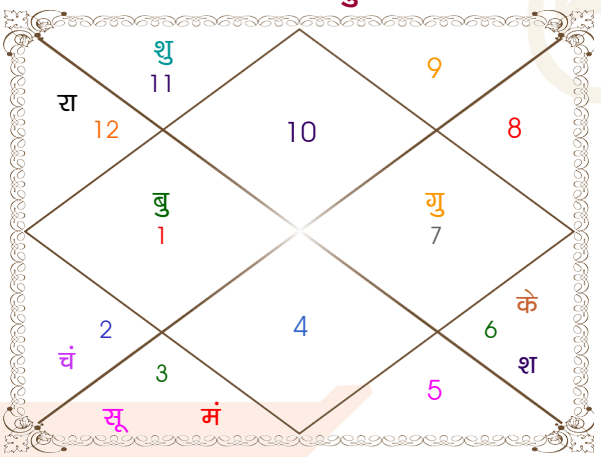

बलाबलज्ञानम्

त्रिंशांश कुंडली

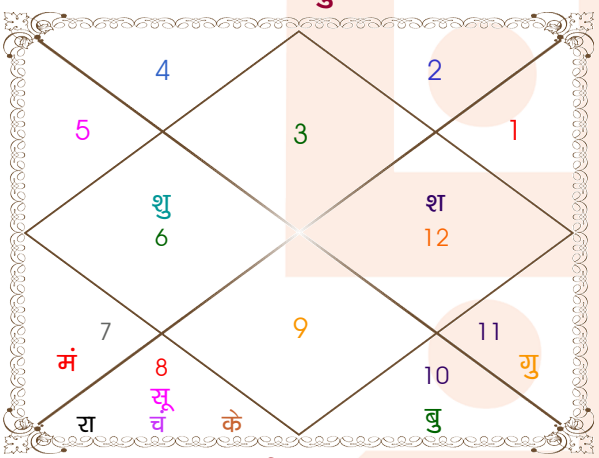

अरिष्टज्ञानम्

खवेदांश कुंडली

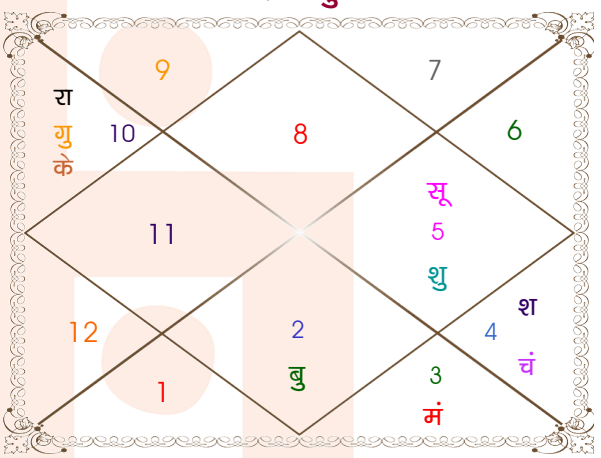

शुभाशुभज्ञानम्

अक्षवेदांश कुंडली

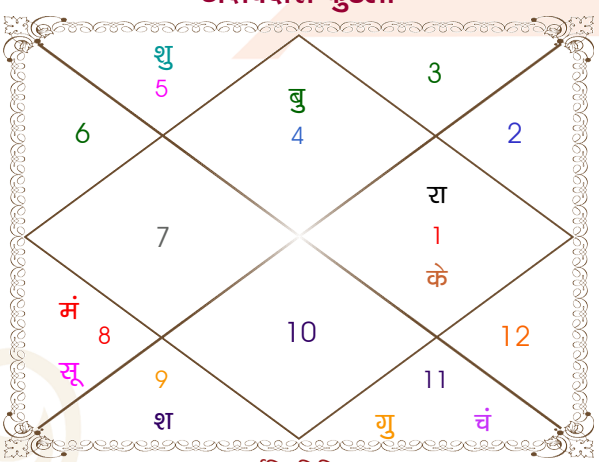

सर्वास्थितिविचारः

षष्ट्यंश कुंडली

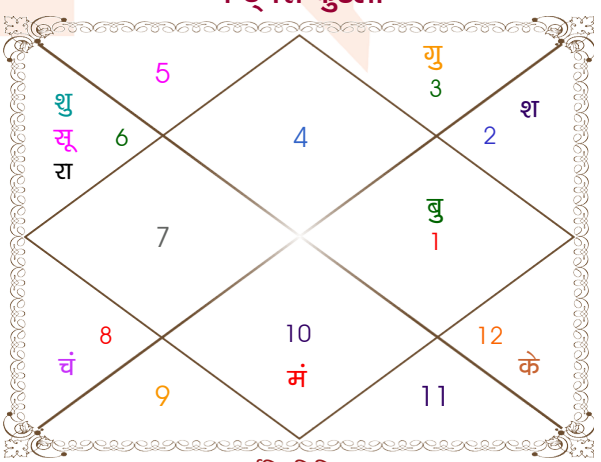

सर्वास्थितिविचारः

षोडशवर्ग सारणियाँ

षोडशवर्ग सारिणी

	लग्न	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
राशि	सिंह	वृष	कन्या	मेष	वृष	मेष	वृष	कन्या	वृश्चि	वृष
होरा	कर्क	सिंह	सिंह	कर्क	सिंह	सिंह	कर्क	सिंह	सिंह	सिंह
द्रेष्काण	मेष	मक	वृष	धनु	मक	मेष	वृष	मक	कर्क	मक
चतुर्थांश	वृष	कुंभ	मिथु	मक	कुंभ	मेष	सिंह	मीन	सिंह	कुंभ
सप्तमांश	मक	वृष	सिंह	तुला	मेष	वृष	धनु	मिथु	वृश्चि	वृष
नवमांश	वृश्चि	सिंह	सिंह	धनु	सिंह	मिथु	मीन	वृष	मीन	कन्या
दशमांश	मीन	कन्या	मक	मक	सिंह	मिथु	मीन	तुला	मेष	तुला
द्वादशांश	वृष	मीन	कर्क	मीन	कुंभ	मिथु	सिंह	मीन	तुला	मेष
षोडशांश	सिंह	कन्या	मक	कर्क	सिंह	कर्क	धनु	सिंह	वृश्चि	वृश्चि
विंशांश	मीन	वृष	धनु	वृश्चि	मीन	सिंह	वृष	मिथु	कर्क	कर्क
चतुर्विंशांश	मीन	मीन	मीन	कर्क	कुंभ	मक	मक	सिंह	मिथु	मिथु
सप्तविंशांश	मक	मिथु	वृष	मिथु	मेष	तुला	कुंभ	कन्या	मीन	कन्या
त्रिंशांश	मिथु	वृश्चि	वृश्चि	तुला	मक	कुंभ	कन्या	मीन	वृश्चि	वृश्चि
खवेदांश	वृश्चि	सिंह	कर्क	मिथु	वृष	मक	सिंह	कर्क	मक	मक
अक्षवेदांश	कर्क	वृश्चि	कुंभ	वृश्चि	कर्क	कुंभ	सिंह	धनु	मेष	मेष
षष्ट्यंश	कर्क	कन्या	वृश्चि	मक	मेष	मिथु	कन्या	वृष	कन्या	मीन

वर्ग भेद

	षडवर्ग	सप्तवर्ग	दशवर्ग	षोडशवर्ग
सूर्य	2 किंसुक	2 किंसुक	2 पारिजात	3 कुसुम
चन्द्र	2 किंसुक	2 किंसुक	2 पारिजात	4 नागपुष्प
मंगल	1 ---	1 ---	3 उत्तम	6 केरल
बुध	0 ---	0 ---	0 ---	0 ---
गुरु	0 ---	0 ---	1 ---	1 ---
शुक्र	3 व्यंजन	3 व्यंजन	4 गोपुर	5 कन्दुक
शनि	1 ---	1 ---	2 पारिजात	2 भेदक
राहु	0 ---	0 ---	1 ---	2 भेदक
केतु	0 ---	0 ---	1 ---	1 ---

विंशोपक बल

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
षडवर्ग	12.20	10.25	13.25	8.95	10.65	15.25	11.05	7.00	8.95
सप्तवर्ग	11.83	10.40	13.38	9.73	10.65	14.75	10.55	6.70	9.28
दशवर्ग	10.00	9.10	11.28	10.95	10.38	13.00	9.55	6.40	12.08
षोडशवर्ग	10.70	8.93	11.88	10.73	10.23	13.25	9.13	6.63	11.13

मैत्री सारिणी

नैसर्गिक मैत्री

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	---	मित्र	मित्र	सम	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
चंद्र	मित्र	---	सम	मित्र	सम	सम	सम	शत्रु	शत्रु
मंगल	मित्र	मित्र	---	शत्रु	मित्र	सम	सम	शत्रु	मित्र
बुध	मित्र	शत्रु	सम	---	सम	मित्र	सम	सम	सम
गुरु	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	---	शत्रु	सम	सम	सम
शुक्र	शत्रु	शत्रु	सम	मित्र	सम	---	मित्र	मित्र	मित्र
शनि	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	मित्र	---	मित्र	शत्रु
राहु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	सम	सम	मित्र	मित्र	---	शत्रु
केतु	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	सम	मित्र	शत्रु	शत्रु	---

तात्कालिक मैत्री

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	---	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
चंद्र	शत्रु	---	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु
मंगल	मित्र	शत्रु	---	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	मित्र
बुध	शत्रु	शत्रु	मित्र	---	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
गुरु	मित्र	शत्रु	शत्रु	मित्र	---	मित्र	शत्रु	शत्रु	मित्र
शुक्र	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र	---	शत्रु	शत्रु	शत्रु
शनि	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	---	मित्र	शत्रु
राहु	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	---	शत्रु
केतु	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	---

पंचधा मैत्री

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	---	सम	अतिमित्र	शत्रु	अतिमित्र	अधिशत्रु	अधिशत्रु	अधिशत्रु	अधिशत्रु
चंद्र	सम	---	शत्रु	सम	शत्रु	शत्रु	शत्रु	सम	अधिशत्रु
मंगल	अतिमित्र	सम	---	सम	सम	मित्र	शत्रु	अधिशत्रु	अतिमित्र
बुध	सम	अधिशत्रु	मित्र	---	मित्र	सम	शत्रु	शत्रु	शत्रु
गुरु	अतिमित्र	सम	सम	सम	---	सम	शत्रु	शत्रु	मित्र
शुक्र	अधिशत्रु	अधिशत्रु	मित्र	सम	मित्र	---	सम	सम	सम
शनि	अधिशत्रु	अधिशत्रु	अधिशत्रु	सम	शत्रु	सम	---	अतिमित्र	अधिशत्रु
राहु	अधिशत्रु	सम	अधिशत्रु	शत्रु	शत्रु	सम	अतिमित्र	---	अधिशत्रु
केतु	अधिशत्रु	अधिशत्रु	अतिमित्र	शत्रु	मित्र	सम	अधिशत्रु	अधिशत्रु	---

षट्बल तथा भावबल सारिणी

षट्बल

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
उच्च बल	45	13	30	23	31	46	49
सप्तवर्गज बल	111	68	105	49	64	101	62
ओजयुग्मक बल	15	15	30	15	30	30	0
केन्द्र बल	60	30	15	60	15	60	30
द्रेष्काण बल	0	15	0	0	15	0	15
कुल स्थान बल	230	140	180	147	155	238	156
कुल दिग्बल	59	40	52	30	15	5	8
नतोन्नत बल	59	1	1	60	59	59	1
पक्ष बल	20	80	20	20	40	40	20
त्रिभाग बल	60	0	0	0	60	0	0
अब्द बल	0	15	0	0	0	0	0
मास बल	0	0	0	0	0	30	0
वार बल	0	0	0	0	0	0	45
होरा बल	0	60	0	0	0	0	0
अयन बल	119	40	54	59	46	57	35
युद्ध बल	0	0	0	0	0	0	0
कुल कालबल	259	195	75	140	205	186	101
कुल चेष्टाबल	0	0	46	3	43	10	36
कुल नैसर्गिक बल	60	51	17	26	34	43	9
कुल दृग्बल	3	-3	1	3	1	1	-10
कुल षट्बल	612	424	371	348	452	483	299
रूप षट्बल	10.2	7.1	6.2	5.8	7.5	8.1	5.0
न्यूनतम आवश्यकता	5	6	5	7	7	6	5
अनुपात	2.0	1.2	1.2	0.8	1.2	1.5	1.0
संबंधित पद	1	4	3	7	5	2	6

इष्ट फल

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
इष्ट फल	50.31	22.33	37.05	8.14	36.21	22.05	42.18
कष्ट फल	7.14	30.97	20.43	45.99	22.55	26.02	16.23

भाव बल

	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
भावाधिपति बल	612	348	483	371	452	299	299	452	371	483	348	424
भावदिग्बल	30	50	40	30	10	40	0	20	50	60	40	20
भावदृष्टि बल	75	58	46	70	83	32	9	0	1	10	20	46
कुल भाव बल	717	456	569	471	545	371	308	472	422	553	409	490
रूप भाव बल	11.9	7.6	9.5	7.8	9.1	6.2	5.1	7.9	7.0	9.2	6.8	8.2
संबंधित पद	1	8	2	7	4	11	12	6	9	3	10	5

षट्बल ग्राफ

स्थान बल

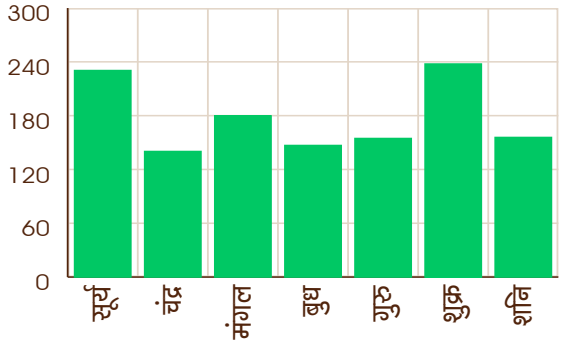

दिग्बल

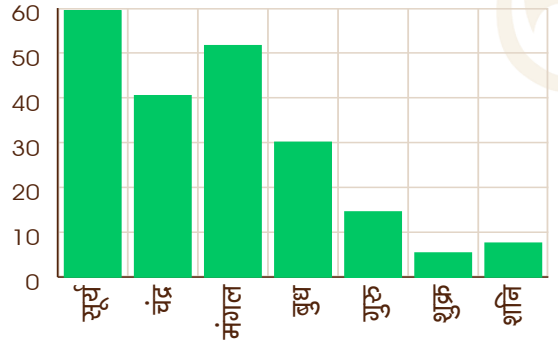

कालबल

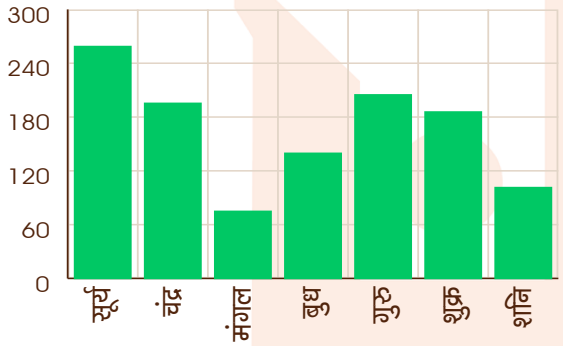

चेष्टाबल

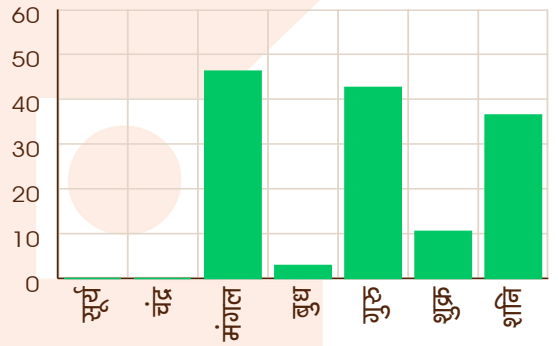

नैसर्गिक बल

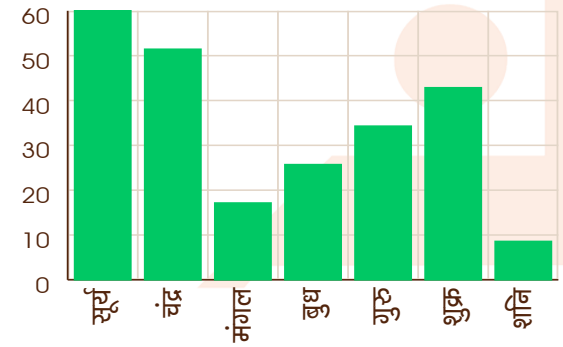

दृग्बल

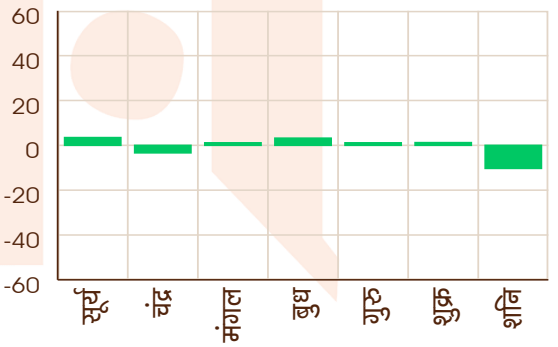

रूप षट्बल

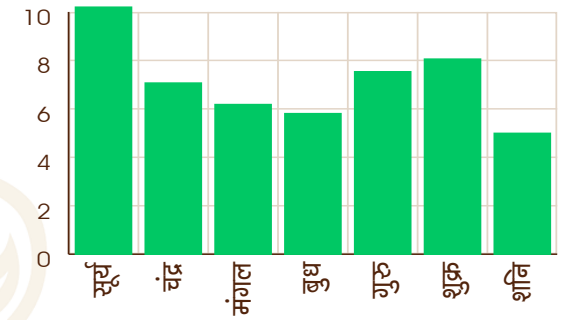

न्यूनतम षट्बल

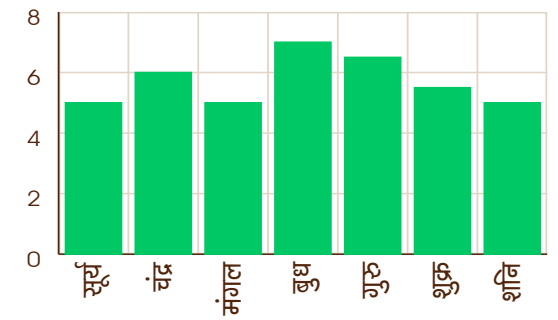

भाव बल ग्राफ

भावाधिपति बल

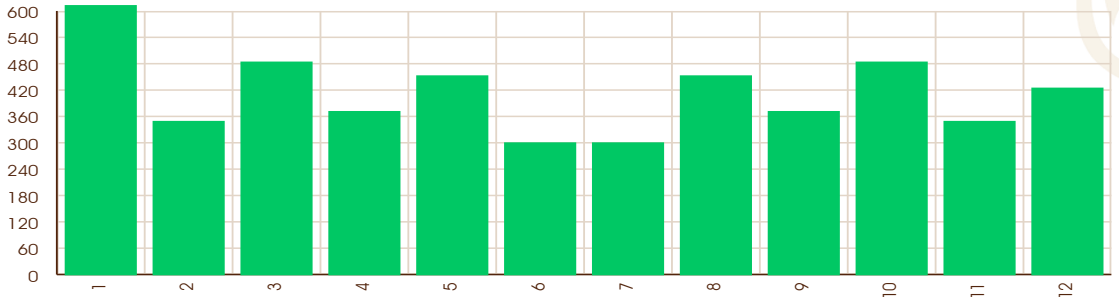

भावदिग्बल

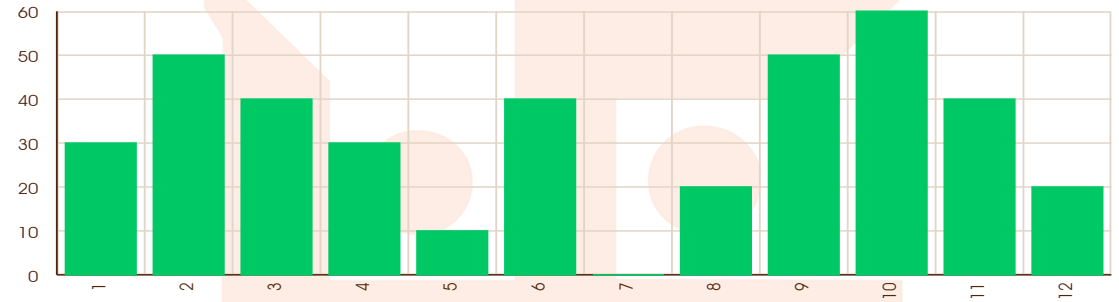

भावदृष्टि बल

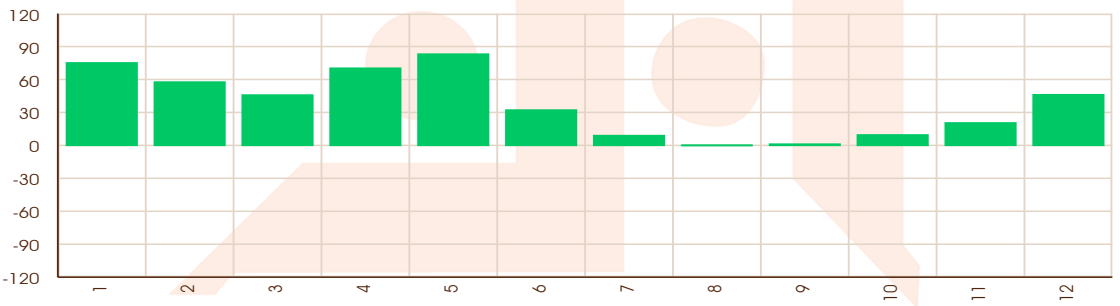

भाव बल

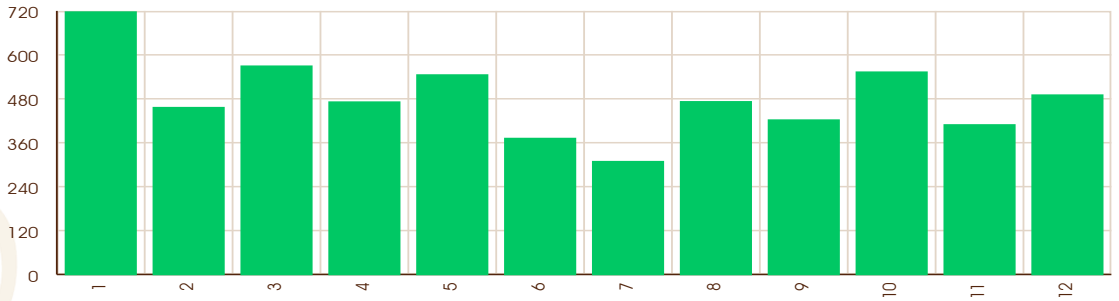

षट्बल तथा भावबल ग्राफ

रूप षट्बल

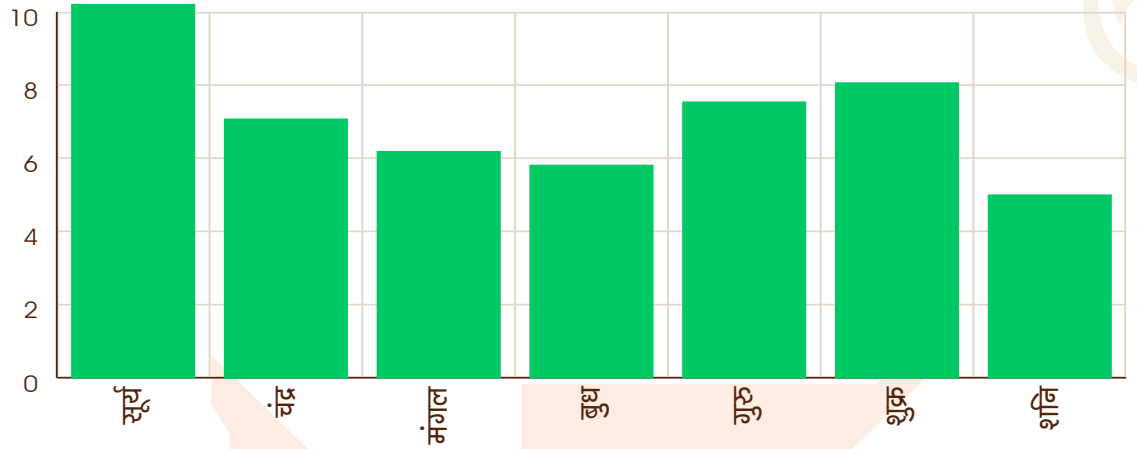

इष्ट - कष्ट फल

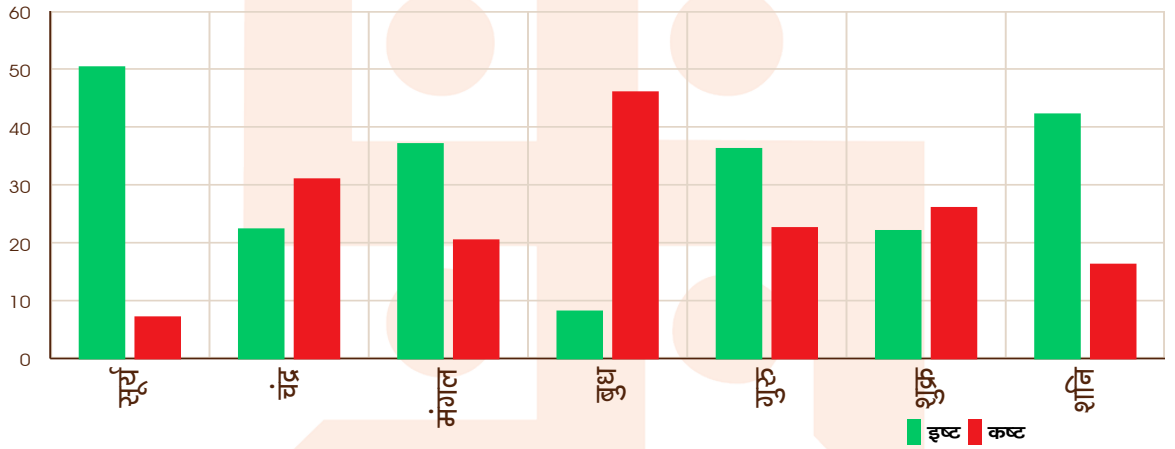

रूप भाव बल

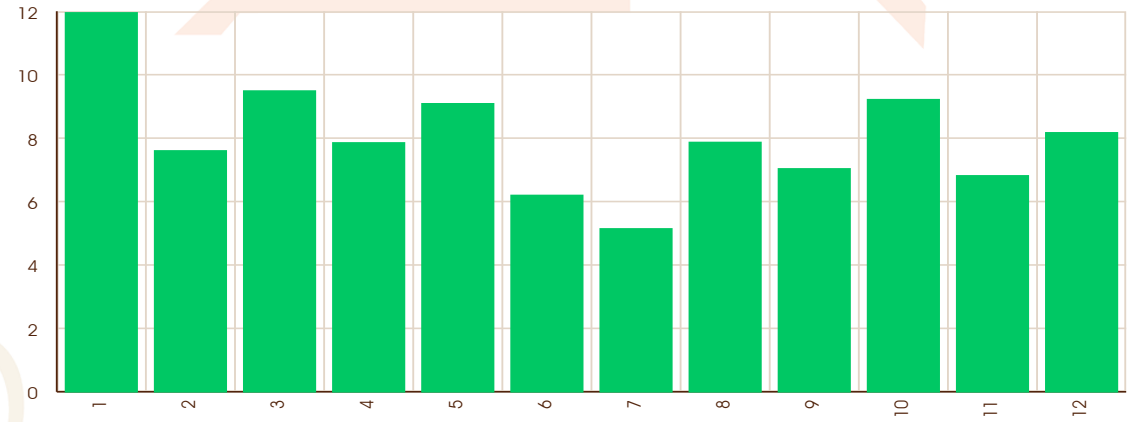

उपग्रह एवं आरूढ़

उपग्रह	संक्षि	राशि	अंश	उच्च	स्थिति	नक्षत्र	पद	नं.
लग्न	ल	सिंह	23:46:24	--	--	पू०फाल्गुनी	4	11
गुलिक	गु	मिथु	17:46:25	--	--	आर्द्रा	4	6
काल	का	कर्क	10:09:04	--	--	पुष्य	3	8
मृत्यु	मृ	सिंह	25:43:39	--	--	पू०फाल्गुनी	4	11
यमघंटक	यम	तुला	12:43:17	--	--	स्वाति	2	15
अर्द्धप्रहर	अर्द्ध	कन्या	19:32:56	--	--	हस्त	3	13
धूम	धू	तुला	09:21:21	--	--	स्वाति	1	15
व्यतिपात	व्य	कन्या	20:38:39	--	--	हस्त	4	13
परिवेश	परि	मीन	20:38:39	--	--	रेवती	2	27
इन्द्रचाप	इ	मेष	09:21:21	--	--	अश्विनी	3	1
उपकेतु	उप	मेष	26:01:21	--	--	भरणी	4	2

प्राणपद	:	मिथु	21:37:25	कारकाँश लग्न	:	मीन	24:51:01
भाव लग्न	:	कन्या	03:18:09	होरा लग्न	:	धनु	10:34:57
घटी लग्न	:	तुला	02:25:22	वर्णद लग्न	:	कुंभ	25:38:39

उपग्रह कुंडली

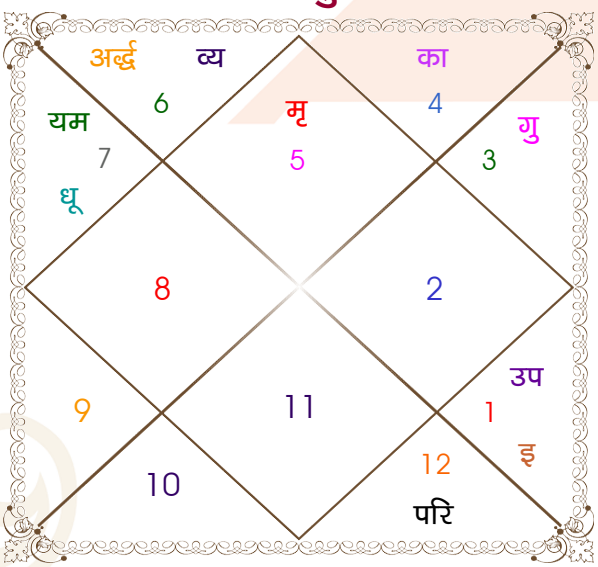

आरूढ़ कुंडली

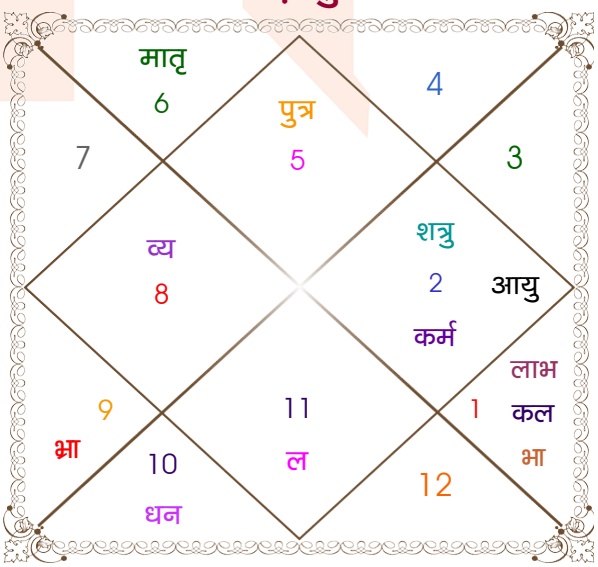

षन्नाडी चक्र

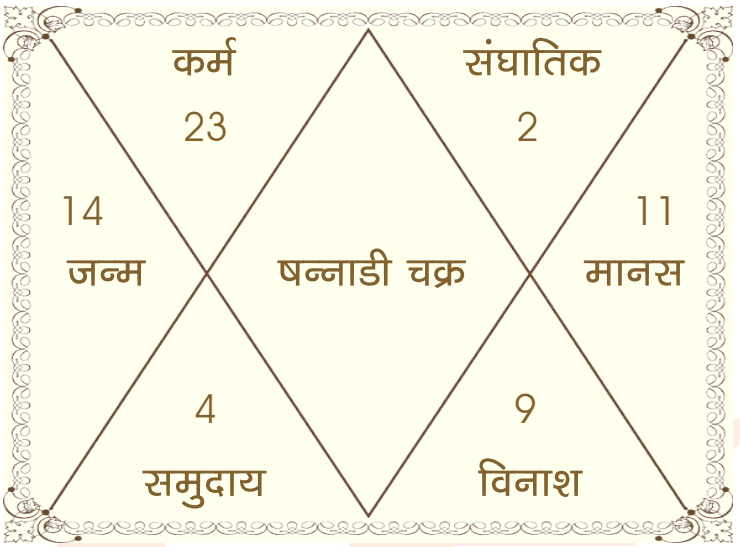

त्रिपाप चक्र

प्रथम चक्र	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
द्वितीय चक्र	37	38	39	40	41	42	43	44	45	46	47	48
तृतीय चक्र	73	74	75	76	77	78	79	80	81	82	83	84
केतु पताकी	मंगल	बुध	शनि	गुरु	राहु	केतु	शुक्र	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	शनि
केतु कुंडली	चंद्र	केतु	शुक्र	राहु	केतु	शनि	सूर्य	केतु	बुध	मंगल	केतु	गुरु
गुरु कुंडली	शुक्र	शनि	राहु	सूर्य	मंगल	केतु	चंद्र	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु
प्रथम चक्र	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24
द्वितीय चक्र	49	50	51	52	53	54	55	56	57	58	59	60
तृतीय चक्र	85	86	87	88	89	90	91	92	93	94	95	96
केतु पताकी	गुरु	राहु	केतु	शुक्र	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	शनि	गुरु	राहु	केतु
केतु कुंडली	चंद्र	केतु	शुक्र	राहु	केतु	शनि	सूर्य	केतु	बुध	मंगल	केतु	गुरु
गुरु कुंडली	सूर्य	मंगल	केतु	चंद्र	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	सूर्य	मंगल	केतु
प्रथम चक्र	25	26	27	28	29	30	31	32	33	34	35	36
द्वितीय चक्र	61	62	63	64	65	66	67	68	69	70	71	72
तृतीय चक्र	97	98	99	100	101	102	103	104	105	106	107	108
केतु पताकी	शुक्र	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	शनि	गुरु	राहु	केतु	शुक्र	सूर्य	चंद्र
केतु कुंडली	चंद्र	केतु	शुक्र	राहु	केतु	शनि	सूर्य	केतु	बुध	मंगल	केतु	गुरु
गुरु कुंडली	चंद्र	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	सूर्य	मंगल	केतु	चंद्र	बुध	गुरु

प्रस्ताराष्टकवर्ग सारिणी

सूर्य का अष्टकवर्ग

	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	मे	कुल
शनि	1	1	1	0	1	1	0	1	0	0	1	1	8
गुरु	0	0	0	1	1	0	0	1	0	1	0	0	4
मंगल	1	0	1	0	0	1	1	1	1	1	0	1	8
सूर्य	1	1	0	1	0	0	1	1	1	1	1	0	8
शुक्र	0	0	0	0	0	1	1	0	0	0	0	1	3
बुध	0	0	1	0	1	1	0	0	1	1	1	1	7
चंद्र	0	1	1	0	0	0	1	0	0	1	0	0	4
लग्न	1	1	1	0	0	1	1	0	1	0	0	0	6
कुल	4	4	5	2	3	5	5	4	4	5	3	4	48

चंद्र का अष्टकवर्ग

	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	र्क	सि	कुल
शनि	0	0	1	0	1	1	0	0	0	0	1	0	4
गुरु	0	1	1	0	1	1	0	1	1	0	1	0	7
मंगल	1	0	0	0	1	1	0	0	1	1	0	1	6
सूर्य	0	1	1	1	0	1	1	0	0	0	1	0	6
शुक्र	1	0	1	0	1	1	1	0	0	0	1	1	7
बुध	1	0	1	1	0	1	1	0	1	0	1	1	8
चंद्र	1	0	1	0	0	1	1	0	1	1	1	0	7
लग्न	0	1	0	0	1	0	0	0	1	1	0	0	4
कुल	4	3	6	2	5	7	4	1	5	3	6	3	49

मंगल का अष्टकवर्ग

	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	कुल
शनि	1	1	1	1	0	1	0	0	1	0	0	1	7
गुरु	0	0	0	0	0	1	0	0	0	1	1	1	4
मंगल	1	1	0	1	0	0	1	1	0	1	1	0	7
सूर्य	0	0	0	1	0	1	1	0	0	0	1	1	5
शुक्र	1	0	0	0	0	0	1	0	1	0	0	1	4
बुध	0	0	0	1	0	1	1	0	0	0	0	1	4
चंद्र	0	0	0	1	0	0	0	1	0	0	1	0	3
लग्न	0	1	1	0	1	0	1	0	0	1	0	0	5
कुल	3	3	2	5	1	4	5	2	2	3	4	5	39

बुध का अष्टकवर्ग

	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	मे	कुल
शनि	1	1	1	0	1	1	0	1	0	0	1	1	8
गुरु	0	0	0	0	1	0	1	0	0	1	1	0	4
मंगल	1	0	1	0	0	1	1	1	1	1	0	1	8
सूर्य	0	0	0	0	1	1	0	0	1	0	1	1	5
शुक्र	1	1	1	1	1	0	0	1	1	0	1	0	8
बुध	1	0	1	0	1	1	0	0	1	1	1	1	8
चंद्र	0	1	1	0	0	1	0	1	0	1	0	1	6
लग्न	1	1	0	1	1	0	1	0	1	0	1	0	7
कुल	5	4	5	2	6	5	3	4	5	4	6	5	54

गुरु का अष्टकवर्ग

	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	कुल
शनि	0	0	0	0	1	0	0	1	0	1	1	0	4
गुरु	1	1	1	1	0	0	1	1	0	1	1	0	8
मंगल	1	1	0	1	0	0	1	1	0	1	1	0	7
सूर्य	0	1	1	1	1	0	0	1	1	1	1	1	9
शुक्र	0	0	1	0	0	1	1	0	0	1	1	1	6
बुध	0	1	1	0	1	1	1	0	0	1	1	1	8
चंद्र	0	1	0	1	0	0	1	0	0	1	0	1	5
लग्न	1	1	1	0	1	1	0	1	1	1	1	0	9
कुल	3	6	5	4	4	3	5	5	2	8	7	4	56

शुक्र का अष्टकवर्ग

	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	मे	कुल
शनि	1	1	1	0	0	0	1	1	1	0	0	1	7
गुरु	0	0	0	1	0	0	1	1	1	1	0	0	5
मंगल	0	1	1	0	1	0	0	1	0	1	1	0	6
सूर्य	0	0	0	0	0	0	0	1	0	0	1	1	3
शुक्र	1	1	1	1	1	0	0	1	1	1	1	0	9
बुध	0	0	1	0	1	1	0	0	1	0	1	0	5
चंद्र	1	0	1	1	1	1	1	1	1	0	0	1	9
लग्न	0	1	0	1	1	1	1	1	0	0	1	1	8
कुल	3	4	5	4	5	3	4	7	5	3	5	4	52

शनि का अष्टकवर्ग

	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	र्क	सि	कुल
शनि	0	0	1	0	1	1	0	0	0	0	1	0	4
गुरु	1	0	0	0	0	1	1	0	0	0	0	1	4
मंगल	1	0	0	0	1	1	1	0	0	1	0	1	6
सूर्य	0	0	1	1	0	1	1	0	1	1	0	1	7
शुक्र	0	1	0	0	0	0	1	1	0	0	0	0	3
बुध	0	1	0	1	1	1	1	1	0	0	0	0	6
चंद्र	0	0	1	0	0	1	0	0	0	0	1	0	3
लग्न	0	1	1	0	1	0	0	0	1	1	0	1	6
कुल	2	3	4	2	4	6	5	2	2	3	2	4	39

लग्न का अष्टकवर्ग

	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	र्क	कुल
शनि	0	1	0	1	1	0	1	0	0	0	1	1	6
गुरु	1	1	1	0	1	1	1	0	1	1	0	1	9
मंगल	0	1	0	0	0	1	1	0	1	0	1	0	5
सूर्य	1	0	1	0	0	0	1	1	1	0	0	1	6
शुक्र	1	1	0	0	1	1	0	0	0	1	1	1	7
बुध	1	0	1	0	1	0	1	1	0	1	1	0	7
चंद्र	1	0	0	1	0	0	1	0	0	0	1	1	5
लग्न	0	0	1	0	0	1	0	0	0	1	1	0	4
कुल	5	4	4	2	4	4	6	2	3	4	6	5	49

अष्टकवर्ग सारिणी

सर्वाष्टकवर्ग सारिणी

	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृशि	ध	म	कुं	मी	कुल
शनि	2	2	3	2	4	2	3	4	2	4	6	5	39
गुरु	3	6	5	4	4	3	5	5	2	8	7	4	56
मंगल	3	3	2	5	1	4	5	2	2	3	4	5	39
सूर्य	4	4	4	5	2	3	5	5	4	4	5	3	48
शुक्र	4	3	4	5	4	5	3	4	7	5	3	5	52
बुध	5	5	4	5	2	6	5	3	4	5	4	6	54
चंद्र	1	5	3	6	3	4	3	6	2	5	7	4	49
बिन्दु	22	28	25	32	20	27	29	29	23	34	36	32	337
रेखा	34	28	31	24	36	29	27	27	33	22	20	24	335

त्रिकोण शोधन के पश्चात अष्टकवर्ग सारिणी

	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृशि	ध	म	कुं	मी	कुल
शनि	0	0	0	0	2	0	0	2	0	2	3	3	12
गुरु	1	3	0	0	2	0	0	1	0	5	2	0	14
मंगल	2	0	0	3	0	1	3	0	1	0	2	3	15
सूर्य	2	1	0	2	0	0	1	2	2	1	1	0	12
शुक्र	0	0	1	1	0	2	0	0	3	2	0	1	10
बुध	3	0	0	2	0	1	1	0	2	0	0	3	12
चंद्र	0	1	0	2	2	0	0	2	1	1	4	0	13
रेखा	8	5	1	10	6	4	5	7	9	11	12	10	88

एकाधिपत्य शोधन के पश्चात अष्टकवर्ग सारिणी

	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृशि	ध	म	कुं	मी	कुल
शनि	0	0	0	0	2	0	0	2	0	2	1	3	10
गुरु	1	3	0	0	2	0	0	0	0	3	2	0	11
मंगल	2	0	0	3	0	1	3	0	1	0	2	2	14
सूर्य	2	1	0	2	0	0	0	0	2	0	0	0	7
शुक्र	0	0	0	1	0	2	0	0	2	2	0	1	8
बुध	3	0	0	2	0	1	1	0	2	0	0	1	10
चंद्र	0	1	0	2	2	0	0	2	1	1	3	0	12
रेखा	8	5	0	10	6	4	4	4	8	8	8	7	72

शोध्य पिंड

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
राशि पिंड	50	101	107	71	94	54	93
ग्रह पिंड	53	17	46	64	69	20	0
शोध्य पिंड	103	118	153	135	163	74	93

अष्टकवर्ग सारिणी

सर्वाष्टकवर्ग

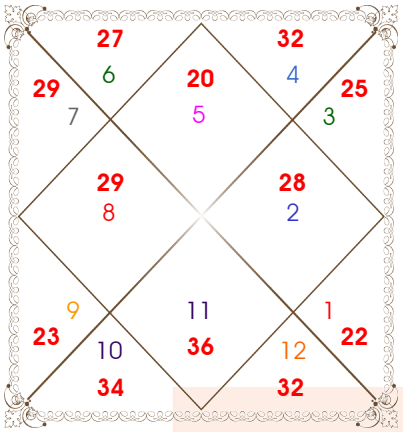

सूर्य का अष्टकवर्ग

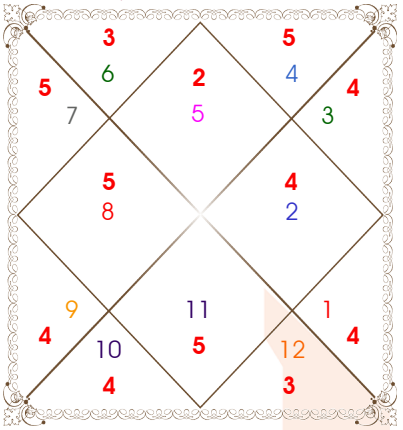

चंद्र का अष्टकवर्ग

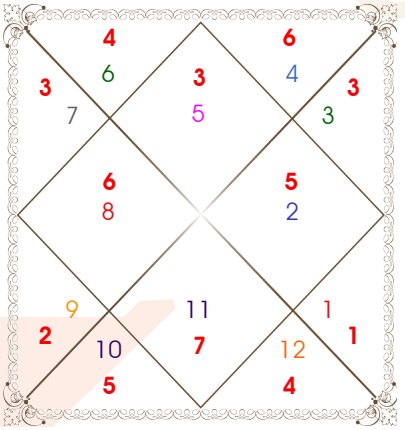

मंगल का अष्टकवर्ग

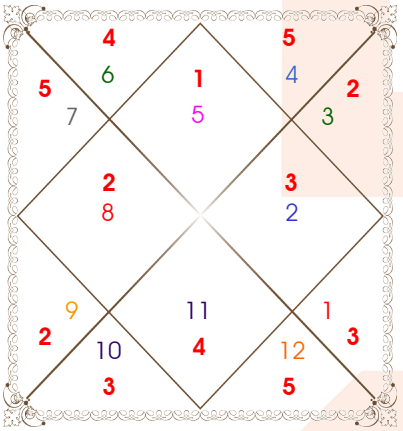

बुध का अष्टकवर्ग

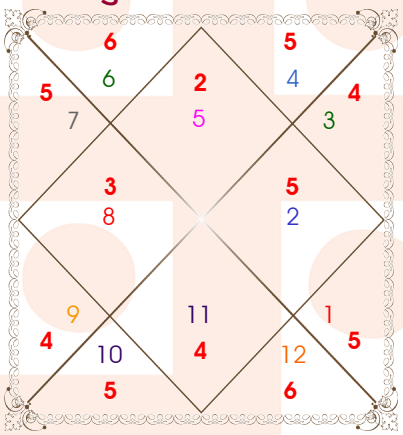

गुरू का अष्टकवर्ग

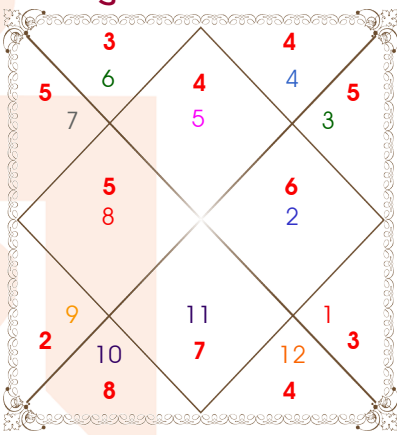

शुक्र का अष्टकवर्ग

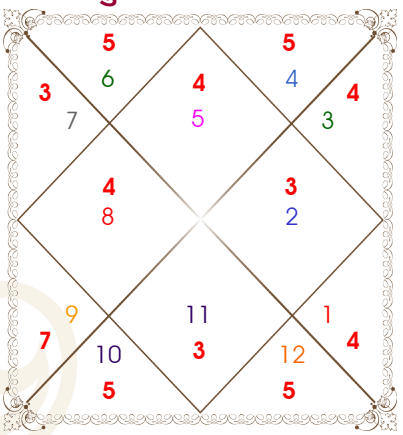

शनि का अष्टकवर्ग

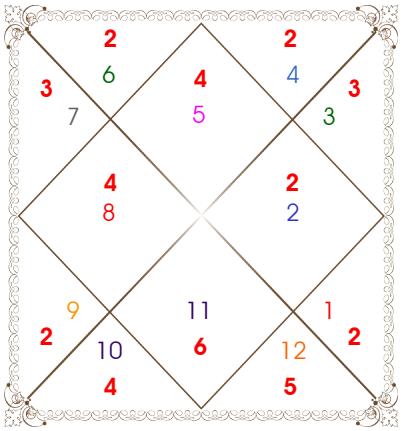

लग्न का अष्टकवर्ग

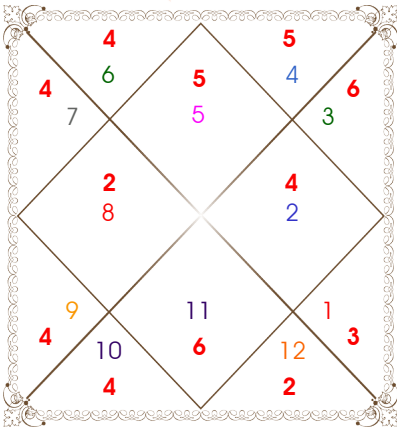

भिन्नाष्टक ग्राफ

सूर्य

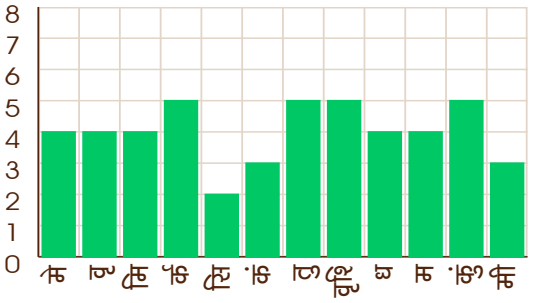

चन्द्र

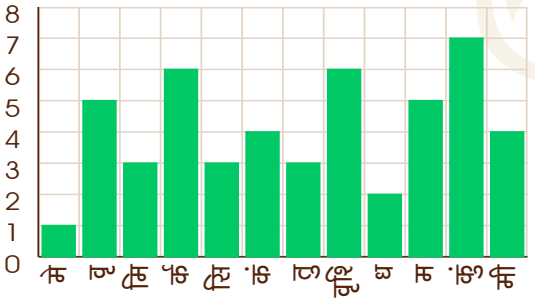

मंगल

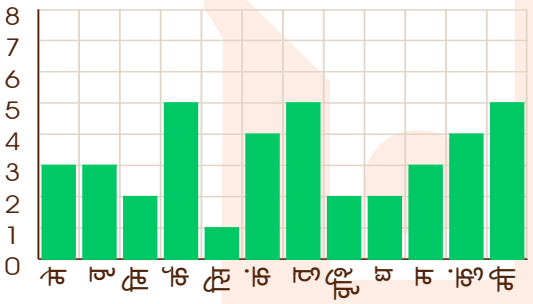

बुध

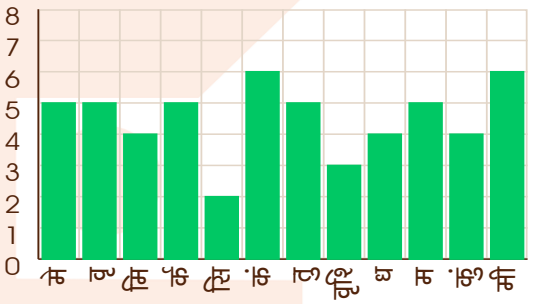

गुरु

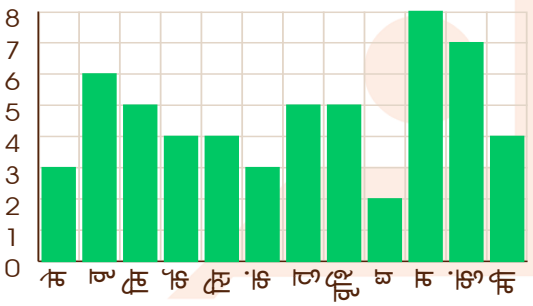

शुक्र

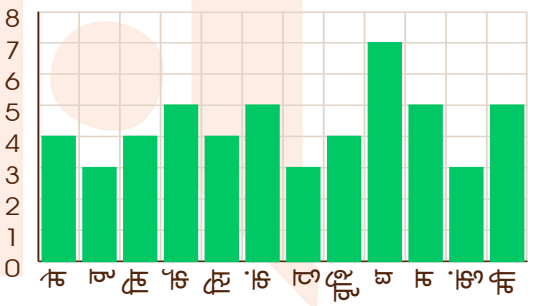

शनि

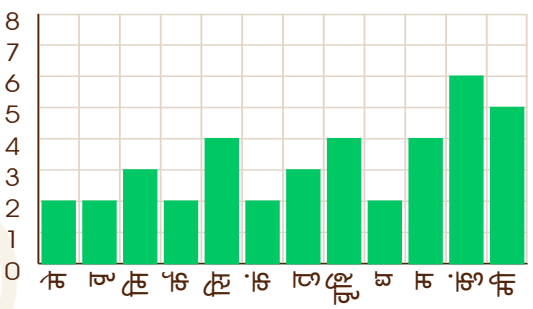

लग्न

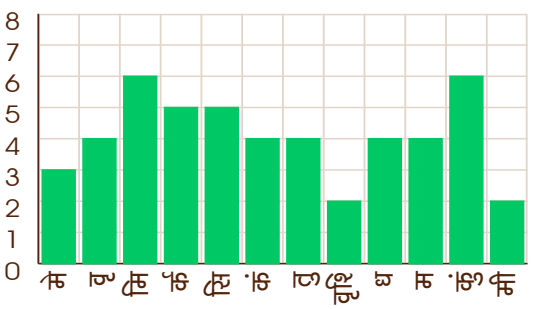

अष्टकवर्ग ग्राफ

सर्वाष्टकवर्ग

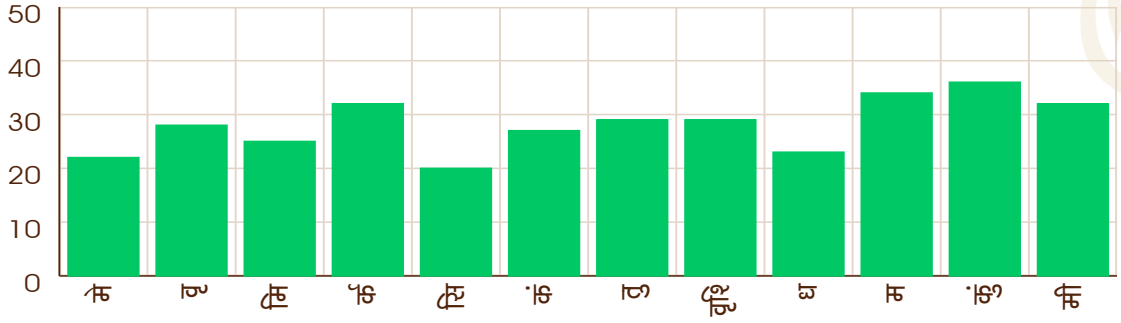

त्रिकोण शोधन के पश्चात अष्टकवर्ग

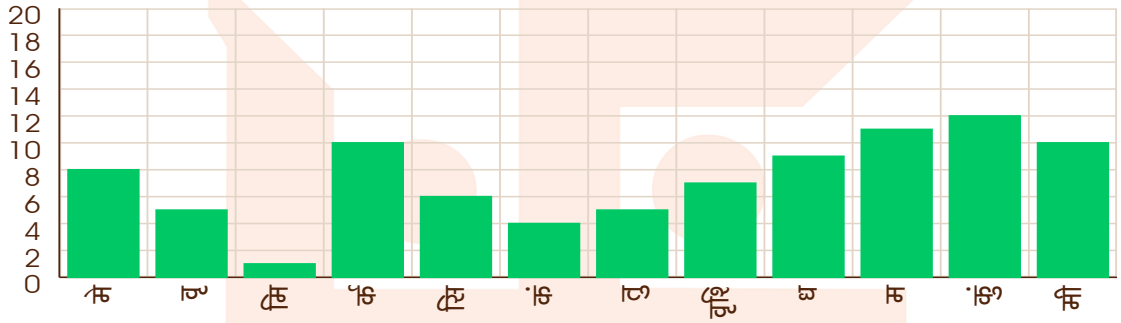

एकाधिपत्य शोधन के पश्चात अष्टकवर्ग

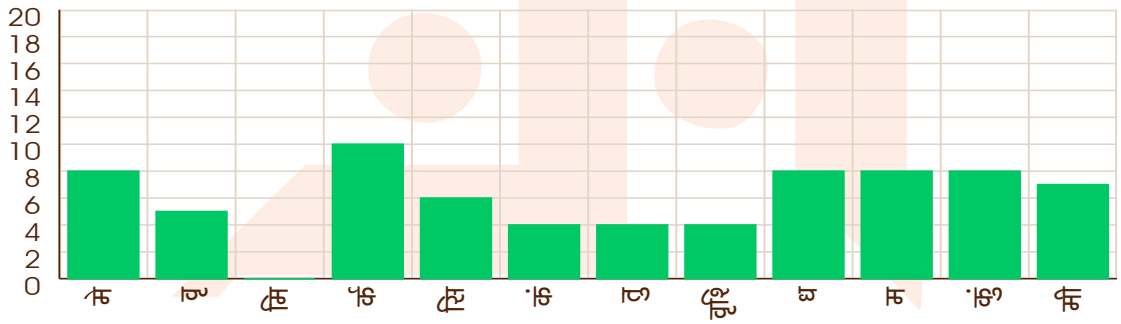

शोध्य पिंड

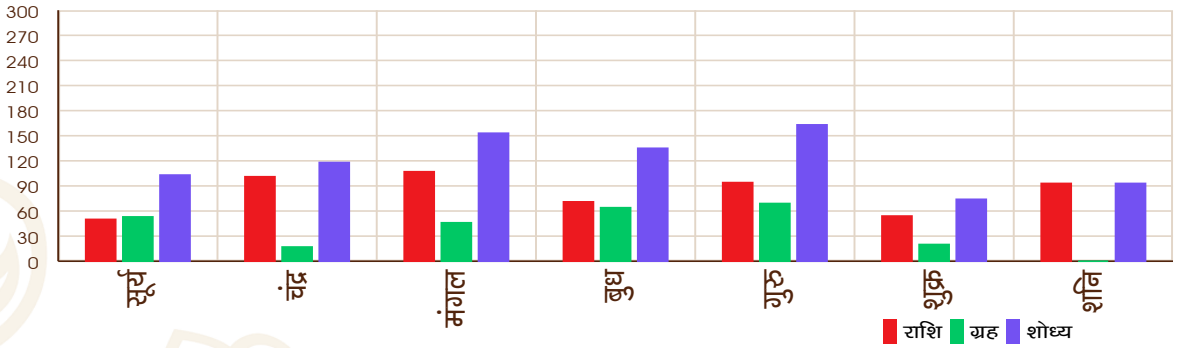

विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : मंगल 5 वर्ष 10 मास 25 दिन

मंगल 7 वर्ष		राहु 18 वर्ष		गुरु 16 वर्ष		शनि 19 वर्ष		बुध 17 वर्ष	
11/06/2011		06/05/2017		06/05/2035		06/05/2051		06/05/2070	
06/05/2017		06/05/2035		06/05/2051		06/05/2070		06/05/2087	
	11/06/2011	राहु	17/01/2020	गुरु	23/06/2037	शनि	09/05/2054	बुध	02/10/2072
राहु	21/10/2011	गुरु	11/06/2022	शनि	05/01/2040	बुध	16/01/2057	केतु	29/09/2073
गुरु	26/09/2012	शनि	17/04/2025	बुध	12/04/2042	केतु	25/02/2058	शुक्र	30/07/2076
शनि	04/11/2013	बुध	05/11/2027	केतु	19/03/2043	शुक्र	27/04/2061	सूर्य	05/06/2077
बुध	02/11/2014	केतु	22/11/2028	शुक्र	17/11/2045	सूर्य	09/04/2062	चंद्र	05/11/2078
केतु	31/03/2015	शुक्र	23/11/2031	सूर्य	05/09/2046	चंद्र	08/11/2063	मंगल	02/11/2079
शुक्र	30/05/2016	सूर्य	17/10/2032	चंद्र	05/01/2048	मंगल	17/12/2064	राहु	21/05/2082
सूर्य	05/10/2016	चंद्र	18/04/2034	मंगल	11/12/2048	राहु	24/10/2067	गुरु	26/08/2084
चंद्र	06/05/2017	मंगल	06/05/2035	राहु	06/05/2051	गुरु	06/05/2070	शनि	06/05/2087

केतु 7 वर्ष		शुक्र 20 वर्ष		सूर्य 6 वर्ष		चंद्र 10 वर्ष		मंगल 7 वर्ष	
06/05/2087		06/05/2094		07/05/2114		06/05/2120		07/05/2130	
06/05/2094		07/05/2114		06/05/2120		07/05/2130		00/00/0000	
केतु	02/10/2087	शुक्र	04/09/2097	सूर्य	25/08/2114	चंद्र	07/03/2121	मंगल	03/10/2130
शुक्र	01/12/2088	सूर्य	05/09/2098	चंद्र	23/02/2115	मंगल	06/10/2121	राहु	12/06/2131
सूर्य	08/04/2089	चंद्र	06/05/2100	मंगल	01/07/2115	राहु	07/04/2123		00/00/0000
चंद्र	07/11/2089	मंगल	07/07/2101	राहु	25/05/2116	गुरु	06/08/2124		00/00/0000
मंगल	06/04/2090	राहु	06/07/2104	गुरु	13/03/2117	शनि	07/03/2126		00/00/0000
राहु	24/04/2091	गुरु	07/03/2107	शनि	23/02/2118	बुध	07/08/2127		00/00/0000
गुरु	30/03/2092	शनि	07/05/2110	बुध	30/12/2118	केतु	07/03/2128		00/00/0000
शनि	09/05/2093	बुध	07/03/2113	केतु	07/05/2119	शुक्र	05/11/2129		00/00/0000
बुध	06/05/2094	केतु	07/05/2114	शुक्र	06/05/2120	सूर्य	07/05/2130		00/00/0000

- उपरोक्त दशा चंद्रमा के अंशो के आधार पर दी गई है। भयात भभोग के आधार पर दशा का भोग्यकाल मंगल 5 वर्ष 10 मा 24 दि होता है।
- उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं। विंशोत्तरी दशा पूरे 120 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

मंगल - राहु		मंगल - गुरु		मंगल - शनि		मंगल - बुध		मंगल - केतु	
11/06/2011		21/10/2011		26/09/2012		04/11/2013		02/11/2014	
21/10/2011		26/09/2012		04/11/2013		02/11/2014		31/03/2015	
	00/00/0000	गुरु	05/12/2011	शनि	29/11/2012	बुध	26/12/2013	केतु	10/11/2014
	00/00/0000	शनि	28/01/2012	बुध	25/01/2013	केतु	16/01/2014	शुक्र	05/12/2014
	00/00/0000	बुध	16/03/2012	केतु	18/02/2013	शुक्र	17/03/2014	सूर्य	13/12/2014
	00/00/0000	केतु	05/04/2012	शुक्र	26/04/2013	सूर्य	04/04/2014	चंद्र	25/12/2014
	11/06/2011	शुक्र	01/06/2012	सूर्य	16/05/2013	चंद्र	04/05/2014	मंगल	03/01/2015
शुक्र	08/08/2011	सूर्य	18/06/2012	चंद्र	19/06/2013	मंगल	26/05/2014	राहु	25/01/2015
सूर्य	27/08/2011	चंद्र	17/07/2012	मंगल	13/07/2013	राहु	19/07/2014	गुरु	14/02/2015
चंद्र	28/09/2011	मंगल	05/08/2012	राहु	11/09/2013	गुरु	05/09/2014	शनि	10/03/2015
मंगल	21/10/2011	राहु	26/09/2012	गुरु	04/11/2013	शनि	02/11/2014	बुध	31/03/2015

मंगल - शुक्र		मंगल - सूर्य		मंगल - चंद्र		राहु - राहु		राहु - गुरु	
31/03/2015		30/05/2016		05/10/2016		06/05/2017		17/01/2020	
30/05/2016		05/10/2016		06/05/2017		17/01/2020		11/06/2022	
शुक्र	10/06/2015	सूर्य	05/06/2016	चंद्र	22/10/2016	राहु	01/10/2017	गुरु	13/05/2020
सूर्य	01/07/2015	चंद्र	16/06/2016	मंगल	04/11/2016	गुरु	09/02/2018	शनि	29/09/2020
चंद्र	06/08/2015	मंगल	23/06/2016	राहु	06/12/2016	शनि	15/07/2018	बुध	31/01/2021
मंगल	30/08/2015	राहु	12/07/2016	गुरु	03/01/2017	बुध	02/12/2018	केतु	23/03/2021
राहु	02/11/2015	गुरु	30/07/2016	शनि	06/02/2017	केतु	29/01/2019	शुक्र	16/08/2021
गुरु	29/12/2015	शनि	19/08/2016	बुध	08/03/2017	शुक्र	12/07/2019	सूर्य	29/09/2021
शनि	06/03/2016	बुध	06/09/2016	केतु	21/03/2017	सूर्य	30/08/2019	चंद्र	11/12/2021
बुध	05/05/2016	केतु	13/09/2016	शुक्र	25/04/2017	चंद्र	20/11/2019	मंगल	31/01/2022
केतु	30/05/2016	शुक्र	05/10/2016	सूर्य	06/05/2017	मंगल	17/01/2020	राहु	11/06/2022

राहु - शनि		राहु - बुध		राहु - केतु		राहु - शुक्र		राहु - सूर्य	
11/06/2022		17/04/2025		05/11/2027		22/11/2028		23/11/2031	
17/04/2025		05/11/2027		22/11/2028		23/11/2031		17/10/2032	
शनि	23/11/2022	बुध	27/08/2025	केतु	27/11/2027	शुक्र	24/05/2029	सूर्य	10/12/2031
बुध	20/04/2023	केतु	21/10/2025	शुक्र	30/01/2028	सूर्य	18/07/2029	चंद्र	06/01/2032
केतु	20/06/2023	शुक्र	25/03/2026	सूर्य	18/02/2028	चंद्र	17/10/2029	मंगल	25/01/2032
शुक्र	10/12/2023	सूर्य	11/05/2026	चंद्र	21/03/2028	मंगल	20/12/2029	राहु	14/03/2032
सूर्य	31/01/2024	चंद्र	27/07/2026	मंगल	13/04/2028	राहु	02/06/2030	गुरु	27/04/2032
चंद्र	27/04/2024	मंगल	19/09/2026	राहु	09/06/2028	गुरु	26/10/2030	शनि	18/06/2032
मंगल	27/06/2024	राहु	06/02/2027	गुरु	30/07/2028	शनि	18/04/2031	बुध	04/08/2032
राहु	30/11/2024	गुरु	10/06/2027	शनि	29/09/2028	बुध	20/09/2031	केतु	23/08/2032
गुरु	17/04/2025	शनि	05/11/2027	बुध	22/11/2028	केतु	23/11/2031	शुक्र	17/10/2032

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

राहु - चंद्र		राहु - मंगल		गुरु - गुरु		गुरु - शनि		गुरु - बुध	
17/10/2032		18/04/2034		06/05/2035		23/06/2037		05/01/2040	
18/04/2034		06/05/2035		23/06/2037		05/01/2040		12/04/2042	
चंद्र	01/12/2032	मंगल	10/05/2034	गुरु	18/08/2035	शनि	17/11/2037	बुध	01/05/2040
मंगल	02/01/2033	राहु	07/07/2034	शनि	19/12/2035	बुध	28/03/2038	केतु	18/06/2040
राहु	26/03/2033	गुरु	27/08/2034	बुध	08/04/2036	केतु	21/05/2038	शुक्र	03/11/2040
गुरु	07/06/2033	शनि	26/10/2034	केतु	23/05/2036	शुक्र	22/10/2038	सूर्य	15/12/2040
शनि	01/09/2033	बुध	20/12/2034	शुक्र	30/09/2036	सूर्य	07/12/2038	चंद्र	22/02/2041
बुध	18/11/2033	केतु	11/01/2035	सूर्य	08/11/2036	चंद्र	23/02/2039	मंगल	11/04/2041
केतु	20/12/2033	शुक्र	16/03/2035	चंद्र	12/01/2037	मंगल	18/04/2039	राहु	13/08/2041
शुक्र	21/03/2034	सूर्य	04/04/2035	मंगल	27/02/2037	राहु	03/09/2039	गुरु	02/12/2041
सूर्य	18/04/2034	चंद्र	06/05/2035	राहु	23/06/2037	गुरु	05/01/2040	शनि	12/04/2042

गुरु - केतु		गुरु - शुक्र		गुरु - सूर्य		गुरु - चंद्र		गुरु - मंगल	
12/04/2042		19/03/2043		17/11/2045		05/09/2046		05/01/2048	
19/03/2043		17/11/2045		05/09/2046		05/01/2048		11/12/2048	
केतु	02/05/2042	शुक्र	28/08/2043	सूर्य	01/12/2045	चंद्र	15/10/2046	मंगल	25/01/2048
शुक्र	27/06/2042	सूर्य	16/10/2043	चंद्र	25/12/2045	मंगल	13/11/2046	राहु	16/03/2048
सूर्य	14/07/2042	चंद्र	05/01/2044	मंगल	12/01/2046	राहु	25/01/2047	गुरु	30/04/2048
चंद्र	12/08/2042	मंगल	02/03/2044	राहु	24/02/2046	गुरु	31/03/2047	शनि	23/06/2048
मंगल	01/09/2042	राहु	26/07/2044	गुरु	04/04/2046	शनि	16/06/2047	बुध	10/08/2048
राहु	22/10/2042	गुरु	02/12/2044	शनि	21/05/2046	बुध	24/08/2047	केतु	30/08/2048
गुरु	06/12/2042	शनि	06/05/2045	बुध	01/07/2046	केतु	21/09/2047	शुक्र	26/10/2048
शनि	29/01/2043	बुध	21/09/2045	केतु	18/07/2046	शुक्र	11/12/2047	सूर्य	12/11/2048
बुध	19/03/2043	केतु	17/11/2045	शुक्र	05/09/2046	सूर्य	05/01/2048	चंद्र	11/12/2048

गुरु - राहु		शनि - शनि		शनि - बुध		शनि - केतु		शनि - शुक्र	
11/12/2048		06/05/2051		09/05/2054		16/01/2057		25/02/2058	
06/05/2051		09/05/2054		16/01/2057		25/02/2058		27/04/2061	
राहु	21/04/2049	शनि	27/10/2051	बुध	25/09/2054	केतु	09/02/2057	शुक्र	06/09/2058
गुरु	16/08/2049	बुध	31/03/2052	केतु	22/11/2054	शुक्र	17/04/2057	सूर्य	03/11/2058
शनि	02/01/2050	केतु	03/06/2052	शुक्र	04/05/2055	सूर्य	07/05/2057	चंद्र	07/02/2059
बुध	06/05/2050	शुक्र	03/12/2052	सूर्य	23/06/2055	चंद्र	10/06/2057	मंगल	15/04/2059
केतु	26/06/2050	सूर्य	27/01/2053	चंद्र	13/09/2055	मंगल	04/07/2057	राहु	06/10/2059
शुक्र	19/11/2050	चंद्र	29/04/2053	मंगल	09/11/2055	राहु	03/09/2057	गुरु	08/03/2060
सूर्य	02/01/2051	मंगल	02/07/2053	राहु	04/04/2056	गुरु	27/10/2057	शनि	07/09/2060
चंद्र	16/03/2051	राहु	14/12/2053	गुरु	13/08/2056	शनि	30/12/2057	बुध	18/02/2061
मंगल	06/05/2051	गुरु	09/05/2054	शनि	16/01/2057	बुध	25/02/2058	केतु	27/04/2061

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

शनि - सूर्य		शनि - चंद्र		शनि - मंगल		शनि - राहु		शनि - गुरु	
27/04/2061		09/04/2062		08/11/2063		17/12/2064		24/10/2067	
09/04/2062		08/11/2063		17/12/2064		24/10/2067		06/05/2070	
सूर्य	14/05/2061	चंद्र	27/05/2062	मंगल	01/12/2063	राहु	22/05/2065	गुरु	24/02/2068
चंद्र	12/06/2061	मंगल	29/06/2062	राहु	31/01/2064	गुरु	08/10/2065	शनि	20/07/2068
मंगल	02/07/2061	राहु	24/09/2062	गुरु	25/03/2064	शनि	21/03/2066	बुध	28/11/2068
राहु	23/08/2061	गुरु	10/12/2062	शनि	28/05/2064	बुध	16/08/2066	केतु	21/01/2069
गुरु	08/10/2061	शनि	12/03/2063	बुध	25/07/2064	केतु	16/10/2066	शुक्र	24/06/2069
शनि	02/12/2061	बुध	02/06/2063	केतु	17/08/2064	शुक्र	07/04/2067	सूर्य	09/08/2069
बुध	20/01/2062	केतु	06/07/2063	शुक्र	24/10/2064	सूर्य	29/05/2067	चंद्र	25/10/2069
केतु	10/02/2062	शुक्र	10/10/2063	सूर्य	13/11/2064	चंद्र	24/08/2067	मंगल	18/12/2069
शुक्र	09/04/2062	सूर्य	08/11/2063	चंद्र	17/12/2064	मंगल	24/10/2067	राहु	06/05/2070

बुध - बुध		बुध - केतु		बुध - शुक्र		बुध - सूर्य		बुध - चंद्र	
06/05/2070		02/10/2072		29/09/2073		30/07/2076		05/06/2077	
02/10/2072		29/09/2073		30/07/2076		05/06/2077		05/11/2078	
बुध	08/09/2070	केतु	23/10/2072	शुक्र	20/03/2074	सूर्य	14/08/2076	चंद्र	18/07/2077
केतु	29/10/2070	शुक्र	22/12/2072	सूर्य	11/05/2074	चंद्र	09/09/2076	मंगल	17/08/2077
शुक्र	25/03/2071	सूर्य	09/01/2073	चंद्र	05/08/2074	मंगल	27/09/2076	राहु	03/11/2077
सूर्य	07/05/2071	चंद्र	08/02/2073	मंगल	05/10/2074	राहु	13/11/2076	गुरु	11/01/2078
चंद्र	20/07/2071	मंगल	02/03/2073	राहु	09/03/2075	गुरु	24/12/2076	शनि	03/04/2078
मंगल	09/09/2071	राहु	25/04/2073	गुरु	25/07/2075	शनि	11/02/2077	बुध	15/06/2078
राहु	19/01/2072	गुरु	12/06/2073	शनि	05/01/2076	बुध	27/03/2077	केतु	15/07/2078
गुरु	15/05/2072	शनि	09/08/2073	बुध	30/05/2076	केतु	14/04/2077	शुक्र	10/10/2078
शनि	02/10/2072	बुध	29/09/2073	केतु	30/07/2076	शुक्र	05/06/2077	सूर्य	05/11/2078

बुध - मंगल		बुध - राहु		बुध - गुरु		बुध - शनि		केतु - केतु	
05/11/2078		02/11/2079		21/05/2082		26/08/2084		06/05/2087	
02/11/2079		21/05/2082		26/08/2084		06/05/2087		02/10/2087	
मंगल	26/11/2078	राहु	21/03/2080	गुरु	09/09/2082	शनि	29/01/2085	केतु	15/05/2087
राहु	19/01/2079	गुरु	23/07/2080	शनि	18/01/2083	बुध	17/06/2085	शुक्र	09/06/2087
गुरु	08/03/2079	शनि	17/12/2080	बुध	15/05/2083	केतु	13/08/2085	सूर्य	16/06/2087
शनि	05/05/2079	बुध	28/04/2081	केतु	02/07/2083	शुक्र	24/01/2086	चंद्र	29/06/2087
बुध	25/06/2079	केतु	21/06/2081	शुक्र	17/11/2083	सूर्य	14/03/2086	मंगल	07/07/2087
केतु	16/07/2079	शुक्र	24/11/2081	सूर्य	29/12/2083	चंद्र	04/06/2086	राहु	30/07/2087
शुक्र	15/09/2079	सूर्य	09/01/2082	चंद्र	07/03/2084	मंगल	01/08/2086	गुरु	19/08/2087
सूर्य	03/10/2079	चंद्र	28/03/2082	मंगल	24/04/2084	राहु	26/12/2086	शनि	11/09/2087
चंद्र	02/11/2079	मंगल	21/05/2082	राहु	26/08/2084	गुरु	06/05/2087	बुध	02/10/2087

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

केतु - शुक्र		केतु - सूर्य		केतु - चंद्र		केतु - मंगल		केतु - राहु	
02/10/2087		01/12/2088		08/04/2089		07/11/2089		06/04/2090	
01/12/2088		08/04/2089		07/11/2089		06/04/2090		24/04/2091	
शुक्र	12/12/2087	सूर्य	08/12/2088	चंद्र	26/04/2089	मंगल	16/11/2089	राहु	02/06/2090
सूर्य	03/01/2088	चंद्र	19/12/2088	मंगल	09/05/2089	राहु	08/12/2089	गुरु	23/07/2090
चंद्र	07/02/2088	मंगल	26/12/2088	राहु	09/06/2089	गुरु	28/12/2089	शनि	22/09/2090
मंगल	03/03/2088	राहु	14/01/2089	गुरु	08/07/2089	शनि	21/01/2090	बुध	15/11/2090
राहु	06/05/2088	गुरु	31/01/2089	शनि	11/08/2089	बुध	11/02/2090	केतु	08/12/2090
गुरु	02/07/2088	शनि	20/02/2089	बुध	10/09/2089	केतु	20/02/2090	शुक्र	10/02/2091
शनि	07/09/2088	बुध	11/03/2089	केतु	22/09/2089	शुक्र	17/03/2090	सूर्य	01/03/2091
बुध	07/11/2088	केतु	18/03/2089	शुक्र	28/10/2089	सूर्य	24/03/2090	चंद्र	02/04/2091
केतु	01/12/2088	शुक्र	08/04/2089	सूर्य	07/11/2089	चंद्र	06/04/2090	मंगल	24/04/2091

केतु - गुरु		केतु - शनि		केतु - बुध		शुक्र - शुक्र		शुक्र - सूर्य	
24/04/2091		30/03/2092		09/05/2093		06/05/2094		04/09/2097	
30/03/2092		09/05/2093		06/05/2094		04/09/2097		05/09/2098	
गुरु	08/06/2091	शनि	02/06/2092	बुध	29/06/2093	शुक्र	25/11/2094	सूर्य	23/09/2097
शनि	01/08/2091	बुध	29/07/2092	केतु	20/07/2093	सूर्य	25/01/2095	चंद्र	23/10/2097
बुध	19/09/2091	केतु	22/08/2092	शुक्र	19/09/2093	चंद्र	06/05/2095	मंगल	13/11/2097
केतु	09/10/2091	शुक्र	28/10/2092	सूर्य	07/10/2093	मंगल	16/07/2095	राहु	07/01/2098
शुक्र	04/12/2091	सूर्य	18/11/2092	चंद्र	06/11/2093	राहु	15/01/2096	गुरु	25/02/2098
सूर्य	22/12/2091	चंद्र	21/12/2092	मंगल	27/11/2093	गुरु	25/06/2096	शनि	24/04/2098
चंद्र	19/01/2092	मंगल	14/01/2093	राहु	20/01/2094	शनि	04/01/2097	बुध	15/06/2098
मंगल	08/02/2092	राहु	16/03/2093	गुरु	10/03/2094	बुध	25/06/2097	केतु	06/07/2098
राहु	30/03/2092	गुरु	09/05/2093	शनि	06/05/2094	केतु	04/09/2097	शुक्र	05/09/2098

शुक्र - चंद्र		शुक्र - मंगल		शुक्र - राहु		शुक्र - गुरु		शुक्र - शनि	
05/09/2098		06/05/2100		07/07/2101		06/07/2104		07/03/2107	
06/05/2100		07/07/2101		06/07/2104		07/03/2107		07/05/2110	
चंद्र	25/10/2098	मंगल	31/05/2100	राहु	18/12/2101	गुरु	13/11/2104	शनि	06/09/2107
मंगल	30/11/2098	राहु	03/08/2100	गुरु	13/05/2102	शनि	16/04/2105	बुध	17/02/2108
राहु	01/03/2099	गुरु	29/09/2100	शनि	03/11/2102	बुध	01/09/2105	केतु	25/04/2108
गुरु	21/05/2099	शनि	06/12/2100	बुध	07/04/2103	केतु	28/10/2105	शुक्र	04/11/2108
शनि	26/08/2099	बुध	04/02/2101	केतु	10/06/2103	शुक्र	09/04/2106	सूर्य	31/12/2108
बुध	20/11/2099	केतु	01/03/2101	शुक्र	09/12/2103	सूर्य	27/05/2106	चंद्र	07/04/2109
केतु	26/12/2099	शुक्र	11/05/2101	सूर्य	02/02/2104	चंद्र	16/08/2106	मंगल	13/06/2109
शुक्र	06/04/2100	सूर्य	01/06/2101	चंद्र	03/05/2104	मंगल	12/10/2106	राहु	04/12/2109
सूर्य	06/05/2100	चंद्र	07/07/2101	मंगल	06/07/2104	राहु	07/03/2107	गुरु	07/05/2110

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

शुक्र - बुध		शुक्र - केतु		सूर्य - सूर्य		सूर्य - चंद्र		सूर्य - मंगल	
07/05/2110		07/03/2113		07/05/2114		25/08/2114		23/02/2115	
07/03/2113		07/05/2114		25/08/2114		23/02/2115		01/07/2115	
बुध	01/10/2110	केतु	01/04/2113	सूर्य	12/05/2114	चंद्र	09/09/2114	मंगल	03/03/2115
केतु	30/11/2110	शुक्र	11/06/2113	चंद्र	22/05/2114	मंगल	19/09/2114	राहु	22/03/2115
शुक्र	21/05/2111	सूर्य	02/07/2113	मंगल	28/05/2114	राहु	17/10/2114	गुरु	08/04/2115
सूर्य	12/07/2111	चंद्र	07/08/2113	राहु	13/06/2114	गुरु	10/11/2114	शनि	28/04/2115
चंद्र	06/10/2111	मंगल	31/08/2113	गुरु	28/06/2114	शनि	09/12/2114	बुध	16/05/2115
मंगल	06/12/2111	राहु	03/11/2113	शनि	15/07/2114	बुध	04/01/2115	केतु	24/05/2115
राहु	09/05/2112	गुरु	30/12/2113	बुध	31/07/2114	केतु	15/01/2115	शुक्र	14/06/2115
गुरु	24/09/2112	शनि	08/03/2114	केतु	06/08/2114	शुक्र	14/02/2115	सूर्य	20/06/2115
शनि	07/03/2113	बुध	07/05/2114	शुक्र	25/08/2114	सूर्य	23/02/2115	चंद्र	01/07/2115

सूर्य - राहु		सूर्य - गुरु		सूर्य - शनि		सूर्य - बुध		सूर्य - केतु	
01/07/2115		25/05/2116		13/03/2117		23/02/2118		30/12/2118	
25/05/2116		13/03/2117		23/02/2118		30/12/2118		07/05/2119	
राहु	19/08/2115	गुरु	03/07/2116	शनि	07/05/2117	बुध	08/04/2118	केतु	07/01/2119
गुरु	02/10/2115	शनि	18/08/2116	बुध	25/06/2117	केतु	26/04/2118	शुक्र	28/01/2119
शनि	23/11/2115	बुध	28/09/2116	केतु	15/07/2117	शुक्र	17/06/2118	सूर्य	04/02/2119
बुध	09/01/2116	केतु	15/10/2116	शुक्र	11/09/2117	सूर्य	02/07/2118	चंद्र	14/02/2119
केतु	28/01/2116	शुक्र	03/12/2116	सूर्य	28/09/2117	चंद्र	28/07/2118	मंगल	22/02/2119
शुक्र	23/03/2116	सूर्य	18/12/2116	चंद्र	27/10/2117	मंगल	15/08/2118	राहु	13/03/2119
सूर्य	08/04/2116	चंद्र	11/01/2117	मंगल	17/11/2117	राहु	01/10/2118	गुरु	30/03/2119
चंद्र	06/05/2116	मंगल	28/01/2117	राहु	08/01/2118	गुरु	11/11/2118	शनि	19/04/2119
मंगल	25/05/2116	राहु	13/03/2117	गुरु	23/02/2118	शनि	30/12/2118	बुध	07/05/2119

सूर्य - शुक्र		चंद्र - चंद्र		चंद्र - मंगल		चंद्र - राहु		चंद्र - गुरु	
07/05/2119		06/05/2120		07/03/2121		06/10/2121		07/04/2123	
06/05/2120		07/03/2121		06/10/2121		07/04/2123		06/08/2124	
शुक्र	07/07/2119	चंद्र	01/06/2120	मंगल	19/03/2121	राहु	27/12/2121	गुरु	11/06/2123
सूर्य	25/07/2119	मंगल	19/06/2120	राहु	20/04/2121	गुरु	10/03/2122	शनि	27/08/2123
चंद्र	25/08/2119	राहु	03/08/2120	गुरु	19/05/2121	शनि	05/06/2122	बुध	04/11/2123
मंगल	15/09/2119	गुरु	13/09/2120	शनि	21/06/2121	बुध	21/08/2122	केतु	02/12/2123
राहु	09/11/2119	शनि	31/10/2120	बुध	22/07/2121	केतु	22/09/2122	शुक्र	21/02/2124
गुरु	28/12/2119	बुध	13/12/2120	केतु	03/08/2121	शुक्र	23/12/2122	सूर्य	17/03/2124
शनि	23/02/2120	केतु	31/12/2120	शुक्र	07/09/2121	सूर्य	19/01/2123	चंद्र	26/04/2124
बुध	15/04/2120	शुक्र	20/02/2121	सूर्य	18/09/2121	चंद्र	06/03/2123	मंगल	25/05/2124
केतु	06/05/2120	सूर्य	07/03/2121	चंद्र	06/10/2121	मंगल	07/04/2123	राहु	06/08/2124

विंशोत्तरी दशा - सूक्ष्म

राहु - बुध - शुक्र	
21/10/2025 05:31	
25/03/2026 11:04	
शुक्र	16/11/2025 02:26
सूर्य	23/11/2025 20:43
चंद्र	06/12/2025 19:11
मंगल	15/12/2025 20:30
राहु	08/01/2026 03:20
गुरु	28/01/2026 20:04
शनि	22/02/2026 09:57
बुध	16/03/2026 09:44
केतु	25/03/2026 11:04

राहु - बुध - सूर्य	
25/03/2026 11:04	
11/05/2026 00:44	
सूर्य	27/03/2026 18:57
चंद्र	31/03/2026 16:05
मंगल	03/04/2026 09:17
राहु	10/04/2026 08:56
गुरु	16/04/2026 13:57
शनि	23/04/2026 22:55
बुध	30/04/2026 13:15
केतु	03/05/2026 06:27
शुक्र	11/05/2026 00:44

राहु - बुध - चंद्र	
11/05/2026 00:44	
27/07/2026 15:30	
चंद्र	17/05/2026 11:58
मंगल	22/05/2026 00:37
राहु	02/06/2026 16:02
गुरु	13/06/2026 00:24
शनि	25/06/2026 07:21
बुध	06/07/2026 07:14
केतु	10/07/2026 19:54
शुक्र	23/07/2026 18:22
सूर्य	27/07/2026 15:30

राहु - बुध - मंगल	
27/07/2026 15:30	
19/09/2026 23:27	
मंगल	30/07/2026 19:34
राहु	07/08/2026 23:09
गुरु	15/08/2026 05:01
शनि	23/08/2026 19:28
बुध	31/08/2026 12:12
केतु	03/09/2026 16:16
शुक्र	12/09/2026 17:35
सूर्य	15/09/2026 10:47
चंद्र	19/09/2026 23:27

राहु - बुध - राहु	
19/09/2026 23:27	
06/02/2027 16:26	
राहु	10/10/2026 22:24
गुरु	29/10/2026 13:28
शनि	20/11/2026 16:21
बुध	10/12/2026 11:22
केतु	18/12/2026 14:57
शुक्र	10/01/2027 21:47
सूर्य	17/01/2027 21:26
चंद्र	29/01/2027 12:51
मंगल	06/02/2027 16:26

राहु - बुध - गुरु	
06/02/2027 16:26	
10/06/2027 20:53	
गुरु	23/02/2027 05:50
शनि	14/03/2027 21:44
बुध	01/04/2027 11:58
केतु	08/04/2027 17:49
शुक्र	29/04/2027 10:34
सूर्य	05/05/2027 15:35
चंद्र	15/05/2027 23:57
मंगल	23/05/2027 05:49
राहु	10/06/2027 20:53

राहु - बुध - शनि	
10/06/2027 20:53	
05/11/2027 08:09	
शनि	04/07/2027 05:16
बुध	25/07/2027 02:40
केतु	02/08/2027 17:07
शुक्र	27/08/2027 07:00
सूर्य	03/09/2027 15:58
चंद्र	15/09/2027 22:54
मंगल	24/09/2027 13:22
राहु	16/10/2027 16:15
गुरु	05/11/2027 08:09

राहु - केतु - केतु	
05/11/2027 08:09	
27/11/2027 17:04	
केतु	06/11/2027 15:28
शुक्र	10/11/2027 08:58
सूर्य	11/11/2027 11:48
चंद्र	13/11/2027 08:33
मंगल	14/11/2027 15:52
राहु	18/11/2027 00:24
गुरु	20/11/2027 24:00
शनि	24/11/2027 13:00
बुध	27/11/2027 17:04

राहु - केतु - शुक्र	
27/11/2027 17:04	
30/01/2028 15:07	
शुक्र	08/12/2027 08:45
सूर्य	11/12/2027 13:27
चंद्र	16/12/2027 21:17
मंगल	20/12/2027 14:46
राहु	30/12/2027 04:53
गुरु	07/01/2028 17:25
शनि	17/01/2028 20:19
बुध	26/01/2028 21:38
केतु	30/01/2028 15:07

राहु - केतु - सूर्य	
30/01/2028 15:07	
18/02/2028 19:20	
सूर्य	31/01/2028 14:08
चंद्र	02/02/2028 04:29
मंगल	03/02/2028 07:20
राहु	06/02/2028 04:22
गुरु	08/02/2028 17:43
शनि	11/02/2028 18:35
बुध	14/02/2028 11:47
केतु	15/02/2028 14:38
शुक्र	18/02/2028 19:20

राहु - केतु - चंद्र	
18/02/2028 19:20	
21/03/2028 18:22	
चंद्र	21/02/2028 11:15
मंगल	23/02/2028 08:00
राहु	28/02/2028 03:03
गुरु	03/03/2028 09:19
शनि	08/03/2028 10:46
बुध	12/03/2028 23:26
केतु	14/03/2028 20:10
शुक्र	20/03/2028 04:01
सूर्य	21/03/2028 18:22

राहु - केतु - मंगल	
21/03/2028 18:22	
13/04/2028 03:17	
मंगल	23/03/2028 01:41
राहु	26/03/2028 10:13
गुरु	29/03/2028 09:48
शनि	01/04/2028 22:49
बुध	05/04/2028 02:53
केतु	06/04/2028 10:12
शुक्र	10/04/2028 03:41
सूर्य	11/04/2028 06:32
चंद्र	13/04/2028 03:17

विंशोत्तरी दशा - सूक्ष्म

राहु - केतु - राहु		राहु - केतु - गुरु		राहु - केतु - शनि		राहु - केतु - बुध	
13/04/2028 03:17		09/06/2028 15:55		30/07/2028 19:10		29/09/2028 12:31	
09/06/2028 15:55		30/07/2028 19:10		29/09/2028 12:31		22/11/2028 20:27	
राहु	21/04/2028 18:22	गुरु	16/06/2028 11:33	शनि	09/08/2028 09:55	बुध	07/10/2028 05:14
गुरु	29/04/2028 10:28	शनि	24/06/2028 13:52	बुध	18/08/2028 00:22	केतु	10/10/2028 09:18
शनि	08/05/2028 13:04	बुध	01/07/2028 19:44	केतु	21/08/2028 13:23	शुक्र	19/10/2028 10:37
बुध	16/05/2028 16:39	केतु	04/07/2028 19:19	शुक्र	31/08/2028 16:16	सूर्य	22/10/2028 03:49
केतु	20/05/2028 01:12	शुक्र	13/07/2028 07:51	सूर्य	03/09/2028 17:08	चंद्र	26/10/2028 16:29
शुक्र	29/05/2028 15:18	सूर्य	15/07/2028 21:13	चंद्र	08/09/2028 18:35	मंगल	29/10/2028 20:33
सूर्य	01/06/2028 12:20	चंद्र	20/07/2028 03:29	मंगल	12/09/2028 07:36	राहु	07/11/2028 00:08
चंद्र	06/06/2028 07:23	मंगल	23/07/2028 03:05	राहु	21/09/2028 10:12	गुरु	14/11/2028 06:00
मंगल	09/06/2028 15:55	राहु	30/07/2028 19:10	गुरु	29/09/2028 12:31	शनि	22/11/2028 20:27

राहु - शुक्र - शुक्र		राहु - शुक्र - सूर्य		राहु - शुक्र - चंद्र		राहु - शुक्र - मंगल	
22/11/2028 20:27		24/05/2029 11:27		18/07/2029 06:21		17/10/2029 13:51	
24/05/2029 11:27		18/07/2029 06:21		17/10/2029 13:51		20/12/2029 11:54	
शुक्र	23/12/2028 06:57	सूर्य	27/05/2029 05:12	चंद्र	25/07/2029 20:59	मंगल	21/10/2029 07:20
सूर्य	01/01/2029 10:06	चंद्र	31/05/2029 18:46	मंगल	31/07/2029 04:49	राहु	30/10/2029 21:27
चंद्र	16/01/2029 15:21	मंगल	03/06/2029 23:29	राहु	13/08/2029 21:32	गुरु	08/11/2029 09:59
मंगल	27/01/2029 07:02	राहु	12/06/2029 04:43	गुरु	26/08/2029 01:44	शनि	18/11/2029 12:53
राहु	23/02/2029 16:29	गुरु	19/06/2029 12:02	शनि	09/09/2029 12:44	बुध	27/11/2029 14:12
गुरु	20/03/2029 00:53	शनि	28/06/2029 04:13	बुध	22/09/2029 11:11	केतु	01/12/2029 07:41
शनि	17/04/2029 22:51	बुध	05/07/2029 22:30	केतु	27/09/2029 19:02	शुक्र	11/12/2029 23:22
बुध	13/05/2029 19:47	केतु	09/07/2029 03:12	शुक्र	13/10/2029 00:17	सूर्य	15/12/2029 04:04
केतु	24/05/2029 11:27	शुक्र	18/07/2029 06:21	सूर्य	17/10/2029 13:51	चंद्र	20/12/2029 11:54

राहु - शुक्र - राहु		राहु - शुक्र - गुरु		राहु - शुक्र - शनि		राहु - शुक्र - बुध	
20/12/2029 11:54		02/06/2030 20:36		26/10/2030 23:00		18/04/2031 10:51	
02/06/2030 20:36		26/10/2030 23:00		18/04/2031 10:51		20/09/2031 16:24	
राहु	14/01/2030 03:36	गुरु	22/06/2030 08:07	शनि	23/11/2030 10:17	बुध	10/05/2031 10:38
गुरु	05/02/2030 01:34	शनि	15/07/2030 11:18	बुध	18/12/2030 00:09	केतु	19/05/2031 11:58
शनि	03/03/2030 02:09	बुध	05/08/2030 04:03	केतु	28/12/2030 03:03	शुक्र	14/06/2031 08:53
बुध	26/03/2030 08:59	केतु	13/08/2030 16:35	शुक्र	26/01/2031 01:01	सूर्य	22/06/2031 03:10
केतु	04/04/2030 23:05	शुक्र	07/09/2030 00:59	सूर्य	03/02/2031 17:13	चंद्र	05/07/2031 01:38
शुक्र	02/05/2030 08:32	सूर्य	14/09/2030 08:18	चंद्र	18/02/2031 04:12	मंगल	14/07/2031 02:57
सूर्य	10/05/2030 13:46	चंद्र	26/09/2030 12:30	मंगल	28/02/2031 07:06	राहु	06/08/2031 09:47
चंद्र	24/05/2030 06:30	मंगल	05/10/2030 01:03	राहु	26/03/2031 07:40	गुरु	27/08/2031 02:31
मंगल	02/06/2030 20:36	राहु	26/10/2030 23:00	गुरु	18/04/2031 10:51	शनि	20/09/2031 16:24

विंशोत्तरी दशा - सूक्ष्म

राहु - शुक्र - केतु	
20/09/2031 16:24	
23/11/2031 14:27	
केतु	24/09/2031 09:53
शुक्र	05/10/2031 01:34
सूर्य	08/10/2031 06:16
चंद्र	13/10/2031 14:06
मंगल	17/10/2031 07:35
राहु	26/10/2031 21:42
गुरु	04/11/2031 10:14
शनि	14/11/2031 13:08
बुध	23/11/2031 14:27

राहु - सूर्य - सूर्य	
23/11/2031 14:27	
10/12/2031 00:55	
सूर्य	24/11/2031 10:11
चंद्र	25/11/2031 19:03
मंगल	26/11/2031 18:04
राहु	29/11/2031 05:14
गुरु	01/12/2031 09:50
शनि	04/12/2031 00:17
बुध	06/12/2031 08:10
केतु	07/12/2031 07:11
शुक्र	10/12/2031 00:55

राहु - सूर्य - चंद्र	
10/12/2031 00:55	
06/01/2032 10:22	
चंद्र	12/12/2031 07:43
मंगल	13/12/2031 22:04
राहु	18/12/2031 00:41
गुरु	21/12/2031 16:20
शनि	26/12/2031 00:26
बुध	29/12/2031 21:34
केतु	31/12/2031 11:56
शुक्र	05/01/2032 01:30
सूर्य	06/01/2032 10:22

राहु - सूर्य - मंगल	
06/01/2032 10:22	
25/01/2032 14:35	
मंगल	07/01/2032 13:13
राहु	10/01/2032 10:15
गुरु	12/01/2032 23:37
शनि	16/01/2032 00:29
बुध	18/01/2032 17:41
केतु	19/01/2032 20:31
शुक्र	23/01/2032 01:14
सूर्य	24/01/2032 00:14
चंद्र	25/01/2032 14:35

राहु - सूर्य - राहु	
25/01/2032 14:35	
14/03/2032 22:00	
राहु	02/02/2032 00:06
गुरु	08/02/2032 13:53
शनि	16/02/2032 09:16
बुध	23/02/2032 08:55
केतु	26/02/2032 05:57
शुक्र	05/03/2032 11:11
सूर्य	07/03/2032 22:21
चंद्र	12/03/2032 00:58
मंगल	14/03/2032 22:00

राहु - सूर्य - गुरु	
14/03/2032 22:00	
27/04/2032 17:55	
गुरु	20/03/2032 18:15
शनि	27/03/2032 16:48
बुध	02/04/2032 21:50
केतु	05/04/2032 11:12
शुक्र	12/04/2032 18:31
सूर्य	14/04/2032 23:06
चंद्र	18/04/2032 14:46
मंगल	21/04/2032 04:08
राहु	27/04/2032 17:55

राहु - सूर्य - शनि	
27/04/2032 17:55	
18/06/2032 19:04	
शनि	05/05/2032 23:42
बुध	13/05/2032 08:40
केतु	16/05/2032 09:32
शुक्र	25/05/2032 01:43
सूर्य	27/05/2032 16:11
चंद्र	01/06/2032 00:17
मंगल	04/06/2032 01:09
राहु	11/06/2032 20:31
गुरु	18/06/2032 19:04

राहु - सूर्य - बुध	
18/06/2032 19:04	
04/08/2032 08:44	
बुध	25/06/2032 09:25
केतु	28/06/2032 02:36
शुक्र	05/07/2032 20:53
सूर्य	08/07/2032 04:46
चंद्र	12/07/2032 01:54
मंगल	14/07/2032 19:06
राहु	21/07/2032 18:45
गुरु	27/07/2032 23:46
शनि	04/08/2032 08:44

राहु - सूर्य - केतु	
04/08/2032 08:44	
23/08/2032 12:57	
केतु	05/08/2032 11:35
शुक्र	08/08/2032 16:17
सूर्य	09/08/2032 15:18
चंद्र	11/08/2032 05:39
मंगल	12/08/2032 08:30
राहु	15/08/2032 05:32
गुरु	17/08/2032 18:53
शनि	20/08/2032 19:45
बुध	23/08/2032 12:57

राहु - सूर्य - शुक्र	
23/08/2032 12:57	
17/10/2032 07:51	
शुक्र	01/09/2032 16:06
सूर्य	04/09/2032 09:51
चंद्र	08/09/2032 23:25
मंगल	12/09/2032 04:08
राहु	20/09/2032 09:22
गुरु	27/09/2032 16:41
शनि	06/10/2032 08:52
बुध	14/10/2032 03:09
केतु	17/10/2032 07:51

राहु - चंद्र - चंद्र	
17/10/2032 07:51	
01/12/2032 23:36	
चंद्र	21/10/2032 03:10
मंगल	23/10/2032 19:05
राहु	30/10/2032 15:27
गुरु	05/11/2032 17:33
शनि	12/11/2032 23:02
बुध	19/11/2032 10:16
केतु	22/11/2032 02:11
शुक्र	29/11/2032 16:49
सूर्य	01/12/2032 23:36

राहु - चंद्र - मंगल	
01/12/2032 23:36	
02/01/2033 22:38	
मंगल	03/12/2032 20:21
राहु	08/12/2032 15:24
गुरु	12/12/2032 21:40
शनि	17/12/2032 23:07
बुध	22/12/2032 11:47
केतु	24/12/2032 08:31
शुक्र	29/12/2032 16:21
सूर्य	31/12/2032 06:43
चंद्र	02/01/2033 22:38

विंशोत्तरी दशा - सूक्ष्म

राहु - चंद्र - राहु	
02/01/2033 22:38	
26/03/2033 02:59	
राहु	15/01/2033 06:29
गुरु	26/01/2033 05:28
शनि	08/02/2033 05:45
बुध	19/02/2033 21:10
केतु	24/02/2033 16:13
शुक्र	10/03/2033 08:57
सूर्य	14/03/2033 11:34
चंद्र	21/03/2033 07:55
मंगल	26/03/2033 02:59

राहु - चंद्र - गुरु	
26/03/2033 02:59	
07/06/2033 04:11	
गुरु	04/04/2033 20:44
शनि	16/04/2033 10:20
बुध	26/04/2033 18:42
केतु	01/05/2033 00:58
शुक्र	13/05/2033 05:10
सूर्य	16/05/2033 20:50
चंद्र	22/05/2033 22:56
मंगल	27/05/2033 05:12
राहु	07/06/2033 04:11

राहु - चंद्र - शनि	
07/06/2033 04:11	
01/09/2033 22:06	
शनि	20/06/2033 21:49
बुध	03/07/2033 04:45
केतु	08/07/2033 06:12
शुक्र	22/07/2033 17:11
सूर्य	27/07/2033 01:17
चंद्र	03/08/2033 06:47
मंगल	08/08/2033 08:13
राहु	21/08/2033 08:31
गुरु	01/09/2033 22:06

राहु - चंद्र - बुध	
01/09/2033 22:06	
18/11/2033 12:53	
बुध	12/09/2033 22:00
केतु	17/09/2033 10:39
शुक्र	30/09/2033 09:07
सूर्य	04/10/2033 06:16
चंद्र	10/10/2033 17:29
मंगल	15/10/2033 06:09
राहु	26/10/2033 21:34
गुरु	06/11/2033 05:56
शनि	18/11/2033 12:53

राहु - चंद्र - केतु	
18/11/2033 12:53	
20/12/2033 11:54	
केतु	20/11/2033 09:37
शुक्र	25/11/2033 17:28
सूर्य	27/11/2033 07:49
चंद्र	29/11/2033 23:44
मंगल	01/12/2033 20:28
राहु	06/12/2033 15:32
गुरु	10/12/2033 21:48
शनि	15/12/2033 23:14
बुध	20/12/2033 11:54

राहु - चंद्र - शुक्र	
20/12/2033 11:54	
21/03/2034 19:24	
शुक्र	04/01/2034 17:09
सूर्य	09/01/2034 06:44
चंद्र	16/01/2034 21:21
मंगल	22/01/2034 05:11
राहु	04/02/2034 21:55
गुरु	17/02/2034 02:07
शनि	03/03/2034 13:06
बुध	16/03/2034 11:34
केतु	21/03/2034 19:24

राहु - चंद्र - सूर्य	
21/03/2034 19:24	
18/04/2034 04:51	
सूर्य	23/03/2034 04:17
चंद्र	25/03/2034 11:04
मंगल	27/03/2034 01:25
राहु	31/03/2034 04:02
गुरु	03/04/2034 19:42
शनि	08/04/2034 03:47
बुध	12/04/2034 00:56
केतु	13/04/2034 15:17
शुक्र	18/04/2034 04:51

राहु - मंगल - मंगल	
18/04/2034 04:51	
10/05/2034 13:46	
मंगल	19/04/2034 12:10
राहु	22/04/2034 20:43
गुरु	25/04/2034 20:18
शनि	29/04/2034 09:19
बुध	02/05/2034 13:22
केतु	03/05/2034 20:42
शुक्र	07/05/2034 14:11
सूर्य	08/05/2034 17:02
चंद्र	10/05/2034 13:46

राहु - मंगल - राहु	
10/05/2034 13:46	
07/07/2034 02:25	
राहु	19/05/2034 04:52
गुरु	26/05/2034 20:57
शनि	04/06/2034 23:33
बुध	13/06/2034 03:09
केतु	16/06/2034 11:41
शुक्र	26/06/2034 01:48
सूर्य	28/06/2034 22:49
चंद्र	03/07/2034 17:53
मंगल	07/07/2034 02:25

राहु - मंगल - गुरु	
07/07/2034 02:25	
27/08/2034 05:39	
गुरु	13/07/2034 22:03
शनि	22/07/2034 00:22
बुध	29/07/2034 06:13
केतु	01/08/2034 05:49
शुक्र	09/08/2034 18:21
सूर्य	12/08/2034 07:43
चंद्र	16/08/2034 13:59
मंगल	19/08/2034 13:34
राहु	27/08/2034 05:39

राहु - मंगल - शनि	
27/08/2034 05:39	
26/10/2034 23:00	
शनि	05/09/2034 20:24
बुध	14/09/2034 10:52
केतु	17/09/2034 23:52
शुक्र	28/09/2034 02:46
सूर्य	01/10/2034 03:38
चंद्र	06/10/2034 05:05
मंगल	09/10/2034 18:05
राहु	18/10/2034 20:41
गुरु	26/10/2034 23:00

राहु - मंगल - बुध	
26/10/2034 23:00	
20/12/2034 06:57	
बुध	03/11/2034 15:44
केतु	06/11/2034 19:47
शुक्र	15/11/2034 21:07
सूर्य	18/11/2034 14:19
चंद्र	23/11/2034 02:58
मंगल	26/11/2034 07:02
राहु	04/12/2034 10:38
गुरु	11/12/2034 16:29
शनि	20/12/2034 06:57

विंशोत्तरी दशा - प्राण

राहु - बुध - शुक्र - शनि	
28/01/2026 20:04	
22/02/2026 09:57	
शनि	01/02/2026 17:28
बुध	05/02/2026 05:02
केतु	06/02/2026 15:27
शुक्र	10/02/2026 17:46
सूर्य	11/02/2026 23:15
चंद्र	14/02/2026 00:25
मंगल	15/02/2026 10:49
राहु	19/02/2026 03:18
गुरु	22/02/2026 09:57

राहु - बुध - शुक्र - बुध	
22/02/2026 09:57	
16/03/2026 09:44	
बुध	25/02/2026 12:43
केतु	26/02/2026 19:31
शुक्र	02/03/2026 11:28
सूर्य	03/03/2026 13:52
चंद्र	05/03/2026 09:51
मंगल	06/03/2026 16:38
राहु	09/03/2026 23:48
गुरु	12/03/2026 22:10
शनि	16/03/2026 09:44

राहु - बुध - शुक्र - केतु	
16/03/2026 09:44	
25/03/2026 11:04	
केतु	16/03/2026 22:25
शुक्र	18/03/2026 10:38
सूर्य	18/03/2026 21:30
चंद्र	19/03/2026 15:37
मंगल	20/03/2026 04:17
राहु	21/03/2026 12:53
गुरु	22/03/2026 17:52
शनि	24/03/2026 04:17
बुध	25/03/2026 11:04

राहु - बुध - सूर्य - सूर्य	
25/03/2026 11:04	
27/03/2026 18:57	
सूर्य	25/03/2026 13:51
चंद्र	25/03/2026 18:31
मंगल	25/03/2026 21:46
राहु	26/03/2026 06:09
गुरु	26/03/2026 13:36
शनि	26/03/2026 22:27
बुध	27/03/2026 06:22
केतु	27/03/2026 09:38
शुक्र	27/03/2026 18:57

राहु - बुध - सूर्य - चंद्र	
27/03/2026 18:57	
31/03/2026 16:05	
चंद्र	28/03/2026 02:42
मंगल	28/03/2026 08:08
राहु	28/03/2026 22:07
गुरु	29/03/2026 10:32
शनि	30/03/2026 01:17
बुध	30/03/2026 14:28
केतु	30/03/2026 19:54
शुक्र	31/03/2026 11:26
सूर्य	31/03/2026 16:05

राहु - बुध - सूर्य - मंगल	
31/03/2026 16:05	
03/04/2026 09:17	
मंगल	31/03/2026 19:53
राहु	01/04/2026 05:40
गुरु	01/04/2026 14:22
शनि	02/04/2026 00:41
बुध	02/04/2026 09:55
केतु	02/04/2026 13:43
शुक्र	03/04/2026 00:35
सूर्य	03/04/2026 03:51
चंद्र	03/04/2026 09:17

राहु - बुध - सूर्य - राहु	
03/04/2026 09:17	
10/04/2026 08:56	
राहु	04/04/2026 10:26
गुरु	05/04/2026 08:47
शनि	06/04/2026 11:20
बुध	07/04/2026 11:05
केतु	07/04/2026 20:51
शुक्र	09/04/2026 00:48
सूर्य	09/04/2026 09:11
चंद्र	09/04/2026 23:09
मंगल	10/04/2026 08:56

राहु - बुध - सूर्य - गुरु	
10/04/2026 08:56	
16/04/2026 13:57	
गुरु	11/04/2026 04:48
शनि	12/04/2026 04:24
बुध	13/04/2026 01:30
केतु	13/04/2026 10:12
शुक्र	14/04/2026 11:02
सूर्य	14/04/2026 18:29
चंद्र	15/04/2026 06:54
मंगल	15/04/2026 15:36
राहु	16/04/2026 13:57

राहु - बुध - सूर्य - शनि	
16/04/2026 13:57	
23/04/2026 22:55	
शनि	17/04/2026 17:58
बुध	18/04/2026 19:03
केतु	19/04/2026 05:22
शुक्र	20/04/2026 10:52
सूर्य	20/04/2026 19:42
चंद्र	21/04/2026 10:27
मंगल	21/04/2026 20:47
राहु	22/04/2026 23:19
गुरु	23/04/2026 22:55

राहु - बुध - सूर्य - बुध	
23/04/2026 22:55	
30/04/2026 13:15	
बुध	24/04/2026 21:21
केतु	25/04/2026 06:35
शुक्र	26/04/2026 08:58
सूर्य	26/04/2026 16:53
चंद्र	27/04/2026 06:05
मंगल	27/04/2026 15:19
राहु	28/04/2026 15:04
गुरु	29/04/2026 12:11
शनि	30/04/2026 13:15

राहु - बुध - सूर्य - केतु	
30/04/2026 13:15	
03/05/2026 06:27	
केतु	30/04/2026 17:03
शुक्र	01/05/2026 03:55
सूर्य	01/05/2026 07:11
चंद्र	01/05/2026 12:37
मंगल	01/05/2026 16:25
राहु	02/05/2026 02:12
गुरु	02/05/2026 10:53
शनि	02/05/2026 21:13
बुध	03/05/2026 06:27

राहु - बुध - सूर्य - शुक्र	
03/05/2026 06:27	
11/05/2026 00:44	
शुक्र	04/05/2026 13:30
सूर्य	04/05/2026 22:49
चंद्र	05/05/2026 14:20
मंगल	06/05/2026 01:12
राहु	07/05/2026 05:08
गुरु	08/05/2026 05:59
शनि	09/05/2026 11:28
बुध	10/05/2026 13:52
केतु	11/05/2026 00:44

विंशोत्तरी दशा - प्राण

राहु - बुध - चंद्र - चंद्र	
11/05/2026 00:44	
17/05/2026 11:58	
चंद्र	11/05/2026 13:40
मंगल	11/05/2026 22:43
राहु	12/05/2026 22:00
गुरु	13/05/2026 18:42
शनि	14/05/2026 19:17
बुध	15/05/2026 17:16
केतु	16/05/2026 02:20
शुक्र	17/05/2026 04:12
सूर्य	17/05/2026 11:58

राहु - बुध - चंद्र - मंगल	
17/05/2026 11:58	
22/05/2026 00:37	
मंगल	17/05/2026 18:18
राहु	18/05/2026 10:36
गुरु	19/05/2026 01:05
शनि	19/05/2026 18:17
बुध	20/05/2026 09:41
केतु	20/05/2026 16:01
शुक्र	21/05/2026 10:08
सूर्य	21/05/2026 15:34
चंद्र	22/05/2026 00:37

राहु - बुध - चंद्र - राहु	
22/05/2026 00:37	
02/06/2026 16:02	
राहु	23/05/2026 18:32
गुरु	25/05/2026 07:47
शनि	27/05/2026 04:02
बुध	28/05/2026 19:37
केतु	29/05/2026 11:55
शुक्र	31/05/2026 10:29
सूर्य	01/06/2026 00:27
चंद्र	01/06/2026 23:44
मंगल	02/06/2026 16:02

राहु - बुध - चंद्र - गुरु	
02/06/2026 16:02	
13/06/2026 00:24	
गुरु	04/06/2026 01:09
शनि	05/06/2026 16:29
बुध	07/06/2026 03:40
केतु	07/06/2026 18:09
शुक्र	09/06/2026 11:33
सूर्य	09/06/2026 23:58
चंद्र	10/06/2026 20:40
मंगल	11/06/2026 11:09
राहु	13/06/2026 00:24

राहु - बुध - चंद्र - शनि	
13/06/2026 00:24	
25/06/2026 07:21	
शनि	14/06/2026 23:06
बुध	16/06/2026 16:53
केतु	17/06/2026 10:06
शुक्र	19/06/2026 11:15
सूर्य	20/06/2026 02:00
चंद्र	21/06/2026 02:35
मंगल	21/06/2026 19:47
राहु	23/06/2026 16:01
गुरु	25/06/2026 07:21

राहु - बुध - चंद्र - बुध	
25/06/2026 07:21	
06/07/2026 07:14	
बुध	26/06/2026 20:44
केतु	27/06/2026 12:08
शुक्र	29/06/2026 08:06
सूर्य	29/06/2026 21:18
चंद्र	30/06/2026 19:18
मंगल	01/07/2026 10:41
राहु	03/07/2026 02:16
गुरु	04/07/2026 13:27
शनि	06/07/2026 07:14

राहु - बुध - चंद्र - केतु	
06/07/2026 07:14	
10/07/2026 19:54	
केतु	06/07/2026 13:35
शुक्र	07/07/2026 07:41
सूर्य	07/07/2026 13:07
चंद्र	07/07/2026 22:11
मंगल	08/07/2026 04:31
राहु	08/07/2026 20:49
गुरु	09/07/2026 11:18
शनि	10/07/2026 04:30
बुध	10/07/2026 19:54

राहु - बुध - चंद्र - शुक्र	
10/07/2026 19:54	
23/07/2026 18:22	
शुक्र	12/07/2026 23:39
सूर्य	13/07/2026 15:10
चंद्र	14/07/2026 17:02
मंगल	15/07/2026 11:09
राहु	17/07/2026 09:43
गुरु	19/07/2026 03:07
शनि	21/07/2026 04:16
बुध	23/07/2026 00:15
केतु	23/07/2026 18:22

राहु - बुध - चंद्र - सूर्य	
23/07/2026 18:22	
27/07/2026 15:30	
सूर्य	23/07/2026 23:01
चंद्र	24/07/2026 06:47
मंगल	24/07/2026 12:13
राहु	25/07/2026 02:11
गुरु	25/07/2026 14:36
शनि	26/07/2026 05:21
बुध	26/07/2026 18:33
केतु	26/07/2026 23:59
शुक्र	27/07/2026 15:30

राहु - बुध - मंगल - मंगल	
27/07/2026 15:30	
30/07/2026 19:34	
मंगल	27/07/2026 19:56
राहु	28/07/2026 07:21
गुरु	28/07/2026 17:29
शनि	29/07/2026 05:32
बुध	29/07/2026 16:19
केतु	29/07/2026 20:45
शुक्र	30/07/2026 09:25
सूर्य	30/07/2026 13:14
चंद्र	30/07/2026 19:34

राहु - बुध - मंगल - राहु	
30/07/2026 19:34	
07/08/2026 23:09	
राहु	01/08/2026 00:54
गुरु	02/08/2026 02:59
शनि	03/08/2026 09:57
बुध	04/08/2026 13:40
केतु	05/08/2026 01:04
शुक्र	06/08/2026 09:40
सूर्य	06/08/2026 19:27
चंद्र	07/08/2026 11:45
मंगल	07/08/2026 23:09

राहु - बुध - मंगल - गुरु	
07/08/2026 23:09	
15/08/2026 05:01	
गुरु	08/08/2026 22:20
शनि	10/08/2026 01:52
बुध	11/08/2026 02:30
केतु	11/08/2026 12:38
शुक्र	12/08/2026 17:37
सूर्य	13/08/2026 02:18
चंद्र	13/08/2026 16:48
मंगल	14/08/2026 02:56
राहु	15/08/2026 05:01

षोडशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : बुध 14 वर्ष 4 मास 0 दिन

बुध 17 वर्ष		शुक्र 18 वर्ष		सूर्य 11 वर्ष		मंगल 12 वर्ष		गुरु 13 वर्ष	
11/06/2011		10/10/2025		11/10/2043		11/10/2054		11/10/2066	
10/10/2025		11/10/2043		11/10/2054		11/10/2066		11/10/2079	
	11/06/2011	शुक्र	26/07/2028	सूर्य	26/10/2044	मंगल	07/01/2056	गुरु	26/03/2068
शुक्र	27/11/2013	सूर्य	11/04/2030	मंगल	15/12/2045	गुरु	12/05/2057	शनि	20/10/2069
सूर्य	08/07/2015	मंगल	20/02/2032	गुरु	11/03/2047	शनि	23/10/2058	केतु	26/06/2071
मंगल	11/04/2017	गुरु	26/02/2034	शनि	08/07/2048	केतु	12/05/2060	चंद्र	11/04/2073
गुरु	08/03/2019	शनि	29/04/2036	केतु	09/12/2049	चंद्र	06/01/2062	बुध	08/03/2075
शनि	26/03/2021	केतु	27/08/2038	चंद्र	16/06/2051	बुध	11/10/2063	शुक्र	13/03/2077
केतु	07/06/2023	चंद्र	19/02/2041	बुध	25/01/2053	शुक्र	21/08/2065	सूर्य	07/06/2078
चंद्र	10/10/2025	बुध	11/10/2043	शुक्र	11/10/2054	सूर्य	11/10/2066	मंगल	11/10/2079

शनि 14 वर्ष		केतु 15 वर्ष		चंद्र 16 वर्ष		बुध 17 वर्ष	
11/10/2079		10/10/2093		11/10/2108		11/10/2124	
10/10/2093		11/10/2108		11/10/2124		00/00/0000	
शनि	19/06/2081	केतु	19/09/2095	चंद्र	26/12/2110	बुध	09/04/2127
केतु	11/04/2083	चंद्र	13/10/2097	बुध	01/05/2113	शुक्र	12/06/2127
चंद्र	16/03/2085	बुध	25/12/2099	शुक्र	24/10/2115		00/00/0000
बुध	05/04/2087	शुक्र	24/04/2102	सूर्य	01/05/2117		00/00/0000
शुक्र	06/06/2089	सूर्य	26/09/2103	मंगल	26/12/2118		00/00/0000
सूर्य	04/10/2090	मंगल	15/04/2105	गुरु	11/10/2120		00/00/0000
मंगल	16/03/2092	गुरु	20/12/2106	शनि	16/09/2122		00/00/0000
गुरु	10/10/2093	शनि	11/10/2108	केतु	11/10/2124		00/00/0000

नोट : उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।
षोडशोत्तरी दशा पूरे 116 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

षोडशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

बुध - शुक्र		बुध - सूर्य		बुध - मंगल		बुध - गुरु		बुध - शनि	
11/06/2011		27/11/2013		08/07/2015		11/04/2017		08/03/2019	
27/11/2013		08/07/2015		11/04/2017		08/03/2019		26/03/2021	
शुक्र	05/09/2011	सूर्य	21/01/2014	मंगल	13/09/2015	गुरु	28/06/2017	शनि	06/06/2019
सूर्य	05/12/2011	मंगल	23/03/2014	गुरु	24/11/2015	शनि	20/09/2017	केतु	11/09/2019
मंगल	14/03/2012	गुरु	28/05/2014	शनि	09/02/2016	केतु	19/12/2017	चंद्र	23/12/2019
गुरु	30/06/2012	शनि	07/08/2014	केतु	02/05/2016	चंद्र	25/03/2018	बुध	11/04/2020
शनि	24/10/2012	केतु	22/10/2014	चंद्र	30/07/2016	बुध	05/07/2018	शुक्र	05/08/2020
केतु	25/02/2013	चंद्र	12/01/2015	बुध	01/11/2016	शुक्र	21/10/2018	सूर्य	15/10/2020
चंद्र	08/07/2013	बुध	08/04/2015	शुक्र	09/02/2017	सूर्य	26/12/2018	मंगल	01/01/2021
बुध	27/11/2013	शुक्र	08/07/2015	सूर्य	11/04/2017	मंगल	08/03/2019	गुरु	26/03/2021

बुध - केतु		बुध - चंद्र		शुक्र - शुक्र		शुक्र - सूर्य		शुक्र - मंगल	
26/03/2021		07/06/2023		10/10/2025		26/07/2028		11/04/2030	
07/06/2023		10/10/2025		26/07/2028		11/04/2030		20/02/2032	
केतु	08/07/2021	चंद्र	03/10/2023	शुक्र	18/03/2026	सूर्य	24/09/2028	मंगल	20/06/2030
चंद्र	26/10/2021	बुध	05/02/2024	सूर्य	22/06/2026	मंगल	27/11/2028	गुरु	04/09/2030
बुध	21/02/2022	शुक्र	17/06/2024	मंगल	06/10/2026	गुरु	05/02/2029	शनि	26/11/2030
शुक्र	26/06/2022	सूर्य	07/09/2024	गुरु	28/01/2027	शनि	21/04/2029	केतु	22/02/2031
सूर्य	10/09/2022	मंगल	04/12/2024	शनि	31/05/2027	केतु	11/07/2029	चंद्र	26/05/2031
मंगल	02/12/2022	गुरु	10/03/2025	केतु	10/10/2027	चंद्र	05/10/2029	बुध	03/09/2031
गुरु	02/03/2023	शनि	22/06/2025	चंद्र	28/02/2028	बुध	04/01/2030	शुक्र	18/12/2031
शनि	07/06/2023	केतु	10/10/2025	बुध	26/07/2028	शुक्र	11/04/2030	सूर्य	20/02/2032

शुक्र - गुरु		शुक्र - शनि		शुक्र - केतु		शुक्र - चंद्र		शुक्र - बुध	
20/02/2032		26/02/2034		29/04/2036		27/08/2038		19/02/2041	
26/02/2034		29/04/2036		27/08/2038		19/02/2041		11/10/2043	
गुरु	13/05/2032	शनि	02/06/2034	केतु	17/08/2036	चंद्र	31/12/2038	बुध	10/07/2041
शनि	10/08/2032	केतु	12/09/2034	चंद्र	12/12/2036	बुध	12/05/2039	शुक्र	07/12/2041
केतु	13/11/2032	चंद्र	31/12/2034	बुध	16/04/2037	शुक्र	30/09/2039	सूर्य	08/03/2042
चंद्र	22/02/2033	बुध	26/04/2035	शुक्र	26/08/2037	सूर्य	25/12/2039	मंगल	16/06/2042
बुध	10/06/2033	शुक्र	27/08/2035	सूर्य	15/11/2037	मंगल	28/03/2040	गुरु	02/10/2042
शुक्र	03/10/2033	सूर्य	10/11/2035	मंगल	11/02/2038	गुरु	08/07/2040	शनि	26/01/2043
सूर्य	12/12/2033	मंगल	31/01/2036	गुरु	17/05/2038	शनि	25/10/2040	केतु	31/05/2043
मंगल	26/02/2034	गुरु	29/04/2036	शनि	27/08/2038	केतु	19/02/2041	चंद्र	11/10/2043

षोडशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

सूर्य - सूर्य		सूर्य - मंगल		सूर्य - गुरु		सूर्य - शनि		सूर्य - केतु	
11/10/2043		26/10/2044		15/12/2045		11/03/2047		08/07/2048	
26/10/2044		15/12/2045		11/03/2047		08/07/2048		09/12/2049	
सूर्य	16/11/2043	मंगल	08/12/2044	गुरु	04/02/2046	शनि	08/05/2047	केतु	13/09/2048
मंगल	25/12/2043	गुरु	23/01/2045	शनि	30/03/2046	केतु	10/07/2047	चंद्र	23/11/2048
गुरु	06/02/2044	शनि	15/03/2045	केतु	27/05/2046	चंद्र	15/09/2047	बुध	08/02/2049
शनि	23/03/2044	केतु	07/05/2045	चंद्र	29/07/2046	बुध	25/11/2047	शुक्र	29/04/2049
केतु	11/05/2044	चंद्र	04/07/2045	बुध	03/10/2046	शुक्र	08/02/2048	सूर्य	17/06/2049
चंद्र	03/07/2044	बुध	02/09/2045	शुक्र	11/12/2046	सूर्य	25/03/2048	मंगल	10/08/2049
बुध	28/08/2044	शुक्र	06/11/2045	सूर्य	23/01/2047	मंगल	14/05/2048	गुरु	07/10/2049
शुक्र	26/10/2044	सूर्य	15/12/2045	मंगल	11/03/2047	गुरु	08/07/2048	शनि	09/12/2049

सूर्य - चंद्र		सूर्य - बुध		सूर्य - शुक्र		मंगल - मंगल		मंगल - गुरु	
09/12/2049		16/06/2051		25/01/2053		11/10/2054		07/01/2056	
16/06/2051		25/01/2053		11/10/2054		07/01/2056		12/05/2057	
चंद्र	24/02/2050	बुध	11/09/2051	शुक्र	02/05/2053	मंगल	26/11/2054	गुरु	02/03/2056
बुध	16/05/2050	शुक्र	11/12/2051	सूर्य	30/06/2053	गुरु	16/01/2055	शनि	30/04/2056
शुक्र	10/08/2050	सूर्य	05/02/2052	मंगल	02/09/2053	शनि	12/03/2055	केतु	03/07/2056
सूर्य	01/10/2050	मंगल	06/04/2052	गुरु	11/11/2053	केतु	10/05/2055	चंद्र	09/09/2056
मंगल	28/11/2050	गुरु	11/06/2052	शनि	26/01/2054	चंद्र	11/07/2055	बुध	20/11/2056
गुरु	29/01/2051	शनि	21/08/2052	केतु	16/04/2054	बुध	16/09/2055	शुक्र	04/02/2057
शनि	06/04/2051	केतु	05/11/2052	चंद्र	11/07/2054	शुक्र	25/11/2055	सूर्य	22/03/2057
केतु	16/06/2051	चंद्र	25/01/2053	बुध	11/10/2054	सूर्य	07/01/2056	मंगल	12/05/2057

मंगल - शनि		मंगल - केतु		मंगल - चंद्र		मंगल - बुध		मंगल - शुक्र	
12/05/2057		23/10/2058		12/05/2060		06/01/2062		11/10/2063	
23/10/2058		12/05/2060		06/01/2062		11/10/2063		21/08/2065	
शनि	15/07/2057	केतु	04/01/2059	चंद्र	03/08/2060	बुध	11/04/2062	शुक्र	24/01/2064
केतु	21/09/2057	चंद्र	24/03/2059	बुध	31/10/2060	शुक्र	19/07/2062	सूर्य	29/03/2064
चंद्र	03/12/2057	बुध	15/06/2059	शुक्र	02/02/2061	सूर्य	18/09/2062	मंगल	07/06/2064
बुध	19/02/2058	शुक्र	11/09/2059	सूर्य	31/03/2061	मंगल	24/11/2062	गुरु	22/08/2064
शुक्र	12/05/2058	सूर्य	03/11/2059	मंगल	02/06/2061	गुरु	04/02/2063	शनि	12/11/2064
सूर्य	01/07/2058	मंगल	01/01/2060	गुरु	08/08/2061	शनि	22/04/2063	केतु	08/02/2065
मंगल	25/08/2058	गुरु	04/03/2060	शनि	20/10/2061	केतु	14/07/2063	चंद्र	13/05/2065
गुरु	23/10/2058	शनि	12/05/2060	केतु	06/01/2062	चंद्र	11/10/2063	बुध	21/08/2065

षोडशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

मंगल - सूर्य		गुरु - गुरु		गुरु - शनि		गुरु - केतु		गुरु - चंद्र	
21/08/2065		11/10/2066		26/03/2068		20/10/2069		26/06/2071	
11/10/2066		26/03/2068		20/10/2069		26/06/2071		11/04/2073	
सूर्य	29/09/2065	गुरु	09/12/2066	शनि	03/06/2068	केतु	07/01/2070	चंद्र	24/09/2071
मंगल	11/11/2065	शनि	11/02/2067	केतु	16/08/2068	चंद्र	02/04/2070	बुध	29/12/2071
गुरु	28/12/2065	केतु	21/04/2067	चंद्र	03/11/2068	बुध	01/07/2070	शुक्र	09/04/2072
शनि	16/02/2066	चंद्र	04/07/2067	बुध	26/01/2069	शुक्र	04/10/2070	सूर्य	10/06/2072
केतु	11/04/2066	बुध	20/09/2067	शुक्र	25/04/2069	सूर्य	01/12/2070	मंगल	17/08/2072
चंद्र	07/06/2066	शुक्र	11/12/2067	सूर्य	18/06/2069	मंगल	03/02/2071	गुरु	29/10/2072
बुध	07/08/2066	सूर्य	31/01/2068	मंगल	17/08/2069	गुरु	13/04/2071	शनि	16/01/2073
शुक्र	11/10/2066	मंगल	26/03/2068	गुरु	20/10/2069	शनि	26/06/2071	केतु	11/04/2073

गुरु - बुध		गुरु - शुक्र		गुरु - सूर्य		गुरु - मंगल		शनि - शनि	
11/04/2073		08/03/2075		13/03/2077		07/06/2078		11/10/2079	
08/03/2075		13/03/2077		07/06/2078		11/10/2079		19/06/2081	
बुध	22/07/2073	शुक्र	30/06/2075	सूर्य	25/04/2077	मंगल	27/07/2078	शनि	24/12/2079
शुक्र	07/11/2073	सूर्य	08/09/2075	मंगल	11/06/2077	गुरु	20/09/2078	केतु	13/03/2080
सूर्य	12/01/2074	मंगल	23/11/2075	गुरु	31/07/2077	शनि	19/11/2078	चंद्र	06/06/2080
मंगल	25/03/2074	गुरु	14/02/2076	शनि	23/09/2077	केतु	21/01/2079	बुध	05/09/2080
गुरु	11/06/2074	शनि	12/05/2076	केतु	21/11/2077	चंद्र	30/03/2079	शुक्र	09/12/2080
शनि	03/09/2074	केतु	16/08/2076	चंद्र	22/01/2078	बुध	10/06/2079	सूर्य	06/02/2081
केतु	02/12/2074	चंद्र	25/11/2076	बुध	29/03/2078	शुक्र	25/08/2079	मंगल	11/04/2081
चंद्र	08/03/2075	बुध	13/03/2077	शुक्र	07/06/2078	सूर्य	11/10/2079	गुरु	19/06/2081

शनि - केतु		शनि - चंद्र		शनि - बुध		शनि - शुक्र		शनि - सूर्य	
19/06/2081		11/04/2083		16/03/2085		05/04/2087		06/06/2089	
11/04/2083		16/03/2085		05/04/2087		06/06/2089		04/10/2090	
केतु	12/09/2081	चंद्र	17/07/2083	बुध	04/07/2085	शुक्र	06/08/2087	सूर्य	22/07/2089
चंद्र	13/12/2081	बुध	29/10/2083	शुक्र	29/10/2085	सूर्य	20/10/2087	मंगल	10/09/2089
बुध	20/03/2082	शुक्र	15/02/2084	सूर्य	08/01/2086	मंगल	10/01/2088	गुरु	04/11/2089
शुक्र	30/06/2082	सूर्य	22/04/2084	मंगल	26/03/2086	गुरु	08/04/2088	शनि	01/01/2090
सूर्य	01/09/2082	मंगल	04/07/2084	गुरु	18/06/2086	शनि	13/07/2088	केतु	05/03/2090
मंगल	08/11/2082	गुरु	21/09/2084	शनि	17/09/2086	केतु	24/10/2088	चंद्र	11/05/2090
गुरु	21/01/2083	शनि	15/12/2084	केतु	22/12/2086	चंद्र	10/02/2089	बुध	21/07/2090
शनि	11/04/2083	केतु	16/03/2085	चंद्र	05/04/2087	बुध	06/06/2089	शुक्र	04/10/2090

षोडशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

शनि - मंगल		शनि - गुरु		केतु - केतु		केतु - चंद्र		केतु - बुध	
04/10/2090		16/03/2092		10/10/2093		19/09/2095		13/10/2097	
16/03/2092		10/10/2093		19/09/2095		13/10/2097		25/12/2099	
मंगल	28/11/2090	गुरु	19/05/2092	केतु	10/01/2094	चंद्र	01/01/2096	बुध	08/02/2098
गुरु	26/01/2091	शनि	28/07/2092	चंद्र	18/04/2094	बुध	21/04/2096	शुक्र	13/06/2098
शनि	31/03/2091	केतु	10/10/2092	बुध	30/07/2094	शुक्र	16/08/2096	सूर्य	28/08/2098
केतु	07/06/2091	चंद्र	28/12/2092	शुक्र	17/11/2094	सूर्य	27/10/2096	मंगल	19/11/2098
चंद्र	19/08/2091	बुध	22/03/2093	सूर्य	24/01/2095	मंगल	13/01/2097	गुरु	17/02/2099
बुध	05/11/2091	शुक्र	19/06/2093	मंगल	07/04/2095	गुरु	08/04/2097	शनि	25/05/2099
शुक्र	26/01/2092	सूर्य	12/08/2093	गुरु	25/06/2095	शनि	08/07/2097	केतु	06/09/2099
सूर्य	16/03/2092	मंगल	10/10/2093	शनि	19/09/2095	केतु	13/10/2097	चंद्र	25/12/2099

केतु - शुक्र		केतु - सूर्य		केतु - मंगल		केतु - गुरु		केतु - शनि	
25/12/2099		24/04/2102		26/09/2103		15/04/2105		20/12/2106	
24/04/2102		26/09/2103		15/04/2105		20/12/2106		11/10/2108	
शुक्र	06/05/2100	सूर्य	13/06/2102	मंगल	24/11/2103	गुरु	23/06/2105	शनि	10/03/2107
सूर्य	26/07/2100	मंगल	06/08/2102	गुरु	26/01/2104	शनि	05/09/2105	केतु	03/06/2107
मंगल	22/10/2100	गुरु	03/10/2102	शनि	04/04/2104	केतु	23/11/2105	चंद्र	02/09/2107
गुरु	25/01/2101	शनि	04/12/2102	केतु	16/06/2104	चंद्र	16/02/2106	बुध	08/12/2107
शनि	08/05/2101	केतु	10/02/2103	चंद्र	02/09/2104	बुध	17/05/2106	शुक्र	20/03/2108
केतु	26/08/2101	चंद्र	22/04/2103	बुध	24/11/2104	शुक्र	20/08/2106	सूर्य	22/05/2108
चंद्र	21/12/2101	बुध	07/07/2103	शुक्र	20/02/2105	सूर्य	17/10/2106	मंगल	29/07/2108
बुध	24/04/2102	शुक्र	26/09/2103	सूर्य	15/04/2105	मंगल	20/12/2106	गुरु	11/10/2108

चंद्र - चंद्र		चंद्र - बुध		चंद्र - शुक्र		चंद्र - सूर्य		चंद्र - मंगल	
11/10/2108		26/12/2110		01/05/2113		24/10/2115		01/05/2117	
26/12/2110		01/05/2113		24/10/2115		01/05/2117		26/12/2118	
चंद्र	30/01/2109	बुध	01/05/2111	शुक्र	18/09/2113	सूर्य	16/12/2115	मंगल	02/07/2117
बुध	28/05/2109	शुक्र	11/09/2111	सूर्य	13/12/2113	मंगल	11/02/2116	गुरु	08/09/2117
शुक्र	30/09/2109	सूर्य	01/12/2111	मंगल	17/03/2114	गुरु	13/04/2116	शनि	20/11/2117
सूर्य	16/12/2109	मंगल	27/02/2112	गुरु	27/06/2114	शनि	19/06/2116	केतु	06/02/2118
मंगल	09/03/2110	गुरु	02/06/2112	शनि	14/10/2114	केतु	30/08/2116	चंद्र	30/04/2118
गुरु	08/06/2110	शनि	14/09/2112	केतु	08/02/2115	चंद्र	14/11/2116	बुध	28/07/2118
शनि	13/09/2110	केतु	02/01/2113	चंद्र	13/06/2115	बुध	04/02/2117	शुक्र	30/10/2118
केतु	26/12/2110	चंद्र	01/05/2113	बुध	24/10/2115	शुक्र	01/05/2117	सूर्य	26/12/2118

त्रिभगी दशा

भोग्य दशा काल : मंगल 3 वर्ष 11 मास 6 दिन

मंगल 5 वर्ष		राहु 12 वर्ष		गुरु 11 वर्ष		शनि 13 वर्ष		बुध 11 वर्ष	
11/06/2011		18/05/2015		18/05/2027		16/01/2038		17/09/2050	
18/05/2015		18/05/2027		16/01/2038		17/09/2050		16/01/2062	
	11/06/2011	राहु	06/03/2017	गुरु	19/10/2028	शनि	19/01/2040	बुध	25/04/2052
राहु	07/09/2011	गुरु	11/10/2018	शनि	27/06/2030	बुध	04/11/2041	केतु	23/12/2052
गुरु	21/04/2012	शनि	04/09/2020	बुध	31/12/2031	केतु	01/08/2042	शुक्र	12/11/2054
शनि	16/01/2013	बुध	18/05/2022	केतु	15/08/2032	शुक्र	10/09/2044	सूर्य	07/06/2055
बुध	14/09/2013	केतु	29/01/2023	शुक्र	26/05/2034	सूर्य	29/04/2045	चंद्र	17/05/2056
केतु	23/12/2013	शुक्र	28/01/2025	सूर्य	07/12/2034	चंद्र	20/05/2046	मंगल	14/01/2057
शुक्र	03/10/2014	सूर्य	04/09/2025	चंद्र	27/10/2035	मंगल	14/02/2047	राहु	27/09/2058
सूर्य	27/12/2014	चंद्र	04/09/2026	मंगल	11/06/2036	राहु	08/01/2049	गुरु	01/04/2060
चंद्र	18/05/2015	मंगल	18/05/2027	राहु	16/01/2038	गुरु	17/09/2050	शनि	16/01/2062

केतु 5 वर्ष		शुक्र 13 वर्ष		सूर्य 4 वर्ष		चंद्र 7 वर्ष		मंगल 5 वर्ष	
16/01/2062		17/09/2066		17/01/2080		17/01/2084		17/09/2090	
17/09/2066		17/01/2080		17/01/2084		17/09/2090		00/00/0000	
केतु	26/04/2062	शुक्र	06/12/2068	सूर्य	30/03/2080	चंद्र	07/08/2084	मंगल	25/12/2090
शुक्र	04/02/2063	सूर्य	07/08/2069	चंद्र	29/07/2080	मंगल	27/12/2084	राहु	11/06/2091
सूर्य	30/04/2063	चंद्र	17/09/2070	मंगल	23/10/2080	राहु	27/12/2085		00/00/0000
चंद्र	19/09/2063	मंगल	28/06/2071	राहु	30/05/2081	गुरु	17/11/2086		00/00/0000
मंगल	27/12/2063	राहु	27/06/2073	गुरु	11/12/2081	शनि	07/12/2087		00/00/0000
राहु	08/09/2064	गुरु	08/04/2075	शनि	30/07/2082	बुध	16/11/2088		00/00/0000
गुरु	23/04/2065	शनि	18/05/2077	बुध	22/02/2083	केतु	07/04/2089		00/00/0000
शनि	18/01/2066	बुध	08/04/2079	केतु	18/05/2083	शुक्र	18/05/2090		00/00/0000
बुध	17/09/2066	केतु	17/01/2080	शुक्र	17/01/2084	सूर्य	17/09/2090		00/00/0000

नोट : उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।
त्रिभगी दशा पूरे 80 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

त्रिभगी दशा - प्रत्यन्तर

मंगल - राहु		मंगल - गुरु		मंगल - शनि		मंगल - बुध		मंगल - केतु	
11/06/2011		07/09/2011		21/04/2012		16/01/2013		14/09/2013	
07/09/2011		21/04/2012		16/01/2013		14/09/2013		23/12/2013	
	00/00/0000	गुरु	07/10/2011	शनि	03/06/2012	बुध	19/02/2013	केतु	20/09/2013
	00/00/0000	शनि	12/11/2011	बुध	11/07/2012	केतु	05/03/2013	शुक्र	07/10/2013
	00/00/0000	बुध	14/12/2011	केतु	27/07/2012	शुक्र	14/04/2013	सूर्य	12/10/2013
	00/00/0000	केतु	27/12/2011	शुक्र	10/09/2012	सूर्य	27/04/2013	चंद्र	20/10/2013
	11/06/2011	शुक्र	03/02/2012	सूर्य	23/09/2012	चंद्र	17/05/2013	मंगल	26/10/2013
शुक्र	20/07/2011	सूर्य	15/02/2012	चंद्र	16/10/2012	मंगल	31/05/2013	राहु	10/11/2013
सूर्य	02/08/2011	चंद्र	05/03/2012	मंगल	31/10/2012	राहु	06/07/2013	गुरु	23/11/2013
चंद्र	23/08/2011	मंगल	18/03/2012	राहु	11/12/2012	गुरु	07/08/2013	शनि	09/12/2013
मंगल	07/09/2011	राहु	21/04/2012	गुरु	16/01/2013	शनि	14/09/2013	बुध	23/12/2013

मंगल - शुक्र		मंगल - सूर्य		मंगल - चंद्र		राहु - राहु		राहु - गुरु	
23/12/2013		03/10/2014		27/12/2014		18/05/2015		06/03/2017	
03/10/2014		27/12/2014		18/05/2015		06/03/2017		11/10/2018	
शुक्र	08/02/2014	सूर्य	07/10/2014	चंद्र	08/01/2015	राहु	25/08/2015	गुरु	23/05/2017
सूर्य	22/02/2014	चंद्र	14/10/2014	मंगल	16/01/2015	गुरु	20/11/2015	शनि	23/08/2017
चंद्र	18/03/2014	मंगल	19/10/2014	राहु	07/02/2015	शनि	04/03/2016	बुध	14/11/2017
मंगल	04/04/2014	राहु	01/11/2014	गुरु	25/02/2015	बुध	05/06/2016	केतु	18/12/2017
राहु	16/05/2014	गुरु	12/11/2014	शनि	20/03/2015	केतु	13/07/2016	शुक्र	25/03/2018
गुरु	23/06/2014	शनि	26/11/2014	बुध	09/04/2015	शुक्र	31/10/2016	सूर्य	24/04/2018
शनि	07/08/2014	बुध	08/12/2014	केतु	17/04/2015	सूर्य	02/12/2016	चंद्र	11/06/2018
बुध	16/09/2014	केतु	13/12/2014	शुक्र	11/05/2015	चंद्र	26/01/2017	मंगल	15/07/2018
केतु	03/10/2014	शुक्र	27/12/2014	सूर्य	18/05/2015	मंगल	06/03/2017	राहु	11/10/2018

राहु - शनि		राहु - बुध		राहु - केतु		राहु - शुक्र		राहु - सूर्य	
11/10/2018		04/09/2020		18/05/2022		29/01/2023		28/01/2025	
04/09/2020		18/05/2022		29/01/2023		28/01/2025		04/09/2025	
शनि	29/01/2019	बुध	01/12/2020	केतु	02/06/2022	शुक्र	30/05/2023	सूर्य	08/02/2025
बुध	07/05/2019	केतु	06/01/2021	शुक्र	14/07/2022	सूर्य	06/07/2023	चंद्र	26/02/2025
केतु	17/06/2019	शुक्र	20/04/2021	सूर्य	27/07/2022	चंद्र	05/09/2023	मंगल	11/03/2025
शुक्र	10/10/2019	सूर्य	21/05/2021	चंद्र	18/08/2022	मंगल	17/10/2023	राहु	13/04/2025
सूर्य	14/11/2019	चंद्र	11/07/2021	मंगल	01/09/2022	राहु	04/02/2024	गुरु	12/05/2025
चंद्र	11/01/2020	मंगल	17/08/2021	राहु	10/10/2022	गुरु	11/05/2024	शनि	16/06/2025
मंगल	20/02/2020	राहु	18/11/2021	गुरु	13/11/2022	शनि	04/09/2024	बुध	17/07/2025
राहु	03/06/2020	गुरु	09/02/2022	शनि	23/12/2022	बुध	16/12/2024	केतु	30/07/2025
गुरु	04/09/2020	शनि	18/05/2022	बुध	29/01/2023	केतु	28/01/2025	शुक्र	04/09/2025

त्रिभगी दशा - प्रत्यन्तर

राहु - चंद्र		राहु - मंगल		गुरु - गुरु		गुरु - शनि		गुरु - बुध	
04/09/2025		04/09/2026		18/05/2027		19/10/2028		27/06/2030	
04/09/2026		18/05/2027		19/10/2028		27/06/2030		31/12/2031	
चंद्र	05/10/2025	मंगल	19/09/2026	गुरु	26/07/2027	शनि	24/01/2029	बुध	14/09/2030
मंगल	26/10/2025	राहु	28/10/2026	शनि	17/10/2027	बुध	22/04/2029	केतु	16/10/2030
राहु	20/12/2025	गुरु	01/12/2026	बुध	29/12/2027	केतु	28/05/2029	शुक्र	16/01/2031
गुरु	06/02/2026	शनि	10/01/2027	केतु	29/01/2028	शुक्र	07/09/2029	सूर्य	12/02/2031
शनि	05/04/2026	बुध	16/02/2027	शुक्र	24/04/2028	सूर्य	08/10/2029	चंद्र	30/03/2031
बुध	27/05/2026	केतु	02/03/2027	सूर्य	20/05/2028	चंद्र	29/11/2029	मंगल	02/05/2031
केतु	17/06/2026	शुक्र	14/04/2027	चंद्र	02/07/2028	मंगल	04/01/2030	राहु	23/07/2031
शुक्र	17/08/2026	सूर्य	27/04/2027	मंगल	02/08/2028	राहु	06/04/2030	गुरु	05/10/2031
सूर्य	04/09/2026	चंद्र	18/05/2027	राहु	19/10/2028	गुरु	27/06/2030	शनि	31/12/2031

गुरु - केतु		गुरु - शुक्र		गुरु - सूर्य		गुरु - चंद्र		गुरु - मंगल	
31/12/2031		15/08/2032		26/05/2034		07/12/2034		27/10/2035	
15/08/2032		26/05/2034		07/12/2034		27/10/2035		11/06/2036	
केतु	14/01/2032	शुक्र	01/12/2032	सूर्य	05/06/2034	चंद्र	03/01/2035	मंगल	10/11/2035
शुक्र	21/02/2032	सूर्य	02/01/2033	चंद्र	21/06/2034	मंगल	22/01/2035	राहु	14/12/2035
सूर्य	03/03/2032	चंद्र	25/02/2033	मंगल	02/07/2034	राहु	12/03/2035	गुरु	13/01/2036
चंद्र	22/03/2032	मंगल	04/04/2033	राहु	01/08/2034	गुरु	24/04/2035	शनि	18/02/2036
मंगल	04/04/2032	राहु	11/07/2033	गुरु	27/08/2034	शनि	14/06/2035	बुध	21/03/2036
राहु	08/05/2032	गुरु	05/10/2033	शनि	26/09/2034	बुध	30/07/2035	केतु	04/04/2036
गुरु	08/06/2032	शनि	16/01/2034	बुध	24/10/2034	केतु	18/08/2035	शुक्र	11/05/2036
शनि	13/07/2032	बुध	18/04/2034	केतु	04/11/2034	शुक्र	11/10/2035	सूर्य	23/05/2036
बुध	15/08/2032	केतु	26/05/2034	शुक्र	07/12/2034	सूर्य	27/10/2035	चंद्र	11/06/2036

गुरु - राहु		शनि - शनि		शनि - बुध		शनि - केतु		शनि - शुक्र	
11/06/2036		16/01/2038		19/01/2040		04/11/2041		01/08/2042	
16/01/2038		19/01/2040		04/11/2041		01/08/2042		10/09/2044	
राहु	06/09/2036	शनि	12/05/2038	बुध	21/04/2040	केतु	20/11/2041	शुक्र	07/12/2042
गुरु	23/11/2036	बुध	24/08/2038	केतु	29/05/2040	शुक्र	04/01/2042	सूर्य	15/01/2043
शनि	24/02/2037	केतु	06/10/2038	शुक्र	15/09/2040	सूर्य	17/01/2042	चंद्र	20/03/2043
बुध	18/05/2037	शुक्र	05/02/2039	सूर्य	18/10/2040	चंद्र	09/02/2042	मंगल	04/05/2043
केतु	21/06/2037	सूर्य	13/03/2039	चंद्र	11/12/2040	मंगल	25/02/2042	राहु	28/08/2043
शुक्र	26/09/2037	चंद्र	13/05/2039	मंगल	19/01/2041	राहु	06/04/2042	गुरु	09/12/2043
सूर्य	25/10/2037	मंगल	25/06/2039	राहु	27/04/2041	गुरु	12/05/2042	शनि	09/04/2044
चंद्र	13/12/2037	राहु	13/10/2039	गुरु	23/07/2041	शनि	24/06/2042	बुध	27/07/2044
मंगल	16/01/2038	गुरु	19/01/2040	शनि	04/11/2041	बुध	01/08/2042	केतु	10/09/2044

त्रिभगी दशा - प्रत्यन्तर

शनि - सूर्य		शनि - चंद्र		शनि - मंगल		शनि - राहु		शनि - गुरु	
10/09/2044		29/04/2045		20/05/2046		14/02/2047		08/01/2049	
29/04/2045		20/05/2046		14/02/2047		08/01/2049		17/09/2050	
सूर्य	22/09/2044	चंद्र	01/06/2045	मंगल	05/06/2046	राहु	29/05/2047	गुरु	31/03/2049
चंद्र	11/10/2044	मंगल	23/06/2045	राहु	15/07/2046	गुरु	29/08/2047	शनि	07/07/2049
मंगल	24/10/2044	राहु	20/08/2045	गुरु	20/08/2046	शनि	17/12/2047	बुध	02/10/2049
राहु	28/11/2044	गुरु	10/10/2045	शनि	02/10/2046	बुध	25/03/2048	केतु	07/11/2049
गुरु	29/12/2044	शनि	10/12/2045	बुध	09/11/2046	केतु	04/05/2048	शुक्र	18/02/2050
शनि	04/02/2045	बुध	03/02/2046	केतु	25/11/2046	शुक्र	28/08/2048	सूर्य	21/03/2050
बुध	08/03/2045	केतु	25/02/2046	शुक्र	09/01/2047	सूर्य	01/10/2048	चंद्र	11/05/2050
केतु	22/03/2045	शुक्र	01/05/2046	सूर्य	22/01/2047	चंद्र	28/11/2048	मंगल	16/06/2050
शुक्र	29/04/2045	सूर्य	20/05/2046	चंद्र	14/02/2047	मंगल	08/01/2049	राहु	17/09/2050

बुध - बुध		बुध - केतु		बुध - शुक्र		बुध - सूर्य		बुध - चंद्र	
17/09/2050		25/04/2052		23/12/2052		12/11/2054		07/06/2055	
25/04/2052		23/12/2052		12/11/2054		07/06/2055		17/05/2056	
बुध	09/12/2050	केतु	09/05/2052	शुक्र	17/04/2053	सूर्य	23/11/2054	चंद्र	06/07/2055
केतु	12/01/2051	शुक्र	18/06/2052	सूर्य	21/05/2053	चंद्र	10/12/2054	मंगल	26/07/2055
शुक्र	20/04/2051	सूर्य	30/06/2052	चंद्र	18/07/2053	मंगल	22/12/2054	राहु	16/09/2055
सूर्य	19/05/2051	चंद्र	21/07/2052	मंगल	27/08/2053	राहु	22/01/2055	गुरु	01/11/2055
चंद्र	07/07/2051	मंगल	04/08/2052	राहु	08/12/2053	गुरु	19/02/2055	शनि	26/12/2055
मंगल	10/08/2051	राहु	09/09/2052	गुरु	10/03/2054	शनि	24/03/2055	बुध	13/02/2056
राहु	06/11/2051	गुरु	11/10/2052	शनि	27/06/2054	बुध	22/04/2055	केतु	04/03/2056
गुरु	23/01/2052	शनि	18/11/2052	बुध	03/10/2054	केतु	04/05/2055	शुक्र	30/04/2056
शनि	25/04/2052	बुध	23/12/2052	केतु	12/11/2054	शुक्र	07/06/2055	सूर्य	17/05/2056

बुध - मंगल		बुध - राहु		बुध - गुरु		बुध - शनि		केतु - केतु	
17/05/2056		14/01/2057		27/09/2058		01/04/2060		16/01/2062	
14/01/2057		27/09/2058		01/04/2060		16/01/2062		26/04/2062	
मंगल	31/05/2056	राहु	17/04/2057	गुरु	09/12/2058	शनि	14/07/2060	केतु	22/01/2062
राहु	07/07/2056	गुरु	09/07/2057	शनि	07/03/2059	बुध	14/10/2060	शुक्र	08/02/2062
गुरु	08/08/2056	शनि	15/10/2057	बुध	24/05/2059	केतु	22/11/2060	सूर्य	12/02/2062
शनि	15/09/2056	बुध	11/01/2058	केतु	25/06/2059	शुक्र	11/03/2061	चंद्र	21/02/2062
बुध	19/10/2056	केतु	16/02/2058	शुक्र	25/09/2059	सूर्य	13/04/2061	मंगल	27/02/2062
केतु	02/11/2056	शुक्र	31/05/2058	सूर्य	23/10/2059	चंद्र	06/06/2061	राहु	13/03/2062
शुक्र	13/12/2056	सूर्य	01/07/2058	चंद्र	08/12/2059	मंगल	14/07/2061	गुरु	27/03/2062
सूर्य	25/12/2056	चंद्र	22/08/2058	मंगल	09/01/2060	राहु	21/10/2061	शनि	11/04/2062
चंद्र	14/01/2057	मंगल	27/09/2058	राहु	01/04/2060	गुरु	16/01/2062	बुध	26/04/2062

त्रिभगी दशा - प्रत्यन्तर

केतु - शुक्र		केतु - सूर्य		केतु - चंद्र		केतु - मंगल		केतु - राहु	
26/04/2062		04/02/2063		30/04/2063		19/09/2063		27/12/2063	
04/02/2063		30/04/2063		19/09/2063		27/12/2063		08/09/2064	
शुक्र	12/06/2062	सूर्य	08/02/2063	चंद्र	12/05/2063	मंगल	25/09/2063	राहु	04/02/2064
सूर्य	26/06/2062	चंद्र	15/02/2063	मंगल	20/05/2063	राहु	10/10/2063	गुरु	09/03/2064
चंद्र	20/07/2062	मंगल	20/02/2063	राहु	10/06/2063	गुरु	23/10/2063	शनि	18/04/2064
मंगल	05/08/2062	राहु	05/03/2063	गुरु	29/06/2063	शनि	08/11/2063	बुध	25/05/2064
राहु	17/09/2062	गुरु	16/03/2063	शनि	22/07/2063	बुध	22/11/2063	केतु	08/06/2064
गुरु	25/10/2062	शनि	30/03/2063	बुध	11/08/2063	केतु	28/11/2063	शुक्र	21/07/2064
शनि	09/12/2062	बुध	11/04/2063	केतु	19/08/2063	शुक्र	14/12/2063	सूर्य	03/08/2064
बुध	18/01/2063	केतु	16/04/2063	शुक्र	12/09/2063	सूर्य	19/12/2063	चंद्र	24/08/2064
केतु	04/02/2063	शुक्र	30/04/2063	सूर्य	19/09/2063	चंद्र	27/12/2063	मंगल	08/09/2064

केतु - गुरु		केतु - शनि		केतु - बुध		शुक्र - शुक्र		शुक्र - सूर्य	
08/09/2064		23/04/2065		18/01/2066		17/09/2066		06/12/2068	
23/04/2065		18/01/2066		17/09/2066		06/12/2068		07/08/2069	
गुरु	08/10/2064	शनि	05/06/2065	बुध	21/02/2066	शुक्र	30/01/2067	सूर्य	18/12/2068
शनि	13/11/2064	बुध	13/07/2065	केतु	07/03/2066	सूर्य	12/03/2067	चंद्र	08/01/2069
बुध	16/12/2064	केतु	29/07/2065	शुक्र	17/04/2066	चंद्र	18/05/2067	मंगल	22/01/2069
केतु	29/12/2064	शुक्र	12/09/2065	सूर्य	29/04/2066	मंगल	04/07/2067	राहु	28/02/2069
शुक्र	05/02/2065	सूर्य	25/09/2065	चंद्र	19/05/2066	राहु	03/11/2067	गुरु	01/04/2069
सूर्य	16/02/2065	चंद्र	18/10/2065	मंगल	02/06/2066	गुरु	19/02/2068	शनि	10/05/2069
चंद्र	07/03/2065	मंगल	03/11/2065	राहु	08/07/2066	शनि	27/06/2068	बुध	13/06/2069
मंगल	20/03/2065	राहु	13/12/2065	गुरु	09/08/2066	बुध	20/10/2068	केतु	27/06/2069
राहु	23/04/2065	गुरु	18/01/2066	शनि	17/09/2066	केतु	06/12/2068	शुक्र	07/08/2069

शुक्र - चंद्र		शुक्र - मंगल		शुक्र - राहु		शुक्र - गुरु		शुक्र - शनि	
07/08/2069		17/09/2070		28/06/2071		27/06/2073		08/04/2075	
17/09/2070		28/06/2071		27/06/2073		08/04/2075		18/05/2077	
चंद्र	10/09/2069	मंगल	03/10/2070	राहु	15/10/2071	गुरु	22/09/2073	शनि	08/08/2075
मंगल	03/10/2069	राहु	15/11/2070	गुरु	21/01/2072	शनि	03/01/2074	बुध	25/11/2075
राहु	03/12/2069	गुरु	23/12/2070	शनि	15/05/2072	बुध	05/04/2074	केतु	09/01/2076
गुरु	26/01/2070	शनि	06/02/2071	बुध	27/08/2072	केतु	12/05/2074	शुक्र	16/05/2076
शनि	01/04/2070	बुध	18/03/2071	केतु	08/10/2072	शुक्र	29/08/2074	सूर्य	24/06/2076
बुध	28/05/2070	केतु	04/04/2071	शुक्र	07/02/2073	सूर्य	30/09/2074	चंद्र	27/08/2076
केतु	21/06/2070	शुक्र	21/05/2071	सूर्य	16/03/2073	चंद्र	23/11/2074	मंगल	11/10/2076
शुक्र	27/08/2070	सूर्य	04/06/2071	चंद्र	16/05/2073	मंगल	31/12/2074	राहु	04/02/2077
सूर्य	17/09/2070	चंद्र	28/06/2071	मंगल	27/06/2073	राहु	08/04/2075	गुरु	18/05/2077

त्रिभगी दशा - प्रत्यन्तर

शुक्र - बुध		शुक्र - केतु		सूर्य - सूर्य		सूर्य - चंद्र		सूर्य - मंगल	
18/05/2077		08/04/2079		17/01/2080		30/03/2080		29/07/2080	
08/04/2079		17/01/2080		30/03/2080		29/07/2080		23/10/2080	
बुध	23/08/2077	केतु	24/04/2079	सूर्य	20/01/2080	चंद्र	09/04/2080	मंगल	03/08/2080
केतु	03/10/2077	शुक्र	10/06/2079	चंद्र	26/01/2080	मंगल	16/04/2080	राहु	16/08/2080
शुक्र	26/01/2078	सूर्य	25/06/2079	मंगल	31/01/2080	राहु	04/05/2080	गुरु	28/08/2080
सूर्य	01/03/2078	चंद्र	18/07/2079	राहु	11/02/2080	गुरु	20/05/2080	शनि	10/09/2080
चंद्र	28/04/2078	मंगल	04/08/2079	गुरु	20/02/2080	शनि	09/06/2080	बुध	22/09/2080
मंगल	07/06/2078	राहु	16/09/2079	शनि	03/03/2080	बुध	26/06/2080	केतु	27/09/2080
राहु	18/09/2078	गुरु	23/10/2079	बुध	13/03/2080	केतु	03/07/2080	शुक्र	11/10/2080
गुरु	19/12/2078	शनि	07/12/2079	केतु	18/03/2080	शुक्र	23/07/2080	सूर्य	16/10/2080
शनि	08/04/2079	बुध	17/01/2080	शुक्र	30/03/2080	सूर्य	29/07/2080	चंद्र	23/10/2080

सूर्य - राहु		सूर्य - गुरु		सूर्य - शनि		सूर्य - बुध		सूर्य - केतु	
23/10/2080		30/05/2081		11/12/2081		30/07/2082		22/02/2083	
30/05/2081		11/12/2081		30/07/2082		22/02/2083		18/05/2083	
राहु	25/11/2080	गुरु	25/06/2081	शनि	16/01/2082	बुध	28/08/2082	केतु	27/02/2083
गुरु	24/12/2080	शनि	26/07/2081	बुध	18/02/2082	केतु	09/09/2082	शुक्र	13/03/2083
शनि	27/01/2081	बुध	22/08/2081	केतु	04/03/2082	शुक्र	14/10/2082	सूर्य	17/03/2083
बुध	28/02/2081	केतु	03/09/2081	शुक्र	11/04/2082	सूर्य	24/10/2082	चंद्र	24/03/2083
केतु	12/03/2081	शुक्र	05/10/2081	सूर्य	23/04/2082	चंद्र	10/11/2082	मंगल	29/03/2083
शुक्र	18/04/2081	सूर्य	15/10/2081	चंद्र	12/05/2082	मंगल	23/11/2082	राहु	11/04/2083
सूर्य	29/04/2081	चंद्र	31/10/2081	मंगल	25/05/2082	राहु	24/12/2082	गुरु	23/04/2083
चंद्र	17/05/2081	मंगल	11/11/2081	राहु	29/06/2082	गुरु	20/01/2083	शनि	06/05/2083
मंगल	30/05/2081	राहु	11/12/2081	गुरु	30/07/2082	शनि	22/02/2083	बुध	18/05/2083

सूर्य - शुक्र		चंद्र - चंद्र		चंद्र - मंगल		चंद्र - राहु		चंद्र - गुरु	
18/05/2083		17/01/2084		07/08/2084		27/12/2084		27/12/2085	
17/01/2084		07/08/2084		27/12/2084		27/12/2085		17/11/2086	
शुक्र	28/06/2083	चंद्र	03/02/2084	मंगल	15/08/2084	राहु	19/02/2085	गुरु	08/02/2086
सूर्य	10/07/2083	मंगल	14/02/2084	राहु	05/09/2084	गुरु	09/04/2085	शनि	01/04/2086
चंद्र	30/07/2083	राहु	16/03/2084	गुरु	24/09/2084	शनि	06/06/2085	बुध	17/05/2086
मंगल	13/08/2083	गुरु	12/04/2084	शनि	17/10/2084	बुध	28/07/2085	केतु	04/06/2086
राहु	19/09/2083	शनि	14/05/2084	बुध	06/11/2084	केतु	18/08/2085	शुक्र	29/07/2086
गुरु	21/10/2083	बुध	12/06/2084	केतु	14/11/2084	शुक्र	18/10/2085	सूर्य	14/08/2086
शनि	29/11/2083	केतु	24/06/2084	शुक्र	08/12/2084	सूर्य	05/11/2085	चंद्र	10/09/2086
बुध	02/01/2084	शुक्र	27/07/2084	सूर्य	15/12/2084	चंद्र	06/12/2085	मंगल	29/09/2086
केतु	17/01/2084	सूर्य	07/08/2084	चंद्र	27/12/2084	मंगल	27/12/2085	राहु	17/11/2086

अष्टोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : बुध 12 वर्ष 1 मास 0 दिन

बुध 17 वर्ष		शनि 10 वर्ष		गुरु 19 वर्ष		राहु 12 वर्ष		शुक्र 21 वर्ष	
11/06/2011		11/07/2023		11/07/2033		11/07/2052		11/07/2064	
11/07/2023		11/07/2033		11/07/2052		11/07/2064		11/07/2085	
	00/00/0000	शनि	14/06/2024	गुरु	13/11/2036	राहु	10/11/2053	शुक्र	10/08/2068
	11/06/2011	गुरु	18/03/2026	राहु	24/12/2038	शुक्र	11/03/2056	सूर्य	10/10/2069
गुरु	07/10/2013	राहु	28/04/2027	शुक्र	03/09/2042	सूर्य	09/11/2056	चंद्र	10/09/2072
राहु	28/08/2015	शुक्र	07/04/2029	सूर्य	24/09/2043	चंद्र	11/07/2058	मंगल	01/04/2074
शुक्र	17/12/2018	सूर्य	27/10/2029	चंद्र	15/05/2046	मंगल	01/06/2059	बुध	21/07/2077
सूर्य	27/11/2019	चंद्र	18/03/2031	मंगल	11/10/2047	बुध	21/04/2061	शनि	01/07/2079
चंद्र	08/04/2022	मंगल	14/12/2031	बुध	07/10/2050	शनि	01/06/2062	गुरु	12/03/2083
मंगल	11/07/2023	बुध	11/07/2033	शनि	11/07/2052	गुरु	11/07/2064	राहु	11/07/2085

सूर्य 6 वर्ष		चंद्र 15 वर्ष		मंगल 8 वर्ष		बुध 17 वर्ष	
11/07/2085		11/07/2091		12/07/2106		12/07/2114	
11/07/2091		12/07/2106		12/07/2114		00/00/0000	
सूर्य	10/11/2085	चंद्र	10/08/2093	मंगल	14/02/2107	बुध	16/03/2117
चंद्र	10/09/2086	मंगल	20/09/2094	बुध	19/05/2108	शनि	12/10/2118
मंगल	19/02/2087	बुध	30/01/2097	शनि	13/02/2109	गुरु	12/06/2119
बुध	30/01/2088	शनि	21/06/2098	गुरु	12/07/2110		00/00/0000
शनि	20/08/2088	गुरु	10/02/2101	राहु	02/06/2111		00/00/0000
गुरु	10/09/2089	राहु	12/10/2102	शुक्र	21/12/2112		00/00/0000
राहु	11/05/2090	शुक्र	11/09/2105	सूर्य	01/06/2113		00/00/0000
शुक्र	11/07/2091	सूर्य	12/07/2106	चंद्र	12/07/2114		00/00/0000

नोट : उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।
अष्टोत्तरी दशा पूरे 108 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

अष्टोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

बुध - गुरु		बुध - राहु		बुध - शुक्र		बुध - सूर्य		बुध - चंद्र	
11/06/2011		07/10/2013		28/08/2015		17/12/2018		27/11/2019	
07/10/2013		28/08/2015		17/12/2018		27/11/2019		08/04/2022	
	11/06/2011	राहु	23/12/2013	शुक्र	19/04/2016	सूर्य	05/01/2019	चंद्र	26/03/2020
राहु	20/08/2011	शुक्र	06/05/2014	सूर्य	25/06/2016	चंद्र	22/02/2019	मंगल	29/05/2020
शुक्र	19/03/2012	सूर्य	13/06/2014	चंद्र	09/12/2016	मंगल	20/03/2019	बुध	12/10/2020
सूर्य	19/05/2012	चंद्र	17/09/2014	मंगल	09/03/2017	बुध	13/05/2019	शनि	30/12/2020
चंद्र	18/10/2012	मंगल	07/11/2014	बुध	15/09/2017	शनि	14/06/2019	गुरु	31/05/2021
मंगल	07/01/2013	बुध	24/02/2015	शनि	05/01/2018	गुरु	14/08/2019	राहु	04/09/2021
बुध	28/06/2013	शनि	28/04/2015	गुरु	05/08/2018	राहु	21/09/2019	शुक्र	19/02/2022
शनि	07/10/2013	गुरु	28/08/2015	राहु	17/12/2018	शुक्र	27/11/2019	सूर्य	08/04/2022

बुध - मंगल		शनि - शनि		शनि - गुरु		शनि - राहु		शनि - शुक्र	
08/04/2022		11/07/2023		14/06/2024		18/03/2026		28/04/2027	
11/07/2023		14/06/2024		18/03/2026		28/04/2027		07/04/2029	
मंगल	12/05/2022	शनि	12/08/2023	गुरु	05/10/2024	राहु	02/05/2026	शुक्र	13/09/2027
बुध	23/07/2022	गुरु	10/10/2023	राहु	15/12/2024	शुक्र	20/07/2026	सूर्य	23/10/2027
शनि	04/09/2022	राहु	17/11/2023	शुक्र	19/04/2025	सूर्य	12/08/2026	चंद्र	29/01/2028
गुरु	23/11/2022	शुक्र	22/01/2024	सूर्य	25/05/2025	चंद्र	07/10/2026	मंगल	22/03/2028
राहु	14/01/2023	सूर्य	09/02/2024	चंद्र	22/08/2025	मंगल	06/11/2026	बुध	12/07/2028
शुक्र	13/04/2023	चंद्र	27/03/2024	मंगल	09/10/2025	बुध	09/01/2027	शनि	15/09/2028
सूर्य	09/05/2023	मंगल	21/04/2024	बुध	18/01/2026	शनि	16/02/2027	गुरु	18/01/2029
चंद्र	11/07/2023	बुध	14/06/2024	शनि	18/03/2026	गुरु	28/04/2027	राहु	07/04/2029

शनि - सूर्य		शनि - चंद्र		शनि - मंगल		शनि - बुध		गुरु - गुरु	
07/04/2029		27/10/2029		18/03/2031		14/12/2031		11/07/2033	
27/10/2029		18/03/2031		14/12/2031		11/07/2033		13/11/2036	
सूर्य	19/04/2029	चंद्र	06/01/2030	मंगल	08/04/2031	बुध	14/03/2032	गुरु	11/02/2034
चंद्र	17/05/2029	मंगल	12/02/2030	बुध	20/05/2031	शनि	06/05/2032	राहु	26/06/2034
मंगल	01/06/2029	बुध	03/05/2030	शनि	14/06/2031	गुरु	15/08/2032	शुक्र	19/02/2035
बुध	03/07/2029	शनि	19/06/2030	गुरु	01/08/2031	राहु	18/10/2032	सूर्य	28/04/2035
शनि	21/07/2029	गुरु	16/09/2030	राहु	31/08/2031	शुक्र	07/02/2033	चंद्र	14/10/2035
गुरु	26/08/2029	राहु	12/11/2030	शुक्र	22/10/2031	सूर्य	11/03/2033	मंगल	13/01/2036
राहु	18/09/2029	शुक्र	18/02/2031	सूर्य	06/11/2031	चंद्र	29/05/2033	बुध	23/07/2036
शुक्र	27/10/2029	सूर्य	18/03/2031	चंद्र	14/12/2031	मंगल	11/07/2033	शनि	13/11/2036

अष्टोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

गुरु - राहु		गुरु - शुक्र		गुरु - सूर्य		गुरु - चंद्र		गुरु - मंगल	
13/11/2036		24/12/2038		03/09/2042		24/09/2043		15/05/2046	
24/12/2038		03/09/2042		24/09/2043		15/05/2046		11/10/2047	
राहु	07/02/2037	शुक्र	12/09/2039	सूर्य	25/09/2042	चंद्र	05/02/2044	मंगल	22/06/2046
शुक्र	06/07/2037	सूर्य	26/11/2039	चंद्र	17/11/2042	मंगल	16/04/2044	बुध	11/09/2046
सूर्य	18/08/2037	चंद्र	01/06/2040	मंगल	16/12/2042	बुध	15/09/2044	शनि	28/10/2046
चंद्र	03/12/2037	मंगल	09/09/2040	बुध	15/02/2043	शनि	13/12/2044	गुरु	27/01/2047
मंगल	30/01/2038	बुध	09/04/2041	शनि	22/03/2043	गुरु	01/06/2045	राहु	25/03/2047
बुध	31/05/2038	शनि	12/08/2041	गुरु	29/05/2043	राहु	16/09/2045	शुक्र	03/07/2047
शनि	10/08/2038	गुरु	06/04/2042	राहु	11/07/2043	शुक्र	22/03/2046	सूर्य	31/07/2047
गुरु	24/12/2038	राहु	03/09/2042	शुक्र	24/09/2043	सूर्य	15/05/2046	चंद्र	11/10/2047

गुरु - बुध		गुरु - शनि		राहु - राहु		राहु - शुक्र		राहु - सूर्य	
11/10/2047		07/10/2050		11/07/2052		10/11/2053		11/03/2056	
07/10/2050		11/07/2052		10/11/2053		11/03/2056		09/11/2056	
बुध	31/03/2048	शनि	06/12/2050	राहु	03/09/2052	शुक्र	24/04/2054	सूर्य	24/03/2056
शनि	10/07/2048	गुरु	29/03/2051	शुक्र	07/12/2052	सूर्य	11/06/2054	चंद्र	27/04/2056
गुरु	18/01/2049	राहु	08/06/2051	सूर्य	03/01/2053	चंद्र	07/10/2054	मंगल	15/05/2056
राहु	19/05/2049	शुक्र	11/10/2051	चंद्र	11/03/2053	मंगल	09/12/2054	बुध	23/06/2056
शुक्र	18/12/2049	सूर्य	16/11/2051	मंगल	16/04/2053	बुध	22/04/2055	शनि	15/07/2056
सूर्य	17/02/2050	चंद्र	13/02/2052	बुध	02/07/2053	शनि	10/07/2055	गुरु	27/08/2056
चंद्र	18/07/2050	मंगल	01/04/2052	शनि	16/08/2053	गुरु	07/12/2055	राहु	23/09/2056
मंगल	07/10/2050	बुध	11/07/2052	गुरु	10/11/2053	राहु	11/03/2056	शुक्र	09/11/2056

राहु - चंद्र		राहु - मंगल		राहु - बुध		राहु - शनि		राहु - गुरु	
09/11/2056		11/07/2058		01/06/2059		21/04/2061		01/06/2062	
11/07/2058		01/06/2059		21/04/2061		01/06/2062		11/07/2064	
चंद्र	02/02/2057	मंगल	04/08/2058	बुध	17/09/2059	शनि	28/05/2061	गुरु	14/10/2062
मंगल	19/03/2057	बुध	24/09/2058	शनि	20/11/2059	गुरु	08/08/2061	राहु	08/01/2063
बुध	23/06/2057	शनि	24/10/2058	गुरु	21/03/2060	राहु	22/09/2061	शुक्र	07/06/2063
शनि	18/08/2057	गुरु	21/12/2058	राहु	05/06/2060	शुक्र	10/12/2061	सूर्य	20/07/2063
गुरु	03/12/2057	राहु	26/01/2059	शुक्र	18/10/2060	सूर्य	01/01/2062	चंद्र	04/11/2063
राहु	09/02/2058	शुक्र	30/03/2059	सूर्य	25/11/2060	चंद्र	27/02/2062	मंगल	31/12/2063
शुक्र	07/06/2058	सूर्य	17/04/2059	चंद्र	01/03/2061	मंगल	29/03/2062	बुध	30/04/2064
सूर्य	11/07/2058	चंद्र	01/06/2059	मंगल	21/04/2061	बुध	01/06/2062	शनि	11/07/2064

अष्टोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

शुक्र - शुक्र		शुक्र - सूर्य		शुक्र - चंद्र		शुक्र - मंगल		शुक्र - बुध	
11/07/2064		10/08/2068		10/10/2069		10/09/2072		01/04/2074	
10/08/2068		10/10/2069		10/09/2072		01/04/2074		21/07/2077	
शुक्र	27/04/2065	सूर्य	03/09/2068	चंद्र	07/03/2070	मंगल	22/10/2072	बुध	08/10/2074
सूर्य	19/07/2065	चंद्र	01/11/2068	मंगल	25/05/2070	बुध	19/01/2073	शनि	28/01/2075
चंद्र	11/02/2066	मंगल	03/12/2068	बुध	09/11/2070	शनि	13/03/2073	गुरु	28/08/2075
मंगल	01/06/2066	बुध	08/02/2069	शनि	15/02/2071	गुरु	21/06/2073	राहु	09/01/2076
बुध	22/01/2067	शनि	19/03/2069	गुरु	22/08/2071	राहु	23/08/2073	शुक्र	31/08/2076
शनि	09/06/2067	गुरु	02/06/2069	राहु	18/12/2071	शुक्र	11/12/2073	सूर्य	06/11/2076
गुरु	26/02/2068	राहु	19/07/2069	शुक्र	12/07/2072	सूर्य	12/01/2074	चंद्र	23/04/2077
राहु	10/08/2068	शुक्र	10/10/2069	सूर्य	10/09/2072	चंद्र	01/04/2074	मंगल	21/07/2077

शुक्र - शनि		शुक्र - गुरु		शुक्र - राहु		सूर्य - सूर्य		सूर्य - चंद्र	
21/07/2077		01/07/2079		12/03/2083		11/07/2085		10/11/2085	
01/07/2079		12/03/2083		11/07/2085		10/11/2085		10/09/2086	
शनि	25/09/2077	गुरु	24/02/2080	राहु	14/06/2083	सूर्य	18/07/2085	चंद्र	22/12/2085
गुरु	28/01/2078	राहु	23/07/2080	शुक्र	27/11/2083	चंद्र	04/08/2085	मंगल	14/01/2086
राहु	17/04/2078	शुक्र	11/04/2081	सूर्य	13/01/2084	मंगल	13/08/2085	बुध	02/03/2086
शुक्र	02/09/2078	सूर्य	25/06/2081	चंद्र	11/05/2084	बुध	01/09/2085	शनि	31/03/2086
सूर्य	11/10/2078	चंद्र	29/12/2081	मंगल	13/07/2084	शनि	12/09/2085	गुरु	23/05/2086
चंद्र	18/01/2079	मंगल	08/04/2082	बुध	24/11/2084	गुरु	04/10/2085	राहु	26/06/2086
मंगल	12/03/2079	बुध	07/11/2082	शनि	11/02/2085	राहु	17/10/2085	शुक्र	24/08/2086
बुध	01/07/2079	शनि	12/03/2083	गुरु	11/07/2085	शुक्र	10/11/2085	सूर्य	10/09/2086

सूर्य - मंगल		सूर्य - बुध		सूर्य - शनि		सूर्य - गुरु		सूर्य - राहु	
10/09/2086		19/02/2087		30/01/2088		20/08/2088		10/09/2089	
19/02/2087		30/01/2088		20/08/2088		10/09/2089		11/05/2090	
मंगल	22/09/2086	बुध	15/04/2087	शनि	18/02/2088	गुरु	27/10/2088	राहु	07/10/2089
बुध	18/10/2086	शनि	17/05/2087	गुरु	25/03/2088	राहु	09/12/2088	शुक्र	23/11/2089
शनि	02/11/2086	गुरु	16/07/2087	राहु	16/04/2088	शुक्र	22/02/2089	सूर्य	07/12/2089
गुरु	30/11/2086	राहु	24/08/2087	शुक्र	26/05/2088	सूर्य	15/03/2089	चंद्र	10/01/2090
राहु	18/12/2086	शुक्र	30/10/2087	सूर्य	06/06/2088	चंद्र	08/05/2089	मंगल	28/01/2090
शुक्र	19/01/2087	सूर्य	18/11/2087	चंद्र	04/07/2088	मंगल	05/06/2089	बुध	07/03/2090
सूर्य	28/01/2087	चंद्र	05/01/2088	मंगल	19/07/2088	बुध	05/08/2089	शनि	29/03/2090
चंद्र	19/02/2087	मंगल	30/01/2088	बुध	20/08/2088	शनि	10/09/2089	गुरु	11/05/2090

अष्टोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

सूर्य - शुक्र	
11/05/2090	
11/07/2091	
शुक्र	02/08/2090
सूर्य	26/08/2090
चंद्र	24/10/2090
मंगल	25/11/2090
बुध	31/01/2091
शनि	11/03/2091
गुरु	25/05/2091
राहु	11/07/2091

चंद्र - चंद्र	
11/07/2091	
10/08/2093	
चंद्र	25/10/2091
मंगल	21/12/2091
बुध	18/04/2092
शनि	28/06/2092
गुरु	09/11/2092
राहु	01/02/2093
शुक्र	29/06/2093
सूर्य	10/08/2093

चंद्र - मंगल	
10/08/2093	
20/09/2094	
मंगल	09/09/2093
बुध	12/11/2093
शनि	20/12/2093
गुरु	01/03/2094
राहु	15/04/2094
शुक्र	03/07/2094
सूर्य	26/07/2094
चंद्र	20/09/2094

चंद्र - बुध	
20/09/2094	
30/01/2097	
बुध	03/02/2095
शनि	24/04/2095
गुरु	23/09/2095
राहु	27/12/2095
शुक्र	12/06/2096
सूर्य	30/07/2096
चंद्र	27/11/2096
मंगल	30/01/2097

चंद्र - शनि	
30/01/2097	
21/06/2098	
शनि	18/03/2097
गुरु	15/06/2097
राहु	10/08/2097
शुक्र	17/11/2097
सूर्य	15/12/2097
चंद्र	23/02/2098
मंगल	02/04/2098
बुध	21/06/2098

चंद्र - गुरु	
21/06/2098	
10/02/2101	
गुरु	07/12/2098
राहु	25/03/2099
शुक्र	28/09/2099
सूर्य	21/11/2099
चंद्र	03/04/2100
मंगल	14/06/2100
बुध	13/11/2100
शनि	10/02/2101

चंद्र - राहु	
10/02/2101	
12/10/2102	
राहु	18/04/2101
शुक्र	15/08/2101
सूर्य	18/09/2101
चंद्र	11/12/2101
मंगल	25/01/2102
बुध	01/05/2102
शनि	26/06/2102
गुरु	12/10/2102

चंद्र - शुक्र	
12/10/2102	
11/09/2105	
शुक्र	07/05/2103
सूर्य	05/07/2103
चंद्र	30/11/2103
मंगल	17/02/2104
बुध	02/08/2104
शनि	09/11/2104
गुरु	15/05/2105
राहु	11/09/2105

चंद्र - सूर्य	
11/09/2105	
12/07/2106	
सूर्य	28/09/2105
चंद्र	09/11/2105
मंगल	02/12/2105
बुध	18/01/2106
शनि	16/02/2106
गुरु	10/04/2106
राहु	14/05/2106
शुक्र	12/07/2106

मंगल - मंगल	
12/07/2106	
14/02/2107	
मंगल	28/07/2106
बुध	31/08/2106
शनि	20/09/2106
गुरु	28/10/2106
राहु	21/11/2106
शुक्र	03/01/2107
सूर्य	15/01/2107
चंद्र	14/02/2107

मंगल - बुध	
14/02/2107	
19/05/2108	
बुध	27/04/2107
शनि	09/06/2107
गुरु	29/08/2107
राहु	19/10/2107
शुक्र	16/01/2108
सूर्य	11/02/2108
चंद्र	15/04/2108
मंगल	19/05/2108

मंगल - शनि	
19/05/2108	
13/02/2109	
शनि	13/06/2108
गुरु	30/07/2108
राहु	29/08/2108
शुक्र	21/10/2108
सूर्य	05/11/2108
चंद्र	13/12/2108
मंगल	02/01/2109
बुध	13/02/2109

मंगल - गुरु	
13/02/2109	
12/07/2110	
गुरु	15/05/2109
राहु	11/07/2109
शुक्र	19/10/2109
सूर्य	16/11/2109
चंद्र	27/01/2110
मंगल	06/03/2110
बुध	26/05/2110
शनि	12/07/2110

मंगल - राहु	
12/07/2110	
02/06/2111	
राहु	17/08/2110
शुक्र	19/10/2110
सूर्य	06/11/2110
चंद्र	22/12/2110
मंगल	15/01/2111
बुध	07/03/2111
शनि	06/04/2111
गुरु	02/06/2111

मंगल - शुक्र	
02/06/2111	
21/12/2112	
शुक्र	20/09/2111
सूर्य	22/10/2111
चंद्र	09/01/2112
मंगल	20/02/2112
बुध	19/05/2112
शनि	11/07/2112
गुरु	19/10/2112
राहु	21/12/2112

योगिनी दशा

भोग्य दशा काल : मंगला 0 वर्ष 10 मास 3 दिन

मंगला 1 वर्ष		पिंगला 2 वर्ष		धान्या 3 वर्ष		भ्रामरी 4 वर्ष		भद्रिका 5 वर्ष	
11/06/2011		14/04/2012		14/04/2014		14/04/2017		14/04/2021	
14/04/2012		14/04/2014		14/04/2017		14/04/2021		14/04/2026	
	00/00/0000	पिंग	25/05/2012	धांय	15/07/2014	भ्राम	24/09/2017	भद्रि	24/12/2021
	11/06/2011	धांय	24/07/2012	भ्राम	14/11/2014	भद्रि	14/04/2018	उल्क	24/10/2022
धांय	15/06/2011	भ्राम	14/10/2012	भद्रि	15/04/2015	उल्क	14/12/2018	सिद्ध	14/10/2023
भ्राम	25/07/2011	भद्रि	23/01/2013	उल्क	14/10/2015	सिद्ध	24/09/2019	संक	23/11/2024
भद्रि	14/09/2011	उल्क	25/05/2013	सिद्ध	14/05/2016	संक	14/08/2020	मंग	13/01/2025
उल्क	14/11/2011	सिद्ध	14/10/2013	संक	13/01/2017	मंग	23/09/2020	पिंग	24/04/2025
सिद्ध	24/01/2012	संक	25/03/2014	मंग	12/02/2017	पिंग	13/12/2020	धांय	24/09/2025
संक	14/04/2012	मंग	14/04/2014	पिंग	14/04/2017	धांय	14/04/2021	भ्राम	14/04/2026

उल्का 6 वर्ष		सिद्धा 7 वर्ष		संकटा 8 वर्ष		मंगला 1 वर्ष		पिंगला 2 वर्ष	
14/04/2026		14/04/2032		15/04/2039		15/04/2047		14/04/2048	
14/04/2032		15/04/2039		15/04/2047		14/04/2048		14/04/2050	
उल्क	15/04/2027	सिद्ध	24/08/2033	संक	23/01/2041	मंग	25/04/2047	पिंग	25/05/2048
सिद्ध	14/06/2028	संक	15/03/2035	मंग	14/04/2041	पिंग	15/05/2047	धांय	24/07/2048
संक	14/10/2029	मंग	25/05/2035	पिंग	24/09/2041	धांय	15/06/2047	भ्राम	14/10/2048
मंग	14/12/2029	पिंग	14/10/2035	धांय	25/05/2042	भ्राम	25/07/2047	भद्रि	23/01/2049
पिंग	14/04/2030	धांय	14/05/2036	भ्राम	15/04/2043	भद्रि	14/09/2047	उल्क	25/05/2049
धांय	14/10/2030	भ्राम	22/02/2037	भद्रि	25/05/2044	उल्क	14/11/2047	सिद्ध	14/10/2049
भ्राम	15/06/2031	भद्रि	13/02/2038	उल्क	24/09/2045	सिद्ध	24/01/2048	संक	25/03/2050
भद्रि	14/04/2032	उल्क	15/04/2039	सिद्ध	15/04/2047	संक	14/04/2048	मंग	14/04/2050

नोट :- योगनियों के स्वामी नीचे दिए गए हैं :-

मंगला	: चन्द्र	पिंगला	: सूर्य	धान्या	: गुरु	भ्रामरी	: मंगल
भद्रिका	: बुध	उल्का	: शनि	सिद्धा	: शुक्र	संकटा	: राहु/केतु

उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।
योगिनी दशा 36 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

योगिनी दशा

धान्या 3 वर्ष		भ्रामरी 4 वर्ष		भद्रिका 5 वर्ष		उल्का 6 वर्ष		सिद्धा 7 वर्ष	
14/04/2050		14/04/2053		14/04/2057		14/04/2062		14/04/2068	
14/04/2053		14/04/2057		14/04/2062		14/04/2068		15/04/2075	
धांय	15/07/2050	भ्राम	24/09/2053	भद्रि	24/12/2057	उल्क	15/04/2063	सिद्ध	24/08/2069
भ्राम	14/11/2050	भद्रि	14/04/2054	उल्क	24/10/2058	सिद्ध	14/06/2064	संक	15/03/2071
भद्रि	15/04/2051	उल्क	14/12/2054	सिद्ध	14/10/2059	संक	14/10/2065	मंग	25/05/2071
उल्क	14/10/2051	सिद्ध	24/09/2055	संक	23/11/2060	मंग	14/12/2065	पिंग	14/10/2071
सिद्ध	14/05/2052	संक	14/08/2056	मंग	13/01/2061	पिंग	14/04/2066	धांय	14/05/2072
संक	13/01/2053	मंग	23/09/2056	पिंग	24/04/2061	धांय	14/10/2066	भ्राम	22/02/2073
मंग	12/02/2053	पिंग	13/12/2056	धांय	24/09/2061	भ्राम	15/06/2067	भद्रि	13/02/2074
पिंग	14/04/2053	धांय	14/04/2057	भ्राम	14/04/2062	भद्रि	14/04/2068	उल्क	15/04/2075

संकटा 8 वर्ष		मंगला 1 वर्ष		पिंगला 2 वर्ष		धान्या 3 वर्ष		भ्रामरी 4 वर्ष	
15/04/2075		15/04/2083		14/04/2084		14/04/2086		14/04/2089	
15/04/2083		14/04/2084		14/04/2086		14/04/2089		14/04/2093	
संक	23/01/2077	मंग	25/04/2083	पिंग	25/05/2084	धांय	15/07/2086	भ्राम	24/09/2089
मंग	14/04/2077	पिंग	15/05/2083	धांय	24/07/2084	भ्राम	14/11/2086	भद्रि	14/04/2090
पिंग	24/09/2077	धांय	15/06/2083	भ्राम	14/10/2084	भद्रि	15/04/2087	उल्क	14/12/2090
धांय	25/05/2078	भ्राम	25/07/2083	भद्रि	23/01/2085	उल्क	14/10/2087	सिद्ध	24/09/2091
भ्राम	15/04/2079	भद्रि	14/09/2083	उल्क	25/05/2085	सिद्ध	14/05/2088	संक	14/08/2092
भद्रि	25/05/2080	उल्क	14/11/2083	सिद्ध	14/10/2085	संक	13/01/2089	मंग	23/09/2092
उल्क	24/09/2081	सिद्ध	24/01/2084	संक	25/03/2086	मंग	12/02/2089	पिंग	13/12/2092
सिद्ध	15/04/2083	संक	14/04/2084	मंग	14/04/2086	पिंग	14/04/2089	धांय	14/04/2093

भद्रिका 5 वर्ष		उल्का 6 वर्ष		सिद्धा 7 वर्ष		संकटा 8 वर्ष		मंगला 1 वर्ष	
14/04/2093		14/04/2098		15/04/2104		16/04/2111		16/04/2119	
14/04/2098		15/04/2104		16/04/2111		16/04/2119		00/00/0000	
भद्रि	24/12/2093	उल्क	15/04/2099	सिद्ध	25/08/2105	संक	24/01/2113	मंग	26/04/2119
उल्क	24/10/2094	सिद्ध	15/06/2100	संक	16/03/2107	मंग	15/04/2113	पिंग	16/05/2119
सिद्ध	14/10/2095	संक	15/10/2101	मंग	26/05/2107	पिंग	25/09/2113	धांय	12/06/2119
संक	23/11/2096	मंग	15/12/2101	पिंग	15/10/2107	धांय	26/05/2114		00/00/0000
मंग	13/01/2097	पिंग	15/04/2102	धांय	15/05/2108	भ्राम	16/04/2115		00/00/0000
पिंग	24/04/2097	धांय	15/10/2102	भ्राम	23/02/2109	भद्रि	26/05/2116		00/00/0000
धांय	24/09/2097	भ्राम	16/06/2103	भद्रि	14/02/2110	उल्क	25/09/2117		00/00/0000
भ्राम	14/04/2098	भद्रि	15/04/2104	उल्क	16/04/2111	सिद्ध	16/04/2119		00/00/0000

योगिनी दशा - प्रत्यन्तर

भद्रि - भ्राम		उल्क - उल्क		उल्क - सिद्ध		उल्क - संक		उल्क - मंग	
24/09/2025		14/04/2026		15/04/2027		14/06/2028		14/10/2029	
14/04/2026		15/04/2027		14/06/2028		14/10/2029		14/12/2029	
भ्राम	16/10/2025	उल्क	14/06/2026	सिद्ध	07/07/2027	संक	30/09/2028	मंग	16/10/2029
भद्रि	13/11/2025	सिद्ध	24/08/2026	संक	09/10/2027	मंग	14/10/2028	पिंग	19/10/2029
उल्क	17/12/2025	संक	14/11/2026	मंग	21/10/2027	पिंग	10/11/2028	धांय	24/10/2029
सिद्ध	26/01/2026	मंग	24/11/2026	पिंग	14/11/2027	धांय	20/12/2028	भ्राम	31/10/2029
संक	12/03/2026	पिंग	14/12/2026	धांय	19/12/2027	भ्राम	12/02/2029	भद्रि	08/11/2029
मंग	17/03/2026	धांय	13/01/2027	भ्राम	05/02/2028	भद्रि	21/04/2029	उल्क	18/11/2029
पिंग	29/03/2026	भ्राम	23/02/2027	भद्रि	04/04/2028	उल्क	11/07/2029	सिद्ध	30/11/2029
धांय	14/04/2026	भद्रि	15/04/2027	उल्क	14/06/2028	सिद्ध	14/10/2029	संक	14/12/2029

उल्क - पिंग		उल्क - धांय		उल्क - भ्राम		उल्क - भद्रि		सिद्ध - सिद्ध	
14/12/2029		14/04/2030		14/10/2030		15/06/2031		14/04/2032	
14/04/2030		14/10/2030		15/06/2031		14/04/2032		24/08/2033	
पिंग	20/12/2029	धांय	30/04/2030	भ्राम	10/11/2030	भद्रि	27/07/2031	सिद्ध	20/07/2032
धांय	31/12/2029	भ्राम	20/05/2030	भद्रि	14/12/2030	उल्क	16/09/2031	संक	07/11/2032
भ्राम	13/01/2030	भद्रि	14/06/2030	उल्क	24/01/2031	सिद्ध	14/11/2031	मंग	21/11/2032
भद्रि	30/01/2030	उल्क	15/07/2030	सिद्ध	12/03/2031	संक	20/01/2032	पिंग	19/12/2032
उल्क	19/02/2030	सिद्ध	19/08/2030	संक	05/05/2031	मंग	29/01/2032	धांय	29/01/2033
सिद्ध	15/03/2030	संक	29/09/2030	मंग	12/05/2031	पिंग	15/02/2032	भ्राम	25/03/2033
संक	11/04/2030	मंग	04/10/2030	पिंग	25/05/2031	धांय	11/03/2032	भद्रि	02/06/2033
मंग	14/04/2030	पिंग	14/10/2030	धांय	15/06/2031	भ्राम	14/04/2032	उल्क	24/08/2033

सिद्ध - संक		सिद्ध - मंग		सिद्ध - पिंग		सिद्ध - धांय		सिद्ध - भ्राम	
24/08/2033		15/03/2035		25/05/2035		14/10/2035		14/05/2036	
15/03/2035		25/05/2035		14/10/2035		14/05/2036		22/02/2037	
संक	28/12/2033	मंग	17/03/2035	पिंग	02/06/2035	धांय	01/11/2035	भ्राम	15/06/2036
मंग	13/01/2034	पिंग	21/03/2035	धांय	14/06/2035	भ्राम	25/11/2035	भद्रि	24/07/2036
पिंग	14/02/2034	धांय	27/03/2035	भ्राम	30/06/2035	भद्रि	24/12/2035	उल्क	10/09/2036
धांय	02/04/2034	भ्राम	04/04/2035	भद्रि	20/07/2035	उल्क	29/01/2036	सिद्ध	04/11/2036
भ्राम	04/06/2034	भद्रि	14/04/2035	उल्क	12/08/2035	सिद्ध	10/03/2036	संक	06/01/2037
भद्रि	22/08/2034	उल्क	26/04/2035	सिद्ध	09/09/2035	संक	27/04/2036	मंग	14/01/2037
उल्क	25/11/2034	सिद्ध	10/05/2035	संक	10/10/2035	मंग	03/05/2036	पिंग	30/01/2037
सिद्ध	15/03/2035	संक	25/05/2035	मंग	14/10/2035	पिंग	14/05/2036	धांय	22/02/2037

योगिनी दशा - प्रत्यन्तर

सिद्ध - भद्रि		सिद्ध - उल्क		संक - संक		संक - मंग		संक - पिंग	
22/02/2037		13/02/2038		15/04/2039		23/01/2041		14/04/2041	
13/02/2038		15/04/2039		23/01/2041		14/04/2041		24/09/2041	
भद्रि	13/04/2037	उल्क	25/04/2038	संक	06/09/2039	मंग	25/01/2041	पिंग	23/04/2041
उल्क	11/06/2037	सिद्ध	16/07/2038	मंग	24/09/2039	पिंग	30/01/2041	धांय	07/05/2041
सिद्ध	19/08/2037	संक	19/10/2038	पिंग	30/10/2039	धांय	06/02/2041	भ्राम	25/05/2041
संक	06/11/2037	मंग	31/10/2038	धांय	23/12/2039	भ्राम	15/02/2041	भद्रि	16/06/2041
मंग	16/11/2037	पिंग	24/11/2038	भ्राम	04/03/2040	भद्रि	26/02/2041	उल्क	13/07/2041
पिंग	06/12/2037	धांय	29/12/2038	भद्रि	03/06/2040	उल्क	11/03/2041	सिद्ध	14/08/2041
धांय	04/01/2038	भ्राम	15/02/2039	उल्क	19/09/2040	सिद्ध	27/03/2041	संक	19/09/2041
भ्राम	13/02/2038	भद्रि	15/04/2039	सिद्ध	23/01/2041	संक	14/04/2041	मंग	24/09/2041

संक - धांय		संक - भ्राम		संक - भद्रि		संक - उल्क		संक - सिद्ध	
24/09/2041		25/05/2042		15/04/2043		25/05/2044		24/09/2045	
25/05/2042		15/04/2043		25/05/2044		24/09/2045		15/04/2047	
धांय	14/10/2041	भ्राम	30/06/2042	भद्रि	10/06/2043	उल्क	14/08/2044	सिद्ध	12/01/2046
भ्राम	10/11/2041	भद्रि	14/08/2042	उल्क	17/08/2043	सिद्ध	16/11/2044	संक	18/05/2046
भद्रि	14/12/2041	उल्क	07/10/2042	सिद्ध	04/11/2043	संक	05/03/2045	मंग	03/06/2046
उल्क	23/01/2042	सिद्ध	09/12/2042	संक	02/02/2044	मंग	18/03/2045	पिंग	05/07/2046
सिद्ध	12/03/2042	संक	20/02/2043	मंग	13/02/2044	पिंग	14/04/2045	धांय	21/08/2046
संक	05/05/2042	मंग	01/03/2043	पिंग	07/03/2044	धांय	25/05/2045	भ्राम	23/10/2046
मंग	12/05/2042	पिंग	19/03/2043	धांय	09/04/2044	भ्राम	18/07/2045	भद्रि	10/01/2047
पिंग	25/05/2042	धांय	15/04/2043	भ्राम	25/05/2044	भद्रि	24/09/2045	उल्क	15/04/2047

मंग - मंग		मंग - पिंग		मंग - धांय		मंग - भ्राम		मंग - भद्रि	
15/04/2047		25/04/2047		15/05/2047		15/06/2047		25/07/2047	
25/04/2047		15/05/2047		15/06/2047		25/07/2047		14/09/2047	
मंग	15/04/2047	पिंग	26/04/2047	धांय	18/05/2047	भ्राम	19/06/2047	भद्रि	01/08/2047
पिंग	16/04/2047	धांय	28/04/2047	भ्राम	21/05/2047	भद्रि	25/06/2047	उल्क	10/08/2047
धांय	16/04/2047	भ्राम	30/04/2047	भद्रि	25/05/2047	उल्क	02/07/2047	सिद्ध	20/08/2047
भ्राम	18/04/2047	भद्रि	03/05/2047	उल्क	30/05/2047	सिद्ध	09/07/2047	संक	31/08/2047
भद्रि	19/04/2047	उल्क	06/05/2047	सिद्ध	05/06/2047	संक	18/07/2047	मंग	01/09/2047
उल्क	21/04/2047	सिद्ध	10/05/2047	संक	12/06/2047	मंग	20/07/2047	पिंग	04/09/2047
सिद्ध	23/04/2047	संक	15/05/2047	मंग	13/06/2047	पिंग	22/07/2047	धांय	08/09/2047
संक	25/04/2047	मंग	15/05/2047	पिंग	15/06/2047	धांय	25/07/2047	भ्राम	14/09/2047

कालचक्र दशा

भोग्य दशा काल : मिथुन 4 वर्ष 3 मास 1 दिन
कुल दशाकाल : 100 वर्ष
तिथि : चित्रा - 1 सव्य
देह : मेष जीव : धनु

मिथुन 9 वर्ष		वृष 16 वर्ष		मेष 7 वर्ष		मीन 10 वर्ष		वृश्चिक 7 वर्ष	
11/06/2011		12/09/2015		12/09/2031		12/09/2038		12/09/2048	
12/09/2015		12/09/2031		12/09/2038		12/09/2048		12/09/2055	
	00/00/0000	वृष	04/04/2018	मेष	09/03/2032	मीन	12/09/2039	वृश्चि	10/03/2049
	00/00/0000	मेष	18/05/2019	मीन	20/11/2032	वृश्चि	25/05/2040	तुला	23/04/2050
	00/00/0000	मीन	23/12/2020	वृश्चि	18/05/2033	तुला	30/12/2041	कन्या	09/12/2050
	00/00/0000	वृश्चि	05/02/2022	तुला	01/07/2034	कन्या	24/11/2042	कर्क	29/05/2052
	11/06/2011	तुला	28/08/2024	कन्या	16/02/2035	कर्क	30/12/2044	सिंह	03/10/2052
तुला	19/07/2012	कन्या	05/02/2026	कर्क	06/08/2036	सिंह	01/07/2045	मिथु	22/05/2053
कन्या	11/05/2013	कर्क	16/06/2029	सिंह	12/12/2036	मिथु	25/05/2046	वृष	05/07/2054
कर्क	01/04/2015	सिंह	04/04/2030	मिथु	30/07/2037	वृष	31/12/2047	मेष	31/12/2054
सिंह	12/09/2015	मिथु	12/09/2031	वृष	12/09/2038	मेष	12/09/2048	मीन	12/09/2055

तुला 16 वर्ष		कन्या 9 वर्ष		कर्क 21 वर्ष		सिंह 5 वर्ष		मिथुन 9 वर्ष	
12/09/2055		12/09/2071		12/09/2080		13/09/2101		13/09/2106	
12/09/2071		12/09/2080		13/09/2101		13/09/2106		00/00/0000	
तुला	04/04/2058	कन्या	04/07/2072	कर्क	08/02/2085	सिंह	13/12/2101	मिथु	06/07/2107
कन्या	12/09/2059	कर्क	25/05/2074	सिंह	27/02/2086	मिथु	26/05/2102	वृष	13/12/2108
कर्क	22/01/2063	सिंह	06/11/2074	मिथु	18/01/2088	वृष	15/03/2103	मेष	31/07/2109
सिंह	10/11/2063	मिथु	29/08/2075	वृष	29/05/2091	मेष	20/07/2103	मीन	25/06/2110
मिथु	19/04/2065	वृष	05/02/2077	मेष	16/11/2092	मीन	19/01/2104	वृश्चि	10/02/2111
वृष	10/11/2067	मेष	23/09/2077	मीन	23/12/2094	वृश्चि	26/05/2104	तुला	12/06/2111
मेष	23/12/2068	मीन	17/08/2078	वृश्चि	12/06/2096	तुला	14/03/2105		00/00/0000
मीन	30/07/2070	वृश्चि	05/04/2079	तुला	22/10/2099	कन्या	26/08/2105		00/00/0000
वृश्चि	12/09/2071	तुला	12/09/2080	कन्या	13/09/2101	कर्क	13/09/2106		00/00/0000

नोट : उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।

कालचक्र दशा - प्रत्यन्तर

वृष - कन्या		वृष - कर्क		वृष - सिंह		वृष - मिथु		मेष - मेष	
28/08/2024		05/02/2026		16/06/2029		04/04/2030		12/09/2031	
05/02/2026		16/06/2029		04/04/2030		12/09/2031		09/03/2032	
कन्या	14/10/2024	कर्क	21/10/2026	सिंह	01/07/2029	मिथु	22/05/2030	मेष	25/09/2031
कर्क	02/02/2025	सिंह	21/12/2026	मिथु	27/07/2029	वृष	14/08/2030	मीन	13/10/2031
सिंह	28/02/2025	मिथु	10/04/2027	वृष	12/09/2029	मेष	20/09/2030	वृश्चि	25/10/2031
मिथु	16/04/2025	वृष	24/10/2027	मेष	02/10/2029	मीन	11/11/2030	तुला	23/11/2031
वृष	09/07/2025	मेष	18/01/2028	मीन	31/10/2029	वृश्चि	18/12/2030	कन्या	09/12/2031
मेष	15/08/2025	मीन	19/05/2028	वृश्चि	21/11/2029	तुला	12/03/2031	कर्क	16/01/2032
मीन	07/10/2025	वृश्चि	13/08/2028	तुला	07/01/2030	कन्या	29/04/2031	सिंह	25/01/2032
वृश्चि	13/11/2025	तुला	26/02/2029	कन्या	02/02/2030	कर्क	17/08/2031	मिथु	10/02/2032
तुला	05/02/2026	कन्या	16/06/2029	कर्क	04/04/2030	सिंह	12/09/2031	वृष	09/03/2032

मेष - मीन		मेष - वृश्चि		मेष - तुला		मेष - कन्या		मेष - कर्क	
09/03/2032		20/11/2032		18/05/2033		01/07/2034		16/02/2035	
20/11/2032		18/05/2033		01/07/2034		16/02/2035		06/08/2036	
मीन	04/04/2032	वृश्चि	02/12/2032	तुला	22/07/2033	कन्या	22/07/2034	कर्क	09/06/2035
वृश्चि	22/04/2032	तुला	31/12/2032	कन्या	28/08/2033	कर्क	08/09/2034	सिंह	06/07/2035
तुला	02/06/2032	कन्या	16/01/2033	कर्क	22/11/2033	सिंह	20/09/2034	मिथु	23/08/2035
कन्या	25/06/2032	कर्क	23/02/2033	सिंह	13/12/2033	मिथु	10/10/2034	वृष	17/11/2035
कर्क	17/08/2032	सिंह	04/03/2033	मिथु	18/01/2034	वृष	16/11/2034	मेष	24/12/2035
सिंह	30/08/2032	मिथु	20/03/2033	वृष	25/03/2034	मेष	02/12/2034	मीन	16/02/2036
मिथु	22/09/2032	वृष	17/04/2033	मेष	22/04/2034	मीन	25/12/2034	वृश्चि	25/03/2036
वृष	02/11/2032	मेष	30/04/2033	मीन	02/06/2034	वृश्चि	10/01/2035	तुला	19/06/2036
मेष	20/11/2032	मीन	18/05/2033	वृश्चि	01/07/2034	तुला	16/02/2035	कन्या	06/08/2036

मेष - सिंह		मेष - मिथु		मेष - वृष		मीन - मीन		मीन - वृश्चि	
06/08/2036		12/12/2036		30/07/2037		12/09/2038		12/09/2039	
12/12/2036		30/07/2037		12/09/2038		12/09/2039		25/05/2040	
सिंह	12/08/2036	मिथु	02/01/2037	वृष	03/10/2037	मीन	19/10/2038	वृश्चि	30/09/2039
मिथु	24/08/2036	वृष	07/02/2037	मेष	01/11/2037	वृश्चि	13/11/2038	तुला	10/11/2039
वृष	13/09/2036	मेष	23/02/2037	मीन	12/12/2037	तुला	11/01/2039	कन्या	03/12/2039
मेष	22/09/2036	मीन	18/03/2037	वृश्चि	10/01/2038	कन्या	12/02/2039	कर्क	26/01/2040
मीन	05/10/2036	वृश्चि	04/04/2037	तुला	16/03/2038	कर्क	30/04/2039	सिंह	08/02/2040
वृश्चि	14/10/2036	तुला	10/05/2037	कन्या	22/04/2038	सिंह	18/05/2039	मिथु	02/03/2040
तुला	03/11/2036	कन्या	31/05/2037	कर्क	17/07/2038	मिथु	20/06/2039	वृष	11/04/2040
कन्या	15/11/2036	कर्क	18/07/2037	सिंह	06/08/2038	वृष	18/08/2039	मेष	29/04/2040
कर्क	12/12/2036	सिंह	30/07/2037	मिथु	12/09/2038	मेष	12/09/2039	मीन	25/05/2040

कालचक्र दशा - प्रत्यन्तर

मीन - तुला		मीन - कन्या		मीन - कर्क		मीन - सिंह		मीन - मिथु	
25/05/2040		30/12/2041		24/11/2042		30/12/2044		01/07/2045	
30/12/2041		24/11/2042		30/12/2044		01/07/2045		25/05/2046	
तुला	26/08/2040	कन्या	29/01/2042	कर्क	04/05/2043	सिंह	08/01/2045	मिथु	30/07/2045
कन्या	18/10/2040	कर्क	08/04/2042	सिंह	12/06/2043	मिथु	25/01/2045	वृष	21/09/2045
कर्क	18/02/2041	सिंह	24/04/2042	मिथु	20/08/2043	वृष	23/02/2045	मेष	14/10/2045
सिंह	19/03/2041	मिथु	24/05/2042	वृष	20/12/2043	मेष	08/03/2045	मीन	16/11/2045
मिथु	11/05/2041	वृष	16/07/2042	मेष	12/02/2044	मीन	26/03/2045	वृश्चि	09/12/2045
वृष	12/08/2041	मेष	08/08/2042	मीन	29/04/2044	वृश्चि	08/04/2045	तुला	30/01/2046
मेष	22/09/2041	मीन	09/09/2042	वृश्चि	21/06/2044	तुला	07/05/2045	कन्या	01/03/2046
मीन	19/11/2041	वृश्चि	02/10/2042	तुला	22/10/2044	कन्या	23/05/2045	कर्क	09/05/2046
वृश्चि	30/12/2041	तुला	24/11/2042	कन्या	30/12/2044	कर्क	01/07/2045	सिंह	25/05/2046

मीन - वृष		मीन - मेष		वृश्चि - वृश्चि		वृश्चि - तुला		वृश्चि - कन्या	
25/05/2046		31/12/2047		12/09/2048		10/03/2049		23/04/2050	
31/12/2047		12/09/2048		10/03/2049		23/04/2050		09/12/2050	
वृष	27/08/2046	मेष	18/01/2048	वृश्चि	24/09/2048	तुला	14/05/2049	कन्या	13/05/2050
मेष	07/10/2046	मीन	12/02/2048	तुला	23/10/2048	कन्या	20/06/2049	कर्क	01/07/2050
मीन	04/12/2046	वृश्चि	01/03/2048	कन्या	08/11/2048	कर्क	14/09/2049	सिंह	12/07/2050
वृश्चि	14/01/2047	तुला	11/04/2048	कर्क	15/12/2048	सिंह	04/10/2049	मिथु	02/08/2050
तुला	18/04/2047	कन्या	04/05/2048	सिंह	24/12/2048	मिथु	10/11/2049	वृष	08/09/2050
कन्या	09/06/2047	कर्क	27/06/2048	मिथु	09/01/2049	वृष	14/01/2050	मेष	24/09/2050
कर्क	10/10/2047	सिंह	10/07/2048	वृष	07/02/2049	मेष	12/02/2050	मीन	17/10/2050
सिंह	08/11/2047	मिथु	02/08/2048	मेष	20/02/2049	मीन	25/03/2050	वृश्चि	02/11/2050
मिथु	31/12/2047	वृष	12/09/2048	मीन	10/03/2049	वृश्चि	23/04/2050	तुला	09/12/2050

वृश्चि - कर्क		वृश्चि - सिंह		वृश्चि - मिथु		वृश्चि - वृष		वृश्चि - मेष	
09/12/2050		29/05/2052		03/10/2052		22/05/2053		05/07/2054	
29/05/2052		03/10/2052		22/05/2053		05/07/2054		31/12/2054	
कर्क	31/03/2051	सिंह	04/06/2052	मिथु	24/10/2052	वृष	26/07/2053	मेष	17/07/2054
सिंह	27/04/2051	मिथु	16/06/2052	वृष	30/11/2052	मेष	24/08/2053	मीन	04/08/2054
मिथु	15/06/2051	वृष	06/07/2052	मेष	16/12/2052	मीन	04/10/2053	वृश्चि	17/08/2054
वृष	09/09/2051	मेष	15/07/2052	मीन	08/01/2053	वृश्चि	01/11/2053	तुला	14/09/2054
मेष	16/10/2051	मीन	28/07/2052	वृश्चि	24/01/2053	तुला	06/01/2054	कन्या	30/09/2054
मीन	09/12/2051	वृश्चि	06/08/2052	तुला	02/03/2053	कन्या	11/02/2054	कर्क	07/11/2054
वृश्चि	15/01/2052	तुला	26/08/2052	कन्या	23/03/2053	कर्क	08/05/2054	सिंह	16/11/2054
तुला	10/04/2052	कन्या	07/09/2052	कर्क	10/05/2053	सिंह	29/05/2054	मिथु	02/12/2054
कन्या	29/05/2052	कर्क	03/10/2052	सिंह	22/05/2053	मिथु	05/07/2054	वृष	31/12/2054

चर दशा

भोग्य दशा काल : सिंह 3 वर्ष 0 मास 0 दिन

सिंह 3 वर्ष	
11/06/2011	
11/06/2014	
कन्या	10/09/2011
तुला	11/12/2011
वृश्चि	11/03/2012
धनु	10/06/2012
मक	10/09/2012
कुंभ	10/12/2012
मीन	11/03/2013
मेष	11/06/2013
वृष	10/09/2013
मिथु	10/12/2013
कर्क	11/03/2014
सिंह	11/06/2014

कन्या 4 वर्ष	
11/06/2014	
11/06/2018	
तुला	11/10/2014
वृश्चि	09/02/2015
धनु	11/06/2015
मक	11/10/2015
कुंभ	10/02/2016
मीन	10/06/2016
मेष	10/10/2016
वृष	09/02/2017
मिथु	11/06/2017
कर्क	10/10/2017
सिंह	09/02/2018
कन्या	11/06/2018

तुला 7 वर्ष	
11/06/2018	
11/06/2025	
वृश्चि	10/01/2019
धनु	11/08/2019
मक	11/03/2020
कुंभ	10/10/2020
मीन	11/05/2021
मेष	10/12/2021
वृष	11/07/2022
मिथु	09/02/2023
कर्क	10/09/2023
सिंह	10/04/2024
कन्या	09/11/2024
तुला	11/06/2025

वृश्चिक 6 वर्ष	
11/06/2025	
11/06/2031	
तुला	10/12/2025
कन्या	11/06/2026
सिंह	10/12/2026
कर्क	11/06/2027
मिथु	11/12/2027
वृष	10/06/2028
मेष	10/12/2028
मीन	11/06/2029
कुंभ	10/12/2029
मक	11/06/2030
धनु	10/12/2030
वृश्चि	11/06/2031

धनु 4 वर्ष	
11/06/2031	
11/06/2035	
वृश्चि	11/10/2031
तुला	10/02/2032
कन्या	10/06/2032
सिंह	10/10/2032
कर्क	09/02/2033
मिथु	11/06/2033
वृष	10/10/2033
मेष	09/02/2034
मीन	11/06/2034
कुंभ	11/10/2034
मक	09/02/2035
धनु	11/06/2035

मकर 4 वर्ष	
11/06/2035	
11/06/2039	
धनु	11/10/2035
वृश्चि	10/02/2036
तुला	10/06/2036
कन्या	10/10/2036
सिंह	09/02/2037
कर्क	11/06/2037
मिथु	10/10/2037
वृष	09/02/2038
मेष	11/06/2038
मीन	11/10/2038
कुंभ	09/02/2039
मक	11/06/2039

कुम्भ 5 वर्ष	
11/06/2039	
10/06/2044	
मीन	10/11/2039
मेष	10/04/2040
वृष	10/09/2040
मिथु	09/02/2041
कर्क	11/07/2041
सिंह	10/12/2041
कन्या	11/05/2042
तुला	11/10/2042
वृश्चि	12/03/2043
धनु	11/08/2043
मक	10/01/2044
कुंभ	10/06/2044

मीन 11 वर्ष	
10/06/2044	
11/06/2055	
मेष	11/05/2045
वृष	11/04/2046
मिथु	12/03/2047
कर्क	10/02/2048
सिंह	09/01/2049
कन्या	10/12/2049
तुला	10/11/2050
वृश्चि	11/10/2051
धनु	10/09/2052
मक	10/08/2053
कुंभ	11/07/2054
मीन	11/06/2055

मेष 12 वर्ष	
11/06/2055	
11/06/2067	
वृष	10/06/2056
मिथु	11/06/2057
कर्क	11/06/2058
सिंह	11/06/2059
कन्या	10/06/2060
तुला	11/06/2061
वृश्चि	11/06/2062
धनु	11/06/2063
मक	10/06/2064
कुंभ	11/06/2065
मीन	11/06/2066
मेष	11/06/2067

वृष 12 वर्ष	
11/06/2067	
11/06/2079	
मेष	10/06/2068
मीन	11/06/2069
कुंभ	11/06/2070
मक	11/06/2071
धनु	10/06/2072
वृश्चि	11/06/2073
तुला	11/06/2074
कन्या	11/06/2075
सिंह	10/06/2076
कर्क	11/06/2077
मिथु	11/06/2078
वृष	11/06/2079

मिथुन 11 वर्ष	
11/06/2079	
11/06/2090	
वृष	11/05/2080
मेष	11/04/2081
मीन	11/03/2082
कुंभ	09/02/2083
मक	10/01/2084
धनु	10/12/2084
वृश्चि	10/11/2085
तुला	11/10/2086
कन्या	10/09/2087
सिंह	10/08/2088
कर्क	11/07/2089
मिथु	11/06/2090

कर्क 10 वर्ष	
11/06/2090	
11/06/2100	
मिथु	11/04/2091
वृष	10/02/2092
मेष	10/12/2092
मीन	10/10/2093
कुंभ	11/08/2094
मक	11/06/2095
धनु	10/04/2096
वृश्चि	09/02/2097
तुला	10/12/2097
कन्या	11/10/2098
सिंह	11/08/2099
कर्क	11/06/2100

नोट : उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।

चर दशा - प्रत्यन्तर

वृश्चि - कन्या		वृश्चि - सिंह		वृश्चि - कर्क		वृश्चि - मिथु		वृश्चि - वृष	
10/12/2025		11/06/2026		10/12/2026		11/06/2027		11/12/2027	
11/06/2026		10/12/2026		11/06/2027		11/12/2027		10/06/2028	
तुला	25/12/2025	कन्या	26/06/2026	मिथु	26/12/2026	वृष	26/06/2027	मेष	26/12/2027
वृश्चि	10/01/2026	तुला	11/07/2026	वृष	10/01/2027	मेष	11/07/2027	मीन	10/01/2028
धनु	25/01/2026	वृश्चि	26/07/2026	मेष	25/01/2027	मीन	27/07/2027	कुंभ	25/01/2028
मक	09/02/2026	धनु	11/08/2026	मीन	09/02/2027	कुंभ	11/08/2027	मक	10/02/2028
कुंभ	24/02/2026	मक	26/08/2026	कुंभ	24/02/2027	मक	26/08/2027	धनु	25/02/2028
मीन	11/03/2026	कुंभ	10/09/2026	मक	12/03/2027	धनु	10/09/2027	वृश्चि	11/03/2028
मेष	27/03/2026	मीन	25/09/2026	धनु	27/03/2027	वृश्चि	26/09/2027	तुला	26/03/2028
वृष	11/04/2026	मेष	11/10/2026	वृश्चि	11/04/2027	तुला	11/10/2027	कन्या	10/04/2028
मिथु	26/04/2026	वृष	26/10/2026	तुला	26/04/2027	कन्या	26/10/2027	सिंह	26/04/2028
कर्क	11/05/2026	मिथु	10/11/2026	कन्या	12/05/2027	सिंह	10/11/2027	कर्क	11/05/2028
सिंह	27/05/2026	कर्क	25/11/2026	सिंह	27/05/2027	कर्क	25/11/2027	मिथु	26/05/2028
कन्या	11/06/2026	सिंह	10/12/2026	कर्क	11/06/2027	मिथु	11/12/2027	वृष	10/06/2028

वृश्चि - मेष		वृश्चि - मीन		वृश्चि - कुंभ		वृश्चि - मक		वृश्चि - धनु	
10/06/2028		10/12/2028		11/06/2029		10/12/2029		11/06/2030	
10/12/2028		11/06/2029		10/12/2029		11/06/2030		10/12/2030	
वृष	25/06/2028	मेष	25/12/2028	मीन	26/06/2029	धनु	25/12/2029	वृश्चि	26/06/2030
मिथु	11/07/2028	वृष	09/01/2029	मेष	11/07/2029	वृश्चि	10/01/2030	तुला	11/07/2030
कर्क	26/07/2028	मिथु	25/01/2029	वृष	26/07/2029	तुला	25/01/2030	कन्या	26/07/2030
सिंह	10/08/2028	कर्क	09/02/2029	मिथु	10/08/2029	कन्या	09/02/2030	सिंह	11/08/2030
कन्या	25/08/2028	सिंह	24/02/2029	कर्क	26/08/2029	सिंह	24/02/2030	कर्क	26/08/2030
तुला	10/09/2028	कन्या	11/03/2029	सिंह	10/09/2029	कर्क	11/03/2030	मिथु	10/09/2030
वृश्चि	25/09/2028	तुला	26/03/2029	कन्या	25/09/2029	मिथु	27/03/2030	वृष	25/09/2030
धनु	10/10/2028	वृश्चि	11/04/2029	तुला	10/10/2029	वृष	11/04/2030	मेष	11/10/2030
मक	25/10/2028	धनु	26/04/2029	वृश्चि	25/10/2029	मेष	26/04/2030	मीन	26/10/2030
कुंभ	09/11/2028	मक	11/05/2029	धनु	10/11/2029	मीन	11/05/2030	कुंभ	10/11/2030
मीन	25/11/2028	कुंभ	26/05/2029	मक	25/11/2029	कुंभ	27/05/2030	मक	25/11/2030
मेष	10/12/2028	मीन	11/06/2029	कुंभ	10/12/2029	मक	11/06/2030	धनु	10/12/2030

वृश्चि - वृश्चि		धनु - वृश्चि		धनु - तुला		धनु - कन्या		धनु - सिंह	
10/12/2030		11/06/2031		11/10/2031		10/02/2032		10/06/2032	
11/06/2031		11/10/2031		10/02/2032		10/06/2032		10/10/2032	
तुला	26/12/2030	तुला	21/06/2031	वृश्चि	21/10/2031	तुला	20/02/2032	कन्या	20/06/2032
कन्या	10/01/2031	कन्या	01/07/2031	धनु	31/10/2031	वृश्चि	01/03/2032	तुला	01/07/2032
सिंह	25/01/2031	सिंह	11/07/2031	मक	10/11/2031	धनु	11/03/2032	वृश्चि	11/07/2032
कर्क	09/02/2031	कर्क	22/07/2031	कुंभ	20/11/2031	मक	21/03/2032	धनु	21/07/2032
मिथु	24/02/2031	मिथु	01/08/2031	मीन	01/12/2031	कुंभ	31/03/2032	मक	31/07/2032
वृष	12/03/2031	वृष	11/08/2031	मेष	11/12/2031	मीन	10/04/2032	कुंभ	10/08/2032
मेष	27/03/2031	मेष	21/08/2031	वृष	21/12/2031	मेष	21/04/2032	मीन	20/08/2032
मीन	11/04/2031	मीन	31/08/2031	मिथु	31/12/2031	वृष	01/05/2032	मेष	30/08/2032
कुंभ	26/04/2031	कुंभ	10/09/2031	कर्क	10/01/2032	मिथु	11/05/2032	वृष	10/09/2032
मक	12/05/2031	मक	20/09/2031	सिंह	20/01/2032	कर्क	21/05/2032	मिथु	20/09/2032
धनु	27/05/2031	धनु	01/10/2031	कन्या	30/01/2032	सिंह	31/05/2032	कर्क	30/09/2032
वृश्चि	11/06/2031	वृश्चि	11/10/2031	तुला	10/02/2032	कन्या	10/06/2032	सिंह	10/10/2032

चर दशा - प्रत्यन्तर

धनु - कर्क		धनु - मिथु		धनु - वृष		धनु - मेष		धनु - मीन	
10/10/2032		09/02/2033		11/06/2033		10/10/2033		09/02/2034	
09/02/2033		11/06/2033		10/10/2033		09/02/2034		11/06/2034	
मिथु	20/10/2032	वृष	19/02/2033	मेष	21/06/2033	वृष	20/10/2033	मेष	19/02/2034
वृष	30/10/2032	मेष	01/03/2033	मीन	01/07/2033	मिथु	31/10/2033	वृष	01/03/2034
मेष	09/11/2032	मीन	11/03/2033	कुंभ	11/07/2033	कर्क	10/11/2033	मिथु	11/03/2034
मीन	20/11/2032	कुंभ	21/03/2033	मक	21/07/2033	सिंह	20/11/2033	कर्क	22/03/2034
कुंभ	30/11/2032	मक	01/04/2033	धनु	31/07/2033	कन्या	30/11/2033	सिंह	01/04/2034
मक	10/12/2032	धनु	11/04/2033	वृश्चि	10/08/2033	तुला	10/12/2033	कन्या	11/04/2034
धनु	20/12/2032	वृश्चि	21/04/2033	तुला	21/08/2033	वृश्चि	20/12/2033	तुला	21/04/2034
वृश्चि	30/12/2032	तुला	01/05/2033	कन्या	31/08/2033	धनु	30/12/2033	वृश्चि	01/05/2034
तुला	09/01/2033	कन्या	11/05/2033	सिंह	10/09/2033	मक	10/01/2034	धनु	11/05/2034
कन्या	19/01/2033	सिंह	21/05/2033	कर्क	20/09/2033	कुंभ	20/01/2034	मक	21/05/2034
सिंह	30/01/2033	कर्क	31/05/2033	मिथु	30/09/2033	मीन	30/01/2034	कुंभ	01/06/2034
कर्क	09/02/2033	मिथु	11/06/2033	वृष	10/10/2033	मेष	09/02/2034	मीन	11/06/2034

धनु - कुंभ		धनु - मक		धनु - धनु		मक - धनु		मक - वृश्चि	
11/06/2034		11/10/2034		09/02/2035		11/06/2035		11/10/2035	
11/10/2034		09/02/2035		11/06/2035		11/10/2035		10/02/2036	
मीन	21/06/2034	धनु	21/10/2034	वृश्चि	19/02/2035	वृश्चि	21/06/2035	तुला	21/10/2035
मेष	01/07/2034	वृश्चि	31/10/2034	तुला	02/03/2035	तुला	01/07/2035	कन्या	31/10/2035
वृष	11/07/2034	तुला	10/11/2034	कन्या	12/03/2035	कन्या	11/07/2035	सिंह	10/11/2035
मिथु	21/07/2034	कन्या	20/11/2034	सिंह	22/03/2035	सिंह	22/07/2035	कर्क	20/11/2035
कर्क	01/08/2034	सिंह	30/11/2034	कर्क	01/04/2035	कर्क	01/08/2035	मिथु	01/12/2035
सिंह	11/08/2034	कर्क	10/12/2034	मिथु	11/04/2035	मिथु	11/08/2035	वृष	11/12/2035
कन्या	21/08/2034	मिथु	21/12/2034	वृष	21/04/2035	वृष	21/08/2035	मेष	21/12/2035
तुला	31/08/2034	वृष	31/12/2034	मेष	01/05/2035	मेष	31/08/2035	मीन	31/12/2035
वृश्चि	10/09/2034	मेष	10/01/2035	मीन	12/05/2035	मीन	10/09/2035	कुंभ	10/01/2036
धनु	20/09/2034	मीन	20/01/2035	कुंभ	22/05/2035	कुंभ	20/09/2035	मक	20/01/2036
मक	30/09/2034	कुंभ	30/01/2035	मक	01/06/2035	मक	01/10/2035	धनु	30/01/2036
कुंभ	11/10/2034	मक	09/02/2035	धनु	11/06/2035	धनु	11/10/2035	वृश्चि	10/02/2036

मक - तुला		मक - कन्या		मक - सिंह		मक - कर्क		मक - मिथु	
10/02/2036		10/06/2036		10/10/2036		09/02/2037		11/06/2037	
10/06/2036		10/10/2036		09/02/2037		11/06/2037		10/10/2037	
वृश्चि	20/02/2036	तुला	20/06/2036	कन्या	20/10/2036	मिथु	19/02/2037	वृष	21/06/2037
धनु	01/03/2036	वृश्चि	01/07/2036	तुला	30/10/2036	वृष	01/03/2037	मेष	01/07/2037
मक	11/03/2036	धनु	11/07/2036	वृश्चि	09/11/2036	मेष	11/03/2037	मीन	11/07/2037
कुंभ	21/03/2036	मक	21/07/2036	धनु	20/11/2036	मीन	21/03/2037	कुंभ	21/07/2037
मीन	31/03/2036	कुंभ	31/07/2036	मक	30/11/2036	कुंभ	01/04/2037	मक	31/07/2037
मेष	10/04/2036	मीन	10/08/2036	कुंभ	10/12/2036	मक	11/04/2037	धनु	10/08/2037
वृष	21/04/2036	मेष	20/08/2036	मीन	20/12/2036	धनु	21/04/2037	वृश्चि	21/08/2037
मिथु	01/05/2036	वृष	30/08/2036	मेष	30/12/2036	वृश्चि	01/05/2037	तुला	31/08/2037
कर्क	11/05/2036	मिथु	10/09/2036	वृष	09/01/2037	तुला	11/05/2037	कन्या	10/09/2037
सिंह	21/05/2036	कर्क	20/09/2036	मिथु	19/01/2037	कन्या	21/05/2037	सिंह	20/09/2037
कन्या	31/05/2036	सिंह	30/09/2036	कर्क	30/01/2037	सिंह	31/05/2037	कर्क	30/09/2037
तुला	10/06/2036	कन्या	10/10/2036	सिंह	09/02/2037	कर्क	11/06/2037	मिथु	10/10/2037

शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांको से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

मूलांक	2
भाग्यांक	3
मित्र अंक	2, 7, 8, 3
शत्रु अंक	4, 5, 6
शुभ वर्ष	20,29,38,47,56
शुभ दिन	मंगल, रवि, गुरु
शुभ ग्रह	मंगल, सूर्य, गुरु
मित्र राशि	वृष, मिथुन
मित्र लग्न	वृश्चिक, मेष, मिथुन
अनुकूल देवता	गणेश
शुभ रत्न	माणिक्य
शुभ उपरत्न	लाल हकीक, लाल तुर्मली
भाग्य रत्न	मूंगा
शुभ धातु	ताम्र
शुभ रंग	नारंगी
शुभ दिशा	पूर्व
शुभ समय	सूर्योदय
दान पदार्थ	मूंगा, केसर, रक्तचन्दन
दान अन्न	गेहुँ
दान द्रव्य	घी

रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं। वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं। यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है। ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो। यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो। मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है। बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है। चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है। उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है। साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है। विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है। जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए। जिन्हें 50-75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए। जो रत्न केवल 25-50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए। अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

रत्न	ग्रह	शुभता	क्षेत्र
मूंगा	मंगल	98%	भाग्योदय, सुख
माणिक्य	सूर्य	94%	व्यावसायिक उन्नति, स्वास्थ्य
हीरा	शुक्र	76%	व्यावसायिक उन्नति, पराक्रम
पन्ना	बुध	75%	व्यावसायिक उन्नति, धनार्जन, धन
पुखराज	गुरु	73%	भाग्योदय, सन्तति सुख, दुर्घटना से बचाव
गोमेद	राहु	73%	सुख, भाग्योदय
लहसुनिया	केतु	69%	व्यावसायिक उन्नति
मोती	चंद्र	41%	धन हानि, व्यय
नीलम	शनि	6%	धन हानि, शत्रु व रोग, दाम्पत्य कष्ट

रत्न की शुभता

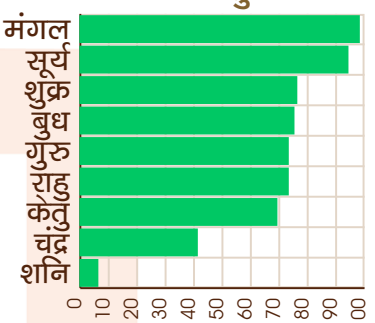

दशानुसार रत्न विचार

दशा	समाप्ति	माणिक्य	मोती	मूंगा	पन्ना	पुखराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसुनिया
मंगल	06/05/2017	100%	52%	100%	62%	80%	76%	6%	61%	75%
राहु	06/05/2035	81%	16%	86%	75%	73%	82%	19%	86%	56%
गुरु	06/05/2051	100%	52%	100%	62%	86%	64%	6%	73%	69%
शनि	06/05/2070	81%	16%	86%	81%	73%	82%	31%	80%	56%
बुध	06/05/2087	100%	16%	98%	88%	73%	82%	6%	73%	69%
केतु	06/05/2094	81%	16%	100%	75%	73%	82%	0%	61%	81%
शुक्र	07/05/2114	81%	16%	98%	81%	73%	89%	19%	80%	75%
सूर्य	06/05/2120	100%	52%	100%	75%	80%	64%	0%	61%	56%
चंद्र	07/05/2130	100%	58%	98%	81%	73%	76%	6%	61%	56%

विस्तृत रत्न विचार

औषधि मणि मंत्राणां, ग्रह-नक्षत्र तारिका ।
भाग्यकाले भवेत्सिद्धिः अभाग्यं निष्फलं भवेत ।।

औषधि, मणि एवं मंत्र ग्रह नक्षत्र जनित रोगों को दूर करते हैं। यदि समय सही है तो इनसे उपयुक्त फल प्राप्त होते हैं। विपरीत समय में ये सभी निष्फल हो जाते हैं।

रत्न शरीर की शोभा बढ़ाने के साथ साथ अपनी चमत्कारिक शक्ति द्वारा ग्रहों के विपरीत प्रभावों को कम करके ग्रह बल को बढ़ाते है। रत्न हमारे शरीर में ग्रहों से आ रही किरणों का प्रवाह बढ़ाते हैं। अतः जो ग्रह आपकी कुण्डली में शुभ हो लेकिन निर्बल हो उनका रत्न पहनने से ग्रह की निर्बलता दूर होती है। यही कारण है कि अशुभ ग्रहों के रत्न सर्वदा त्याज्य है।

रत्न जितना साफ व सही कटाव का होगा उतना ही अधिक रश्मियों को एकत्रित करने में सक्षम होता है। अतः अच्छी गुणवत्ता के रत्न ही पूर्णतः फल देने में समर्थ होते है। रत्न का वजन व शरीर का वजन ग्रह की निर्बलता के अनुपात में होना चाहिए। यदि ग्रह बहुत कमजोर है तो अधिक वजन का रत्न पहनना चाहिए। हीरे को छोड़कर रत्न शरीर से छुना अति आवश्यक हैं। अंगूली में व विशेष धातु में पहनने से रत्न का प्रभाव अधिकतम होता है।

यदि किसी कारणवश रत्न उतारना है तो रत्न के वार के दिन ही उतारकर श्रद्धापूर्वक गंगाजल में धोकर सुरक्षित स्थान पर रखना चाहिए। यदि रत्न खो जाए या चोरी हो जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह दोष खत्म हो गया है। यदि रत्न का रंग फिका पड़ जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह का अशुभ प्रभाव शांत हुआ समझना चाहिए। यदि रत्न में दरार पड़ जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह प्रभावशाली है तब ग्रह की शांति कराए तथा दूसरा रत्न बनवाकर पुनः पहनें।

कुंडली में जो ग्रह अशुभ हो उनके लिए रुद्राक्ष धारण, मंत्र, दान, जल, विसर्जन एवं व्रत आदि उपायों से ग्रहों की अशुभता को दूर किया जा सकता है। यदि आप किसी कारणवश रत्न धारण करने में असमर्थ है तो आप इन रत्नों के रुद्राक्ष या उपरत्न धारण कर ग्रह शुभता प्राप्त कर सकते है अन्यथा मंत्र जाप। दान या व्रत आदि से भी ग्रहों का बलाबल बढ़ा सकते है।

किसी भी कुंडली के लिए लग्नेश जीवन रत्न होता है और इसके धारण करने से स्वास्थ्य लाभ व व्यक्तित्व विकास व मान-सम्मान प्राप्त होता है। नवमेश का रत्न भाग्य रत्न कहलाता है। इसके धारण करने से भाग्य की बढ़ोतरी होते है। साथ ही यह रत्न मान-प्रतिष्ठा भी बढ़ाता है। योगकारक या पंचमेश ग्रह का रत्न। कारक रत्न कहलाता है। इसके धारण करने से कार्य में प्रगति। धन लाभ व चौमुखी विकास प्राप्त होता है। आपको कौन सा रत्न पहनना चाहिए व कौन सा नहीं इसके लाभ/हानि की जानकारी विस्तृत रूप में नीचे दी जा रही है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न। द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान सिद्ध हो सकता है।

आपकी कुडंली और रत्न

आपके लिए मूंगा, माणिक्य, हीरा व पन्ना रत्न धारण करना अति शुभ फलदायक है। इन्हें आप सर्वदा धारण करेंगे तो आपके जीवन का चहुंमुखी विकास होगा। धन लाभ व व्यावसायिक उन्नति होगी।

मूंगा आपका भाग्य रत्न है। इस रत्न को धारण करने से आपके भाग्य की वृद्धि होगी। रुके हुए कार्य सुगमता पूर्वक बनेंगे। मान-सम्मान बढ़ेगा। शुभ यात्राएं होंगी। मानसिक विकार दूर होंगे। धन लाभ व व्यावसायिक उन्नति होगी।

माणिक्य आपका जीवन रत्न है इसको धारण करने से आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आपके आत्मविश्वास में वृद्धि होगी। मान-प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। कार्य क्षेत्र में प्रगति होगी।

हीरा व पन्ना रत्न आपके कारक रत्न हैं। कारक रत्न के धारण करने से व्यावसायिक उन्नति प्राप्त होती है। धन लाभ होता है। सुख सम्पत्ति की प्राप्ति होती है। जीवन में नयी ऊर्जा का प्रवाह होता है।

अतः उपरोक्त रत्न आप अवश्य धारण करें। सभी रत्न जीवन पर्यन्त धारण करने से ग्रहों की विशेष शुभता प्राप्त होगी और जीवन सुखमय होकर गतिमान होगा। उपरोक्त रत्न आप बिना किसी दशा या गोचर विचार के धारण कर सकते हैं क्योंकि सभी रत्न अति शुभफलदायी हैं।

आपके लिए पुखराज, गोमेद एवं लहसुनिया रत्न शुभ हैं लेकिन ये रत्न दशानुसार शुभाशुभ फल देने में सक्षम है। अतः इन्हें आप स्वदशा या मित्र दशा में धारण करेंगे तो ये शुभ फल देंगे। शत्रु दशा में इनको नहीं पहनना ही बेहतर होगा। उस समय इन ग्रहों के उपाय आप रुद्राक्ष पहन कर या दान, मंत्र जाप आदि से करना श्रेष्ठ होगा।

मोती रत्न आपके लिए नेष्ट है। अतः इसे न पहनना ही बेहतर है। इसे धारण करने से आपको मानसिक परेशानी एवं स्वास्थ्य हानि हो सकती है। अतः यदि इसे धारण करना हो तो इसकी अनुकूलता का परीक्षण अवश्य कर लें और विभिन्न दशाओं में इसकी अनुकूलता का परिक्षण करते रहें, क्योंकि यह रत्न आपके लिए किसी दशा या गोचर में विशेष कष्टकारी भी हो सकता है।

नीलम पहनना आपके लिए कष्टकारी सिद्ध हो सकता है। इस रत्न का आप सर्वदा त्याग ही करें, क्योंकि किसी भी दशा या गोचर में इससे शुभ फल प्राप्त होने की आशा कम ही

है। इस रत्न को धारण करने से सामाजिक, आर्थिक व स्वास्थ्य पक्ष से विपरीत फल प्राप्त हो सकते हैं।

विभिन्न रत्न आपके लिए किस प्रकार से फलदायी रहेंगे एवं उनकी धारण विधि का विस्तृत विवरण निम्न प्रकार से है :-

मूंगा

आपकी कुंडली में मंगल नवम भाव में स्थित है। मंगल रत्न मूंगा धारण कर आप मंगल ग्रह की शुभता प्राप्त करें। मूंगा रत्न आपकी नेतृत्व शक्ति बढ़ाकर आपको उच्चाधिकारी बनाएगा। मूंगा रत्न से आप स्वाभिमानी बनेंगे। मूंगा रत्न आपको मित्रों में श्रेष्ठ बनाएगा। रत्न शुभता विदेशी यात्राओं को सफल कर आपको लाभ दिलाएगी। रत्न शक्तियां आपको आत्मिक रूप से धार्मिक बनाए रखेंगी। यह रत्न आपके पुरुषार्थ भाव को बढ़ाकर आपको साहसपूर्ण कार्य करने की ओर प्रेरित करेगा। मूंगा रत्न धारण से भूमि-भवन के कार्य भी पूरे होंगे।

आपकी सिंह लग्न की कुंडली में मंगल चतुर्थेश एवं नवमेश है। मंगल आपके लिए नवमेश होने के कारण शुभ ग्रह है। मंगल रत्न मूंगा धारण कर आप कर्म से भाग्य बदलने का प्रयास कर सकते है। मूंगा रत्न आपको धर्मपरायण व सौभाग्यशाली बना सकता है। इस रत्न के शुभ प्रभाव से आप माता सुख, भूमि व भवन पक्ष से सबल कर सकता है। आप यह रत्न धारण कर अपने दैनिक जीवन को गौरवशाली बना सकते है। इसके साथ ही रत्न धारण से आपके व्यवसायिक जीवन में सुख भाव बना रहेगा।

मूंगा रत्न अनामिका अंगूली में, चांदी धातु में जड़वाकर मंगलवार को प्रातः काल में स्नानादि क्रियाओं से शुद्ध होकर इस रत्न को पंचामृत से शुद्ध कर अपने ईष्ट देव का पूजन करने के पश्चात धूप, दीप दिखाकर धारण करना चाहिए। मूंगा रत्न धारण करने के पश्चात मंगल मंत्र ऊँ अं अंगारकाय नमः का १ माला जाप करना चाहिए। इसके पश्चात मंगल वस्तुएं जैसे - गेहूं, गुड़, तांबा, लाल वस्त्र आदि का दान करना चाहिए। मूंगा रत्न कम से कम ६ रत्ती से लेकर अधिकतम ८ रत्ती तक का धारण करना शुभ रहता है।

मूंगा रत्न धारण करने के बाद इस रत्न के साथ हीरा, गोमेद एवं नीलम रत्न को धारण करना अनुकूल नहीं माना गया है। यदि आप इस रत्न को अंगूठी रूप में धारण न कर पाएं तो आप इसे लॉकेट रूप में या दूसरे हाथ में धारण कर सकते है। यह रत्न रजत धातु के अलावा स्वर्ण धातु में भी धारण किया जा सकता है। मूंगा रत्न धारण न कर पाने की स्थिति में आप इस रत्न के उपरत्न लाल हकीक एवं ३ मुखी रुद्राक्ष भी आप धारण कर सकते है।

माणिक्य

आपकी कुंडली में सूर्य दशम भाव में स्थित है। आपको सूर्य रत्न माणिक्य धारण करना चाहिए। माणिक्य रत्न आपको बुद्धिमान, विद्वान और प्रसिद्ध बनाएगा। इसकी शुभता से आप आत्मविश्वास से भरे हुए आर्थिक रूप से सुदृढ़ व्यक्ति होंगे। रत्न शक्तियां आपको कार्यक्षत्र में अधिकारिक शक्तियां प्राप्त करने में सहयोग करेंगी। आपको सरकारी क्षेत्र में नौकरी प्राप्त हो

सकती है। आजीविका क्षेत्र में भी आपको उच्चाधिकारियों का सुख-सहयोग सहजता से प्राप्त होगा। यह रत्न आपको कार्यक्षेत्र में बड़ी सफलता दिला सकता है। रत्न शुभता से नेतृत्त्व करने की अद्भुत योग्यता सामने आयेगी।

आपकी सिंह लग्न की कुंडली में सूर्य लग्न भाव के स्वामी है। लग्नेश सूर्य का रत्न माणिक्य धारण कर आप सूर्य शुभता प्राप्त कर सकते है। लग्नेश सर्वदा शुभ फलदायक होता है। इसलिए माणिक्य भी आपके लिए विशेष रूप से शुभ रत्न है। माणिक्य रत्न की शुभता से आप तेजस्वी, साहसी, स्वाभिमानी, प्रभावशाली व्यक्तित्व पा सकते है। रत्न का शुभ प्रभाव आपको अनुशासित जीवन, वैवाहिक जीवन को अनुकूलता दे सकता है। माणिक्य रत्न को आप सरकारी क्षेत्र से जुड़े कार्यो को शीघ्र से कराने के लिए भी धारण कर सकते है।

यह रत्न अनामिका अंगूली, स्वर्ण धातु में जड़वाकर रविवार को प्रातः काल में स्नानादि से निवृत होकर धारण करना चाहिए। पंचामृत से रत्न को शुद्ध करने के पश्चात धूप, दीप दिखाकर धारण करना चाहिए। धारण करने के पश्चात सूर्य मंत्र ऊँ घृणि सूर्याय नमः का कम से कम १ माला जाप करना चाहिए। तद्पश्चात सूर्य वस्तुएं जैसे- गेहूं, गुड़, चंदन, लाल वस्त्र आदि का दान करना चाहिए। माणिक्य रत्न कम से कम ४ रत्ती से लेकर ८ रत्ती तक का धारण करना लाभकारी रहता है।

माणिक्य रत्न के साथ नीलम या गोमेद रत्न को धारण करने से बचना चाहिए। अति आवश्यकता में इन्हें आप लॉकेट रूप में या दूसरे हाथ में धारण कर सकते है। आवश्यकता में यह रत्न चांदी धातु में भी धारण किया जा सकता है। यदि आप माणिक्य रत्न पहनने में किसी प्रकार से असमर्थ है तो आप इसके स्थान पर लाल तुरमली, गुलाबी हकीक, गारनेट एवं एक मुखी रुद्राक्ष भी धारण कर सकते है।

हीरा

आपकी कुंडली में शुक्र दशम भाव में स्थित है। शुक्र रत्न हीरा धारण करना आपके लिए शुभदायक सिद्ध होगा। यह रत्न आपके स्वभाव को शांत और मिलनसार बनाएगा। आपको विवादों से दूर रखेगा। इसकी शुभता से आपका नैतिक आचरण अच्छा रहेगा। आप धार्मिक और श्रद्धालु स्वभाव के होंगे। हीरे रत्न की शक्तियां आपकी दान पुण्य में रुचि बनाए रखेंगी। हीरे का शुभ प्रभाव से आप अच्छे वक्ता होंगे। धन-दौलत की आपको कोई कमी नहीं होगी। पद-प्रतिष्ठा की प्राप्ति होगी। गायन, वादन, साहित्य रचना, चित्रकारी जैसी ललित कलाओं में आपकी अच्छी रुचि जागृत होगी।

आपकी सिंह लग्न की कुंडली में शुक्र तृतीय और दशम भाव के स्वामी है। अतः आप शुक्र रत्न हीरा धारण कर सकते है। हीरा रत्न धारण कर आप आकर्षक, कीर्तिवान, धैर्यवान, उदार, विनोदी एवं संतान से सुखी हो सकते है। तथा इस रत्न को धारण करने के बाद आजीविका क्षेत्र में आपको अच्छी नौकरी, व्यवसायिक सफलता, संगीत तथा कला क्षेत्रों से धन की प्राप्ति हो सकती है। यह रत्न शुभ होने के कारण आपको अभिनय, गायन एवं राजनीति क्षेत्र में अपनी योग्यता दिखाने के अवसर दे सकता है। पुरुषार्थ से कर्मक्षेत्र में सफलता पाने के लिए भी आप शुक्र रत्न हीरा धारण कर सकते है।

हीरा रत्न सोने धातु की अंगूठी में जड़वाकर, शुक्रवार के दिन सूर्य उदय के पश्चात स्नानादि क्रियाओं से शुद्ध होकर रत्न को रत्न जड़ित अंगूठी को दूध, जल, शक्कर, दही और शहद से मिलकर बने पंचामृत में डूबोकर शुद्ध कर, अपने देव स्थान पर रखकर शुक्रदेव और रत्न को धूप, दीप एवं फूल दिखाकर अनामिका अंगूली में धारण करें। हीरा रत्न धारण करते समय शुक्र मंत्र ऊँ शं शुक्राय नमः का १०८ बार मंत्र जाप करना चाहिए। मंत्र जाप करने के बाद शुक्र ग्रह की वस्तुएं जैसे- चावल, चांदी, घी, श्वेत वस्त्र आदि वस्तुओं का दान करें। हीरा 1 रत्ती से अधिक बजन का धारण करना चाहिए। यह छोटे टुकड़ों में भी पहना जा सकता है।

हीरा रत्न के साथ माणिक्य, मूंगा एवं पुखराज रत्न धारण करना सर्वदा वर्जित है। अंगूठी रूप रत्न धारण न कर पाने की स्थिति में इसे लॉकेट/ माला/ ब्रसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण कर सकते है। हीरा रत्न के स्थान पर इस रत्न के उपरत्न ओपल, जर्कन, स्फटिक एवं ६ मुखी रुद्राक्ष धारण किया जा सकता है।

पन्ना

आपकी कुंड़ली में बुध दशम भाव में स्थित है। आपको बुध रत्न पन्ना धारण करना चाहिए। पन्ना रत्न आपकी न्यायप्रियता और नीतिनिपुणता में वृद्धि करेगा। रत्न शुभता आपको विवेकवान। गुणवान और सत्यवादी व्यक्ति बनेंगे। यह रत्न आपके धैर्य और विनम्रता को बढ़ाएगा। परिस्थिति अनुसार बोलने का कौशल यह रत्न पन्ना आपको दे सकता है। रत्न प्रभाव आपको यशस्वी और व्यवहार कुशल बनाएगा। रत्न धारण करने के बाद आपको विभिन्न प्रकार के वाहनों का सुख प्राप्त होगा। रत्न शुभता आपको धनाढ्य और संपतिवान बनाएगी। व्यापार के माध्यम से लाभ, सफलता दोनों देगा।

आपकी सिंह लग्न की कुंडली में बुध द्वितीय भाव एवं एकादश भाव के स्वामी है। आप बुध रत्न पन्ना धारण कर सकते है। पन्ना रत्न आपका संचित धन बढ़ा सकता है। पन्ना रत्न को धारण कर आप के परिवार में वृद्धि के योग बन सकते है। यह रत्न आपके कुटुंम्ब को एकसूत्र में बांधकर रख सकता है। पन्ना बुध आयेश का रत्न होने के कारण आपको बौद्धिक बल से धनार्जन करने के भरपूर अवसर दे सकता है। पन्ना रत्न की शुभता से आप को विभिन्न साधनों से आय प्राप्त हो सकती है। साथ ही इस रत्न को धारण कर आप अपनी वाकशक्ति में मधुरता एवं चतुरता दोनों का मिश्रण हो सकता है।

पन्ना रत्न कनिष्ठिका अंगूली में धारण करना चाहिए। इस रत्न को सोना धातु में जड़वाकर आप प्रातःकाल में स्नानादि नित्यक्रियाओं से निवृत होने के बाद रत्न को पंचामृत से शुद्ध कर धूप, दीप और फूल दिखाकर धारण कर सकते है। पन्ना रत्न धारण करते समय बुध मंत्र ऊँ बुं बुधाय नमः का ९ माला या ५ माला जाप करना चाहिए। तदुपरांत बुध ग्रह की वस्तुएं जैसे - मूंग, कस्तूरी, कांसा, हरित वस्त्र आदि का यथाशक्ति दान करना चाहिए। रत्न इस प्रकार धारण करें कि वह शरीर को स्पर्श करें। पन्ना रत्न 3 रत्ती का कम से कम, अन्यथा 6 रत्ती का होना चाहिए।

इस रत्न को आप लॉकेट/ माला/ ब्रसलेट या विपरीत हाथ में भी धारण कर सकते है। पन्ना रत्न धारण करने में आप असमर्थ हो तो आप इसके स्थान पर मरगज, हरा हकीक,

पेरिडोट एवं ४ मुखी रुद्राक्ष धारण कर सकते है।

पुखराज

आपकी कुंडली में गुरु नवम भाव में स्थित है। गुरु रत्न पुखराज धारण करना आपके लिए शुभफल प्रदान करेगा। पुखराज रत्न की शुभता से आप नीतिमान, विचारशील और माननीय व्यक्ति बनेंगे। देवताओं, ब्राह्मणों और गुरुजनों में आपकी श्रद्धा का विस्तार होगा। रत्न शुभता आपको दान-पुण्य कार्यो में सहभागिता देगी। पुखराज रत्न प्रभाव से आप शांत, सदाचारी, और उच्च विचार वाले व्यक्ति बनेंगे। रत्न शक्तियां आपको तीर्थ यात्रा और धार्मिक कार्यो से जोड़े रखेगी। आपको विदेश गमन से लाभ प्राप्त हो सकता है।

आपकी सिंह लग्न की कुंडली में गुरु पंचम भाव एवं अष्टम भाव के स्वामी है। पंचमेश गुरु लग्नेश सूर्य का मित्र है। अतः आप गुरु रत्न पुखराज धारण करें। पुखराज रत्न की शुभता आपकी आयु पर आने वाले कष्टों का निवारण कर सकती है। इस रत्न को धारण कर आप प्रीति विषय, आमोद-प्रमोद, सांसारिक सुख, संतान एवं ज्ञान को बढ़ा सकते है। रत्न की शुभता से आपको संतान प्राप्ति के योग बन सकते है। आप पुखराज रत्न कर गुरु ग्रह की शुभता प्राप्त कर सकते है। रत्न शुभता आपको गणित, ज्योतिश, धार्मिक ग्रंथ, वेद वेदान्त और दर्शन शास्त्र जैसे विषयों में आपकी रुचि जागृत कर सकता है।

इस रत्न को स्वर्ण धातु में जड़वाकर, गुरुवार के दिन प्रातःकाल में सभी प्रकार से शुद्ध होने के बाद रत्न को धूप, दीप दिखाकर तर्जनी अंगूली में धारण करना चाहिए। पुखराज रत्न धारण करने के बाद ऊँ बृं बृहस्पतये नमः का एक माला जाप ५ मुखी रुद्राक्ष माला पर करना चाहिए। जप पूर्ण करने के बाद किसी जरुरतमंद को गुरु ग्रह से संबंधित पदार्थो का दान अपने सामर्थ्यशक्ति के अनुसार करना चाहिए। गुरु ग्रह की वस्तुएं इस प्रकार है- चने की दाल, हल्दी, पीला वस्त्र। यह रत्न कम से कम ४ रत्ती से लेकर 8 रत्ती का धारण किया जा सकता है।

पुखराज रत्न के साथ हीरा और गोमेद रत्न धारण करना अनुकूल फलदायक नहीं रहता है। विशेष आवश्यकता होने पर आप इस रत्न को लॉकेट/ माला/ ब्रसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण कर सकते है। किसी कारणवश यदि पुखराज रत्न आप धारण न कर पाएं तो आप इसके उपरत्न सुनहला, पीला हकीक, पीताम्बरी रत्न एवं ५ मुखी रुद्राक्ष धारण करें।

गोमेद

आपकी कुंडली में राहु चतुर्थ भाव में स्थित है। आपको राहु रत्न गोमेद धारण करना चाहिए। गोमेद रत्न धारण करने से आपके साहस भाव में वृद्धि होगी। सरकारी पक्ष से सहयोग प्राप्त होगा। प्रशासनिक व्यक्तियों के द्वार आपका हित साधन हो सकता है। यह रत्न आपको माता से सुख देगा। भ्रम की स्थिति दूर होगी। आपके पास भौतिक सुख-सुविधाओं का भंड़ार हो सकता है। विदेश प्रवास अनुकूल होगा। नौकरी के क्षेत्र में राहु ग्रह की शुभता प्राप्त होगी। गोमेद रत्न आजीविका क्षेत्र में शुभता बनाये रखेगा।

राहु वृश्चिक राशि में स्थित है व इसका स्वामी मंगल नवम भाव में स्थित है। अतः गोमेद रत्न धारण करने से आपके जीवन के शुभ फलों की अधिकता होगी। आप धार्मिक कार्यो

में रुचि लेंगे। आपको लोगों द्वारा पसंद किया जाएगा। रत्न शुभता से आपको अपने सभी प्रयासों में सफलता प्राप्त होगी। यह रत्न आपको भाग्यशाली बना रहा है। इस रत्न की शुभता से आप प्रवासी हो सकते हैं तथा यह रत्न आपको तीर्थाटन प्रवृत्ति देगा। आप धार्मिक, उदार, कृतज्ञ, दयालु, देव- भक्त, भाई बन्धुओं के संरक्षक, प्रसिद्ध तथा पराक्रमी होंगे। एवं यह रत्न आपको अनेक प्रकार के धन रत्नादि से सुखी तथा सभी प्रकार की सुख समृद्धि देगा।

गोमेद रत्न अष्टधातु से निर्मित अंगूठी को शनिवार के दिन सूर्यास्त काल में सभी प्रकार से स्वयं शुद्ध होकर रत्न जड़ित अंगूठी को दूध, जल, शक्कर, दही और शहद से स्नान करायें। इसके बाद रत्न का धूप, दीप और फूल से पूजन कर मध्यमा अंगूली में धारण करें। रत्न धारण के पश्चात राहु मंत्र ऊँ रां राहवे नमः का १०८ बार जाप करें और फिर इस ग्रह की वस्तुएं जैसे- तिल, तेल, कंबल, नीले वस्त्र आदि का दान करें। गोमेद रत्न का वजन कम से कम 4 रत्ती और अधिकतम 8-10 रत्ती होना चाहिए।

गोमेद रत्न धारण करने के बाद इस रत्न के साथ माणिक्य, मोती एवं मूंगा रत्न धारण करने से बचना चाहिए। अंगूठी रूप में इस रत्न को धारण न कर पाने की स्थिति में इस रत्न को लॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी पहना जा सकता है। विशेष परिस्थितियों में रत्न के स्थान पर इसके उपरत्न गोमेद या ८ मुखी रुद्राक्ष को भी धारण करना श्रेष्ठकर रहता है।

लहसुनिया

आपकी कुंडली में केतु ग्रह कर्म भाव में स्थित है। आपके लिए केतु रत्न लहसुनिया धारण करना शुभफलदायक रहेगा। लहसुनिया रत्न आपको आत्मज्ञानी और शिल्पकला का जानकार बना सकता है। रत्न शुभता से आप प्रतियोगियों को शांत रखने में सफल रहेंगे। इस रत्न को धारण करने के बाद आपका स्वभाव मिलनसार, प्रभावशाली और प्रशंसनीय बनेगा। केतु रत्न लहसुनिया आपको अत्यधिक यात्राएं देकर, यात्राओं से लाभ देगा। व्यर्थ के कार्यों में आपके श्रम को बचाएगा। रत्न शुभता से आप अपने लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए प्रयत्नशील रहेंगे।

केतु वृष राशि में स्थित है व इसका स्वामी शुक्र दशम भाव में स्थित है। अतः लहसुनिया रत्न धारण कर आप आजीविका क्षेत्र में चातुर्य से उन्नति प्राप्त करेंगे। यह रत्न आपको कर्मक्षेत्र में उच्च पद, सम्मान एवं अधिकार शक्ति देगा तथा रत्न पहन कर आप व्यवहार कुशल होंगे। रत्न शुभता से आप धनवान, बुद्धिमान और पितृ-सुखयुक्त होंगे। यह रत्न आपको आजीविका क्षेत्र में व्यर्थ विवादों में सम्मिलित होने से बचाएगा। इस रत्न को धारण करने से आपको अधीनस्थों का सुख-सहयोग प्राप्त होगा। तथा यह रत्न आपके कार्यभार में कमी करेगा। आपके कार्यों में नियमितता आएगी। न्याय और परिश्रम कुशलता में वृद्धि होगी। आपको उत्तम व्यक्तियों के संपर्क में रहने के अवसर प्राप्त होंगे।

लहसुनिया रत्न को चांदी धातु में जड़वाकर गुरुवार के दिन सूर्यास्त काल में धारण किया जा सकता है। लहसुनिया रत्न जड़ित अंगूठी को पंचामृत से स्नान कराकर, इसका धूप, दीप और फूलों से पूजन करने के बाद अनामिका अंगूली में धारण करें। रत्न धारण के पश्चात केतु रत्न मंत्र ऊँ के केतवे नमः का १ माला जाप करें। मंत्र जाप के बाद केतु ग्रह की वस्तुओं का दान किसी योग्य व्यक्ति को करना शुभ रहता है। केतु वस्तुएं इस प्रकार है- सप्तधान्य,

नारियल, धूम्र वस्त्र। लहसुनिया रत्न का वजन कम से कम 4 रत्ती और अधिकतम 8-10 रत्ती होना चाहिए। अंगूठी रूप में रत्न धारण करने में किसी प्रकार की असमर्थता होने पर इसे ल ॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण किया जा सकता है।

लहसुनिया रत्न धारण करते समय यह ध्यान रखना चाहिए कि इस रत्न के साथ माणिक्य एवं गोमेद रत्न धारण करना प्रतिकूल फल प्रदान कर सकता है।

मोती

आपकी कुंडली में चंद्र द्वितीय भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः चंद्र का मोती रत्न आपको नवीन काम धंधों में प्रतिकूल फल दे सकता है। मोती रत्न प्रभाव से विषय वासना के प्रति आपकी रुचि अधिक हो सकती है। अपनी पसंद के अनुरूप स्वादिष्ट भोजन का अनुभव आपको करना पड़ सकता है। धन बचाना आपके लिए सरल नहीं हो पाएगा। रोजगार प्राप्ति और प्रारम्भिक शिक्षा में व्यवधान आ सकते है। रत्न की अनुकूलता प्राप्त न होने के कारण आपका आर्थिक पक्ष प्रभावित हो सकता है। पारिवारिक कुटुंब के संबंधों में उत्तार-चड़ाव की स्थिति बन सकती है। वाणी दोष की स्थिति भी बन सकती है। वाणी में मधुरता की कमी भी आपको हो सकती है।

आपकी सिंह लग्न की कुंडली में चंद्र द्वादश भाव के स्वामी है। चंद्र रत्न मोती धारण से आपकी अस्वस्थता बढ़ सकती है। इस रत्न को धारण करने पर आपको व्यय से संबंधित चिंताएं अधिक हो सकती है। इसके अतिरिक्त यह रत्न आपके दांपत्य जीवन में भी अनियमितता का कारण बन सकता है। रत्न धारण से आपके व्यावसायिक कार्यो में परेशानियां बनी रहेंगी। यह रत्न आपको शारीरिक दुर्बलता दे सकता है। कुसंगति के व्यक्ति आपको प्रिय हो सकते है। जल से शारीरिक हानि का भय आपको हो सकता है। रत्न प्रभाव नजला, जुकाम से आपको पीड़ित कर सकता है। आप क्रोधी, हठी एवं निराशाभाव युक्त हो सकते है। नेत्रादि रोग और कुटुम्ब के कारण आपके दुःख बढ़ सकते है।

नीलम

आपकी कुंडली में शनि दूसरे भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः नीलम रत्न धारण करना आपको आर्थिक पक्ष से कमजोर कर सकता है। सरकारी टैक्स आपकी मानसिक चिंताएं बढ़ा सकते है। व्यापारिक क्षेत्रों से मनोकूल परिणाम की कमी आपके संचय में कमी का कारण बन सकती है। कुछ नये पारिवारिक विवाद आपके सामने आ सकते है। शनि रत्न नीलम आपको आपके निवास स्थान से दूर लेकर जा सकता है। धन, सवारी तथा सुख प्राप्ति के साधन आपको शारीरिक कष्ट देकर जा सकते है। दूसरे भाव के शनि के रत्न प्रभाव से पैतृक सम्पति की हानि, भूमि भवन के मामलें कोर्ट कचहरी में तथा आय गति मंद हो सकती है। इस रत्न से कभी कभी आप कटुवक्ता भी हो सकते है। सदाचार और निष्ठा की कमी भी यह रत्न आपको दे सकता है।

आपकी सिंह लग्न की कुंडली में शनि षष्ठेश एवं सप्तमेश है। शनि का नीलम रत्न आपको शारीरिक, मानसिक एवं धन संबंधी कष्ट दे सकता है। यह रत्न आपको यात्रा में कष्ट दे सकता है। रत्न प्रभाव से आपकी स्वास्थ्य हानि हो सकती है। नीलम रत्न धारण करने के बाद

आपको सामान्य उन्नति के लिए भी विशेष संघर्ष करना पड़ सकता है। इस रत्न को धारण करने पर आपके शत्रु समय समय पर आपकी परेशानियां बढ़ा सकते है। आपको पैतृक ऋण देना पड़ सकता है। रत्न आपको दैनिक व्यवसाय में कठिनाईयां दे सकता है। आय व आयु दोनों के लिए यह रत्न अनुकूल फलदायी नहीं है। रत्न प्रभाव से आपका वैवाहिक जीवन कष्टमय हो सकता है।

दशानुसार रत्न विचार

राहु
(06/05/2017 - 06/05/2035)

राहु की दशा में आपका मूंगा, गोमेद, हीरा, माणिक्य व पन्ना रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

पुखराज व लहसुनिया रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

नीलम व मोती रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

गुरु
(06/05/2035 - 06/05/2051)

गुरु की दशा में आपका माणिक्य, मूंगा व पुखराज रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

गोमेद, लहसुनिया, हीरा, पन्ना व मोती रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

नीलम रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

शनि
(06/05/2051 - 06/05/2070)

शनि की दशा में आपका मूंगा, हीरा, माणिक्य, पन्ना व गोमेद रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

पुखराज व लहसुनिया रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

नीलम रत्न नेष्ट हैं और मोती रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

बुध
(06/05/2070 - 06/05/2087)

बुध की दशा में आपका माणिक्य, मूंगा, पन्ना व हीरा रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

पुखराज, गोमेद व लहसुनिया रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

मोती व नीलम रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

केतु
(06/05/2087 - 06/05/2094)

केतु की दशा में आपका मूंगा, हीरा, माणिक्य, लहसुनिया व पन्ना रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

पुखराज व गोमेद रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

मोती व नीलम रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

शुक्र
(06/05/2094 - 07/05/2114)

शुक्र की दशा में आपका मूंगा, हीरा, माणिक्य, पन्ना, गोमेद व लहसुनिया रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

पुखराज रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

नीलम व मोती रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

सूर्य
(07/05/2114 - 06/05/2120)

सूर्य की दशा में आपका माणिक्य, मूंगा, पुखराज व पन्ना रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

हीरा, गोमेद, लहसुनिया व मोती रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने

हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

नीलम रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

चन्द्र
(06/05/2120 - 07/05/2130)

चन्द्र की दशा में आपका माणिक्य, मूंगा, पन्ना व हीरा रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

पुखराज, गोमेद, मोती व लहसुनिया रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

नीलम रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

दशा ग्राफ

मंगल - 06/05/2017

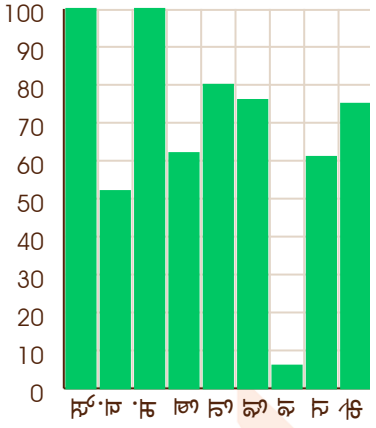

राहु - 06/05/2035

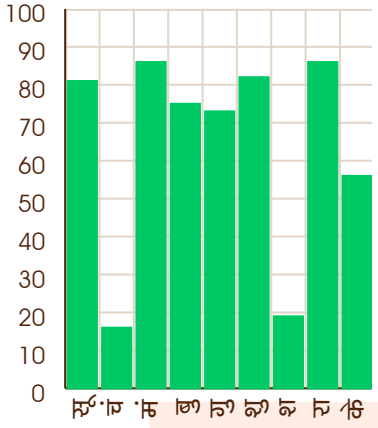

गुरु - 06/05/2051

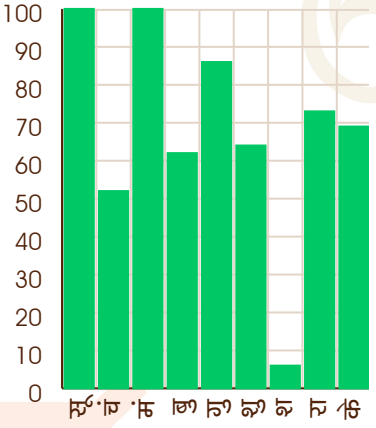

शनि - 06/05/2070

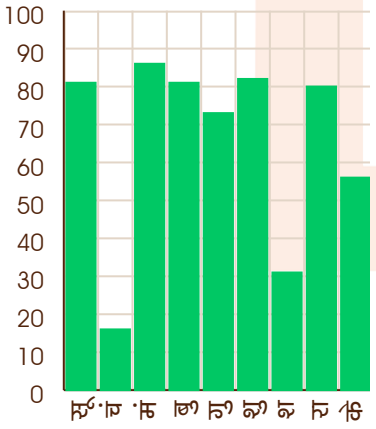

बुध - 06/05/2087

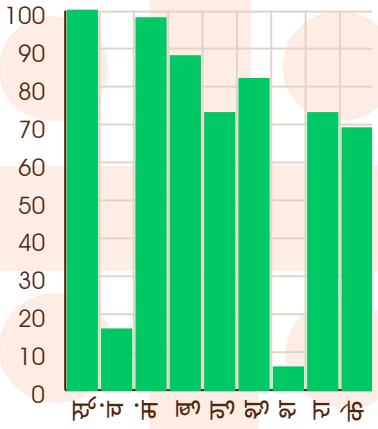

केतु - 06/05/2094

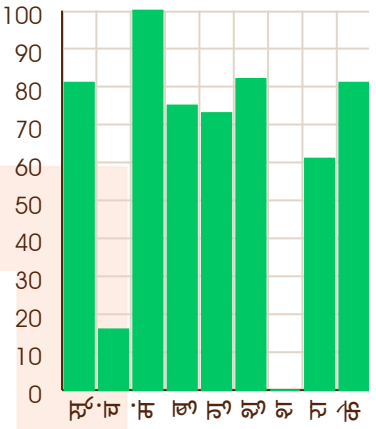

शुक्र - 07/05/2114

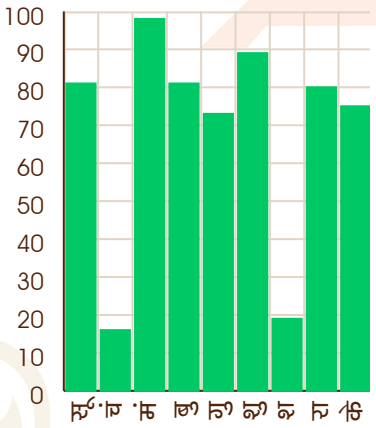

सूर्य - 06/05/2120

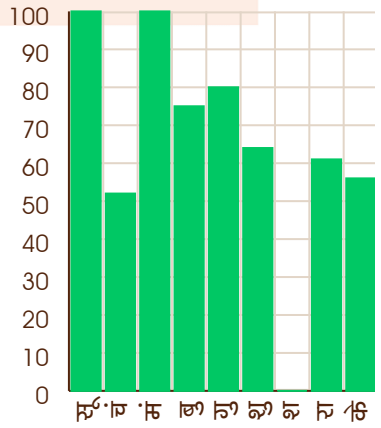

चन्द्र - 07/05/2130

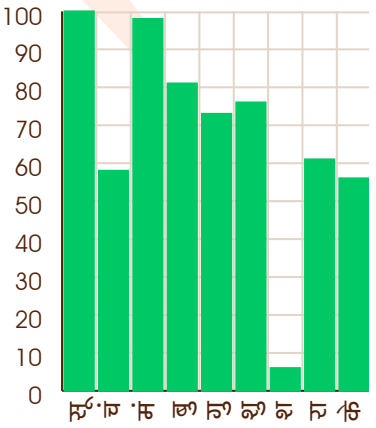

शुभ रत्न

ढठवसकझढथ्वदजझढस्मवच्सउभ्पदकप01झ010ध्झ आपका शुभ रत्न - माणिक्य ढध थ्वदजझढठवसकझ

आपका जन्म सिंह राशि के लग्न में हुआ है। इसका स्वामी सूर्य होता है। सूर्य सभी ग्रहों का राजा है, क्योंकि सभी ग्रह इसके चारों ओर अपनी अपनी कक्षा में चक्कर लगाते हैं। किसी भी जातक के लिये लग्न सबसे अधिक महत्वपूर्ण होता है, क्योंकि इससे जातक की आयुष्य, मान-सम्मान, प्रतिष्ठा, सुख, समृद्धि, स्वभाव, भौतिक संरचना तथा सुख का ज्ञान होता है। यदि किसी व्यक्ति का लग्न बलवान हो तो उस जातक को जीवन में सभी सुखों की प्राप्ति होते हुए अच्छी पद प्रतिष्ठा एवं मान सम्मान की प्राप्ति होती है।

अतः सिंह राशि के लग्न वाले जातकों को सिंह राशि के स्वामी ग्रह सूर्य को बलवान बनाना, पूजा, अनुष्ठान, मंत्र पूजा आदि करना श्रेष्ठ माना जाता है। सूर्य ग्रह के लिये माणिक्य रत्न धारण किया जाता है। इस रत्न को यदि अंगूठी में धारण किया जाये तो जातक उपर्युक्त सभी लाभ मिलेंगे अर्थात जातक सुखी, प्रसन्नचित, स्वस्थ जीवन व्यतीत करते हुए आनंदपूर्ण जीवन व्यतीत करता है। वैसे भी सूर्य राजा का प्रतिनिधि ग्रह है जिससे जातक को राजा से लाभ जैसे राजनीतिक क्षेत्र में सफलता, उच्च पदाधिकारी का सहयोग व उनसे सम्मान प्राप्त होता है।

इस रत्न को धारण करने से जातक को पिता का आशीर्वाद भी प्राप्त होता है। सूर्य ग्रह हृदय का प्रतिनिधि आत्मा आदि का प्रतिनिधि ग्रह है। जिसको हृदय से संबंधित रोग हों तो उनको भी इस रत्न को धारण करने से लाभ प्राप्त होता है।

माणिक्य रत्न को अंगूठी बनाकर सीधे हाथ की अनामिका अंगुली में धारण किया जाता है। क्योंकि अनामिका अंगुली हस्तरेखा शास्त्र में सूर्य की अंगुली मानी जाती है। माणिक्य रत्न सूर्य का रत्न है, अतः इसके वार स्वामी अर्थात रविवार को ही धारण किया जाता है। इसको धारण करने का उपयुक्त समय प्रातःकाल सूर्य की होरा में श्रेष्ठ होता है। रविवार के दिन सूर्योदय काल से एक घंटे तक का समय सूर्य की होरा का होता है। माणिक्य को यदि रविवार के साथ-साथ सूर्य के नक्षत्र अर्थात् कृत्तिका, उत्तराफाल्गुनी और उत्तराषाढ़ा में धारण किया जाये तो वह और भी उत्तम होता है।

माणिक्य को धारण करने से पूर्व इसको गंगाजल एवं पंचामृत से शुद्ध करके, लकड़ी के एक पटरे पर नारंगी रंग के कपड़े पर रखकर इसके सम्मुख, धूप, दीप, अगरबत्ती जलाकर, सूर्य के 108 मंत्रों का जाप करके इसे ऊर्जावान बनाकर माथे से लगाकर सीधे हाथ की अनामिका अंगुली में धारण करना चाहिए।

सूर्य का मंत्र - ऊँ घृणि सूर्याय नमः

इसको धारण करने के पश्चात यदि सूर्य से संबंधित पदार्थ जैसे सफेद चंदन, घी, लाल कपड़ा सवा मीटर का दान करें तो माणिक्य रत्न की अंगूठी धारण करना और भी अधिक

फलदायी होता है। इसके अतिरिक्त अंगूठी धारण करने के पश्चात भी प्रतिदिन सूर्य का 108 बार स्नानादि के पश्चात मंत्र पाठ करें या सूर्य को तांबे के पात्र से जल दें और सूर्य को नमस्कार करें तो यह माणिक्य रत्न की अंगूठी आपको लगातार शुभ फल देती रहेगी। प्रत्येक रविवार को आदित्य हृदय स्तोत्र का पाठ भी इसमें अधिक शुभकारी साबित होता है।

सिंह लग्न वाले जातक यदि माणिक्य रत्न की अंगूठी विधि विधान के साथ धारण करते हैं एवं मंत्र जाप द्वारा सिद्ध करते रहते हैं तो वे आजीवन स्वस्थ जीवन का आनंद उठाते हुए पूर्ण मान-सम्मान तथा प्रतिष्ठा युक्त जीवन प्राप्त करते हैं।

रुद्राक्ष

रुद्राक्ष को शिव का अश्रु कहा जाता है। रुद्राक्ष दो शब्दों के मेल से बना है पहला रुद्र का अर्थ होता है भगवान शिव और दूसरा अक्ष इसका अर्थ होता है आंसू। माना जाता है की रुद्राक्ष की उत्पत्ति भगवान शिव के आंसुओं से हुई है। रुद्राक्ष भगवान शिव के नेत्रों से प्रकट हुई वह मोती स्वरूप बूँदें हैं जिसे ग्रहण करके समस्त प्रकृति में आलौकिक शक्ति प्रवाहित हुई तथा मानव के ह्रदय में पहुँचकर उसे जागृत करने में सहायक हो सकी।

रुद्राक्ष की भारतीय ज्योतिष में भी काफी उपयोगिता है। ग्रहों के दुष्प्रभाव को नष्ट करने में रुद्राक्ष का विशेष रूप से प्रयोग किया जाता है, जो अपने आप में एक अचूक उपाय है। गम्भीर रोगों में यदि जन्मपत्री के अनुसार रुद्राक्ष का उपयोग किया जाये तो आश्चर्यचकित परिणाम देखने को मिलते है। रुद्राक्ष की शक्ति व सामर्थ्य उसके धारीदार मुखों पर निर्भर होती है। रुद्राक्ष सिद्धिदायक, पापनाशक, पुण्यवर्धक, रोगनाशक, तथा मोक्ष प्रदान करने वाला है।

एक मुखी से लेकर चौदह मुखी तक रुद्राक्ष विशेष रूप से पाए जाते है, उनकी अलौकिक शक्ति और क्षमता अलग-अलग मुख रूप में दर्शित होती है। रुद्राक्ष धारण करने से जहां आपको ग्रहों से लाभ प्राप्त होगा वहीं आप शारीरिक रूप से भी स्वस्थ रहेंगे। रुद्राक्ष का स्पर्श, दर्शन, उस पर जप करने से, उस की माला को धारण करने से समस्त पापो का और विघ्नों का नाश होता है ऐसा महादेव का वरदान है, परन्तु धारण की उचित विधि और भावना शुद्ध होनी चाहिए।

रुद्राक्ष दाने पर उभरी हुई धारियों के आधार पर रुद्राक्ष के मुख निर्धारित किये जाते हैं। रुद्राक्ष के बीचों-बीच एक सिरे से दूसरे सिरे तक एक रेखा होती है जिसे मुख कहा जाता है। रुद्राक्ष में यह रेखाएं या मुख एक से 14 मुखी तक होते हैं और कभी-कभी 15 से 21 मुखी तक के रुद्राक्ष भी देखे गए हैं। आधी या टूटी हुई लाईन को मुख नहीं माना जाता है। जितनी लाईनें पूरी तरह स्पष्ट हों उतने ही मुख माने जाते हैं।

पुराणों में प्रत्येक रुद्राक्ष का अलग-अलग महत्व और उपयोगिता का उल्लेख किया गया है -

एक मुखी - सूर्य ग्रह - स्वास्थ्य, सफलता, मान-सम्मान, आत्म - विश्वास, आध्यात्म, प्रसन्नता, अनायास धनप्राप्ति, रोगमुक्ति तथा व्यक्तित्व में निखार और शत्रुओं पर विजय प्राप्त कराता है।

दो मुखी - चंद्र ग्रह- वैवाहिक सुख, मानसिक शान्ति, सौभाग्य वृद्धि, एकाग्रता, आध्यात्मिक उन्नति, पारिवारिक सौहार्द, व्यापार में सफलता और स्त्रियों के लिए इसे सबसे उपयुक्त माना गया है।

तीन मुखी - मंगल ग्रह- शत्रु शमन और रक्त सम्बन्धी विकार को दूर करने में सहायक होता है ।

चार मुखी - बुध ग्रह- शिक्षा, ज्ञान, बुद्धि - विवेक, और कामशक्ति में वृद्धि प्राप्त कराता है।

पांच मुखी - गुरू ग्रह- शारीरिक आरोग्यता, अध्यात्म उन्नति, मानसिक शांति और प्रसन्नता के लिए भी इसका उपयोग किया होता है।

छः मुखी - शुक्र ग्रह - प्रेम सम्बन्ध, आकर्षण, स्मरण शक्ति में वृद्धि, तीव्र बुद्धि, कार्यो में पूर्णता और व्यापार में आश्चर्यजनक सफलता प्राप्त कराता है।

सात मुखी - शनि ग्रह- शनि दोष निवारण, धन-संपत्ति, कीर्ति, विजय प्राप्ति, और कार्य व्यापार आदि में बढ़ोतरी कराने वाला है।

आठ मुखी - राहू ग्रह- राहु ग्रह से सम्बंधित दोषों की शान्ति, ज्ञानप्राप्ति, चित्त में एकाग्रता, मुकदमे में विजय, दुर्घटनाओं तथा प्रबल शत्रुओं से रक्षा, व्यापार में सफलता और उन्नतिकारक है।

नौ मुखी - केतू ग्रह- केतु ग्रह से सम्बंधित दोषों की शान्ति, सुख-शांति, व्यापार वृद्धि, धारक की अकालमृत्यु नहीं होती तथा आकस्मिक दुर्घटना का भी भय नहीं रहता।

10 मुखी - भगवान महावीर- कार्य क्षेत्र में प्रगति, स्थिरता व वृद्धि, सम्मान, कीर्ति, विभूति, धन प्राप्ति, लौकिक-पारलौकिक कामनाएँ पूर्ण होती हैं।

11 मुखी - इंद्र ग्रह- आर्थिक लाभ व समृद्धिशाली जीवन, किसी विषय का अभाव नहीं रहता तथा सभी संकट और कष्ट दूर हो जाते हैं।

12 मुखी - भगवान विष्णु ग्रह- विदेश यात्रा, नेतृत्व शक्ति प्राप्ति, शक्तिशाली, तेजस्वी बनाता है। ब्रह्मचर्य रक्षा, चेहरे का तेज और ओज बना रहता है। शारीरिक एवं मानसिक पीड़ा मिट जाती है।

13 मुखी - इंद्र ग्रह- सर्वजन आकर्षण व मनोकामना प्राप्ति, यश-कीर्ति, मान-प्रतिष्ठा व कामदेव का प्रतीक है। उपरी बाधा और नजर दोष से बचाव के लिए विशेष उपयोगी है।

14 मुखी - शनि ग्रह- आध्यात्मिक उन्नति, शक्ति, धन प्राप्ति व कष्टनिवारक हैं। शनि की साढ़ेसाती या ढैया में विशेष कष्टनिवारक है।

आपकी कुडंली और रूद्राक्ष

आपकी कुंडली सिंह लग्न की है। आप अत्यंत तेजस्वी एवं आत्मविश्वासी हैं। अग्नि की ही भांति आप ऊर्जावान भी हैं किसी भी कार्य को करने से पीछे नहीं हटते हैं जो कार्य प्रारंभ करते हैं उसे पूरा करके ही बैठते हैं। नीतियाँ बनाना एवं उन पर कार्य करना आपको विशेष पसंद हो सकता है। अनुशासनहीनता आपको बर्दाश्त नहीं होती है। जो नियम आप बनाते हैं, उन पर स्वयं भी कार्य करते हैं और दूसरों से करवाते भी है। अपना मान सम्मान आपको बहुत प्रिय होता है। यदि किसी से कोई वादा करते हैं तो उसे निभाते हैं। स्थिर लग्न होने से आपके स्वभाव एवं व्यवहार में भी स्थिरता होती है। आप जो भी कहते हैं, उस पर अंत तक स्थिर रहते हैं। जिस भी कार्य को आप शुरू करते हैं उससे अंत तक जुडे रहते हैं। आप मानसिक और

प्रशासनिक कार्य अच्छे से करते हैं। इसके विपरीत हो सकता है की शारीरिक कार्य करना आपको अधिक पसंद न हो। आप जिनसे प्यार अथवा मित्रता करते हैं उस पर केवल अपना ही अधिकार समझते हैं और ये ईर्ष्या की हद तक होता है।

कुंडली के 6, 8 व 12 भाव त्रिक भाव कहलाते हैं। त्रिक भावों को शुभ भाव नहीं समझा जाता। इन भाव-भावेशों का सम्बन्ध जिन भी ग्रहों व भावेशों से बनता है उनकी शुभता में कमी आती हैं। त्रिक भावों को शुभ भाव नहीं समझा जाता। इन्हीं में से छठा भाव रोग, ऋण व सेवा भाव है। शत्रुओं का विचार करने के लिए भी इसी भाव का विश्लेषण किया जाता हैं। यह उपचय भाव भी है। इसके अलावा अर्थ भाव है। इस भाव के भावेश का अशुभ प्रभाव में होना, आपके स्वास्थ्य में कमी का कारण बन सकता हैं। दूसरा त्रिक भाव अष्टम भाव है। इस भाव से जिन विषयों का विचार किया जाता है, उन विषयों में आठंवा भाव आयु, दुर्घटना, आपरेशन, अपयश व नैतिक पतन हैं। इस भाव से व्यक्ति को मिलने वाला अपमान, पदच्युति, शोक, ऋण, मृत्यु तथा व्यक्ति के जीवन में आने वाली रुकावटें देखी जाती है। अंतिम त्रिक भाव द्वादश भाव है, द्वादश भाव से व्यय, हानियां, कारावास, बंधन, विदेश में जीवन आदि का विचार किया जाता हैं।

इन भावों के स्वामियों और इन भावों में स्थित ग्रहों में अशुभता का अंश पाया जाता हैं। जिसके फलस्वरूप ये आपके जीवन को समय समय पर बाधित करते रहते हैं।

आपके लग्न के लिए षष्ठ भाव व सप्तम भाव के स्वामी शनि है, शनि षष्ठेश है, इसलिए आपको वात-पित्त रोग हो सकते हैं। विवेक व बुद्धि से शत्रुओं पर विजय, विद्या व बुद्धि से अल्प लाभ, संतान से न्यून सुख, जीवन संकटमय, व्यय अधिक, पराक्रम वृद्धि, भाई बहनों से अल्प सुख का कारण बन सकता हैं।

अष्टम भाव व पंचम के गुरु आपको दीर्घायु, प्रभावशाली दिनचर्या, विद्या व बुद्धि का अल्प लाभ, संतान से कष्ट, विदेश स्थानों से लाभ, माता, भूमि व सम्पति से साधारण लाभ प्राप्ति के योग बना रहे हैं।

द्वादश के चन्द्र है। द्वादशेश चन्द्र मानसिक सुखों में कमी, माता सुख में कमी करता हैं, धन और प्रतिष्ठा की हानि होती हैं। इसके अतिरिक्त यह योग नजला-जुकाम और गुप्त शत्रुओं की वृद्धि करता हैं।

इन सभी के फलों में शुभता प्राप्त करने के लिए आपको 2, 5, 7 मुखी रुद्राक्षों का कवच धारण करना चाहिए। यह कवच सफेद धागे में डालकर सोमवार को गंगाजल से शुद्ध कर ॐ नम शिवाय मंत्र के 108 बार जप कर धारण करना चाहिए। तदुपरांत शिवजी को कच्चा दूध चढ़ाए। क्षमतानुसार दान करे। इस प्रकार आपके जीवन में आने वाले कष्टों से छुटकारा मिलेगा एवं विशेष कष्टों में न्यूनता आएगी। कुंडली के सभी ग्रहों को शुभता प्रदान करने के लिए आप शिव कृपा रुद्राक्ष माला जो एक से चौदह मुखी रुद्राक्ष से निर्मित होती है, भी धारण कर सकते हैं। एक से चौदह मुखी रुद्राक्ष माला अद्भुत व चमत्कारी फल प्रदान करती हैं।

उपरोक्त कवच बिना दशा, गोचर विचार के आपको जीवन भर धारण करना चाहिए।

क्योंकि यह कवच जन्म लग्न एवं उसमें स्थित ग्रहों के अवगुणों को नियंत्रित करने के लिए आवश्यक हैं।

साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है । लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है । साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है ।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है । प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है । प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पडता है । द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पडता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है ।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है ।

प्रथम चक्रः

साढेसाती द्वितीय ढैया	11/06/2011-15/11/2011	16/05/2012-04/08/2012	----------
साढेसाती तृतीय ढैया	15/11/2011-16/05/2012	04/08/2012-02/11/2014	----------
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	26/01/2017-21/06/2017	26/10/2017-24/01/2020	----------
अष्टम स्थानस्थ ढैया	03/06/2027-20/10/2027	23/02/2028-08/08/2029	05/10/2029-17/04/2030
साढेसाती प्रथम ढैया	27/08/2036-22/10/2038	05/04/2039-13/07/2039	----------

द्वितीय चक्रः

साढेसाती द्वितीय ढैया	22/10/2038-05/04/2039	13/07/2039-28/01/2041	06/02/2041-26/09/2041
साढेसाती तृतीय ढैया	28/01/2041-06/02/2041	26/09/2041-11/12/2043	23/06/2044-30/08/2044
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	08/12/2046-06/03/2049	10/07/2049-04/12/2049	----------
अष्टम स्थानस्थ ढैया	07/04/2057-27/05/2059	----------	----------
साढेसाती प्रथम ढैया	13/10/2065-03/02/2066	03/07/2066-30/08/2068	----------

तृतीय चक्रः

साढेसाती द्वितीय ढैया	30/08/2068-04/11/2070	----------	----------
साढेसाती तृतीय ढैया	04/11/2070-05/02/2073	31/03/2073-23/10/2073	----------
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	16/01/2076-11/07/2076	11/10/2076-15/01/2079	----------
अष्टम स्थानस्थ ढैया	21/05/2086-21/05/2086	08/02/2087-18/07/2088	31/10/2088-05/04/2089
साढेसाती प्रथम ढैया	18/08/2095-11/10/2097	02/05/2098-20/06/2098	----------

शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार	फल	क्षेत्र
साढेसाती द्वितीय ढैया	सम	धन
साढेसाती तृतीय ढैया	शुभ	पराक्रम
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	शुभ	सन्तति
अष्टम स्थानस्थ ढैया	सम	बदनामी
साढेसाती प्रथम ढैया	अशुभ	बुरा स्वास्थ्य

साढ़ेसाती के उपाय

शनि की साढ़ेसाती के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिये दान, पूजन, व्रत, मंत्र आदि उपाय किये जा सकते हैं। इसके लिये शनिवार को काला कंबल, उड़द की दाल, काले तिल, चर्म-पादुका, काला कपड़ा, मोटा अनाज, तिल तथा लोहे का दान करना चाहिये। शनिदेव की पूजा एवं शनिवार का व्रत रखना चाहिये। उपवास के दिन उड़द की दाल से बनी वस्तु, चने, बेसन, काले तिल, काला नमक तथा फलों का ही सेवन करना चाहिये। साथ ही स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा शनि के निम्न मंत्र के 19000 जप संपन्न करवाने चाहिये।

ऊँ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः।।

शनि की साढ़ेसाती में शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक शांति एवं समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिये निम्नलिखित महामृत्युंजय मंत्र के 125000 जप स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा करवाने चाहिये।

ऊँ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात।।

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित मंत्र के प्रतिदिन 108 जप किये जा सकते हैं।

ऊँ हों जूं सः ऊँ भूर्भुव स्वः ऊँ।।

शनि की साढ़ेसाती के शुभत्व को बढ़ाने के लिये शनिवार के दिन आप 5 1/4 रत्ती का नीलम रत्न पंचधातु में (सोना, चांदी, तांबा, लोखंड, जस्ता) या घोड़े की नाल या नाव की कील से निर्मित लोहे की अंगूठी धारण करें । लोहे की अंगूठी आप दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

अंगूठी शुक्ल पक्ष की शनिवार की सायं सूर्यास्त के समय धारण करें। पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र अति शुभ हैं। उस दिन शनिवार का उपवास भी करना चाहिए। अंगूठी धारण करने से पूर्व इसे शुद्ध दूध एवं गंगाजल में स्नान कराना चाहिए तथा धूप आदि जलाकर शनि का पूजन करना चाहिए एवं निम्न मंत्र की एक माला या 108 बार जप करना चाहिए। नीलम मध्यमा उंगली में या गले में पेन्डन्ट बनाकर धारण करें ।

ऊँ शं शनैश्चराय नमः।

अंगूठी धारण करने के पश्चात शनि की वस्तुओं का दान देना चाहिए। इससे शनि के अशुभ प्रभाव में कमी आयेगी तथा आपकी सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होगी।

श्री हनुमान चालीसा एवं श्री हनुमान अष्टक का पाठ करना श्रेष्ठ है ।

मांगलिक विचार

जब वर या कन्या की कुंडली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो मांगलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्

लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे।
स्त्री भर्तुर्विनाशंच भर्ता च स्त्री विनाशनम्।।

मांगलिक दोष लग्न से अधिक प्रबल माना जाता है लेकिन चन्द्रमा से इसका दोष लग्न की अपेक्षा अल्प होता है। यदि शास्त्रानुसार वर एवं कन्या का मांगलिक दोष भंग हो जाता है तो उनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होता है। इसके विपरीत बिना दोष भंग हुए मांगलिक वर-कन्याओं को जीवन में कई प्रकार की अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ता है। अतः विवाह से पूर्व शुद्ध कुण्डली मिलान से इस दोष का उचित निवारण करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए। जिससे जीवन में शान्ति तथा सम्पन्नता बनी रहे।

****

आपकी जन्म कुंडली में मंगल की स्थिति चन्द्रमा से अष्टम भाव में है। अतः आप एक मांगलिक कन्या हैं। चूंकि आपकी कुंडली में यह दोष भंग नहीं हो रहा है अतः इसके प्रभाव से आपका शारीरिक स्वास्थ्य मध्यम रहेगा। यदा कदा आप पित या गर्मी के द्वारा शारीरिक परेशानी की अनुभूति करेंगी। पति का स्वास्थ्य भी मध्यम ही रहेगा तथा स्वभाव से यदा कदा वे उग्रता के भाव का भी प्रदर्शन कर सकते हैं। इससे परस्पर संबंधों में मतभेद उत्पन्न होंगे लेकिन इसका प्रभाव अल्पकालिक रहेगा तथा कोई विशेष दुष्प्रभाव नहीं होगा। आपको अपने सांसारिक महत्व के कार्यों को पूर्ण करने में अधिक परिश्रम करना पड़ेगा। साथ ही विवाह में भी किंचित मात्रा में विलम्ब हो सकता है लेकिन अन्त में आपको सफलता अवश्य प्राप्त होगी। आपका दाम्पत्य जीवन शान्ति पूर्वक व्यतीत होगा। इसके अतिरिक्त चन्द्रमा से मंगल का दोष अल्प माना जाता है। अतः सामान्यतया शुभ फल ही अधिक मात्रा में प्राप्त होंगे।

आपकी चन्द्रकुंडली में मंगल की स्थिति अष्टम भाव में है। अतः आपका शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य सामान्यतया मध्यम ही रहेगा तथा शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में परिश्रम तथा पराक्रम से ही सफलता होगी। एकादश भाव पर मंगल की दृष्टि के प्रभाव से आपके आय स्रोतों में उन्नति होगी तथा प्रचुर मात्रा में धनार्जन करने में आप समर्थ रहेंगी। द्वितीय भाव पर मंगल की दृष्टि से पारिवारिक शान्ति मध्यम रहेगी। यदा कदा पारिवारिक जनों के मध्य मतभेद भी उत्पन्न होंगे साथ ही वाणी में भी ओजस्विता का भाव विद्यमान रहेगा। धनऐश्वर्य की स्थिति उत्तम रहेगी। तृतीय भाव पर मंगल की स्थिति के प्रभाव से भाई बहनों का सुख एवं सहयोग सामान्य रहेगा परन्तु पराक्रम में वृद्धि होगी। मन में आत्मविश्वास का भाव बना रहेगा। अतः आप अपने कार्य क्षेत्र में उन्नतिशील रहेंगे एवं मानसिक सन्तुष्टि भी बनी रहेगी।

अपने दाम्पत्य जीवन को सुखी एवं आनन्दमय बनाने के लिए आपको किसी ऐसे मांगलिक पुरुष से विवाह करना चाहिए जिसकी कुंडली से आपका परस्पर मांगलिक दोष भंग हो सके। इसके लिए पुरुष की कुंडली में मांगलिक स्थानों अर्थात प्रथम, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में शनि राहु जैसे पापग्रहों की स्थिति होनी चाहिए इस प्रकार मांगलिक दोष भंग हो जाने पर आपके सुख एवं सौभाग्य में वृद्धि होगी। प्रचुर मात्रा में सांसारिक सुखों का उपभोग करते हुए आपका दाम्पत्य जीवन व्यतीत होगा तथा परस्पर संबंधों में भी मधुरता बनी रहेगी एवं एक दूसरे को अपना सहयोग प्रदान करने में आप तत्पर रहेंगे।

कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः।
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय।।

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। द्वादाश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलार्द्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलार्द्ध नामक योग बनता है।

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं । कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते है। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं। काल सर्प योग के उपाय इन कष्टों से राहत के लिये आवश्यक हो जाते हैं।

जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मपत्रिका में काल सर्प योग विद्यमान नहीं है। अतः आपको इस योग के लिए शांति आदि की आवश्यकता नहीं है एवं आप पूर्ण रूप से सुखी जीवन व्यतीत कर सकेंगे।

पितृदोष विचार

पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरांत पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियां अनुकूल न हो जाएं।

पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।

7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।
8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराउंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।

11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं –

ऊँ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च।
नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः।।

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए।
13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें।

पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें। मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें। यह स्थान पितृों का स्थान माना जाता है।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं।

आपकी कुण्डली में पितृदोष

आपकी कुडली में किसी भी प्रकार का पितृदोष विद्यमान नहीं है, अतः आपको जीवन में पितृदोष के कारण कष्ट या परेशानी नहीं होगी।

नोट :

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं। यह त्र्यंबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं। त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांढ़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है। अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है। इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है। यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं।

अंक ज्योतिष फल

आपका जन्म दिनांक 11 है। एक एवं एक का जोड़ दो आपका मूलांक है। एक का स्वामी सूर्य एवं दो स्वामी चन्द्र है। इन दोंनो ग्रहों के गुण-अवगुण आपके व्यक्तित्व में रहेंगे। आप अनुशासन पसन्द महिला होंगी एवं अपने नाम पर धब्बा नहीं लगायेंगी। समाज में आपकी इज्जत होगी। नाम एवं यश प्राप्त करेंगी। सूर्य प्रभाव से नियमितता रहेगी। चन्द्र प्रभाव कभी-कभी मनको चंचल भी करेगा उससे बचना हितकर रहेगा अन्यथा सफलता के स्थान पर कई बार चन्द्र प्रभाव असफलता भी दे देगा। संघर्ष करना आपकी आदत बन जायेगी। अतः कभी आप एकदम उच्चता प्राप्त करेंगी तो कभी आपको थोड़ा झुकना भी पड़ेगा।

बौद्धिक स्तर आपका अच्छा रहेगा एवं ऐसे कार्य जिनमें बुद्धि का प्रयोग अधिक होता हो आपके लिये शुभ रहेगा। असफलताओं से आप निराश नहीं होंगी, क्षीण तो होंगी फिर भी हिम्मत नहीं हारेंगी और एक दिन फिर सूर्य की तरह प्रकाशित होंगी।

स्वभाव में आपके थोड़ा हठीपन रहेगा एवं क्रोध भी शीघ्र आ जाया करेगा। इन अवगुणों से बचना आपके लिये हितकर रहेगा। आपको ऐसे क्षेत्रों का चुनाव करना हितकर रहेगा, जहाँ अत्यधिक परिवर्तनशीलता न हो। सामान्य कामकाज जिन क्षेत्रों में रहे, वह आपके लिये शुभ रहेंगे। विशेष कर बुद्धि विवेक के कार्य अधिक योगप्रद रहेंगे।

भाग्यांक तीन का अधिष्ठाता बृहस्पति ग्रह को माना गया है। इसको गुरु भी कहते हैं। गुरु ग्रह के प्रभाववश आप धार्मिक, दानी, उदार, सच्चरित्र, ज्ञानी, विद्वान, परोपकारी, शान्त स्वभाव, सत्य पर आचरण करने वाली महिला के रूप में ख्याति प्राप्त करेंगी। अनुशासन में रहना एवं दूसरों से अनुशासन की अपेक्षा करना आपका प्रमुख गुण रहेगा। आप अपने अधिनस्थों से अधिकांश कार्य अपने बुद्धि कौशल से निकलवाने में सिद्धहस्त होंगी।

सामाजिक, राजनैतिक क्षेत्रों में आपकी रुचि रहेगी एवं आवश्यकता के समय समाज सेवा के कार्य से पीछे नहीं हटेंगी। धर्म-कर्म के कार्यों में आपकी रुचि रहेगी। गुरु धन-सम्पदा का दाता ग्रह है। अतः गुरु के प्रभाव से अपने कर्मक्षेत्र, रोजगार के क्षेत्र में अच्छी सम्पदा एकत्रित करेंगी। भूमि, वाहन, सम्पत्ति का अच्छा सुख प्राप्त करेंगी। ज्ञान-विज्ञान के क्षेत्र में रुचि लेंगी और ऐसा कार्य करना पसन्द करेंगी जिनमें आपके अनुभव, ज्ञान का भरपूर उपयोग होता रहे और आपको पूर्ण सम्मान, यश धन इत्यादि मिले।

आपका मूलांक 2 है तथा आपका भाग्यांक 3 है। मूलांक स्वामी चंद्र एवं भाग्यांक स्वामी गुरु का आपस में सम संबंध है। इसके प्रभाववश आपके अंदर चंद्र एवं गुरु दोनों ग्रहों के प्रभाव आएंगे। चंद्र-गुरु के योग से आप महत्वपूर्ण पद को प्राप्त करेंगी एवं उच्च अधिकार संपन्न रहेंगी। आप अपने जीवन में किसी संस्था की स्थापना कर के उसके स्वामी या संरक्षक बन सकती हैं अथवा आप विभिन्न संस्थाओं, सामाजिक संगठनों में पद प्राप्त करेंगी। आपका भाग्योदय शिक्षा एवं अध्यात्म के क्षेत्र में हो सकता है अथवा इन क्षेत्रों में आपकी रुचि बनी रहेगी। मूलांक-भाग्यांक के प्रभाववश आपको धन एवं संपत्ति प्राप्त होगी। आप एक धार्मिक,

ज्ञानवान महिला के रूप में अपना नाम रोशन करेंगी। धन-संपत्ति एवं वैभव आपको अपने बुद्धि-चातुर्य तथा श्रम से प्राप्त होंगे। आपके भाग्योदय में कभी-कभी तर्क शक्ति द्वारा रुकावटें भी उत्पन्न होंगी। आप सत्य वक्ता रहेंगी, जो कभी-कभी सामने वाले को अच्छा नहीं लगेगा।

आपका भाग्योदय 21 वर्ष की अवस्था से प्रारंभ होगा। 29 वर्ष की अवस्था पर उन्नति प्राप्त होगी तथा 39 वर्ष की अवस्था से विशेष भाग्योदय होगा।

आपके मूलांक 2 की मित्रता 7 एवं 9 से है तथा भाग्यांक 3 की मित्रता 6 एवं 9 से है। अतः आपके जीवन में 2, 3, 6, 7, 9 के अंक विशेष महत्वपूर्ण रहेंगे। इससे आपके जीवन में कुछ विशेष घटनाएं घटित होंगी।

आपके मूलांक का आपके भाग्यांक से सम संबंध होने से मूलांक-भाग्यांक के प्रभाव न्यूनाधिक मात्रा में आपके अनुरूप जाएंगे। आपके जीवन की प्रमुख घटनाएं इन्हीं अंकों की तारीखों मास, ईस्वी सन् या आयु के वर्षों में घटित होंगी। जब कभी इन्हीं अंकों की तारीख, मास वर्ष के साथ आपके लिए निर्धारित शुभ वार का भी मेल होता हो, तो ऐसा दिन आपके लिए विशेष फलदायी तथा किसी भी कार्य को प्रारंभ करने, पत्र लेखन या उच्च अधिकारी/व्यक्ति से मिलने हेतु अधिक उपयुक्त रहेगा। आप अपने विगत जीवन में घटित घटनाओं का अवलोकन करेंगी, तो पाएंगी कि काफी घटनाएं इन्ही अंकों के मास, वर्ष या दिन को घटित हुई होंगी।

अपने विगत जीवन में उपर्युक्त सभी अंकों का विश्लेषण करने के बाद जो अंक आपके अधिक अनुकूल जा रहे हों, उन्ही अंकों के आधार पर भावी योजनाएं बनाना आपके लिए अधिक लाभप्रद रहेगा।

आपके लिए फरवरी, मार्च, जून, जुलाई, सितंबर के माह विशेष घटनाक्रम वाले होंगे तथा आप कोई भी नया कार्य ऐसे ही दिन प्रारंभ करें जब दिन, तारीख, मास तथा वर्ष आपके मूलांक तथा भाग्यांक से भी मेल स्थापित करें तथा एक ही समय पर सभी शुभ रहें।

इसी प्रकार आपकी अवस्था के ऐसे वर्ष, जिनका योग 2, 3, 6, 7, 9 होता है, आपके लिए शुभ फलदायक रहेंगे।

2 . 11, 20, 29, 38, 47, 56, 65, 74
3 . 12, 21, 30, 39, 48, 57, 66, 75
6 . 15, 24, 33, 42, 51, 60, 69
7 . 16, 25, 34, 43, 52, 61, 70
9 . 18, 27, 36, 45, 54, 63, 72

उपर्युक्त वर्ष आपके जीवन में परिवर्तनकारी रहेंगे। इन वर्षों में कुछ प्रमुख घटनाएं घटित होंगी, जो आपके जीवन की दशा बदलेंगी तथा कुछ घटनाएं यादगार साबित होंगी।

अंक ज्योतिष उपाय विचार

अनुकूल समय

सूर्य 16 जुलाई से 16 अगस्त तक कर्क राशि में रहता है। कर्क राशि चंद्रमा की स्वयं की राशि है। 13 मई से 14 जून तक सूर्य वृष राशि में होता है, जो कि चंद्रमा की उच्च राशि है। अतः यह समय मूलांक दो के लिए कोई भी नया कार्य या महत्वपूर्ण कार्य करने के लिए अधिक उपयुक्त रहता है।

अनुकूल दिवस

आपके लिए कोई भी नया या शुभ कार्य करने हेतु सोमवार, शुक्रवार तथा रविवार के दिन अच्छे सिद्ध हो सकते हैं। यदि इन्ही वारों में आपके मूलांक की तारीख भी हो तो ऐसा दिन सभी कार्यों के लिये अच्छा रहेगा।

शुभ तारीखें

जब कभी आपको कोई महत्वपूर्ण कार्य करना हो, नया कार्य या व्यापार प्रारंभ करना हो, अथवा किसी को विशेष पत्र लिखना हो या किसी से विशेष कार्यवश मिलने जाना हो तो आप किसी भी माह की 2, 7, 9, 11, 16, 18, 20, 25, 27, एवं 29 तारीख को ये सारे कार्य करें। यदि इन तारीखों में आपका अनुकूल वार भी रहता है तो ऐसा दिन आपके कार्यों में प्रगति देने वाला रहेगा।

अशुभ तारीखें

आपके लिए अंग्रेजी मास की 5, 8, 14, 17, 23 एवं 26 तारीखें कोई भी नया या महत्वपूर्ण कार्य करने के लिए ठीक नहीं रहेंगी। अतः इन तारीखों में सोच-समझ कर ही कोई शुभ कार्य करें।

मित्रता या साझेदारी

किसी से भी मित्रता करते समय यह देखना आपके हित में रहेगा कि यदि उसका जन्म अंग्रेजी माह की 2, 7, 9, 11, 16, 18, 20, 25, 27, एवं 29 तारीख को हुआ हो अथवा 13 मई से 14 जून एवं 16 जुलाई से 16 अगस्त के मध्य हुआ हो तो ऐसे व्यक्ति आपके लिऐ हितकारी सिद्ध हो सकते हैं।

प्रेम संबंध एवं विवाह

आपके लिऐ मूलांक 2, 7 एवं 9 प्रभावित महिलाएं अच्छी साथी सिद्ध हो सकती हैं। आपको चाहिए कि आप इन्हीं मूलांक वाली महिलाओं से मित्रता इत्यादि रखें, या ऐसी महिलाएं जिनका जन्म किसी भी मास की 2, 7, 9, 11, 16, 18, 20, 25, 27, एवं 29 तारीख को हुआ हो अथवा 13 मई से 14 जून एवं 16 जुलाई से 16 अगस्त के मध्य हुआ हो तो ऐसी महिलाएं हमेशा आपके अनुकूल रहेंगी।

अनुकूल रंग

आपको अपने वस्त्रों का चुनाव करते समय सफेद, काफूरी, हरा एवं अंगूरी रंगों का उपयोग अधिक मात्रा में करने पर वांछित लाभ प्राप्त होंगे। हो सके तो आप अपने कमरे के पर्दे, चादर, तकिया इत्यादि में इन रंगो का इस्तेमाल कर सकते हैं। इन रंगों का रुमाल तो हमेशा अपने पास रखना आपके लिए विशेष लाभप्रद रहेगा।

वास्तु एवं निवास

आपके लिए उत्तर-पश्चिम में वायव्य कोण स्थान में रहना शुभ रहेगा। जिस क्षेत्र में आप रहते हों, यदि वह वायव्य कोण में स्थित होगा तो अधिक अनुकूल रहेगा। मकान के नंबर का योग यदि 2, 7, या 9 आता हो तो ऐसा भवन आपके लिए अधिक सुविधाजनक रहेगा।

शुभ वाहन नं

आपके वाहन के पंजीकरण हेतु अपने मूलांक तथा मूलांक के मित्र अंक से मेल रखने वाले अंकों को लेना अच्छा रहेगा। आपका मूलांक 2 होने से आपके शुभ अंक 2,7,9 रहेंगे। यहां आपके वाहन इत्यादि के पंजीकरण क्रमांक के शुभ अंक भी रहेंगे, जैसे पंजीकरण क्रमांक 5231=2 इत्यादि। यात्रा के वाहनों में भी इन अंकों का उपयोग करें, जिसके फलस्वरूप आपकी यात्रा सुखमय रहेगी। अगर आप होटल आदि में कमरा इत्यादि लेते हैं तो उसके लिए भी यही नंबर 2,7,9 इत्यादि लें, जैसे कमरा 101 = 2। तभी आपके लिए वह कमरा अच्छा साबित होगा।

स्वास्थ्य तथा रोग

जब भी आपके जीवन में रोग की स्थिति आएगी तब आपको कमजोरी, क्षीणता, उद्वेग, मस्तक पीड़ा, छोटी-छोटी दुर्घटना, हृदय रोग, संवेदनशीलता, भावुकता, स्नायु दुर्बलता, कब्ज, आंत रोग, मूत्र रोग, गैस रोग इत्यादि होंगे। रोग होने, अशुभ समय आने, कष्ट तथा विपत्ति के समय आपको शिव उपासना पर बल देना चाहिए।

व्यवसाय

आपके लिए रोजगार-व्यापार हेतु ये क्षेत्र अनुकूल रहेंगे, जैसे द्रव्य पदार्थ, तैलीय कार्य, समुद्र यात्रा, मुख्यावास या उच्च स्थान प्राप्ति, पशु व्यवसाय, चीनी मिल, अन्न का व्यवसाय, तैराकी, रसपूर्ण पदार्थ, दूध, दही, घृत, कागज, जल, कृषि एवं चीनी के व्यवसाय एवं औषधि विक्रेता, भ्रमण कार्य, एजेंन्ट, प्रतिनिधित्व, संपादन, लेखन, संगीत, अभिनय, नृत्य, भूप्रबंध, मकानों की ठेकेदारी, चिकित्सा, मोती, हार, मणि, माणिक्य, रत्न इत्यादि का क्रय विक्रय, पत्थर व भूगर्भ इत्यादि के कार्य।

व्रतोपवास

जिस दिन सोमवार को चित्रा नक्षत्र हो उस दिन से चंद्रमा का व्रत प्रारम्भ करें। विधान के अनुसार 54 सोमवार तक अथवा न्यूनतम सात सोमवार व्रत आवश्यक है। व्रत के

दिन श्वेत वस्त्र धारण करें एवं श्वेत वस्तुओं का दान करें तथा चंद्रमा के मंत्र का यथा शक्ति, मोती की माला पर जप करें।

अनुकूल रत्न या उपरत्न

पांच रत्ती मोती आपके लिए प्रमुख रत्न है। यदि आप मोती धारण ना कर सकें तो मूनस्टोन, चंद्रमणि, दूधिया हकीक, सोमवार की सुबह दायें हाथ की कनिष्ठा अंगुलि में, चांदी की अंगूठी में जड़वा कर लाभ के चौघड़िया मुहूर्त्त में धारण करें।

अनुकूल देवता

आप चंद्रोपासना करें अथवा भगवान शिव की आराधना करें। भगवान शिव के पंचाक्षरी मंत्र ओम् नमः शिवाय का नित्य जप करें। प्रति सोमवार को कम से कम इक्कीस या एक सौ आठ बेल पत्र भगवान शिव को अर्पित करेंगे तो इस क्रिया को करने पर आप विभिन्न रोगों से समस्याओं से मुक्त होंगे। यदि यह संभव न हो सके तो भगवान शिव के चित्र का ही नित्य प्रातः दर्शन कर लिया करें।

ग्रह गायत्री मंत्र

आपको चंद्र के शुभ प्रभावों की वृद्धि हेतु चंद्र के गायत्री मंत्र का प्रातः स्नान के बाद ग्यारह, इक्कीस या एक सौ आठ बार जप करना लाभप्रद रहेगा।

चंद्र गायत्री मंत्र - अमृतांगाय विद्महे कलारूपाय धीमहि तन्नः सोमः प्रचोदयात्।।

ग्रह ध्यान मंत्र

प्रातःकाल उठ कर आप चंद्र का ध्यान करें, मन में चंद्र की मूर्ति प्रतिष्ठित करें और तत्पश्चात् निम्न मंत्र का पाठ करें।

दधि शंख तुषाराभं क्षीरोदार्णव संभवम्।
नमामि शशिनं भक्त्या शम्भोमुकुटभूषणम्।।

ग्रह जप मंत्र

अशुभ चंद्र को अनुकूल बनाने हेतु चंद्र के मंत्र का जप करना चाहिए। नित्य कम से कम एक माला एक सौ आठ जप करने से वांछित लाभ मिल जाते हैं। पूरा अनुष्ठान एक सो तीस माला का है। मंत्र जप का प्रत्यक्ष फल स्वयं देख सकेंगे।

ऊँ श्राँ श्रीं श्रौं सः चंद्रमसे नमः।। जप संख्या 13000।।

वनस्पति धारण

आप सोमवार के दिन एक इंच लंबी खिरनी की जड़ ला कर, सफेद ऊन के धागे में लपेट कर, गले या दाहिने हाथ में बांधे, स्वर्ण या तांबे ताबीज में भर कर गले में धारण करें। इससे चंद्र ग्रह के अशुभ प्रभाव कम होंगे तथा शुभ प्रभावों में वृद्धि होगी।

वनस्पति स्नान

आपके प्रत्येक सोमवार को एक बाल्टी या बर्तन में पंच गव्य-चांदी, मोती, शंख, सीप और कुमुद आदि औषधियों का चूर्ण कर, पानी में डाल कर स्नान करना सभी प्रकार के रोगों से मुक्तिदायक रहेगा। हर्बल स्नान से आपकी त्वचा की कांति में वृद्धि होगी। अशुभ चंद्र का प्रभाव क्षीण हो कर आपके तेज एवं प्रभाव में वांछित लाभ प्राप्त होगा। सभी ग्रहों की शांति के लिए आपको कूठ, खिल्ला, कांगनी, सरसों, देवदारू, हल्दी, सर्वौषधि तथा लोध, इन सबको मिला कर चूर्ण कर, किसी तीर्थ के पानी में मिला कर, भगवान का स्मरण करते हुए स्नान करें तो ग्रहों की शांति और सुख-समृद्धि प्राप्त होगी।

दान पदार्थ

चंद्र की शांति हेतु योग्य व्यक्ति के लिए चंद्र के पदार्थ, चावल, कपूर, सफेद वस्त्र, चांदी, शंख, वंशपात्र, सफेद चंदन, श्वेत पुष्प, चीनी, वृषभ, दधि, मोती आदि का दान करना लाभप्रद रहेगा।

यंत्र

चंद्र को अनुकूल बनाए रखने हेतु चंद्र यंत्र को भोजपत्र पर अष्टगंध (केशर, कपूर, अगर, तगर, कस्तूरी, अंबर, गोरोचन एवं रक्त चंदन या श्वेत चंदन) स्याही से लिख कर, सोने या तांबे के ताबीज में, धूप-दीप से पूजन कर, चांदी की जंजीर या लाल धागे में, सोमवार को शुक्ल पक्ष में प्रातःकाल धारण करें।

लग्न फल

आपका जन्म पूर्वा फाल्गुनी नक्षत्र के चतुर्थ चरण में हुआ था। आपके जन्म काल सिंह लग्न के साथ-साथ वृश्चिक नवमांश तथा मेष राशीय द्रेष्काण भी उदित था। सिंह लग्न के उपयुक्त संयोजन से यह स्पष्ट दृश्य हो रहा है कि यदि आप सतर्कता पूर्वक समुचित योजनानुसार कार्यारम्भ करे तो आप अपने जीवन में निश्चित रूप से सफल होंगी। लेकिन आपके लिए धन-उपार्जन के स्रोत अनिवार्य हैं। यदि आय के स्रोत में कोई व्यवधान उपस्थित हुआ तो यह संभव है कि आप की समस्याएं संघर्षपूर्ण होकर आपके जीवन पथ को समृद्धिशाली बनाने में समस्याओं के साथ मुठभेड़ करना पड़े।

वर्त्तमान काल वास्तविक संयोजन का स्वरूप ऐसा चित्रित हो रहा है कि आपके जीवन का स्वरूप उत्तम, अधम एवं अप्रिय प्रतीत होगा। वर्त्तमान काल जो ग्रह आपके धनोपार्जन हेतु प्रतिकूल है उनका उच्च प्रभावी होना आवश्यक है अन्यथा आपकी उच्च स्थिति एवं आनन्द प्राप्ति के मार्ग अवरूद्ध हो जाएंगे तथा आपको आवश्यकता की पूर्ति हेतु महत्वपूर्ण धनोपार्जन के लिए कोई समझौता करना पड़ेगा। आप किसी प्रशासनिक पद पर कार्यरत होने के लिए सक्षम है। किसी निगम एवं बड़ी कम्पनी की निदेशक पद पर कार्य हेतु योग्य है। समाज में आपका प्रभाव रहेगा आपको धन, प्रतिष्ठा एवं सभी प्रकार की सुविधाएं उपलब्ध होंगी।

सिंह लग्न सदैव ही उचित दिशा निर्देश करता है। सिंह लग्न प्रभावी स्त्री का जीवन छलकपट से युक्त, आडम्बर एवं असन्तोषयुक्त तथा आशा प्रत्याशा दिलानेवाला होता है। यह धन उपार्जन करने वाला उत्तम पारिवारिक जीवन से युक्त होता है। आप सदैव दो गुणों से पूर्ण अर्थात् उत्तम स्वास्थ्य से युक्त एवं आनन्दित रहेंगी। परन्तु अप्रत्यक्ष रूप से वृद्धावस्था में ऐसा अवसर आ सकता है कि आप आंशिक रूप से हृदय रोग अथवा मेरू दण्डीय समस्याओं से ग्रसित हों जाएं। क्योंकि आपके व्यस्ततम कार्यक्रम एवं उत्तेजनापूर्ण मनोदशा ही आपको रोगग्रस्त कर सकते है।

परन्तु वृश्चिक नवमांश बिन्दु भिन्न प्रकार से आपके जीवन की छवि को प्रस्तुत करता है कि आपके अंग में आंशिक दोष जन्मकाल से ही रोग के रूप में प्रभावी हैं।

अस्तु! आपको समुचित रूप से क्रमबद्धतापूर्वक अपना स्वास्थ्य परीक्षण कराते रहना चाहिए ताकि रोग के प्रभाव से मुक्त रह सकें। आपकी कुण्डली का नवमांश फल यह प्रदर्शित करता है कि आप अच्छा जीवन व्यतीत करेंगे। आपके लिए विशेष विचारणीय तथ्य यह है कि आपको स्वास्थ्य के प्रति सतर्क रह कर समुचित रूप से ध्यान देना चाहिए। जितनी भी संभावना हो सतर्कतापूर्वक मन में शांति एवं निर्विध्न रूप से विश्राम ग्रहण कर भोजनादि पर नियंत्रण रक्खें तथा हानिकारण वस्तुओं का परित्याग करें। अन्य वांछनीय तथ्य यह है कि आपको सावधानी पूर्वक अपना जीवन संचालन करना चाहिए। अस्तु आप स्वास्थ्य संबंधी किसी भी प्रकार की समस्याओं के प्रति उचित आहार विहार का सेवन करे।

आपको अनावश्यक रूप से किसी भी प्रकार की परेशानियों के प्रति सजग रहना

चाहिए। आपमें विभिन्न प्रकार के प्रभावशाली गुण विद्यमान है। यदि आप सुव्यवस्थित रूप में इन गुणों को व्यवहृत करें तो आप धनी हो सकती हैं। आपको राय दी जाती है कि आप अपने धन कोष का परीक्षण करें क्योंकि आप जनताओं के मध्य उपस्थित होकर बहुतायत में धन का व्यय करेंगी। यदि आप संप्रति इस प्रकार मुक्त हस्त से व्यय करती रहीं तो बाद में पश्चाताप करना पड़ सकता हैं क्योंकि आपका धन बर्बाद हो चुका होगा।

आपके पास सुन्दर पति, श्रद्धाप्रदायक पुत्र से युक्त पारिवारिक भवन होगा। आप पर्याप्त आर्थिक धनोपार्जित स्रोतों से युक्त अधिकारपूर्ण शान-शौकत से युक्त आरामदायक जीवन बिताने के साधन से सफल होंगी।

आपके लिए साप्ताहिक दिनों में भाग्यशाली दिन रविवार, मंगलवार, और गुरुवार का दिन किसी भी बड़े कार्यों को प्रारंभ करने के लिए उपयुक्त एवं ठीक है। परंतु बुधवार, शुक्रवार एवं शनिवार का दिन आपके नये कार्य-कलाप के प्रारंभ करने हेतु अनुपयुक्त हैं। कृपया इन तीन दिनों को अव्यवहारणीय समझे। सोमवार आप के लिए मध्य फलदायक है।

आपके लिए अंक 1, 4, 5, 6 एवं 9 अंक लाभदायक प्रमाणित होगा। परन्तु अंक 2, 7 और 8 अंक किसी भी परिस्थिति में आपके लिए अनुपयुक्त है।

आपकों नीला, काला एवं सफेद रंग का परित्याग कर, रंग, नारंगी, लाल और हरे रंग का वस्त्रादि धारण करना चाहिए। ये रंग आपके लिए लाभदायक है।

ग्रह फल

सूर्य

दशमभाव में सूर्य हो तो जातक-प्रतापी, व्यवसाय कुशल, राजमान्य लब्ध-प्रतिष्ठ, राजमन्त्री, उदार, ऐश्वर्य सम्पन्न एवं लोकमान्य होता है।

वृष राशि में रवि हो तो जातक शान्त, व्यवहार कुशल, पाप भीरु, स्वाभिमानी मुखरोगी एवं स्त्रीद्वेषी होता है।

आपके जन्म समय में सूर्य दशम भाव में स्थित है अतः पिता की आप प्रिय रहेंगी। उनका शारीरिक स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा एवं आयु भी पूर्ण रहेगी। धनैश्वर्य से वे सुसम्पन्न रहेंगे एवं जीवन में आपको पूर्ण रूप से आर्थिक तथा अन्य प्रकार से सहयोग प्रदान करते रहेंगे। इसके साथ ही आपके आजीविका या व्यापार संबंधी कार्य भी उन्हीं की प्रेरणा एवं सहायता से सम्पन्न होंगे एवं आप इन कार्यों में वांछित सफलता अर्जित कर सकेंगी।

आप भी उनका पूर्ण हार्दिक सम्मान करेंगी एवं उनकी आज्ञा का अनुपालन करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगी। आपके परस्पर संबंध प्रायः मधुर ही रहेंगे तथापि यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद भी उत्पन्न होंगे। जीवन में आप पिता को अपनी ओर से पूर्ण आर्थिक सहायता प्रदान करेंगी एवं सुख दुःख में सर्वदा उनका सहयोग करेंगी।

चन्द्र

द्वितीयभाव में चन्द्रमा हो तो जातक परदेशवासी, भोगी, सुन्दर मधुरभाषी, भाग्यवान्, सहनशील एवं शान्तिप्रिय होता है।

कन्या राशि में चन्द्रमा हो तो जातक सुन्दर, रूपवान, धनी ईमानदार, मधुरभाषी, सदाचारी, धीर, विद्वान, सुखी, सुन्दर वक्ता अधिक कन्या सन्तान वाला, ज्योतिष एवं कला प्रेमी होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा द्वितीय भाव में स्थित है। अतः आपके शुभ प्रभाव से उनका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा। आपके प्रति उनकी पूर्ण वात्सल्य भावना रहेगी तथा जीवन में विद्याध्ययन या धन संबंधी कार्यों में आपको पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगी। साथ ही उनसे आप अवसरानुकूल महत्वपूर्ण नैतिक शिक्षा भी ग्रहण करेंगी। इसके साथ ही वे आपको हार्दिक सहयोग देंगी। इस प्रकार आपके परस्पर संबंध भी अच्छे रहेंगे।

आप भी उनसे पूर्ण प्रभावित रहेंगी तथा उनके कथनानुसार ही अधिकांश शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को सम्पन्न करेंगी। साथ ही जीवन में उनकी सेवा तथा वांछित आर्थिक तथा अन्य प्रकार से आप उनकी सहायता करती रहेंगी। अतः परस्पर मधुर संबंध एवं विश्वास होने के कारण आप आनन्दपूर्वक जीवन में उनका स्नेह प्राप्त करती रहेंगी।

मंगल

नौवें भाव में मंगल हो तो जातक अभिमानी, क्रोधी, नेता, द्वेषी, अल्पलाभ करने वाला, यशस्वी, असन्तुष्ट, भातृविरोधी, अधिकारी एवं ईर्ष्यालु होता है।

मेष राशि में मंगल हो तो जातक सत्यवक्ता, तेजस्वी, शूरवीर, नेता, साहसी, धनवान्, लोकमान्य, दानी एवं राजमान्य होता है।

आपकी जन्मकुण्डली में मंगल की स्थिति नवम भाव में है अतः भाई बहिनों का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा वे शारीरिक अस्वस्थता की भी अनुभूति करेंगे। आपके प्रति उनके मन में स्नेह तथा सम्मान का भाव विद्यमान रहेगा एवं यत्नपूर्वक जीवन के समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपकी भाग्योन्नति करते रहेंगे। साथ ही आपकी सहायता करते रहेंगे। साथ ही आपकी भाग्योन्नति में भी उनकी मुख्य भूमिका रहेगी एवं सुख दुःख में सर्वदा पूर्ण सहयोग रहेगा।

आपके मन में भी उनके प्रति पूर्ण स्नेह एवं सम्मान का भाव रहेगा एवं आपसी संबंधों में भी मधुरता रहेगी परन्तु आपसी मतभेदों के कारण यदा कदा कटुता का वातावरण भी बनेगा लेकिन यह अल्प समय के लिए रहेगा। इसके अतिरिक्त आप सुख दुःख में उनका पूर्ण सहयोग करेंगी एवं समयानुसार वांछित आर्थिक सहायता भी प्रदान करेंगी।

बुध

दशमभाव में बुध हो तो जातक सत्यवादी, मनस्वी, व्यवहार कुशल, लोकमान्य, विद्वान, लेखक, कवि जमींदार, मातृ-पितृ भक्त, राजमान्य, न्यायी एवं भाग्यवान् होता है।

वृष राशि में बुध हो तो जातक कुशाबुद्धिवाला, उच्चपद पर आसीन, सुगठित शरीर, दिखावा पसन्द करने वाला, शास्त्रज्ञ, व्यायामप्रिय, धनवान्, गम्भीर, मधुरभाषी, विलासी एवं रतिशास्त्रज्ञ होता है।

गुरु

नवमभाव में गुरु हो तो जातक पराक्रमी, धर्मात्मा, पुत्रवान, बुद्धिमान, राजपूज्य, तपस्वी, विद्वान्, योगी, वेदान्ती, यशस्वी, भक्त, भाग्यवान् संन्यास की ओर प्रवृति एवं प्रचुर सन्तान होता है।

मेष राशि में गुरु हो तो जातक ऐश्वर्यशाली, तेजस्वी, वकील, वादी, प्रसिद्ध, कीर्तिमान, विजयी, उस्वभाव, धनी, विद्वान, प्रचुर सन्तान, उदार, नम्रभाषी परन्तु अपने आपको दूसरों से उच्च समझने वाला, सुखी विवाहित जीवन एवं उच्चपद पर आसीन होता है।

शुक्र

दशम भाव में शुक्र हो तो जातक गुणवान्, दायालु, विलासी, ऐश्वर्यवान्, भाग्यवान्, न्यायवान् विजयी, गानप्रिय, धार्मिक ज्योतिषी एवं लोभी होता है।

वृष राशि में शुक्र हो तो जातक सुन्दर, ऐश्वर्यवान्, दानी, सदाचारी, सात्त्विक, परोपकारी, अनेक शास्त्रज्ञ, दृढ़, स्वतन्त्रकामुक, शौकीन तबीयत, संगीत-नृत्य तथा अन्य कलाओं में रुचि एवं आलसी होता है।

शनि

द्वितीय भाव में शनि हो तो जातक कटुभाषी, साधुद्वेषी, मुखरोगी, और कुम्भ या तुला का शनि हो तो धनी, लाभवान् एवं कुटुम्ब तथा भ्रातृवियोगी होता है।

कन्या राशि में शनि हो तो जातक मितभाषी, परोपकारी, लेखक, कवि, सम्पादक, धनवान्, बलवान्, निश्चित कार्य कर्त्ता, ईर्ष्यायलु स्वभाव, असभ्य, निर्बलस्वास्थ्य एवं पुराने विचारों वाला होता है।

राहु

चतुर्थभाव में राहु हो तो जातक असन्तोषी, दुखी, अल्पभाषी, मिथ्याचारी, उदरव्याधियुक्त, कपटी, मातृक्लेशयुक्त एवं कूर होता है।

वृश्चिक राशि में राहु हो तो जातक धूर्त, निर्धन, रोगी, धननाशक, अनैतिक चरित्र एवं धोखेबाज होता है।

केतु

दशम भाव में केतु हो तो जातक अभिमानी, परिश्रमशील मूर्ख, पितृद्वेषी, दुर्भागी, संन्यास लेना एवं योगी होता है।

वृष राशि में केतु हो तो जातक दुःखी, निरुद्यमी, आलसी, वाचाल एवं कामुक होता है।

स्वास्थ्य, व्यक्तित्व एवं प्रकृति

आपके जन्म समय में लग्न में सिंह राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी सूर्य है। सामान्यतया सिंह लग्न में उत्पन्न जातक तेजस्वी साहसी एवं पराक्रमी होते हैं। उनके अंदर आत्मविश्वास का भाव पूर्ण रूप से विद्यमान रहता है तथा अपनी बुद्धि एवं पराक्रम के बल पर वे जीवन में उन्नति प्राप्त करने में समर्थ रहते हैं। धनैश्वर्य वैभव एवं भौतिक सुख संसाधनों से ये प्रायः युक्त रहते हैं तथा जीवन में सुख पूर्वक इसका उपभोग करते हैं। ये जातक सिद्धांतवादी होते हैं तथा अपने सिद्धांतों की रक्षा के लिए सदैव तत्पर रहते हैं। इनकी प्रवृति धार्मिक भी होती है तथा स्वभाव में परोपकार का भाव भी रहता है फलतः ये पूर्ण विश्वास के योग्य होते हैं। इसके अतिरिक्त सरकारी या गैर सरकारी क्षेत्रों में ये किसी उच्च पद को प्राप्त करने में समर्थ होते हैं जिससे सामाजिक मान प्रतिष्ठा तथा यश समाज में विद्यमान रहता है। साथ ही नेतृत्व की क्षमता भी इनमें विद्यमान रहती है।

अतः इसके प्रभाव से आपका व्यक्तित्व आकर्षक रहेगा जिससे अन्य लोग आपसे प्रभावित रहेंगे। आप निर्भय महिला होंगी तथा अपने समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण सांसारिक कार्यकलापों को निर्भयता से सम्पन्न करके उनमें वांछित सफलता प्राप्त करेंगी जिससे आपको भौतिक सुख संसाधनों तथा अन्य ऐश्वर्य की प्राप्ति होगी तथा उन्नति मार्ग भी प्रशस्त रहेंगे फलतः आपका जीवन सुखपूर्वक व्यतीत होगा।

आपके हृदय में उदारता का भाव भी विद्यमान रहेगा तथा अन्य जनों के प्रति स्नेह के भाव का प्रर्दशन करेंगी। आपको स्वपरिश्रम से जीवन में सफलता प्राप्त होगी तथा प्रतियोगिता के क्षेत्र में आप सफल होंगी तथा आपके शत्रु या प्रतिद्वन्दी आपसे भयभीत होंगे परन्तु यदि आप अन्य जनों के साथ पूर्ण समानता का व्यवहार करें तो आप समाज में लोक प्रियता तथा अतिरिक्त प्रतिष्ठा भी अर्जित करने में समर्थ हो सकती हैं।

लग्न में लग्नेश सूर्य की राशि के प्रभाव से आपका शारीरिक स्वास्थ्य उत्तम रहेगा तथा मानसिक शांति एवं सन्तुष्टि भी बनी रहेगी। आप में शारीरिक बल की प्रधानता रहेगी तथा परिश्रम एवं पराक्रम से अपने सांसारिक महत्व के कार्यो को सम्पन्न करेंगी तथा इनमें इच्छित सफलता प्राप्त करके जीवन में उन्नति के मार्ग प्रशस्त करेंगी। राजनीति या सरकार अथवा व्यापार आदि में आप उन्नतिशील रहेंगी तथा इन क्षेत्रों में आपकी श्रेष्ठता बनी रहेगी।

आपके स्वभाव में तेजस्विता का भाव भी विद्यमान होगा। अतः यदा कदा आप अनावश्यक क्रोध या उग्रता के भाव का भी प्रदर्शन करेंगी। योग आदि के प्रति भी आपकी इच्छा रहेगी तथा समय समय पर योगाभ्यास करेंगी। आप में गम्भीरता का भाव विद्यमान होगा फलतः आपके कार्य धैर्य एवं गम्भीरतापूर्वक सम्पन्न होंगे जिससे आपको सफलता प्राप्त होगी।

धर्म के प्रति आपके मन में श्रद्धा रहेगी तथा श्रद्धापूर्वक धार्मिक कार्यकलापों तथा अनुष्ठानों को सम्पन्न करेंगी। इसी परिपेक्ष्य में सत्संग आदि में भी अपना योगदान प्रदान कर सकती हैं। आपको भ्रमण या पर्वतीय क्षेत्रों में घूमना रूचिकर लगेगा। अतः आप समय समय पर ऐसे स्थानों की सैर करती रहेंगी। इस प्रकार प्रसन्नतापूर्वक समस्त सुखों का उपभोग करते

हुए आप अपना समय व्यतीत करेंगी।

धन, परिवार, आंख एवं वाणी

आपकी जन्म कुंडली में द्वितीय भाव में कन्या राशि स्थित है जिसका स्वामी बुध है। अतः इसके प्रभाव से आप धन संग्रह के प्रति हमेशा यत्नशील रहेंगी तथा आपात्काल के लिए आप के पास कुछ न कुछ धन अवश्य रहेगा। आतिथ्य सत्कार की आपके मन में प्रबल भावना रहेगी तथा इससे आपको अत्यंत ही प्रसन्नता की प्राप्ति होगी। अतः समय समय पर अन्य जनों को अपने घर में आमंत्रित करती रहेंगी। आपका पारिवारिक जीवन सुख शान्ति से युक्त रहेगा तथा समृद्धि भी बनी रहेगी परन्तु पैतृक सम्पति को अल्प मात्रा में ही अर्जित करेंगी तथा जीवन में जो कुछ अर्जित करेंगी स्व परिश्रम तथा पराक्रम से करेंगी।

यह भाव वाणी का प्रतिनिधि भाव है तथा बुध ग्रह वाणी का प्रतिनिधिग्रह है। अतः इसके प्रभाव से आपकी वाणी में मृदुता तथा ओजस्विता का भाव विद्यमान रहेगा। इससे अन्य लोग आपसे प्रभावित तथा आकर्षित दौरान आपकी- ठोस तर्को से सहमत भी रहेंगे। इसके अतिरिक्त अपने विचारों को पूर्ण रूप से अभिव्यक्त करने में समर्थ रहेंगी। आप अधिकांश धन अपनी विद्वता से अर्जित करेंगी। तथा जीवन में अन्य भौतिक सुख संसाधन तथा स्वर्णादि धातुओं की भी प्राप्ति होगी। इस प्रकार धनऐश्वर्य से युक्त होकर अपना जीवन व्यतीत करेंगी।

पराक्रम, सहोदर, प्रकाशन एवं लघुयात्राएं

आपके जन्म समय में तृतीय भाव में तुला राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शुक्र है। अतः इसके प्रभाव से आप प्रसन्नचित महिला होंगी तथा स्मरण शाक्ति भी तीव्र रहेगी एवं दीर्घकाल तक किसी दृष्ट वस्तु को नहीं भूलेंगी। साथ ही ज्ञानार्जन भी शीघ्रता से करेंगी। जीवन में भाई बहिनों से युक्त रहेंगी तथा उनका पूर्ण सुख एवं सहयोग प्राप्त होगा। साथ ही आप उनको अपनी ओर से पूर्ण सुख एवं सुविधाएं प्रदान करने के लिए सदैव तत्पर रहेगी परन्तु यदि कभी वे आपकी आज्ञा का पालन नहीं करते या प्रतिकूल व्यवहार करते है तो आप शीघ्र ही उत्तेजित हो जाएंगी परन्तु शीघ्र ही शान्त भी हो जाएंगी। साथ ही पारिवारिक शान्ति के लिए ऐसे अवसरों की उपेक्षा भी करेंगी।

आप एक साहसी तथा पराक्रमी महिला होंगी तथा उत्तेजना में कभी कोई महत्वपूर्ण निर्णय नहीं लेंगी। अपनी इसी बुद्धिमता के कारण आप धनवान होंगी तथा समाज में आदरणीय समझी जाएंगी। आपको संचार संबंधी महत्वपूर्ण उपकरणों की प्राप्ति होगी तथा टेलीफोन दूरदर्शन या वाहन आदि से युक्त रहकर सुखी एवं वैभवशाली जीवन व्यतीत करेंगी। आपको रोमांटिक संगीत प्रिय लगेगा तथा यदा कदा इससे मित्रों का मनोंरजन भी करेंगी। आपकी दूर समीप की यात्राएं भी होंगी तथा इनसे आपको लाभ एवं ख्याति प्राप्त होती रहेगी। साथ ही यात्रा के मध्य आपके नवीन मित्र बनेंगे। संबंधियों से आपको लाभ एवं सहयोग प्राप्त होता रहेगा। आपकी सामाजिक तथा आर्थिक स्थिति सुदृढ़ रहेगी एवं अध्ययन कार्य के प्रति भी रूचिशील रहेंगी। इसके अतिरिक्त आपका स्वभाव चंचल तथा संतति अल्प मात्रा में ही होगी। साथ ही सेवक वर्ग की बहुलता रहेगी तथा मित्रता का क्षेत्र भी विस्तृत रहेगा।

शिक्षा, माता, वाहन एवं जायदाद

आपके जन्म समय में चतुर्थ भाव में वृश्चिक राशि उदित हो रही थी। जिसका स्वामी मंगल है तथा राहु भी योग कारक मंगल की राशि में चतुर्थ भाव में स्थित है। अतः इसके प्रभाव से जीवन में आप समस्त सुखऐश्वर्य एवं वैभव से युक्त होंगी तथा भौतिक सुख संसाधनों की प्रचुरता रहेगी जिसका आप सुखपूर्वक उपभोग करेंगी। यद्यपि यदा कदा सुखों को अर्जित करने में आपको परिश्रम भी अधिक करना पड़ेगा लेकिन इसका आपको फल अवश्य मिलेगा। समाज में आपका उचित स्तर होगा तथा मान प्रतिष्ठा भी बनी रहेगी।

आप एक भाग्यवान महिला होंगी तथा जीवन में आपको प्रचुर मात्रा में चल एवं अचल सम्पत्ति का स्वामित्व प्राप्त होगा। नाना से भी आप के न्यूनाधिक रूप से चल एवं अचल सम्पत्ति मिलने के योग भी बनते है। लेकिन यदि आप किसी विवादित सम्पत्ति का क्रय-विक्रय करेंगी या उससे संबंध रखेंगी तो इससे अनावश्यक समस्याओं का सामना करना पड़ेगा। अतः ऐसी स्थितियों की उपेक्षा करनी चाहिए।

जीवन में आप उत्तम आवास से युक्त होंगी। आपका घर विस्तृत एवं आधुनिक रूप से पूर्ण सुसज्जित होगा तथा इसकी सुन्दरता एवं आकर्षण बनाए रखने के लिए आप स्वयं तथा पारिवारिक जनों को भी प्रोत्साहित करेंगी। आपका घर किसी अच्छी कालोनी में होगा तथा पड़ोसी भी शिक्षित एवं बुद्धिमान होंगे परंतु संबंधों में औपचारिक्ता अधिक रहेगी। इसके अतिरिक्त वाहन सुख भी आपको पूर्ण मिलेगा एवं इनकी संख्या एक से अधिक भी हो सकती है।

आपकी माता जी तेजस्वी बुद्धिमान शिक्षित एवं व्यावहारिक महिला होंगी तथा परिवार के सदस्यों का पूर्ण ध्यान रखेंगी। आपकी उन्नति में उनका विशेष योगदान होगा तथा अवसरानुकूल आपको विशिष्ट आर्थिक या अन्य प्रकार से नैतिक सहयोग प्रदान करेंगी। आप भी उनके प्रति पूर्ण श्रद्धा एवं सम्मान का भाव रखेंगी तथा सुख-दुःख में उनको कोई कष्ट नहीं होने देंगी लेकिन यदा कदा सैद्धांतिक मतभेदों के कारण संबंधों में तनाव हो सकता है। अतः मतभेदों की उपेक्षा ही करनी चाहिए।

अध्ययन के प्रति आपकी प्रारंभ से ही रूचि होगी तथा स्वपरिश्रम एवं बुद्धिमता से आप प्रारंभिक कक्षाओं से ही अच्छे अंक प्राप्त करने में समर्थ होंगी। इसी परिपेक्ष्य में आप अच्छी श्रेणी में स्नातक परीक्षा उतीर्ण करेंगी जिससे आपके मन में आत्मविश्वास के भाव की वृद्धि होगी। इसके अतिरिक्त आप तकनीकी शिक्षा में भी वांछित सफलता प्राप्त कर सकती है।

चतुर्थ भाव में नैर्सगिक पापी ग्रह राहु की स्थिति के प्रभाव से मध्यावस्था के बाद आपको न्यूनाधिक रूप से रक्त चाप या हृदय संबंधी परेशानी का सामना करना पड़ सकता है। अतः युवावस्था से ही यदि आप खान-पान का विशेष ध्यान रखेंगी तो उपरोक्त समस्याओं में कभी आएगी जिससे आपका जीवन सुखपूर्वक व्यतीत होगा।

प्रणय सम्बन्ध, सन्तान एवं बुद्धि

आपके जन्म समय में पंचम भाव में धनु राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बृहस्पति है। अतः इसके प्रभाव से आप उद्यमी, साहसी तथा पराक्रमी महिला होंगी। उच्चशिक्षा प्राप्त करने के लिए आप रूचिशील रहेंगी तथा यत्न पूर्वक इसमें सफलता प्राप्त करेंगी। आप धार्मिक विचारों से युक्त दार्शनिक प्रवृति तथा ईश्वर को मानने वाली महिला होंगी तथा धर्म एवं शास्त्र के अनुसार ही अपने अधिकाशं शुभ एवं महत्वपूर्ण सांसारिक कार्यो को सम्पन्न करेंगी। बृहस्पति के प्रभाव से आप मुक्त विचारों की महिला होगी तथा आत्मविश्वास का प्रबल भाव भी विद्यमान रहेगा जिससे जीवन में ख्याति तथा सम्मान अर्जित करेंगी। आपकी सीखने की शक्ति अत्यन्त ही तीव्र होगी तथा शीघ्र ही नवीन सिद्धांतों या विचारों को सृजन करने में समर्थ रहेंगी साथ ही अन्तर्ज्ञान भी सत्य ही सिद्ध रहेगा। आपके पति बुद्धिमान शांत स्वभाव तथा कार्य दक्ष होंगे तथा परस्पर एक दूसरे को पूर्ण विश्वास के साथ सहयोग प्रदान करेंगे जिससे दाम्पत्य जीवन सुखी रहेगा। आपकी ईश्वर के प्रति श्रद्धा तथा सम्मान के भाव की उन्नति वृद्धावस्था में होगी जिससे आप वांछित श्रखयाति तथा सम्मान प्राप्त करेंगे। आपकी संतति संख्या सीमित रहेगी एवं शरीर से वे पूर्ण स्वस्थ बुद्धिमान होंगे तथा अपने क्षेत्र में वांछित सफलताएं अर्जित करेंगे। साथ ही वृद्धावस्था में आप की पूर्ण सेवा करेंगे तथा आपको किसी भी प्रकार का कष्ट नहीं होने देंगे। वैदिक ज्ञानार्जन या ज्योतिष के प्रति भी आपकी श्रद्धा रहेगी तथा यत्न पूर्वक इनका ज्ञान प्राप्त करेंगी। इसके अतिरिक्त आप वाहन आदि से सम्पन्न शत्रुनाशक, सज्जनों की सेवा करने वाली, योग्य तथा भाग्यशाली पुत्रों से युक्त रहेंगी तथा आनन्द पूर्वक अपना जीवन व्यतीत करेंगी।

रोग, शत्रु, सेवक एवं मामा

आपके जन्म समय में षष्ठ भाव में मकर राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शनि है। अतः इसके प्रभाव से आपको अपने कार्य क्षेत्र में मजबूत विपक्ष या शत्रु का सामना करना पड़ेगा। यदि आप किसी के साथ कार्य कर रही हों या स्वयं का कोई व्यवसाय चला रही हों तो सहयोगियों या साझेदार आदि से आपका विरोध या शत्रुता का भाव अपरिहार्य कारणों से उत्पन्न हो सकता है। वैसे आप एक व्यावहारिक महिला होंगी तथा यत्नपूर्वक किसी के साथ भी शत्रुता के भाव की उपेक्षा करेंगी परन्तु आपके कार्य कलापों से अन्य जन प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावित होंगे जिससे वे आपका विरोध करेंगे। इसी संदर्भ में कोई मुकद्दमे बाजी प्रारंभ हो सकती है परन्तु आप अपने धैर्य बुद्धिमता शान्ति तथा प्रतिभा से शत्रु या विरोधी पक्ष पर विजय प्राप्त करने में समर्थ रहेंगी तथा शत्रु की गतिविधियों से कभी भी विचलित नहीं होंगी।

आपकी सेवा करने के लिए आपके पास नौकर होंगे लेकिन उनकी संख्या अधिक रहेगी। अतः उनमें से कोई एक आपके लिए परेशानी पैदा कर सकता है। अतः नौकरों का चुनाव करते समय अत्यधिक सावधानी का पालन करना चाहिए। आपके संबन्धी भी आपके लिए कार्य क्षेत्र में यदा कदा हानिकारक सिद्ध हो सकते है तथा वे ही आपके वास्तविक शत्रु होंगे। अतः सोच समझकर अपने कार्य कलापों को सम्पन्न करें।

आप आवश्यकतानुसार सीमित व्यय करने की उत्सुक रहेंगी। अतः ऋण आदि लेने के अवसर बहुत कम आएंगे परन्तु युवास्था में स्थिति आ सकती है लेकिन आप उसका यथासमय भुगतान करने में समर्थ रहेंगी। मामा मामियों का आपके प्रति पूर्ण स्नेह का भाव रहेगा परन्तु आर्थिक सहयोग अल्प मात्रा में ही प्रदान करेंगे साथ ही मामाओं पर मामियों का अधिकार होगा। आर्थिक मुकद्दमे आपके लिए लाभदायक सिद्ध होंगे। यद्यपि आप मुकद्दमे आदि की उपेक्षा करेंगी तथा कोर्ट से बाहर ही मामलों खत्म करने की इच्छा रखेंगी। यदि ऐसा नहीं होगा तभी आप कोर्ट में जाएंगी। इस प्रकार आप स्वपराक्रम एवं प्रभाव से विरोधियों का दमन करके शान्ति पूर्वक अपने सांसारिक कार्यो को सम्पन्न करेंगी।

परिवार, विवाह एवं साझेदार

आपके जन्म समय में सप्तम भाव में कुम्भ राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शनि है सामान्यतया कुम्भराशि की सप्तम भाव में स्थिति से जातक का सहयोगी उग्रस्वभाव कुल में श्रेष्ठ पित प्रकृति व्ययशील एवं सेवकों से युक्त रहता है साथ ही वह तेजस्वी पराक्रमी एवं शिक्षित होता है एवं स्वाभिमान की भावना भी मन में विद्यमान रहती है।

अतः इसके प्रभाव से आपके पति तेजस्वी स्वभाव के स्वाभिमानी व्यक्ति होंगे तथा सांसारिक कार्य कलापों को दक्षता से सम्पन्न करेंगे। कुम्भ राशि के प्रभाव से वह कुल में श्रेष्ठ होंगे तथा सेवकों से भी युक्त रहेंगे परन्तु उनकी प्रवृति अधिक व्ययशील होगी एवं सहिष्णुता के भाव की न्यूनता रहेगी। लेकिन कर्तव्य परायणता का भाव विद्यमान रहेगा तथा समाज एवं परिवार के प्रति अपने कर्तव्यों का पालन करने में तत्पर रहेंगे।

आपके पति का वर्ण किंचित लालिमा लिए गौरवर्ण होगा तथा कद ऊंचा होगा साथ ही शारीरिक सौन्दर्य भी दर्शनीय होगा एवं शरीर स्वस्थ एवं बलिष्ठ होगा लेकिन अग्नि तत्व सूर्य एवं वायुतत्व कुम्भ राशि के प्रभाव से शरीर में पतलापन रहेगा। इससे उनका सौन्दर्य एवं व्यक्तित्व आकर्षक होगा। इसके अतिरिक्त कला एवं भौतिक वस्तुओं के प्रति भी रूचि रहेगी।

सप्तम भाव में कुंभ राशि के प्रभाव से आपके विवाह में किंचित विलम्ब की संभावना रहेगी। आपका विवाह प्रेम विवाह होगा या स्वयं ही वर का चुनाव करेंगी। विवाह के बाद आपका दाम्पत्य जीवन सामान्यतया सुखी रहेगा तथा आपस में प्रेम तथा सहयोग का भाव विद्यमान होगा। साथ ही सांसारिक महत्व के कार्यो को एक दूसरे की सहमति से सम्पन्न करेंगे। परन्तु दोनों के स्वभाव में तेजस्विता के कारण यदा कदा अनावश्यक समस्याएं भी उत्पन्न होंगी जिससे अल्प समय के लिए संबंधों में तनाव की अनुभूति हो सकती है।

आपका विवाह किसी साधारण परिवार में होगा तथा आर्थिक एवं सामाजिक दृष्टि से वे मध्यम होंगे। सास ससुर से आपके संबंध अच्छे होंगे एवं एक दूसरे के प्रति यथोचित सम्मान एवं स्नेह का भाव विद्यमान होगा।

आपके पति का सास ससुर के प्रति सेवा भाव रहेगा तथा सुख दुख में वह उनकी यथोचित सेवा करेंगे। साले एवं सालियां भी उनके व्यवहार से प्रसन्न रहेंगे एवं उन्हें वांछित सहयोग एवं सम्मान देंगे।

व्यापार या अन्य महत्वपूर्ण कार्यो के लिए सामान्यतया साझेदारी अनुकूल होगी। परंतु अत्यावश्यक होने पर ही सोच समझकर साझेदार का चुनाव करना चाहिए।

आयु, दुर्घटना एवं बीमा

आपके जन्म समय में अष्टम भाव में मीन राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बृहस्पति है। अतः इसके प्रभाव से आप में अंतर्प्रज्ञा शक्ति विद्यमान रहेगी तथा आध्यात्म, ज्योतिष तथा तंत्र मंत्र आदि पर पूर्ण विश्वास रहेगा। साथ ही इसका उचित ज्ञान अर्जित करने में भी रूचिशील रहेंगी। आपकी पूर्वाभास तथा भविष्य वाणियां प्रायः सत्य ही सिद्ध होगी तथा प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से आप इससे लाभान्वित होती रहेंगी। आपको पैतृक सम्पत्ति की प्राप्ति अवश्य होगी तथा किसी वृद्ध जन की जायदाद भी आपके नाम हो सकती है। आप सामान्यतया सर्व प्रकार से खुशहाल रहेंगी तथा चल एवं अचल सम्पत्ति की स्वामिनी बनेंगी। आपके पास एक से अधिक आवास स्थल भी हो सकते हैं। आपका दाम्पत्य जीवन सामान्यतया सुखपूर्वक व्यतीत होगा एवं ससुराल पक्ष धनऐश्वर्य से युक्त रहेगा ।

बीमा आदि करवाने से आपको समय समय पर लाभ हो सकता है परन्तु दीर्घावधि की अपेक्षा लधुअवधि के बीमों से आपको शीघ्र एवं उचित लाभ की प्राप्ति हो सकती है तथा सम्बधित वस्तु की भी पूर्ण सुरक्षा रहेगी। अतः बीमा आपको अवश्य कराना चाहिए। आपकी कुंडली में चोरी आदि का कोई विशेष योग नहीं है। यद्यपि एक बार चोर अवश्य इसके लिए प्रयत्न करेंगे लेकिन किसी कीमती वस्तु को ले जाने में असफल रहेंगे अतः आपको अपनी बहुमूल्य वस्तुओं की पूर्ण सुरक्षा रखनी चाहिए। साथ ही दुर्घटना आदि की उपेक्षा के लिए आपको तेज वाहन नहीं चलाना चाहिए साथ तथा शारीरिक सुरक्षा के लिए सतर्क रहना चाहिए। आपकी आयु अच्छी रहेगी तथा सामान्यतया प्रसन्नता पूर्वक अपना समय व्यतीत करेंगी।

प्रसिद्धि, पूजा, उच्चशिक्षा एवं लम्बी यात्राएं

आपके जन्म समय में नवम भाव में मेष राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी मंगल है अतः इसके प्रभाव से आप ईश्वर की सत्ता पर विश्वास करेंगी तथा धार्मिक एवं पारिवारिक परम्पराओं को सम्पन्न करने में तत्पर रहेंगी। आप प्रतिदिन ईश्वर का ध्यान अवश्य करेंगी परन्तु पूजा पाठ आदि में आपकी विशेष रूचि नहीं रहेगी क्योंकि आपके द्वारा यह विधान कुछ लोगों के द्वारा अपने स्वार्थ के लिए बनाया गया है। धार्मिक कार्यो पर व्यय करने में भी अत्यधिक सतर्कता का पालन करेंगी जिससे ऐसे मामलों में अन्य लोग आपको धोखा न दे सकें। आप ध्यान समाधि की भी इच्छुक रहेंगी। तीर्थ स्थानों की यात्रा में आपकी कोई विशेष रूचि नहीं रहेगी क्योंकि भीड़ भरे वातावरण आप अपने लिए असुविधा जनक समझती हैं। आपको शान्ति पूर्ण स्थान अच्छा लगेगा एवं आध्यात्मिक ग्रंथों का अध्ययन करने में भी रूचिशील रहेंगी। साथ ही अर्न्तप्रज्ञा शक्ति प्रबल रहेगी फलतः आपके द्वारा की गई भविष्य वाणियां प्रायः सत्य सिद्ध होंगी।

आप एक उच्च शिक्षा प्राप्त विदुषी होंगी तथा समाज में यथोचित मान सम्मान प्राप्त करेंगी। साथ ही अन्य लोग आपसे प्रभावित रहेंगे। सौभाग्य से भी आप युक्त रहेंगी एवं विकट परिस्थितियों में भाग्यबल से समाधान हो जाएगा तथा आप सुरक्षा की अनुभूति करेंगी। लम्बी दूरी की यात्राओं से आपको लाभ सम्मान तथा विशिष्ट उपलब्धियां अर्जित होगी। पौत्रों से आपको खुशी एवं सहयोग मिलेगा। समाज में आप एक प्रतिष्ठित महिला होंगी तथा अपने पूर्व जन्म के पुण्यों से इस जीवन में सम्मान ऐश्वर्य एवं खुशहाली प्राप्त करेंगी। इसके अतिरिक्त आपके मन में सेवा की प्रवृति रहेगी तथा प्राणिमात्र की सेवा करके अपनी दयालुता का परिचय देंगी ।

व्यवसाय, पिता एवं सामाजिक स्तर

आपके जन्म समय में दशमभाव में वृष राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शुक्र है। साथ ही शुक्र भी स्वराशि में स्थित होकर दशमभाव में ही स्थित है। वृष राशि भूमितत्व तथा शुक्र जलतत्व युक्त ग्रह है। अतः इनके प्रभाव से आपका कार्यक्षेत्र बौद्धिक एवं मानसिक क्रिया प्रधान होगा तथा जलतत्व ग्रह के प्रभाव से इसमें आप सामान्यतया परिवर्तन करती रहेंगी तथा ऐसे परिवर्तनों से आपको लाभ एवं उन्नति की प्राप्ति होगी जिससे आप मानसिक सन्तुष्टि की अनुभूति करेंगी।

दशमभाव में स्वगृही शुक्र के प्रभाव से आजीविका में आपके लिए कला, संगीत, सिनेमा, नाटक, दूरदर्शन विभाग, इलैक्ट्रोनिक्स विभाग, न्याय विभाग, न्यायधीश, वकील, सचिव, सलाहकार, फिल्म निदेशक या कलाकार के रूप में कार्य करना शुभ एवं अनुकूल होगा। इन क्षेत्रों में यदि आप अपनी आजीविका प्रारंभ करेंगी तो आपको वांछित उन्नति एवं सफलता की प्राप्ति होगी तथा अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों से सुरक्षित रहेंगी। अतः आप को उपरोक्त विभागों में ही अपने कार्यक्षेत्र का चयन करना चाहिए।

व्यापारिक दृष्टि से आपके लिए चांदी, सोना, हीरा आदि रत्न एवं धातु का कार्य, चतुष्पद या वाहन संबंधी क्रय विक्रय, आलंकारिक एवं मूल्यवान वस्त्रों का व्यापार, सौन्दर्य प्रसाधन संबंधी कार्य, सफेद वस्त्रों या रेशमी वस्त्रों का व्यापार एवं आयात निर्यात से भी लाभ होगा। साथ ही कीमती शराब, इलैक्ट्रोनिक्स उपकरण एवं फिल्म निर्माण का कार्य भी शुभ एवं अनुकूल रहेगा। अतः व्यापार से वांछित लाभ अर्जित करने के लिए आपको इन्हीं वस्तुओं या क्षेत्रों में व्यापार प्रारंभ करना चाहिए।

दशमेश की दशमभाव में स्थिति के प्रभाव से जीवन में आपको मान सम्मान तथा प्रतिष्ठा की प्राप्ति होगी तथा किसी उच्चपद को भी प्राप्त करने में सफल होंगी। साथ ही सामाजिक सांस्कृतिक संस्थाओं एवं क्लब आदि में भी आप कोई सम्मानीय पदाधिकारी हो सकती है। इससे आपके सामाजिक प्रभाव में वृद्धि होगी तथा यश भी दूर दूर तक व्याप्त होगा। इसके साथ ही आप सामाजिक एवं राज्यस्तर पर कोई सम्मान भी प्राप्त कर सकती है।

आपके पिता सुंदर एवं आकर्षक व्यक्तित्व के स्वामी होंगे तथा सामाजिक जन उनसे पूर्ण रूप से प्रभावित रहेंगे। वह बुद्धिमान शिक्षित एवं मनोरंजक प्रवृति के भी व्यक्ति होंगे। आपके प्रति उनके मन में पूर्ण वात्सल्य तथा अपनत्व का भाव होगा एवं शिक्षा दीक्षा का वे उचित प्रबंध करेंगे। कार्यक्षेत्र में भी पिता से आपको पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा एवं उनके प्रभाव से भी आप उन्नति के मार्ग पर अग्रसर होंगी। आप दोनों के परस्पर संबंधों में मधुरता रहेगी तथा सैद्धान्तिक तथा वैचारिक समानता भी होगी। इसके अतिरिक्त पिता की आप आज्ञाकारी रहेंगी तथा जीवन में शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यो को एक दूसरे के सहयोग एवं सलाह से सम्पन्न करेंगी। इस प्रकार आपका जीवन सुख पूर्वक व्यतीत होगा।

लाभ, मित्र, समाज एवं ज्येष्ठ भ्राता

आपके जन्म समय में एकादश भाव में मिथुन राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बुध है। अतः इसके प्रभाव से आप एक महत्वाकांक्षी महिला होंगी तथा मन में विभिन्न प्रकार की इच्छाएं विद्यमान रहेंगी। साथ ही अपनी अधिकांश इच्छाओं तथा आकांक्षाओं को समय समय पर परिश्रम एवं पराक्रम से पूर्ण करने में सफल होंगी। अपनी चतुराई तथा कार्यकुशलता से आप सदैव उन्नति के मार्ग पर अग्रसर रहेंगी। आप की प्रवृति सक्रिय रहेगी तथा विभिन्न प्रकार के कार्यो को करने से धन एवं लाभ अर्जित करेंगी। लेखन, कमीशन, प्रेस,समाचारपत्र तथा व्यापारादि से आप इच्छित लाभ एवं धन अर्जित कर सकती हैं। यदि आप कहीं भी कार्यरत नहीं तो आपके पति इनसे लाभ अर्जित करेंगे। आपका ज्येष्ठ भाइयों की अपेक्षा बहिनों से अधिक लगाव रहेगा तथा वे भी आपको यथोचित स्नेह एवं सुख प्रदान करने में तत्पर रहेंगी तथापि भाइयों से आपको समय समय पर सहयोग मिलता रहेगा ।

आपके मित्रों की संख्या अधिक रहेगी तथा मित्र मंडली की आप सम्मान्नीया सदस्या होंगी तथा इनके मध्य आनन्द की अनुभूति करेंगी। आपके समस्त मित्र शिक्षित चतुर एवं विद्वान होंगे जिससे परस्पर कई विषयों पर तर्क वितर्क करेंगे इससे आपके ज्ञान में वृद्धि होगी। समाज या अपने क्षेत्र में भी आप प्रतिष्ठत एवं ख्याति प्राप्त होंगी तथा सभी लोग आपको यथोचित मान सम्मान प्रदान करेंगे। साथ ही लोगो की भलाई तथा सेवा के लिए हमेशा तत्पर रहेगी जिससे समय समय के साथ आपको किसी विशिष्ट सम्मान की प्राप्ति भी हो सकती है। इसके अतिरिक्त बुद्धिजीवी वर्ग से हमेशा प्रभावित रहेंगी तथा उनसे संबंध स्थापित करके प्रसन्नता प्राप्त करेंगी। इस प्रकार आपका सांसारिक जीवन सुख ऐश्वर्य से युक्त होकर व्यतीत होगा।

विदेश यात्रा, हानि, बन्धन एवं कर्ज

आपके जन्म समय में द्वादश भाव में कर्क राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी चन्द्रमा है अतः इसके प्रभाव से आप की प्रवृति धार्मिकता से युक्त रहेगी तथा तीर्थ यात्राओं पर आपका व्यय होगासाथ ही परोपकारी संबंधी कार्य तथा ब्राह्मणो की सेवार्थ आप किसी धार्मिक स्थल का निर्माण भी करवा सकती हैं। साथ ही कुआं, बगीचा या रास्ते आदि का निर्माण करके समाज में मान सम्मान अर्जित करेंगी। साथ ही परिवार एवं वच्चों के स्तर में वृद्धि पर भी आप इच्छित व्यय होगा।

आपका सामान्य व्यय अधिक मात्रा में होगा फलतः अवस्था के साथ साथ आपको आर्थिक परेशानी का सामना भी करना पड़ सकता है। आप एक स्वच्छंद प्रवृति की महिला होंगी तथा उनमुक्त हाथों से व्यय करेंगी एवं बिना अपनी आर्थिक स्थिति को देखे हुए अन्य जनों की सहायता के लिए तत्पर हो जाएगी इससे आपके प्रभाव तथा मान सम्मान में वृद्धि तो होगी परन्तु आर्थिक स्थिति पर इसका दुष्प्रभाव पड़ेगा अतः ऐसे कार्यो को आप यदि सोच समझकर सावधानी से सम्पन्न करेंगी तो आप ऐसी स्थिति से सुरक्षित हो सकती हैं। युवावस्था में आपको कई प्रकार से उतार चढ़ाव देखने पड़ेगे लेकिन व्यय जैसा भी करेंगी शुभ ही अधिक करेंगी।

आपकी दूर समीप की यात्राएं प्रायः सम्पन्न होती रहेंगी तथा इनसे आपको लाभ एवं सम्मान प्राप्त होगा। आपकी सामान्य यात्राएं व्यापार या कार्य क्षेत्र से संबंधित रहेगी तथापि भ्रमण आदि के लिए भी यात्राएं आदि होती रहेगी। साथ ही विदेश भ्रमण के योग भी बनते है तथा समयानुसार आप काफी समय तक वहां प्रवास भी कर सकती हैं। इस प्रकार आपका सामान्य समय सुख पूर्वक व्यतीत होगा।

नक्षत्रफल

आप चित्रा नक्षत्र के प्रथम चरण में उत्पन्न हुई हैं। अतः आपकी जन्मराशि कन्या तथा राशिस्वामी बुध होगा। नक्षत्रानुसार आपकी नाडी मध्य, वर्ण वैश्य, वर्ग मूषक, गण राक्षस तथा योनि व्याघ्र होगी। नक्षत्र के चरणानुसार आपके जन्म नाम का प्रथम अक्षर "पे" या "पै" होगा।

आप स्वभाव से ही धार्मिक प्रकृति से युक्त रहेंगी तथा देवता और ब्राहमणों के प्रति आपके मन में विशेष श्रद्धा का भाव रहेगा। अतः समय समय पर आप इनकी पूजार्चना सम्पन्न करती रहेंगी। आप सपरिवार प्रसन्न एवं सन्तुष्ट रहेंगी। आपका जीवन आनन्द एवं प्रसन्नता के साथ व्यतीत होगा। आप सदैव धन धान्यादि तथा अन्य ऐश्वर्य से सुसम्पन्न होकर उनका उपभोग करेंगी। इनका जीवन में आप कभी भी अभाव महसूस नहीं करेंगी।

पुत्रदारयुतसंतुष्टो धनधान्य समन्वितः।
देव ब्राह्मण भक्तश्च चित्रायां जायते नरः।।
मानसागरी

अर्थात चित्रा नक्षत्र में उत्पन्न जातक स्त्री तथा पुत्र सहित सन्तुष्ट रहने वाला, धनधान्यादि से परिपूर्ण रहने वाला तथा देवता एवं ब्राह्मणों का भक्त होता है।

नूतन वस्त्रों को धारण करना आपका प्रिय एवं रुचिपूर्ण कार्य रहेगा साथ ही गले में भी सुन्दर मालाओं को आप धारण करेंगी। आपकी आंखो की सुन्दरता मनमोहक एवं आकर्षक रहेगी तथा शारीरिक सौन्दर्य भी सुन्दरता से सुशोभित रहेगा।

चित्राम्बर माल्यधरः सुलोचनाङ्गश्च भवति चित्रायाम्।।
बृहज्जातकम्

अर्थात् चित्रा नक्षत्र में उत्पन्न जातक अनेक वस्त्र एवं मालाओं को धारण करने वाला, सुन्दर नेत्र तथा सुन्दर शरीर वाला होता है।

आप अपने मन की बातों को हमेशा गुप्त रखेंगी तथा किसी से भी इस विषय का भेद कभी भी प्रकट नही करेंगी। यह आपका स्वभाव रहेगा तथा आजीवन आप इस प्रवृति के पालन करने में तत्पर रहेंगी। समाज में आपका प्रभाव रहेगा तथा सभी वर्गो के लोग आपको समान रूप से सम्मान प्रदान करेंगे।

चित्रायामति गुप्तशीलनिरतो मानी परस्त्रीरतः।।
जातकपरिजातः

अर्थात चित्रा नक्षत्र में उत्पन्न जातक अपने मन की बात को गुप्त रखने वाला तथा दूसरे पर प्रकट न करने वाला ऐसे स्वभाव से युक्त, सम्माननीय तथा दूसरे की स्त्रियों में

अनुरक्त रहता है।

आप अपने पराक्रम तथा बुद्धि द्वारा शत्रुओं को हमेशा कष्ट प्रदान करेंगी अर्थात् शत्रु हमेशा आपसे पराजित रहेंगे। नीति शास्त्र की आप विख्यात विदुषी होंगी तथा नीति संबंधी कार्यक्रमों को कार्यान्वित करने में विशेष दक्ष रहेंगी। आप नाना प्रकार के वस्त्रों को धारण करके विचित्र वेशभूषा का आभास दिलाएंगी। शास्त्रों का ज्ञान प्राप्त करने में आप विशेष रूचि प्रदर्शित करेंगी। तथा इनमें आपकी बुद्धि का कौशल स्पष्ट रूप से परिलक्षित रहेगा।

प्रतापसन्तापितशत्रुपक्षो नयेळतिदक्ष विचित्रवासः।
प्रसूतिकाले यदि यस्य चित्रा बुद्धिविचित्रा खलुतस्य शास्त्रे।।
जातकाभरणम्

अर्थात् चित्रा नक्षत्र में उत्पन्न मानव अपने प्रताप के द्वारा शत्रु को कष्ट पहुँचाने वाला, नीति शास्त्र में दक्ष, नाना प्रकार के वस्त्रों को धारण करने वाला तथा शास्त्रादि में अद्भुत बुद्धिवाला होता है।

आप रजत पाद में उत्पन्न हुई हैं। अतः जीवन में आप धन सम्पति से सर्वदा सुसम्पन्न रहेंगी तथा कभी भी इसके अभाव की अनुभूति नहीं करेंगी। साथ ही जीवन में विविध प्रकार के सुखसंसाधनों को आप अर्जित करेंगी एवं प्रसन्नता पूर्वक जीवन में इसका उपभोग करेंगी। आप एक बुद्धिमती महिला होंगी तथा दानशीलता के भाव से नित्य युक्त रहेंगी। साथ ही आप में सहनशीलता का भाव भी विद्यमान रहेगा। आपको अपने शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में शीघ्र ही इच्छित सफलता प्राप्त होगी। शरीर से आप अत्यन्त ही कान्ति युक्त रहेंगी तथा आपकी मुखाकृति भी सुन्दर एवं दर्शनीय रहेगी। समाज में आप आदरणीय तथा श्रद्धेय महिला समझी जाएंगी। आप का परिवार भी विस्तृत रहेगा। आपकी वाणी अत्यन्त ही मधुर होगी तथा सभी लोग आपसे प्रसन्न एवं सन्तुष्ट रहेंगे। आप सांसारिक सुखों का प्रसन्नता पूर्वक उपभोग करेंगी। विद्याध्ययन के क्षेत्र में आप पूर्ण रूप से सफल रहेंगी तथा एक विदुषी के रूप में ख्याति अर्जित करने में सफल होंगी। इसके अतिरिक्त आप प्रायः अल्प मात्रा में बोलना ही पसन्द करेंगी।

कन्या राशि में पैदा होने के कारण आप के हाथों की लम्बाई अधिक होगी तथा सुन्दरता भी दर्शनीय होगी। साथ ही दान्त, आंख, कान तथा मुख मंडल का सौन्दर्य भी आकर्षक रहेगा। आप एक श्रेष्ठ विदुषी होंगी तथा धर्माचरण में सदैव तत्पर रहेंगी। कई धार्मिक संस्थाओं की आप संचालिका या अध्यक्षा आदि पदों पर सुशोभित रहेंगी। आप हमेशा प्रिय एवं मधुर वाणी का अपने सम्भाषण में प्रयोग करेंगी फलतः सभी लोग आपसे प्रसन्न तथा प्रभावित रहेंगे। सत्य का पालन करना आपकी स्वाभाविक प्रवृति रहेगी तथा इसका अनुपालन करने में सदा तत्पर रहेंगी। साथ ही शुद्धता को भी आप अपने जीवन में महत्वपूर्ण स्थान प्रदान करेंगी। आप धैर्ययुक्त महिला होंगी तथा अपने सांसारिक कार्य कलापों को शीघ्रता तथा चंचलता को त्यागकर धैर्यपूर्वक सम्पन्न करेंगी। समस्त सांसारिक जीवों के प्रति आपके मन में करूणा तथा सद्भाव विद्यमान रहेगा। आप परोपकार करने के लिए भी हमेशा तन मन धन से तत्पर रहेंगी। क्षमाशीलता का सद्गुण भी आपकी प्रवृति में परिलक्षित होता रहेगा एवं आपका भाग्य हमेशा

उज्जवल रहेगा साथ ही आपकी कन्या संतति अधिक तथा पुत्र संतति अल्प मात्रा में ही उत्पन्न होंगी।

स्त्रीलोलो लम्बबाहुर्ललिततनुमुखश्चारुदन्ताक्षिणिकर्णौ।
विद्धानाचार्य धर्मा प्रियवचनयुतः सत्यशील प्रधानः।।
धीरः सत्वानुकम्पी परविषयरतः क्षान्तिसौभाग्यभागी।
कन्याप्रायप्रसूतिबहुसुतरहितः कन्यकायां शशाङ्कः।।
सारावली

आप लज्जामय तथा आलस्य युक्त दृष्टि से गमन करने वाली होंगी अर्थात् चलते समय आपकी दृष्टि लज्जा तथा आलस्य से युक्त रहेगी। जीवन में आप हमेशा सुखी रहेंगी तथा दुःखो का सामान्यतया अभाव रहेगा। आपके शरीर की कोमलता दर्शनीय रहेगी तथा सत्य का आप हमेशा पालन करने में प्रयत्नशील रहेंगी। साथ ही नाना प्रकार की कलाओं के विषय में भी आपको विषद् ज्ञान रहेगा तथा शास्त्रों के ज्ञान को भी परिश्रम पूर्वक अर्जन करने में आप सफलता प्राप्त करेंगी। आप अपने किसी अन्य संबंधी व्यक्ति या मित्र के घर एवं धन दौलत का भी अपने जीवन में उपभोग कर सकेंगी। आपकी इच्छा विदेश में बसने की रहेगी तथा इस उद्धेश्य में आपको सफलता भी प्राप्त होगी।

व्रीळामंथरचारुवीक्षणगतिः स्रस्तांसवाहुः सुखी।
श्लक्षणः सत्यरतः कलासुनिपुणः शास्त्रार्थविद्धार्मिकः।।
मेधावी सुरतप्रियः परगृहे वितैश्च संयुज्यते।
कन्यायां परदेशगः प्रियवचः कन्याप्रजोळल्पात्मजः।।
बृहज्जातकम्

आप अन्यजनों को अपनी हास्य तथा विलास युक्त चेष्टाओं तथा भाव भंगिमाओं से अपनी ओर आकर्षित करने तथा उन्हें प्रसन्न करने में सर्वथा निपुण रहेंगी तथा वे भी आपसे सन्तुष्ट रहेंगे। समाज में अन्य जनों के साथ आपका व्यवहार नम्र एवं मधुरता से युक्त रहेगा। अतः सभी लोग आपको सम्मान की दृष्टि से देखेगे। आपकी सन्तानें अधिक संख्या में उत्पन्न होंगी तथा हमेशा शुभकार्यों को करने की ओर आपकी प्रवृति रहेंगी। इसके अतिरिक्त आप का भाग्य अत्याधिक प्रबलता को प्राप्त रहेगा। तथा भाग्यबल से आप कई महत्वपूर्ण सफलताओं को प्राप्त करेंगी।

युवतिगे शशिनि प्रमदाजनप्रबलकेलिबिलासकुतूहलैः।
विनयशील सुताजननोत्सवै सुविधिना सहितः पुभान।।
जातकाभरणम्

आपकी बुद्धि छल कपट से विहीन होकर निर्मलता से युक्त रहेगी। लेखन कार्य की ओर आपकी बुद्धि अधिक रूचिशील रहेगी अतः काव्य लेखन में आपको सफलता प्राप्त हो सकेगी। आपका स्वभाव अत्यन्त ही शान्त रहेगा एवं चंचलता का उसमें अभाव रहेगा। जीवन में आप कभी कभी आंखो की बीमारियों से पीडित भी रहेंगी। आपका चाल चलन भी उत्तम रहेगा।

गुरूजनों के प्रति आपके मन में श्रद्धा होगी तथा उनकी भलाई के कार्यो में सदैव तत्पर रहेंगी।

विमलमति सुशीलो लेखबुद्धिः कविश्च।
कृषिबलगुणशाली शान्तियुग्मः स्वभावः।।
भवति नयनरोगी धार्मिकः शीलयुक्तः।।
गुरूजन हितकर्ता कन्यका यस्य राशिः।।
जातकदीपिका

आप विलासमयी प्रकृति से युक्त रहेंगी तथा विलासमय भौतिक पदार्थो पर उन्मुक्त भाव से क्रय करके सुखपूर्वक उनका उपभोग करेंगी। सज्जनों के प्रति आपके मन में हमेशा आदर एवं सम्मान का भाव विद्यमान रहेगा तथा ये लोग भी आपसे सर्वदा प्रसन्न रहेंगे। दानशीलता की प्रवृति नैसर्गिक रूप से आपके हृदय में विद्यमान रहेंगी तथा अपने जीवन में आप समय समय पर इस प्रवृति का प्रदर्शन करती रहेंगी। आपकी वैदिक धर्म के प्रति श्रद्धा होगी तथा नियमपूर्वक निष्ठा से जीवन में इसका पालन करेंगी। समाज में आप किसी प्रकार का भेदभाव नहीं रखेंगी तथा सबको समान रूप से समझेंगी। अतः आप इन सभी लोगो के मध्य खूब लोकप्रियता अजित करने में पूर्ण सफलता प्राप्त करेंगी। नाटक तथा संगीत की आप अनन्य प्रेमी होंगी तथा आजीवन इससे आपका संबंध बना रहेगा।

विलासी सुजनाह्लादी सुभगो धर्मपूरितः।
दातादक्षः कविर्बुद्धि वेदमार्ग परायणः।।
सर्वलोकप्रियो नाट्यगान्धर्व व्यसने रतः।
प्रवासशीलः स्त्री दुखी कन्याजातो भवेन्नरः।।
मानसागरी

जीवन के समस्त सुखों तथा भौतिक पदार्थो का आप उपभोग करने में समर्थ रहेंगी। आपकी वाणी श्रेष्ठ होगी तथा बहुत से शास्त्रों के विषय में आपका विस्तृत ज्ञान रहेगा।

कन्यास्थे विषयातुरो ललितवाग्मि विद्याधिको भोगवान।
जातकपरिजातः

राक्षस गण में पैदा होने के कारण आप कमी कमी की बातें करने वाली होंगी दया करूणा एवं सहानुभूति के भावों का आपमें सामान्यतया नयूता दृष्टिगोचर होगी परन्तु आप उत्साही एवं साहसी महिला होंगी तथा इसी से अपने समस्त कार्यो को सम्पन्न करने में सफल रहेंगी। छोटी छोटी बातों में उत्तेजित होना आपकी स्वाभाविक प्रवृति होगी। साथ ही आप में शारीरिक बल भी पूर्ण मात्रा में रहेंगा। आपका वैर तथा शत्रुता का भाव रहेगा।

आप उन्माद आदि रोगों से भी पीड़ित हो सकती है। आपकी मुखाकृति भी सुन्दर होंगी तथा आप कभी कभी अत्यन्त कठोर वाणी को बोलने वाली होंगी जो श्रोताओं को रूचिकर नहीं लगेगी। अतः अपने सम्भाषण मे आप को यत्पूर्वक मधुर शब्दो का प्रयोग करना चहिए।

अनल्पजल्पश्च कठोरचित्तः स्यात्साहसी क्रोधपरोद्धतश्च।

दुःशीलवृतः कलीकृत्वलीमान रक्षोगणोत्पन्नरो विरोधी।।
जातकभरणम्

अर्थात् राक्षस गण में उत्पन्न जातक व्यर्थ बोलने वाला, कठोर, साहसी, अकारण ही क्रोधित होने वाला, नीच प्रकृति से युक्त, झगड़ू, बलवान तथा अन्य लोगों का विरोधी होता है।

व्याघ्र योनि में उत्पन्न होने के कारण आप स्वतंत्र प्रकृति की महिला होंगी तथा अपने समस्त कार्यो को बिना किसी के हस्तक्षेप के द्वारा स्वतंत्रापूर्वक करने के लिए सर्वदा इच्छुक रहेंगी। धन को एकत्रित करने में आप हमेशा प्रयत्नशील रहेंगी साथ ही अच्छी बातों तथा गुणों को ग्रहण करने की शक्ति से भी आप सुसम्पन्न रहेंगी। अपने क्षेत्र में पूर्ण रूप से प्रशिक्षित रहेंगी तथा सभी लोग आपको सम्मान तथा आदर प्रदान करेंगे। धन वैभव एवं ऐश्वर्य से आप हमेशा सुशोभित रहेंगी इनका आपके जीवन में कभी भी अभाव नही रहेंगा। परन्तु आप अपने ही मुख से अपनी प्रशंसा करने वाली होंगी जिससे लोगो पर इसका विपरीत प्रभाव होगा।

स्वच्छन्दोडर्थरतो ग्राही दीक्षावान सः विभुः सदा।
आत्मस्तुतिपरो नित्यं व्याघ्रयोनि भवो नरः।।
मानसागरी

अर्थात् व्याघ्र योनि में उत्पन्न जातक स्वतंत्र प्रवृति वाला, अर्थसंग्रह में तत्पर, गुणों को ग्रहण करने वाला, दीक्षित, वैभव युक्त तथा अपने ही मुख से स्वयं अपनी प्रशंसा करने वाला होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा द्वितीय भाव में स्थित है। अतः आपके शुभ प्रभाव से उनका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा। आपके प्रति उनकी पूर्ण वात्सल्य भावना रहेगी तथा जीवन में विद्याध्ययन या धन संबंधी कार्यों में आपको पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगी। साथ ही उनसे आप अवसरानुकूल महत्वपूर्ण नैतिक शिक्षा भी ग्रहण करेंगी। इसके साथ ही वे आपको हार्दिक सहयोग देंगी। इस प्रकार आपके परस्पर संबंध भी अच्छे रहेंगे।

आप भी उनसे पूर्ण प्रभावित रहेंगी तथा उनके कथनानुसार ही अधिकांश शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को सम्पन्न करेंगी। साथ ही जीवन में उनकी सेवा तथा वांछित आर्थिक तथा अन्य प्रकार से आप उनकी सहायता करती रहेंगी। अतः परस्पर मधुर संबंध एवं विश्वास होने के कारण आप आनन्दपूर्वक जीवन में उनका स्नेह प्राप्त करती रहेंगी।

आपके जन्म समय में सूर्य दशम भाव में स्थित है अतः पिता की आप प्रिय रहेंगी। उनका शारीरिक स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा एवं आयु भी पूर्ण रहेगी। धनैश्वर्य से वे सुसम्पन्न रहेंगे एवं जीवन में आपको पूर्ण रूप से आर्थिक तथा अन्य प्रकार से सहयोग प्रदान करते रहेंगे। इसके साथ ही आपके आजीविका या व्यापार संबंधी कार्य भी उन्हीं की प्रेरणा एवं सहायता से सम्पन्न होंगे एवं आप इन कार्यों में वांछित सफलता अर्जित कर सकेंगी।

आप भी उनका पूर्ण हार्दिक सम्मान करेंगी एवं उनकी आज्ञा का अनुपालन करने

के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगी। आपके परस्पर संबंध प्रायः मधुर ही रहेंगे तथापि यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद भी उत्पन्न होंगे। जीवन में आप पिता को अपनी ओर से पूर्ण आर्थिक सहायता प्रदान करेंगी एवं सुख दुःख में सर्वदा उनका सहयोग करेंगी।

आपकी जन्मकुण्डली में मंगल की स्थिति नवम भाव में है अतः भाई बहिनों का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा वे शारीरिक अस्वस्थता की भी अनुभूति करेंगे। आपके प्रति उनके मन में स्नेह तथा सम्मान का भाव विद्यमान रहेगा एवं यत्नपूर्वक जीवन के समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपकी भाग्योन्नति करते रहेंगे। साथ ही आपकी सहायता करते रहेंगे। साथ ही आपकी भाग्योन्नति में भी उनकी मुख्य भूमिका रहेगी एवं सुख दुःख में सर्वदा पूर्ण सहयोग रहेगा।

आपके मन में भी उनके प्रति पूर्ण स्नेह एवं सम्मान का भाव रहेगा एवं आपसी संबंधों में भी मधुरता रहेगी परन्तु आपसी मतभेदों के कारण यदा कदा कटुता का वातावरण भी बनेगा लेकिन यह अल्प समय के लिए रहेगा। इसके अतिरिक्त आप सुख दुःख में उनका पूर्ण सहयोग करेंगी एवं समयानुसार वांछित आर्थिक सहायता भी प्रदान करेंगी।

आपके लिए भाद्रपद मास, पंचमी, दशमी,पौर्णमासी तिथियां, श्रवण नक्षत्र, शुभयोग, कौलवकरण, शनिवार प्रथम प्रहर एवं वृश्चिक राशिस्थ चन्द्रमा सदैव अशुभ फल देने वाले होंगे। अतः आप 15 अगस्त से 14 सितम्बर के मध्य कोई भी शुभ कार्य व्यापार प्रारम्भ, नवगृहनिर्माण, क्रय विक्रयादि अन्य शुभ कार्यों को प्रारम्भ न करें अन्यथा लाभ की अपेक्षा हानि ही अधिक होगी। साथ ही शनिवार, प्रथम प्रहर एवं वृश्चिक राशि के चन्द्रमा को भी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में वर्जित रखें। इन दिनों तथा समय में शारीरिक स्वास्थ्य तथा सुरक्षा के प्रति भी पूर्ण रूप से सावधानी रखनी चाहिए।

यदि आपके लिए समय ठीक न चल रहा हो मानसिक अशान्ति, शरीर में व्याकुलता, व्यापार में हानि, नौकरी या पदोन्नति में व्यवधान अथवा अन्य शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में सफलता नहीं मिल रही हो तो ऐसे समय में आपको अपने इष्ट देव गणेश जी की उपासना करनी चाहिए तथा बुधवार एवं गणेश चतुर्थी का उपवास करना चाहिए। साथ ही सोना, पन्ना, हरित वस्त्र, मूंग की दाल आदि पदार्थो को श्रद्धापूर्वक किसी उचित पात्र को दान करना चाहिए इससे आपके मन को शान्ति मिलेगी तथा अशुभ प्रभावों में भी न्यूनता होगी तथा शुभ फलों में वृद्धि होगी। इसके अतिरिक्त बुध के तांत्रीय मंत्र के कम से कम 17000 जप किसी योग्य विद्वान से सम्पन्न करवाने चाहिए। इससे आपके सर्वत्र लाभमार्ग प्रशस्त होंगे तथा शुभ कार्यों में सफलता प्राप्त होगी।

ऊँ ब्रां ब्रीं ब्रों सः बुधाय नमः।
मंत्र- ऊँ ऐं स्त्रीं श्रीं बुधाय नमः।

लाल किताब के अनुसार ऋण भार

कुँडली में दूषित ग्रहों के कारण जातक कई प्रकार से ऋणी होता है अर्थात् कई प्रकार के ऋण भार जातक के ऊपर रहते हैं, जिसके कारण जातक के जीवन का विकास अवरुद्ध हो जाता है। क्योंकि दूषित ग्रहों के दोषयुक्त प्रभाव से शुभ ग्रह भी अनुकूल फल देना बंद कर देते हैं। अस्तु ऋण भार से जातक को मुक्त होना चाहिए ताकि शेष जीवन पर शुभ या अच्छे ग्रहों के अच्छे प्रभाव पड़कर कुँडली के अनुसार शुभता प्राप्त हो सके। नीचे ऋण के प्रकार किस परिस्थिति में जातक पर अदृश्य ऋण पर पड़ता है तथा उसके निराकरण उधृत किए जाते हैं।

स्वऋण

ग्रहचाल :

जब जन्मकुंडली में खाना नंबर 5 में शुक्र या शनि या राहु या तीनों में दो या तीनों स्थित हो तो स्वऋण होता है।

निशानिया :

आपको राजभय, निर्दोष होने पर भी मुकदमें में दंड या जुर्माना भुगतना पड़ता है। हृदय रोग, बाजुओं में दर्द, शारीरिक कमजोरी, आंखों में कष्ट, जिगर की खराबी होती है।

घटनाएं :

जातक नास्तिक हो जाता है, धर्म की उपेक्षा करता है स्वास्थ्य अनुकूल नहीं रहता, पूर्वजों के रीति-रिवाज के अनुसार नहीं चलता।

निष्कर्ष

आपकी पत्री स्वऋण से मुक्त है।

मातृऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली के चौथे खाने में केतु पड़ा हो तो मातृ ऋण का बोझ होता है।

निशानिया :

जातक का कोई सहायक नहीं होता, उसके सभी प्रयास निष्फल होते है। सरकारी दंड या जुर्माना भुगतना पड़ता है। जीवन अशांत व्यतीत होता है, दूसरों की इज्जत को उछालना खेलवार करना या जूता चुराना, विद्या का लाभ न मिलना। रिश्तेदारों की बिमारियों पर धन का अपव्यय आदि अशुभ फल होते है।

घटनाएं :

मातृ ऋण से प्रभावित जातक माता से दुर्व्यवहार करता है। माता के सुख-दुःख का ख्याल नहीं रखता। माता से दूर रहे या माता को घर से निकाल देता हैं। मातृ ऋण वाले जातक

के घर के पास या घर में कुआं होगा। घर के पास जलाशय होगा। उस कुएं में गंदगी डाली जाती होगी या जलाशय को गंदा करता होगा। हो सकता है कि जातक के घर के पास नदी-नहर बहती हो। जातक उस में गंदगी डालता होगा।

निष्कर्ष

आपकी पत्री मातृऋण से मुक्त है।

पारिवारिक ऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली पहले या आठवें खाने में बुध या केतु या दोनों बैठे हो तो रिश्तेदार का ऋण होता है।

निशानिया :

किसी की भैंस बच्चा देने को हो तो उसे मार देना या मरवा देना। किसी का मकान बनने या नीव खोदते समय जादू-टोना कर देना या रिश्तेदारों से मिलने-जुलने बालों से नफरत करना या बच्चों के जन्म दिन और परिवार में त्यौहार या खुशी के समय दूर रहना।

घटनाएं :

जातक मित्रों से धोखा करता है। किसी के बने-बनाए काम को बिगाड़ देता है या किसी की पकी हुई खेती को आग लगा देना।

निष्कर्ष

आपकी पत्री पारिवारिक ऋण से मुक्त है।

कन्या/बहन का ऋण

ग्रहचाल :

जातक की कुंडली में तीसरे या छठे खाने में चंद्रमा पड़ा हो तो बहन/लड़की का ऋण होता है।

निशानिया :

जवानी में धोखा देना, बहन/बेटी की हत्या या उस पर जुल्म करना। मासुम बच्चों को बेचना या लालच से बदल लेना/देना जिसका भेद दुनिया में कभी न खुले ऐसे रहस्मय आदि काम करना।

घटनाएं :

जातक का किसी के साथ अपनी जुबान से बुरा शब्द बोलना तलवार से अधिक गहरा घाव कर सकता है, बेटा पैदा हुआ पिता को उसके धन-दौलत, आयु पर अशुभ फल होगा या माता को पता था कि वह जान से हाथ धो बैठेगी। खुशी के साथ मातम

ससुराल-ननिहाल पर अशुभ फल, वर्ष भर की कमाई का वर्षात में घाटा हो जाना आदि।

निष्कर्ष

आपकी पत्री कन्या बहन के ऋण से मुक्त है।

पितृऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली में 2 या 5 या 9 या 12 खानों में शुक्र या बुध या राहु या तीनों में दो या तीनों ही बैठे हो तो जातक पर पितृ ऋण होता है।

निशानिया :

कुल पुरोहित बदलना या कुल पुरोहित से नाता तोड़ लेना, घर के साथ बने मंदिर को तोड़ देना। पीपल का पेड़ काटना। पीपल का पेड़ होना आदि।

घटनाएं :

परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद हो जाए। बाल सफेद होने के बाद बालों में पीलापन होना शुरू हो जाए, काली खांसी की शिकायत, हो अथवा माथे पर दुनिया की गंदी करतुतो का कलंक लगना आदि घटनाएं होती है।

निष्कर्ष

आपकी पत्री पितृऋण से मुक्त है।

स्त्री ऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली में सातवें खाने में सूर्य या चंद्रमा या राहु या तीनों में दो या तीनों ही इकट्ठे बैठे हों तो स्त्री ऋण होता है।

निशानिया :

परिवारिक पेट पर लात मारना, स्त्री को बच्चा पैदा होने या बच्चा जनने की हालत में किसी लालच में आकर मार देना। दाँतो वाले जानवरों की पालने से परिवार में नफरत का उसूल चलता होगा। मकान का गेट दरवाजा दक्षिण दिशा में होना, जीव हत्या करना, मकान या मशीनरी धोखे से ले लेना, किसी की चीज हड़प लेना उसे मुंहताज कर देना आदि।

घटनाएं :

नर संतान का फल मंदा हो जाता है, चमडड़ी में कोढ़, फलवहरी, गुप्तांग में रोग हो जाना, किसी का विवाह होना किसी मुर्दे को जलाना। एक स्त्री के साथ वैवाहिक संबंध टूटने लगे दूसरी स्त्री के साथ संबंध जुड़ने लगना अर्थात दूसरा विवाह होना आदि।

निष्कर्ष

उपाय :

आपकी पत्री स्त्री ऋण से युक्त है इसलिए परिवार में जहां तक खून का संबंध (जातक के दादा-दादी, माता-पिता, बहन, बेटी-बुआ, भाई, चाचा-ताया के परिवार के सदस्य आदि) है सबसे बराबर-बराबर धन लेकर गऊ शाला में 100 गायों को चारा खिलाएं (उसमें कोई भी गाए अंगहीन न हो) आदि।

निर्दयी ऋण

ग्रहचाल :

जन्मकुंडली में खाना नंबर 10 या 11 में सूर्य या चंद्र या मंगल या तीनों में दो या तीनों ही इकट्ठे बैठे हो तो निर्दयी ऋण होता है।

निशानिया :

मशीन या मकान की पेशगी देकर न खरीदना, परीक्षा हाल से अकारण बाहर निकाला जाना, बड़े लोगों से अकारण झगड़े या मुकदमें लड़ना आदि।

घटनाएं :

संतान और ससुराल की असमय मृत्यु, तेल या नारियल या लकड़ी या बारदाना के गोदाम में आग लग जाना। मकान खरीदा उसमें रहना नसीब नहीं, मकान खरीदे तो उसकी सिढ़ियां मुरम्मत करानी पड़े या तोड़ कर दुबारा बनानी पड़े, सांप और जहर पान की घटनाएं, हथियार से मौत होना आदि।

निष्कर्ष

उपाय :

आपकी पत्री निर्दयी ऋण से युक्त है इसलिए परिवार में जहां तक खून का संबंध (जातक के दादा-दादी, माता-पिता, बहन, बेटी-बुआ, भाई का परिवार चाचा-ताया के परिवार के सदस्य आदि) है सबसे बराबर-बराबर धन लेकर सौ अलग-अलग स्थानों की मछलियों को खाना खिलाना चाहिए।

आजन्मकृत ऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली में खाना नंबर 12 में सूर्य या शुक्र या दोनों इकट्ठे बैठे हो तो आजन्मकृत ऋण होता है।

निशानिया :

बिजली की तार लीक कर जाना, घर जल जाए, लाखों-करोड़ों पति कुछ ही समय में किसी भी तरह से तबाह हो जाये, सोना गुम या चोरी-ठगी-गबन की घटनाएं, सिर पर

जख्म या सिर की बीमारियां, बचपन से बुढ़ापे तक नालायक साबित होना, सोच समझ कर काम करने के बावजूद गरीबी और बेसहारा, दमा-मिरगी, काली खांसी, सांस की तकलीफ, अचानक मौत, मकान की दहलीज के नीचे से गंदा पानी बहना अथवा आवासीय मकान के आगे पीछे कूड़े का ढ़ेर या गन्दगी हो।

घटनाएं :

मुकदमें में फैसले पर नहक जुर्माना/कैद, ससुराल या दुनिया वालो की ठगी करना, या ऐसी ठगी करना जिससे दूसरे का परिवार या नौकरी-व्यापार नष्ट हो जाना आदि।

निष्कर्ष

आपकी पत्री आजन्मकृत ऋण से मुक्त है।

ईश्वरीय ऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली में छठे खाने में चंद्रमा हो तो ईश्वरीय ऋण होता है।

निशानिया :

कुत्ते का काटना, छत से बच्चों का गिरना या बच्चा को गाड़ी के नीचे आ जाना, कानों से बहरापन, रीढ़ की हड्डी में कष्ट, संतान पैदा न होना या होकर मर जाना, संतान सुख में बाधा, पेशाब की बिमारियां अधरंग, ननिहाल नष्ट हो जाना, यात्रा में हानि अथवा दुर्घटना हो जाना आदि।

घटनाएं :

किसी पर इतबार किया उसने धोखा दिया, कुत्तों को मारना या मरवाना, गरीब या फकीर की बददुआ लेना, बदचलनी, किसी के लड़कों को गुमराह करके बरबाद करना या करवाना, बुरी नीयत, लालच में आकर किसी का नुकसान करना आदि।

निष्कर्ष

आपकी पत्री ईश्वरीय ऋण से मुक्त है।

लाल किताब ग्रह फल

सूर्य

आपकी जन्मकुंडली में सूर्य दसवें खाने में बैठा है। इसकी वजह से आप किसी संस्था की प्रधान, जज, सरपंच, नेता भी हो सकती हैं। आप किसी से धोखा-फरेब नहीं करेंगी। सरकारी विभाग, नौकरी-व्यापार में धन-लाभ, मान-सम्मान मिलेगा। नौकर-चाकरों का अच्छा सुख मिलेगा। राज्य पक्ष से लाभान्वित होंगी। आप बहुत वहम करेंगी। सत्ता से परेशानियां भी रहेंगी। संतान पक्ष कमजोर रहेगा। 19 वर्ष की उम्र के लगभग पिता/ससुर से दूर हो सकती हैं। आपको इज्जत, सेहत और दौलत का सुख मिलेगा। परिवार में कोई व्यक्ति उच्च पद पर संस्था प्रधान या सरकार द्वारा सम्मानित होगा।

यदि आपके मकान का मुख्य दरवाजा पश्चिम दिशा में हुआ, नंगा सिर रखने की आदत रही, अपना भेद दूसरों को बताया तो आपका सूर्य मंदा हो सकता है या किसी कारण वश सूर्य मंदा हो गया हो तो सूर्य के मंदे असर से 34 वर्ष की आयु तक समय कष्टमय रहेगा। आप मशीनरी या लकड़ी से संबंधित नौकरी-व्यापार करेंगी तो हानि होगी। खानदानी विरासत और पिता का सुख कम मिलेगा। लकड़ी, लोहा, भैंसों से संबंधित व्यापार या काली चीजों के व्यापार से नुकसान होगा। आपके घुटने में दर्द हो सकता है। आपकी आंखों की नज़र और उम्र पर प्रतिकूल असर पड़ सकता है। ससुराल में रहना, ससुराल पक्ष वालों के साथ कोयले, बिजली का धंधा करने से हानि होगी।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1. अपना भेद किसी को भी न देवें।
2. सूर्य की रोशनी नंगे सिर पर न पड़े।

उपाय :

1. सिर पर सफेद या शरबती स्कार्फ/चुनरी रखें।
2. बुजुर्गी मकान में हैंड पंप लगावें।

चन्द्र

आपकी जन्मकुंडली के दूसरे खाने में चंद्रमा पड़ा है। इसकी वजह से यह आपके भाग्य को जगाता है। आप धन-संपदा से संपन्न रहेंगी। आप अपने पति के वंश की वृद्धि करेंगी। पैतृक/ससुराल सुख और संपत्ति से पूरी रहेंगी। आपके घर में लक्ष्मी की वृद्धि होगी। आपको जद्दी-जायदाद और विरासत का हिस्सा अवश्य मिलेगा। आपको वृद्धावस्था में सभी शुभ फल अवश्य मिलेंगे। बुढ़ापे में सुखकारक समय होगा। आपको भाई का सुख अवश्य मिलेगा। आप सफल प्रेमिका होंगी। आप धनवान या उच्चाधिकारी बनेंगी। आपके ससुराल की माली-हालत अच्छी होगी। पिता और ससुराल से धन-संपत्ति का लाभ मिलेगा। 48 वर्ष की आयु

तक माता/सास का सुख मिलेगा। परिवार में किसी के जुड़वा बच्चे भी पैदा हो सकते हैं। सफेद चीजों (चावल-चांदी, दूध आदि) से अधिक लाभ मिल सकता है।

यदि आपने बूढ़ी स्त्री या माता/सास का अपमान किया, पिता या ससुराल वालों को तंग करके धन प्राप्त किया, मांस-मदिरा का सेवन किया, घर में मंदिर बना कर पूजा-पाठ किया तो आपका चंद्रमा मंदा हो सकता है या किसी कारण वश चंद्रमा मंदा हो गया हो तो चंद्रमा के मंदे असर से 25 और 34 वर्ष की आयु में गरीबी का सामना करना पड़ सकता है। आप दुनियावी प्रेम संबंधों के कारण बर्बाद हो सकती हैं। आपको संतान में विघ्न या संतान का सुख देर से मिलेगा। आपको बहन का सुख नहीं मिले ऐसा संभव है। बहन-बेटी/ननद या परिवार की किसी लड़की को मिरगी का दौरा पड़ सकता है।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1. घर के मंदिर में शिवलिंग, मूर्तियां, घंटी, शंख आदि न रखें।
2. शराब और मादक वस्तुओं का प्रयोग न करें।

उपाय :

1. माता/सास या बूढ़ी स्त्री के पैर छूकर आशीर्वाद लें।
2. माता/सास से चावल-चांदी, सफेद कपड़े की थैली में लेकर पास रखें।

मंगल

आपकी जन्मकुंडली में नौवें खाने में मंगल पड़ा है। इसकी वजह से आप बड़ी ही भाग्यशाली हैं। आपको पैतृक संपत्ति का लाभ मिलेगा। आपकी 13-14 वर्ष की आयु में आपके पिता को बहुत बड़ा लाभ होगा। 28वें वर्ष की आयु में आप पूर्ण भाग्यशाली होंगी। आप एक योग्य प्रशासक होंगी। आपको धन कमाने का बहुत अच्छे अवसर मिलेंगे या अच्छी नौकरी या अच्छे व्यवसाय से धन इकट्ठा होगा। आपको परिवार के साथ रहना शुभ होगा। आपको भाई की पत्नी से लाभ होगा। बड़े भाई के साथ व्यवसाय करने से लाभ होगा। आपको होटल, मिठाई आदि के व्यवसाय से बहुत लाभ हो सकता है। आपको पैसे के लिए किसी के आगे हाथ नहीं फैलाना पड़ेगा। माता/सास की सेहत अच्छी रहेगी और उसका सुख भी प्राप्त होगा। आपको पैतृक संपत्ति मिलेगी। आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आपको सत्ता पक्ष से लाभ प्राप्त होगा। आपको धर्म-कर्म करते रहने से अच्छा फल मिलेगा। धर्म करने से तथा घर में उत्सव मनाने से भाग्य में वृद्धि होगी।

यदि आपने पिता/ससुर से झगड़ा किया या पिता/ससुर का विरोध किया, धर्म के खिलाफ काम किया, समाज विरोधी काम, भाई और भाई की पत्नी से झगड़ा किया तो आपका मंगल मंदा हो सकता है या किसी कारण वश मंगल मंदा हो गया हो तो मंगल के मंदे असर से आप कभी-कभी नास्तिकवाद की वकालत करेंगी। आप पर कोई बड़ा कलंक भी लग सकता है। आपके धर्म के विरुद्ध आचरण करने से बदनामी हो सकती है। अगर आप परदेश में रहेंगी तो

दुःखी रहेंगी। आपकी कितनी भी ताकत हो आपके पास बॉस का दर्जा हो आपको अपने से छोटे लोगों से मांग कर खाना पड़ेगा अर्थात शेर को गीदड़ से मांग कर खाना पड़ेगा, ऐसी कहावत आप पर चरितार्थ होगी। सभा समाज में आपको अपनी गलतियों द्वारा तिरस्कृत होना पड़ सकता है।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :
1. परदेश में रिहाइश न करें।
2. भाई/देवर से झगड़ा न करें।

उपाय :
1. भाई/देवर की पत्नी की सेवा करें।
2. लाल रंग का रुमाल पास रखें।

बुध

आपकी जन्मकुंडली में बुध दसवें खाने में पड़ा है। इसकी वजह से आप अपने विभाग में अधिकारी की प्रिय रहेंगी। आप व्यवहार कुशल, जीवन निर्वाह ठीक से करने वाली होंगी आप खुशामदी और नीतिशास्त्र में निपुण होंगी। आप लेखिका-संपादिका, अनेक विद्याओं की जानने वाली हो सकती हैं। ठेकेदारी के काम से धन कमाने वाली होंगी। आप पूरा धन कमाने वाली हैं। आप अव्वल दर्जे की खुशामदी होंगी। आप अपनी चिकनी चुपड़ी बातों से स्वार्थ साधना करेंगी। आप समुद्री यात्रा या विदेश की यात्रा अवश्य करेंगी। आप शरारती और मतलब परस्त होंगी। परंतु दूसरों के हां में हां मिलाने या खुशामद करने में माहिर होंगी। आप मीठी-मीठी बातें करके सबको मोहित कर लिया करेंगी। व्यापार करने से घर के लोगों की भी बरकत होगी। आप हुनरमंद और बेशर्म स्वभाव की है। 50 वर्ष की उम्र के बाद आपका जीवन अच्छा बीतेगा और आर्थिक स्थिति में सुधार हो जाएगा।

यदि आपने मादक चीजों का प्रयोग किया, हरे रंग की बोतल में विदेशी शराब या परफ्यूम आपने घर में रखा, मछली का शिकार किया तो आपका बुध मंदा हो सकता है या किसी कारण वश बुध मंदा हो गया हो तो बुध के मंदे असर से शराब-पीना और मांस खाना आपके लिए नुकसानदेह है। आपको अपनी नजर में दोष उत्पन्न हो सकता है। आप दूसरों के लिए बेवकूफ दोस्त के समान होंगी। आपकी दूसरों के साथ चालबाजी की आदत रहेगी। 48 वर्ष की आयु तक पिता/ससुर के सुख में अभाव हो सकता है।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :
1. चौड़े पत्तों का वृक्ष या तुलसी-मनीप्लांट न लगावें।

2. शराब-मछली का सेवन न करें।
3. मछली का शिकार न करें या मछली न पकड़ें।

उपाय :
1. मजदूर पेशा व्यक्ति की सेवा करें।
2. मछलियों को भोजन का हिस्सा खिलायें।

गुरु

आपकी जन्मकुंडली में वृहस्पति नौंवे खाने में पड़ा है। इसकी वजह से आप धनी होंगी अर्थात् बड़ी भाग्यशाली होंगी। आप अपने धर्म पर अडिग और वचन की पक्की होंगी परंतु आपके जीवन में कभी भी धन की कमी महसूस नहीं होगी। आपको जौहरी या सर्राफी के काम करने से बहुत लाभ होगा। आपके घर की प्रतिष्ठा बनी रहेगी। आप तीर्थ स्थान की यात्रा की शौकीन होंगी। आप धर्मात्मा, ज्योतिषी, वैद्य, सिद्ध पुरुष होंगी। आप अपने पूर्वजों के माध्यम से प्रगति के पथ पर अग्रसर होंगी। भाग्य का श्रेष्ठ प्रभाव आपके ऊपर पड़ेगा यानि 36 वर्ष की उम्र में धन की प्राप्ति होगी। आप अच्छे, सम्मानित एवं अमीर खानदान में जन्म लेंगी। आप नौकरी-व्यापार से भी धन कमाएंगी। आपकी आदतें राजाओं जैसी होंगी। आप आध्यात्मिक तौर पर योगी स्वभाव की होंगी। आपकी सेहत अच्छी रहेगी। आपके जीवन के साढ़े सोलह वर्ष, 19, 33, 49 वर्ष की आयु विशेष और धन प्राप्त करने वाली होंगी। आप तमाम दुनिया से लड़ कर अपनी किस्मत बना लेंगी अर्थात् आप स्वयं अपने भाग्य की निर्मात्री होंगी। आपकी आर्थिक स्थिति को शुभ करने के लिए भाग्य पूरा साथ देगा। आपके गृहस्थ में सुख बढ़ेंगे। इसका शुभ असर पूरे परिवार पर अच्छा रहेगा।

यदि आपने धर्म छोड़ दिया या धर्म विरोधी कार्य किये, पिता/ससुर से झगड़ा या विरोध किया, किया हुआ वायदा पूरा न किया तो आपका वृहस्पति मंदा हो सकता है या किसी कारण वश वृहस्पति मंदा हो गया हो तो वृहस्पति के मंदे असर से आपके जीवन में बुरा समय आए उससे पहले दुनिया से कूच कर जाएंगी। आप अपनी औलाद से कई बार दुःखी होंगी। आपको दिल की बीमारी की आशंका है। आपका सोना गिर जाये, चोरी हो जाये, लुट जाये, गिरवी रखे या बिक जाएगा यह बहुत अशुभ लक्षण है। आलस्य करने से आपके महत्वपूर्ण कार्य अधूरे रह जाएंगे।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :
1. दिया हुआ वचन पूरा करें।
2. सोना गिरवी न रखें, गुम होने से बचायें।

उपाय :
1. गंगा स्नान करें (हर महीने में एक बार 9 महीने लगातार)।
2. धर्म की पालना करें।

शुक्र

आपकी जन्मकुंडली के दसवें खाने में शुक्र पड़ा है। इसकी वजह से आप लोभी और शक्की होंगी। आप दस्तकारी के कामों में रुचि लेंगी। आप शक्ति संपन्न होंगी। आप कामुक होंगी। आप कामवासना के आधीन रहेंगी। आपकी सेहत अच्छी रहेगी। आप बाग-बगीचों की मालकिन होंगी। आप अपने जीवन में दुर्घटना की शिकार नहीं होंगी। आपको अच्छा धन प्राप्त होगा। बुढ़ापा आराम से बीतेगा। आपका स्वास्थ्य ठीक रहेगा। आपकी जवानी प्रेम संबंधों में उलझी रहेगी। आपकी चालाकी, शैतानी और होशियारी की अधिकता से अधिक लाभ, आंशिक क्षति भी हो सकती है। आपके पति का स्वास्थ्य लगभग ठीक रहेगा। पति के साथ रहते आपके साथ कभी भी कोई हादसा नहीं होगा।

यदि आपने शराब, बीयर आदि पीना और मांस खाना शुरु किया, मछली का शिकार किया, पति पर अधिक विश्वास किया तो आपका शुक्र मंदा हो सकता है या किसी कारण वश शुक्र मंदा हो गया हो तो शुक्र के मंदे असर से आपको पति से दब कर रहना होगा। पराये पुरुष से संबंध रहने से संतान को दुःख पहुंचेगा। संतान सुख के लिए जीवन में बाधा आ सकती है। विवाह के 13 वर्ष बाद पति बीमार हो सकते हैं या पति अस्वस्थ रहेंगे जिसके कारण आपको दुःख भी झेलने पड़ सकते हैं। आपको पेशाब की बीमारी हो सकती है।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1. शराब-मछली का सेवन न करें।
2. महबूबा मिजाज न बनें।

उपाय :

1. कपिला गाय का दान करें।
2. पति शरीर पर दूध-दही मल कर स्नान करें।

शनि

आपकी जन्मकुंडली में शनि दूसरे खाने में पड़ा है। इसकी वजह से आपको पैतृक संपत्ति और ससुराल से लाभ रहेगा। आप मान-प्रतिष्ठा से युक्त होंगी। आप ईश्वर भक्त और पूजा-पाठ करने वाली होंगी। आप आजन्म मुखिया बनी रहेंगी। कमाई और खर्चा बराबर होगा। आप अपने पहले पुत्र का लालन-पालन अपने पिता को सौप दें तो आपके लिए फायदेमंद होगा। आपको जीवन में जीने की इच्छा प्रबल रहेगी। आप बाहर से देखने में प्रभावशाली नहीं लगेंगी परंतु आप शक्ति और अक्ल में बहुत बलवान होंगी। कभी-कभी आप इस दुनिया से सन्यास लेने को भी उत्सुक हो सकती हैं। आपको माता/सास का पूर्ण सुख मिलेगा। पिता/ससुर के सुख में न्यूनता आ सकती है। आप में अक्ल की बारीकी और आध्यात्मिक शक्ति होगी। कोयला, चमड़ा, मकान-मशीनरी के कामों से अधिक लाभ होगा।

यदि आपने मादक चीजों-द्रव्यों का सेवन किया, सांप को मारा या सांप के जहर बेचने या प्रयोग करने से संबंधित कार्य किये या कानी भैंस पाली तो आपका शनि मंदा हो सकता है या किसी कारण वश शनि मंदा हो गया हो तो शनि के मंदे असर से आप विचारों की कच्ची, मुर्दादिल और पस्त हौसले वाली होंगी। 28वें और 39वें वर्ष की आयु रोग और बीमारी में बीत सकती है। आपकी किसी के साथ दुश्मनी भी हो सकती है। आपका तंबोला आदि खेलना आपके ससुराल के लिए बुरा हो सकता है। आपके विवाह के समय ससुराल में अग्निकांड हो सकता है। विद्या अधूरी रहे, ऐसी आशंका है। सगाई के दिन से ससुराल को हानि होना शुरु हो जायेगा।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1. माथे पर तिलक की जगह सरसों तेल न लगावें।
2. सांपों को न मारें।

उपाय :

1. नंगे पैर धर्म स्थान में जावें।
2. सांप को दूध पिलावें।

राहु

आपकी जन्मकुंडली में राहु चौथे खाने में पड़ा है। इसकी वजह से आप सर्वगुण संपन्न, धनवान, और आयुवान होंगी। आप तीर्थ यात्रा करेंगी। आप एक भद्र महिला होंगी तथा अपना जीवन सुख से बितायेंगी। आप अपार धन-संपत्ति की मालकिन बनेंगी। आपको अपने सगे संबंधियों से भी धन-दौलत प्राप्त होगा। आप दूसरों की भलाई करेंगी आप भली महिलाओं की गिनती में गिनी जाएंगी। आप धर्मात्मा, वाहन सुख से युक्त होंगी। आप अपनी बहन और पुत्री पर धन खर्च करेंगी। आपको ससुराल से भी धनागम होता रहेगा। आपको सरकार पक्ष से पूरा लाभ होगा तथा अपने बुजुर्गों का घर भर देंगी। ससुराल में भी धन की वृद्धि होगी। आप के पास 24 वर्ष की उम्र के बाद धन एकत्र होगा, गरीबी दूर हो जाएगी और धन की वर्षा होगी। आपके पिता/ससुर और आपके पुत्र पर अच्छा असर पड़ेगा परंतु माता/सास के लिए अशुभ होगा। आपके पास भूमि, भवन, वाहन सभी प्रकार के सुख के साधन उपलब्ध होंगे। यदि आप सरकारी महकमे में कार्यरत होंगी तो सरकारी महकमे में बड़ी अफसर होकर अच्छा ओहदा प्राप्त करेंगी। आप जन्म भर सुखी रहेंगी। बंदूक-पिस्तौल आदि रखने का शौक होगा।

यदि आपने पाखाने की जगह बदली, घर की छत पर लकड़ी के कोयले रखे, सीढ़ियों के नीचे रसोई बनाई, पिता की आयु के पुरुषों से संबंध रखे तो आपका राहु मंदा हो सकता है या किसी कारण वश राहु मंदा हो गया हो तो राहु के मंदे असर से आपके जीवन का 34वां वर्ष कष्टकारी होगा। माता/सास को कष्ट की आशंका है। आप माता/सास का विरोध करेंगी। ससुराल-ननिहाल के लिये अशुभ रहेगा, राजदरबार में हानि, दो विवाह योग या पति के

साथ परपुरुष से संबंध रहे, ऐसी शंका है। पर पुरुष पर धन बर्बाद करके अपना जीवन नष्ट कर लेंगी। आपको वाहन दुर्घटना का भय रहेगा। दिन में स्वप्न देखने वाली होंगी।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :
1. पिता समान आयु के पुरुष से अवैध संबंध स्थापित न करें।
2. गंगा नदी में स्नान न करें।

उपाय :
1. घर पर गंगा जल से स्नान करें।
2. सूखा धनिया जल प्रवाह करें।

केतु

आपकी जन्मकुंडली में केतु दसवें खाने में पड़ा है। इसकी वजह से आप धनवान, नौकर-चाकरों से युक्त, उत्तम सुख से परिपूर्ण तथा अपने पथ पर अग्रसर रहने वाली होंगी। आप इतने अच्छे मुकद्दर की हैं कि आप मिट्टी छुएं तो सोना हो जाता है। 24 वर्ष की उम्र के बाद संतान प्राप्ति योग होगा। आपकी कन्या संतान से सुख और पुत्र संतान से मध्यम सुख संभव है। आपको पुत्र का सुख प्राप्त होने की आशंका है। आप खेल जगत में विश्व प्रसिद्ध बन कर ख्याति प्राप्त कर सकती हैं। आपके धन में बढ़ोत्तरी होगी। निर्धनता कभी भी नहीं आएगी। आप शक्की स्वभाव की हैं। आपके जीवन में 48 वर्ष आयु तक समय तो मिला-जुला फल देगा। इसके बाद का समय बहुत ही शुभ और सुखकारक सिद्ध होगा। आपकी आर्थिक स्थिति पर कोई विशेष बुरा प्रभाव नहीं पड़ेगा। कुल मिला-जुला कर आपका जीवन सुखमय ही रहेगा।

यदि आपने अपने भाई से झगड़ा किया, परपुरुषों से अनैतिक संबंध रखे तो आपका केतु मंदा हो सकता है या किसी कारण वश केतु मंदा हो गया हो तो केतु के मंदे असर से आपका चाल-चलन ढीला हो तो पुत्रियां अधिक होने की संभावना रहती है। निःसंतान या संतान गोद लेने का योग होता है और जिससे आपको बहुत ही पीड़ा भोगनी पड़ सकती है। आपके भाई आपको गढ्ढे में धकेल सकते हैं या आपके धन का दुरुपयोग करेंगे। पराये पुरुष से संबंध आपके दांपत्य सुख में बाधा पहुंचा सकते हैं। आपके जीवन के लिए घातक और मौत का कारण सिद्ध हो सकते हैं। 48 वर्ष के लगभग पुत्र सुख मिले या माता/सास की आंखें खराब होने पर या माता/सास की मौत के बाद पुत्र जन्म हो ऐसी संभावना है। धन का अपव्यय या अवनति होगी।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :
1. चाल-चलन ठीक रखें।

2. कुत्तों से नफरत न करें।

उपाय :

1. मकान की नींव में चांदी के बर्तन में शहद भर कर रखें।
2. घर में चांदी के बर्तन में शहद भर कर रखें।

लाल किताब के उपाय

लाल किताब के उपाय कब और कैसे करें !

1. उपाय सूर्य निकलने के बाद सूर्य छिपने तक दिन के समय करें, रात के समय उपाय करना कई बार अशुभ फल दे सकता है। केवल चन्द्र ग्रहण का उपाय रात को किया जा सकता है।

2. उपाय शुरू करने के लिए किसी खास दिन सोमवार या मंगलवार आदि, सक्रांति, अमावस्या या पूर्णिमा आदि का कोई विचार नहीं होगा।

3. आप का कोई खून का संबंधी रिश्तेदार जैसे भाई-बहन, माता-पिता, दादा-दादी, पुत्र-पुत्री आदि में से उपाय कर सकता है जो फलदाई होगा।

4. एक दिन में केवल एक ही उपाय करें, एक दिन में दो उपाय करने से शुभ फल नहीं मिलता या किया हुआ उपाय निष्फल हो सकता है।

5. जो परहेज बताए जाये जैसे मांस-मछली न खावें, मदिरा का सेवन न करें, चाल-चलन ठीक रखें, झूठ न बोलें, जूठन न खावें न खिलावें, नियत में खोट न रखें, परस्त्री-परपुरुष से संबंध न करें, आदि का विशेष ध्यान रखें।

6. जो उपाय जिस समय के लिये लिखा है उसी समय तक करें, आगे यह उपाय बंद कर देवें।

7. यदि किसी कारण उपाय बीच में बंद करना पड़ जाय तो जिस दिन उपाय बन्द करना है उससे एक दिन पहले थोड़े से चावल दूध से धोकर सफेद कपड़े में बांध कर पास रख लें और जब दुवारा उपाय शुरू करना हो वह चावल धर्म स्थान में या चलते पानी में या किसी बाग-बगीचे आदि में गिरा कर उपाय फिर शुरू कर दें। ऐसा करने से उपाय अधूरा नहीं माना जाएगा और पूरा फल मिलेगा।

8. हर उपाय 43 दिन या 43 सप्ताह या 43 मास या 43 वर्ष तक करना होता है, उपाय चलते समय बीच में टूट जाए चाहे 39वां दिन क्यों न हो सब निष्फल हो सकता है या शुभ फल में कमी रह सकती है।

9. जन्म कुण्डली में अशुभ ग्रहों का वर्षफल कुण्डली में उपाय अपने जन्मदिन से लेकर 40-43 दिन के भीतर ही करें ।

10. घर में कोई सूतक (बच्चा जन्म हो) या पातक (कोई मर जाय) हो जाय तो 40 दिन उपाय नहीं करने चाहिये ।

11. बुजुर्गों के रीति -रिवाजों को न तोडें और संस्कार पूरें करें ।

इस वर्ष मीन राशि के शनि अष्टम भाव में रहेंगे। 25 नवम्बर तक कुम्भ राशि के राहु सप्तम भाव में रहेंगे और उसके बाद मकर राशि में षष्ठ भाव में गोचर करेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में मिथुन राशि केगुरु एकादश भाव में रहेंगे और 2 जून को कर्क राशिमें द्वादश भाव में गोचर करेंगे और फिर से अतिचारी होकर 31 अक्टूबर को सिंह राशिमें लग्न स्थान में प्रवेश कर जाएंगे। इस वर्ष मंगल ग्रह अपनी सरल गति से गोचर करेंगे। वर्षारम्भ से 1 फरवरी तक शुक्र अस्त रहेंगे और अक्टूबर में भी 14 दिन के लिए अस्त होंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ सामान्यरहेगा। शनि एवं राहु का गोचर प्रतिकूल होने के कारण आपको कार्यक्षेत्र में सफलता नहीं मिलेगी। गुप्त शत्रु व बिरोधी आपके कार्यों में रुकावटें डालने की कोशिश करेंगे। व्यापार को लेकर मानसिक परेशानी बनी रहेगी। इस समय के अंतराल मेंजल्द ही किसी पर भी विश्वास न करें और न हीजल्दबाजी में कोई महत्वपूर्ण निर्णय लें।

02जून के बाद समय और प्रभावित हो रहा है। उस समय आपके साथ धोखा या व्यापार में हानि हो सकती है। सोच को सकारात्मक बनाए रखें, क्योंकि वर्षान्त में राहु एवं गुरु ग्रह का गोचर एक साथ अनुकूल हो रहा है। उस समय आपको अपने व्यापार व कार्यक्षेत्र में लाभ मिलना शुरु हो जाएगा।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्धसामान्य रहेगा। एकादशस्थ गुरु के प्रभाव से धनागम बना रहेगा। आपको भाइयों का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा। 02 जून के बाद समय का काफी प्रतिकूल हो रहा है।जीवनसाथी की बीमारी में आपका धन व्यय होगा। साथ ही कुछ ऐसे खर्च आजाएंगे जिससे आपका बजटबिगड़ सकता है।

किसी प्रकार के जोखिम भरे कार्यों में धन निवेश न करें। लेन देन के मामले में हमेशा सावधान रहें। 31 अक्टूबर के बाद समय अनुकूल हो जाएगा।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टि सेयह वर्षसामान्य रहेगा। वर्षारम्भ में अधिक व्यस्तता के कारण अपने परिजनों को अधिक समय नहीं दे पाएंगेपरन्तु आपके परिवार में सुख शान्ति का वातावारण बना रहेगा। भाईयों का सहयोग प्राप्त होगा। तृतीय स्थान पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से आपकी सामाजिक पद व प्रतिष्ठि में वृद्धि होगी।

02 जून के बाद गुरु ग्रह का गोचर प्रतिकूल हो रहा है। उस समय परिवार में किसी बड़े व्यक्ति के साथ आप का वैचारिक मतभेद उत्पन्न हो सकता है। अतः अच्छा यही होगा की आप अपनी सहन शक्ति को बढ़ाएं और उचित निर्णय लें। सप्तमस्थ राहु जीवनसाथी का

स्वास्थ्य प्रभावित कर सकता है।

संतान

संतान की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध अनुकूल रहेगा। पंचम स्थान परगुरु ग्रह केदृष्टि प्रभाव से आपके बच्चों की उन्नति होगी। वे अपने बौद्धिक बल से अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे। उनकी शिक्षा में भी सुधार होगा। नवविवाहित व्यक्तियों के गर्भाधान के लिए बहुत सुन्दर समय चल रहा है। आपके बच्चे का चौमुखी विकास होगा। उसकी उन्नति के सारे मार्ग प्रशस्त होंगेपरन्तु आपके दूसरे बच्चे के लिए समय अच्छा नहीं चल रहा है।

06 जून के बाद समय प्रभावित हो रहा है। आपके बच्चे को स्वास्थ्य संबंधित परेशानी हो सकती है जिससे कारण उसकीशिक्षा-दीक्षा प्रभावित हो सकती है परन्तु 31 अक्टूबर के बाद समय फिर से अनुकूल हो जाएगा।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध सामान्य रहेगा। शनि एवं राहु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण स्वास्थ्य संबंधित परेशानी उत्पन्न कर सकता है। अचानक स्वास्थ्य खराब हो सकता है परन्तु एकादशस्थ गुरु के प्रभाव से आप जल्दी अच्छे हो जाएंगे।

02 जून के बाद छोटी मोटी बीमारियों से आपका स्वास्थ्य प्रभावित हो सकता है। आर्थिक मुद्दे या किसी और मुद्दे को ले कर आवश्यकता से ज्यादा चिंता न करें। नहीं तो इन सबका नकारात्मक प्रभाव आपके सेहत पर पड़ेगा। द्वादशस्थ गुरु के जल तत्व राशि में होने के कारण कफ रोग या मौसमजनित बीमारियां हो सकती हैं। सुबह-सुबह व्यायाम करना या योग करना आपके लिए लाभप्रद सिद्ध होगा। 31 अक्टूबर के बाद आपका स्वास्थ्य अनुकूल होना शुरु हो जाएगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

वर्ष का पूर्वार्द्ध विद्यार्थियों के लिए अनुकूल रहेगा। पंचम स्थान परगुरु के दृष्टि प्रभाव से उच्च शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों का अच्छे शैक्षणिक संस्थान में प्रवेशहो जाएगा। व्यवसायिक शिक्षा प्राप्त करने वाले व्यक्तियों को अधिक परिश्रम के बाद सफलता मिलेगी।

02 जून के बाद समय प्रतिकूल हो रहा है। उस समय प्रतियोगिता पारीक्षार्थियों को प्रतियोगिता परीक्षा में सफलता प्राप्त करने के लिए लगातार अथक प्रयास करना पड़ेगा। जिन व्यक्तियों को अभी तक नौकरी नहीं मिली है उनको कुछ दिन और इंतजार करना पड़ सकता है। 24 नवम्बर के बाद छठे स्थान में राहु ग्रह का गोचर हो रहा है। उस समय आपको अपने करियर में सफलता प्राप्त होगी।

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष अनुकूल रहेगा। वर्ष के प्रारम्भ में छोटी-मोटी यात्राएं तो होती रहेंगी। साथ ही 02 जून के बाद द्वादश स्थान केगुरु आपको विदेश यात्रा करा भी सकते

है।

चतुर्थ स्थान पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से अपने घर से दूर रहने वाले जातकों की अपनी जन्म भुमि की यात्रा होगी।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्य के लिए यह वर्ष अच्छा रहेगा। एकादशस्थ गुरु के प्रभाव से आपका मन पूजा-पाठ के प्रति ज्यादा आकर्षित रहेगा। परमात्मा की भक्ति या मन्त्र पाठ में ज्यादा रूचि लेंगे। 02 जून के बाद गुरु का गोचर द्वादश स्थान में होगा। उस समय आप दान पुण्य अधिक करेंगे।

- द्विज, देव, ब्राह्मण, बुजुर्ग, गुरु व मंदिर के पुजारी की सेवा, सुश्रुषा करें।
- पीली दाल, केला व बेसन की मिठाई मंदिर में दान करें एवं गुरुवार का व्रत रखें।
- शनिवार के दिन काली वस्तु अथवा काला कम्बल दान करें।
- गरीबों को भोजन कराएं।

मासिक फलादेश

जनवरी 2026 के लिए फलादेश

इस महीने में आप शुभ फलों को अधिक मात्रा में अर्जित करेंगी।अतः आपकी बुद्धि में वृद्धि होगी तथा आपके सभी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य बुद्धिमता पूर्ण ढंग से सम्पन्न होंगे। इस मास में संतति पक्ष से आप सुख प्राप्त करेंगी तथा अन्य प्रकार से भी द्रव्य लाभ होगा। इस समय आपके प्रभुत्व एवं पराक्रम में वृद्धि होगी तथा सभी लोग आपका हार्दिक सम्मान करेंगे। आपके अधिकाशं शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य इस मास में सम्पन्न हो जाएंगे साथ ही कोई शुभ समाचार भी आपको सुनने के लिए मिलेगा। देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आपके मन में श्रद्धा की भावना उत्पन्न होगी तथा नियम पूर्वक आप इनकी पूजा तथा सेवा करेंगे।सरकार या उच्चाधिकार प्राप्त वर्ग से आप आश्रय प्राप्त करेंगी तथा इनसे आपको वांछित लाभ भी प्राप्त होगा। इसके सअतिरिक्त समाज में आपकी प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी एवं आपके मन की इच्छाएं भी पूर्ण होगी जिससे आप शान्त एवं सन्तुष्ट रहेंगी।

साथ ही इस मास में आप पति तथा पुत्र से पूर्ण सुख एवं सहयोग अर्जित करेंगी। इस समय आप नवीन वस्त्रों की भी प्राप्ति करेंगी एवं स्वर्णादि के आभूषणों को अर्जित करने में भी सफल रहेंगी। इस प्रकार यह महीना आपके लिए अत्यंत ही सुख एवं प्रसन्नता प्रदान करने वाला सिद्ध होगा तथा चारों तरफ से आपको खुशी प्राप्त होगी।

फरवरी 2026 के लिए फलादेश

इस मास में आप सामान्यतया अशुभ फल ही अधिक मात्रा में प्राप्त करेंगी। इस समय आपका स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहेगा फलतः आप शारीरिक रूप से दुर्बल रहेंगी साथ ही आपके शत्रु भी आपसे अधिक बलवान होंगे अतः उनकी ओर से भी आप भयभीत एवं चिन्तित रहेगी जिससे आप मानसिक रूप से बैचेन रहेंगी। इस समय आपके घर में कोई चोरी भी हो सकती है अतः इससे भी सावधान रहें। इस मास आपको अपने उच्चाधिकारी वर्ग की आज्ञा का पालन करना चाहिए तथा किसी भी प्रकार से उनकी उपेक्षा नहीं करनी चाहिए अन्यथा आपको वे दण्डित भी कर सकते है। आपके शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य इस समय अल्प मात्रा में ही सिद्ध होंगे। साथ ही अनावश्यक एवं अधिक मात्रा में धन का व्यय होगा जिससे आपकी आर्थिक स्थिति कमजोर होगी। इस मास में आपका अपने संबधियों एवं मित्रों से तनाव रहेगा तथा समाज से आप अपने को उपेक्षित महसूस करेंगी। इसके अतिरिक्त आपकी आशाएं भी इस समय अल्प मात्रा में ही पूर्ण हो सकेंगी।

साथ ही इस मास में आप वायु रोगों से पीड़ित रहेंगी तथा किसी ऐसे कार्य को भी सम्पन्न करेंगी जिससे आपकी प्रतिष्ठा प्रभावित होगी एवं बाद में आपको पश्चाताप करना पड़ेगा। इस समय अग्नि से भी आप धन हानि प्राप्त कर सकती है अतः सावधानी पूर्वक समय को व्यतीत करें।

मार्च 2026 के लिए फलादेश

इस महीने में आप कष्ट एवं परेशानियां ही अधिक मात्रा में प्राप्त करेंगी। अतः पति एवं बन्धु जनों से आप कष्ट प्राप्त करेंगी एवं दुश्मनों की ओर से भी आप भयभीत तथा चिन्तित रहेंगी फलतः आपके मन में बैचेनी का भाव विद्यमान रहेगा। इस मास में आप उत्साह पूर्वक किसी भी कार्य को सम्पन्न करने में असफल रहेंगी तथा धन का व्यय भी अधिक मात्रा में होगा फलतः आपको आर्थिक संकट से भी गुजरना पड़ेगा। इस समय आपका स्वास्थ्य भी अच्छा नहीं रहेगा एवं मन में लोलुपता के भाव की वृद्धि होगी। अपने बन्धु एवं मित्रों से आपके संबधों में मधुरता नहीं रहेगी तथा परस्पर अनावश्यक वैमनस्य एवं तनाव का वातावरण रहेगा। साथ ही ऐसे समय में आपके मित्र भी शत्रु की तरह वर्ताव करेंगे। इसके अतिरिक्त सामाजिक जनों से भी वाद विवाद होते रहेंगे। अतः आप अत्यत ही अशान्ति की अनुभूति करेंगी।

साथ ही इस मास में आप वातोत्पन्न रोगों से कष्टानुभूति प्राप्त करेंगी तथा इस समय किसी ऐसे कार्य को भी कर सकती हैं जिससे आपकी प्रतिष्ठा में न्यूनता आएगी तथा उसके लिए बाद में पश्चाताप करेंगी। इसके अतिरिक्त अग्नि के द्वारा भी आप किसी प्रकार की हानि प्राप्त कर सकती है अतः सावधानी पूर्वक अपने कार्य कलापों को सम्पन्न करना चाहिए।

अप्रैल 2026 के लिए फलादेश

इस मास में आप शुभाशुभ फलों को प्राप्त करेंगी तथा मध्यम रूप से आपका यह समय व्यतीत होगा। इस समय आपके शत्रु बलवान रहेंगे अतः उनसे आप चिन्तित तथा भयभीत रहेंगी। साथ ही घर में चोरी आदि होने की भी संभावना रहेगी। इस मास में आपका व्यय भी अधिक होगा फलतः आर्थिक स्थिति कमजोर रहेगी धर्म के प्रति भी आपके मन में विशेष श्रद्धा का भाव नहीं रहेगा। साथ ही शारीरिक रूप से आप अस्वस्थ एवं परेशान रहेंगी जिससे शारीरिक बल में न्यूनता आएगी। इस प्रकार आप कई प्रकार से शारीरिक एवं मानसिक कष्ट प्राप्त करेंगी इस मास में आपकी दूर या समीप की यात्रा भी हो सकती है तथा आपके शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य विध्न बाधाओं के कारण पूर्ण रूप से सफल नहीं होंगे। इसके अतिरिक्त मुकद्दमे आदि में भी आपके धन का अपव्यय हो सकता है। अतः बुद्धिमता से अपने कार्य कलापों को सम्पन्न करें।

परन्तु इस मास में आप अशुभ फलों के साथ शुभ फल भी अर्जित करेंगी तथा इस समय पति एवं पुत्र से आप पूर्ण सहयोग तथा सुख प्राप्त करेंगी ।नवीन वस्त्र या आभूषण आदि की भी प्राप्ति हो सकेगी जिससे आप प्रसन्नता की अनुभूति करेंगी।

मई 2026 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए सामान्यतया अच्छा ही रहेगा तथा अशुभ फल अल्प मात्रा में ही घटित होंगे। इस समय आप प्रचुर मात्रा में धन को अर्जित करेंगी जिससे आपकी आर्थिक स्थिति सुदृढ़ रहेगी तथा आपके उच्चाधिकारी भी आपसे पूर्ण प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगे। इस समय आप अपने घर में किसी धार्मिक उत्सव का आयोजन भी कर सकती है। संतति पक्ष से

आप निश्चिंत रहेंगी तथा उनसे आपको पूर्ण सुख एवं सहयोग मिलेगा। आपकी धार्मिक श्रद्धा में इस समय वृद्धि होगी एवं देवताओं तथा ब्राहमणों का आप हार्दिक पूजन तथा सम्मान करेंगी। साथ ही समाज में आपकी मान एवं प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी तथा दूर दूर तक आपका यश भी फैलेगा। इस मास में आपके शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य सफल होंगे जिससे आपकी भाग्योन्नति होगी। आपकी बुद्धि में भी निर्मलता का भाव रहेगा तथा यात्रा से आप लाभ अर्जित करेंगी। मित्रों एवं बन्धुओं से आप पूर्ण सहयोग एवं सम्मान प्राप्त करेंगी इसके अतिरिक्त समाज में आप सम्पन्न एवं प्रतिष्ठित महिला के रूप में जानी जाएंगी।

साथ ही शुभ फलों के साथ साथ इस मास में आपको अशुभ फलों की भी प्राप्ति होगी।अतः आप गर्मी या पित दोष के द्वारा शारीरिक रूप से कष्टानुभूति प्राप्त करेंगी तथा इस समय रूधिर विकार का योग भी बनता है अतः सावधानी पूर्वक अपने कार्य कलापों को सम्पन्न करें तथा शारीरिक सुरक्षा के प्रति सर्तक रहें।

जून 2026 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए अत्यंत ही शुभ एवं प्रसन्नता प्रदान करने वाला सिद्ध होगा। इस समय आपके कार्य क्षेत्र में उन्नति होगी तथा समाज में पूर्ण मान तथा प्रतिष्ठा भी प्राप्त करेंगी।साथ ही उच्चाधिकारी वर्ग भी आपसे पूर्ण प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगे तथा इनसे आप पूर्ण सहयोग तथा सम्मान प्राप्त करेंगी। अपने मित्रों एवं बन्धुजनों से आपके इस मास मधुर संबध रहेंगे तथा इनसे आप पूर्ण सुख तथा सहयोग भी अर्जित करेंगी। साथ ही इनके परोपकार संबधी कार्यो को करने में भी तत्पर रहेंगी आपके रूके हुए कई शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य भी इस मास में सम्पन्न होंगे जिससे आप हार्दिक प्रसन्नता एवं सन्तुष्टि प्राप्त करेंगी। देवता तथा ब्राहमणों के प्रति आपके मन में पूर्ण श्रद्धा रहेगी तथा नियम पूर्वक आप इनकी पूजा तथा सेवा करेंगी। संतति पक्ष से आप सुखी रहेंगी एवं बन्धु वर्ग से आपकी प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। इसके अतिरिक्त आपकी मनोकामनाएं भी इस समय पूर्ण होंगी जिससे आप मानसिक रूप से सन्तुष्ट रहेंगी।

साथ ही इस मास में पति से आपको पूर्ण सुख प्राप्त होगा तथा आपकी बुद्धि में निर्मलता के भाव की वृद्धि होगी। आप इस समय धनार्जन करने में पूर्ण रूप से सफल रहेंगी तथा श्रद्धा पूर्वक धर्म का पालन करेंगी। इस प्रकार समाज में आपकी यश तथा प्रतिष्ठा में नित्य वृद्धि होती रहेगी।

जुलाई 2026 के लिए फलादेश

इस मास को आप सुख एवं प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत करने में सफल रहेंगी। इस समय सौभाग्य से आप युक्त रहेंगी एवं पति से पूर्ण सुख एवं सहयोग प्राप्त करने में सफल रहेंगी। सरकार या उच्चाधिकारी वर्ग से भी आप वांछित सहयोग तथा लाभार्जन करेंगी। आपका स्वास्थ्य इस समय उत्तम रहेगा तथा मन में भी पूर्ण शान्ति रहेगी। अध्ययन या ज्ञानार्जन में आप रूचिशील रहेंगी तथा इसमें सफलता भी प्राप्त करेंगी। मित्रों तथा बन्धुजनों से आपके मधुर संबध रहेंगे तथा उनके मध्य आप उचित सम्मान तथा प्रतिष्ठा प्राप्त करेंगी तथा उनका पूर्ण

सहयोग तथा सुख अर्जित करेंगी। इस मास में आप वांछित द्रव्यों को भी प्राप्त करेंगी जिससे प्रसन्नता की अनुभूति करेंगी। संतति पक्ष से भी आपको पूर्ण सुख तथा सहयोग प्राप्त होता रहेगा इसके अतिरिक्त आपकी अपूर्ण मनोकामनाएं भी इस समय पूर्ण होगी।

साथ ही इस मास में आप पति से पूर्ण सहयोग एवं सुख प्राप्त करेंगी तथा उनसे आपको अपेक्षित सहयोग भी मिलता रहेगा। आपकी बुद्धि इस समय निर्मल रहेगी तथा उचित धन लाभ एवं सुखार्जन करने में आप सफल रहेंगी। इसके अतिरिक्त इस मास में धार्मिक उत्सव या कार्यक्रम का आयोजन भी कर सकती हैं।

अगस्त 2026 के लिए फलादेश

इस मास में आप शुभाशुभ फल प्राप्त करेंगी अतः यह समय आपके लिए मध्यम रहेगा। इस समय आप व्यय अधिक मात्रा में करेंगी तथा दुष्ट मनुष्यों की संगति भी प्राप्त करेंगी इसलिए आपकी आर्थिक स्थिति भी कमजोर होगी फलतः मानसिक रूप से भी आप अशान्त रहेगी। आपका स्वास्थ्य भी इस मास में विशेष अच्छा नहीं रहेगा तथा शारीरिक बल में न्यूनता आएगी। इस समय आपके समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य अत्यधिक परिश्रम के बाद भी अल्प मात्रा में ही सफल होंगे। धर्म के प्रति आपके मन में उपेक्षा रहेगी तथा देवता एवं ब्राहमणों का आप उचित पूजन तथा सम्मान नहीं करेंगी। साथ ही अन्य प्रकार से भी हानि के योग बनेंगे। अपने मित्रों तथा संबधियों से आपके विशेष मधुर संबध नही रहेंगे तथा कार्य क्षेत्र में अनावश्यक बाधाएं आएंगी। इस समय शत्रु पक्ष के प्रबल होने से आप उनसे भय त्रस्त एवं चिन्तित रहेगी तथा जिस कार्य को प्रारंभ करेंगी उसमें असफलता ही प्राप्त होगी।

साथ ही इस मास में अशुभ फलों के साथ साथ शुभ फल भी प्राप्त होंगे। अतः पति तथा पुरूष वर्ग से आप सहयोग तथा लाभार्जन करने में सफल रहेंगी तथा बुद्धि में निर्मलता के भाव की वृद्धि होगी। इस समय उचित लाभ तथा सुखार्जन करने में भी आप सफल रहेंगी। इसके साथ ही समाज एवं सामाजिक जनों में आप की प्रतिष्ठा एवं यश व्याप्त रहेगा।

सितम्बर 2026 के लिए फलादेश

इस मास में आप शुभ फल प्राप्त करने में सफल रहेंगी। इससे आपका शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा रहेगा तथा मन से भी आप शान्त रहेंगी। इस समय आपके पराक्रम में वृद्धि होगी तथा शत्रु पक्ष को पराजित करने में आप सफल रहेंगी। साथ ही आपके आय स्त्रोंतो में भी उन्नति तथा वृद्धि होगी। फलतः इस मास में आपकी आर्थिक स्थिति अच्छी रहेगी। इसके साथ ही व्यापार या नौकरी के अतिरिक्त आप अन्य स्त्रोंतो से भी लाभार्जन करेंगी। इस मास में आप भाग्योदय संबधी कार्य को सम्पन्न करेंगी जिससे आपके मान सम्मान में वृद्धि होगी तथा रूके हुए शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य भी इस मास में सफल हो जाएंगे। अपने मित्रों एवं बन्धु वर्ग से आपके मधुर संबध रहेंगे एवं उनसे पूर्ण सुख तथा सहयोग भी अर्जित करेंगी।

इसके साथ ही इस मास में आपके श्रेष्ठ जन तथा उच्चाधिकारी आपसे प्रसन्न रहेंगे एवं आप उनसे पूर्ण सहयोग अर्जित करेंगी। इस समय आजिविका संबधी कार्य में भी

उन्नति होगी तथा दूर समीप की यात्रा भी कर सकती हैं। इसके अतिरिक्त आप इस समय नवीन वस्त्रों तथा द्रव्यों को भी प्राप्त कर सकेंगी। अतः यह मास आप प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत करेंगी।

अक्तूबर 2026 के लिए फलादेश

इस मास में आप शान्ति एवं सुख पूर्वक अपना समय व्यतीत करेंगी। अतः आप उत्साह एवं परिश्रम से धनार्जन करेंगी एवं अपनी आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ करने में सफल रहेंगी।साथ ही समाज में आपकी मान एवं प्रतिष्ठा में भी पूर्ण वृद्धि होगी तथा बन्धु एवं मित्र वर्ग से भी आप वांछित सुख एवं सहयोग अर्जित करेंगी तथा इनसे आपके संबध भी मधुर रहेंगे। उच्चाधिकारी वर्ग से भी आपको आश्रय मिलेगा तथा उनसे पूर्ण सहयोग एवं लाभार्जन करेंगी। इस मास में आप मिष्ठान का उपभोग भी अधिक मात्रा में करेंगी। इस समय आपका शारीरिक स्वास्थ्य उत्तम रहेगा एवं शारीरिक बल में भी वृद्धि होगी। साथ ही आपका शत्रु वर्ग भी इस समय आपसे पराजित एवं भयभीत रहेगा। इसके अतिरिक्त व्यापारादि कार्यों में भी आपको प्रचुर मात्रा में लाभर्जन होता रहेगा।

साथ ही इस मास में आप पति से पूर्ण सुख प्राप्त करेंगी एवं पुरूष वर्ग से आप उचित सहयोग एवं लाभ अर्जित करेंगी। आपकी बुद्धि में इस समय निर्मलता का भाव विद्यमान रहेगा एवं धर्म के प्रति भी आप श्रद्धा की भावना रखेंगी तथा समाज में भी आपका यश व्याप्त रहेगा।

नवम्बर 2026 के लिए फलादेश

इस मास में आप शुभ फलों को प्राप्त करने में सफल रहेगी। इस समय आपके पराक्रम में वृद्धि होगी तथा स्व पराक्रम से आप प्रचुर मात्रा में धनार्जन करने में सफल रहेंगी। साथ ही नाना प्रकार के सुखों का आप उपभोग करेंगी। इस समय सामाजिक जनों से आप मान सम्मान अर्जित करेंगी एवं आपका यश भी दूर दूर तक फैलेगा। देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आपके मन में पूर्ण श्रद्धा रहेगी तथा विधिपूर्वक आप इनकी सेवा तथा पूजा सम्पन्न करेंगी। अन्य जनों के परोपकार संबधी कार्य भी आप इस मास सम्पन्न करने में तत्पर रहेंगी। इस समय आप शरीर से पूर्ण स्वस्थ रहेंगी तथा आपके शारीरिक बल में भी पूर्ण वृद्धि होगी। इसके अतिरिक्त बन्धुजनों एवं मित्र जनों से भी अपेक्षित सहयोग तथा सुख अर्जित करने में सफल रहेंगी तथा आपके मानसिक संकल्प भी पूर्ण होंगे।

साथ ही इस मास में आप पति से वांछित सुख एवं सहयोग प्राप्त करेंगी तथा अपनी बुद्धिमता से कई शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यो को पूर्ण करने में सफल रहेंगी। इस समय आप किसी धार्मिक उत्सव का आयोजन भी कर सकती है। अतः इस महीने को आप सुख एवं प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत करेंगी।

दिसम्बर 2026 के लिए फलादेश

इस मास में आप शुभ फलों की अपेक्षा अशुभ फल ही अधिक मात्रा में अर्जित करेंगी। अतः आपका शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहेगा एवं कई प्रकार से आप पीड़ित रहेगी। साथ ही शत्रु वर्ग भी इस समय प्रबल रहेगा जिससे समय समय पर आपके लिए अनावश्यक समस्याएं उत्पन्न होंगी अतः उनकी ओर से आप भयभीत तथा चिन्तित रहेगी। फलतः मानसिक रूप से भी आप अशान्त रहेंगी। पारिवारिक जनों से भी आपके मधुर संबध नहीं रहेंगे तथा तनाव बना रहेगा। साथ ही व्यापार एवं कार्य क्षेत्र में भी हानि या मंदी भी आ सकती है। इस मास आपके स्थान परिर्वतन होने की भी संभावना रहेगी। सामाजिक जनों से भी आपके मधुर संबध नही रहेंगे एवं उनसे अनबन रहेगी फलतः समाज में सम्मान में न्यूनता आएगी। इसके अतिरिक्त शरीर में रोग तथा धन हानि की भी संभावना रहेगी।

साथ ही इस मास में आप गर्मी से उत्पन्न बीमारियों से कष्ट प्राप्त करेंगी तथा किसी कारण रक्त विकार भी हो सकता है। इसके अतिरिक्त इस समय आपको अग्नि के द्वारा भी धन हानि हो सकती है। अतः इस मास में सोच समझकर सावधानी पूर्वक अपने कार्य कलापों को सम्पन्न करें।

वर्ष के पूर्वार्द्ध में मीनस्थ शनि अष्टम भाव में रहेंगे और 3 जून को मेष राशि एवं नवम भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर 03 अक्टूबर को फिर से मीन राशि एवं अष्टम भाव में आजाएंगे। मकर राशि का राहु इस वर्ष षष्ठ भाव में रहेगा। वक्री गुरु 25 जनवरी को कर्क राशि एवं द्वादश भाव में प्रवेश करेंगे और मार्गी होकर 26 जून को सिंह राशि एवं लग्न स्थान में गोचर करेंगे और फिर से अतिचारी होकर 26 नवम्बर को कन्या राशि एवं द्वितीय भाव में प्रवेश कर जाएंगे। 26 अप्रैल से 5 जुलाई तक मंगल वक्री होकर सिंह राशि एवं लग्न स्थान में रहेंगे। 21 जुलाई से 7 सितम्बर तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

वर्ष का पूर्वार्द्ध व्यापारिक रूप से अच्छा नहीं रहेगा। गुरु एवं शनि ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने से आपके कार्य व्यवसाय में कुछ विशेष लाभ नहीं होगा। व्यापार में सफलता प्राप्ति के लिए लगातार प्रयास करना पड़ेगा। अष्टमस्थ शनि के प्रभाव से आपके कार्यों में गुप्त शत्रुओं द्वारा रूकावटें डाली जा सकती है। अतः इस समय के अन्तराल में आपको अपना आत्मविश्वास बनाए रखना चाहिए और कोई नया कार्य प्रारम्भ नहीं करना चाहिए। पहले से चले आ रहे व्यापार को और अच्छे ढंग से चलाएं। नौकरी करने वाले व्यक्तियों का समय सामान्य रहेगा।

26 जून के बाद समय कुछ अच्छा हो रहा है। सप्तम स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से व्यापार व कार्य क्षेत्र में सफलता मिलनी शुरू हो जाएगी। लग्नस्थ गुरु के प्रभाव से अधिकारी व वरिष्ठ लोगों का सहयोग मिलेगा। भाग्य अनुकूल होने के कारण आपके कार्यों में सफलता मिल सकती है। 26 नवम्बर के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों की पदोन्नति हो सकती है।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध अनुकूल नहीं रहेगा। वर्ष के पूर्वार्द्ध में कुछ ऐसे खर्च आ सकते हैं जिससे आपको आर्थिक हानि हो सकती है। धनागम के मार्ग भी प्रभावित हो सकते हैं। इस समय के अंतराल में आपको निवेश या किसी को उधार पैसा नहीं देना चाहिए, नहीं तो वापसी की उम्मीद बहुत कम है। लग्नस्थ मंगल के प्रभाव से शारीरिक आरोग्यता अनुकूल करने में भी आपका पैसा खर्च हो सकता है।

गुरु के गोचर के बाद समय अच्छा हो रहा है। उस समय आपका रुका हुआ धन मिल सकता है, जिससे आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। सप्तम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से पत्नी या मित्रों से धन लाभ होगा। अपने व्यापार को और आगे बढ़ाने में भी पैसा खर्च कर सकते हैं। भौतिक सुख सुबिधा पर भी आपका अधिक खर्च होगा। 26 नवम्बर के बाद रत्न आभूषण इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति होगी और आपको ससुराल पक्ष से भी लाभ प्राप्त होगा।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टि से यह वर्ष सामान्यतः बहुत अच्छा नहीं रहेगा। वर्ष के पूर्वार्द्ध में पारिवारिक माहौल बढ़िया नहीं रहेगा। अष्टमस्थ शनि के प्रभाव से आपके ससुराल पक्ष के लोगों के साथ आपका वैचारिक मतभेद हो सकता है। एक दूसरे प्रति वैमनस्य की भावना उत्पन्न हो सकती है जिससे पारिवारिक अनुकूलता भंग हो सकती है। पारिवारिक स्थिति को अनुकूल बनाने में आपको मातुल पक्ष का अच्छा सहयोग मिलेगा।

26 जून बाद समय काफी अनुकूल हो रहा है। परिवार में पुत्रादि का विवाह या कोई मांगलिक कार्य संपन्न होगा, उसमें आपकी अहम भूमिका होगी। सप्तम स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से आपके पत्नी के साथ सम्बन्ध मधुर होंगे। सामाजिक पद प्रतिष्ठा के लिए यह वर्ष उत्तम रहेगा।

संतान

संतान की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध अच्छा नहीं रहेगा। द्वादशस्थ गुरु पर राहु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से संतान संबंधित कुछ चिन्ताएं हो सकती हैं। आपके बच्चों का स्वास्थ्य प्रभावित हो सकता है, जिससे उनकी शिक्षा-दीक्षा भी प्रभावित हो सकती है।

26 जून के बाद लग्न स्थान पर गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से समय काफी अनुकूल हो रहा है। उस समय आपके बच्चे अपने परिश्रम के बल पर आगे बढ़ेंगे। शिक्षा के क्षेत्र में उनकी रूचि बढ़ेगी। यदि वे उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं, तो सबसे अच्छे शैक्षणिक संस्थान में उनका प्रवेश हो जाएगा। नवविवाहित व्यक्तियों के लिए गर्भाधान का शुभ समय चल रहा है। आपके दूसरे बच्चे के लिए समय बहुत अच्छा है।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध सामान्यतः अनुकूल नहीं रहेगा। द्वादशस्थ गुरु एवं अष्टमस्थ शनि के प्रभाव से आपके स्वास्थ्य में उतार-चढ़ाव की स्थिति बनी रहेगी। कफ, मधुमेह एवं पेट संबंधित बीमारियों के कारण आप ज्यादा परेशान हो सकते हैं। मौसम जनित बीमारियों से भी आप परेशान हो सकते हैं। अष्टमस्थ शनि के प्रभाव से कभी-कभी बीमारी नहीं होने के बावजूद भी बीमारी जैसा अनुभाव होता रहेगा।

26 जून के बाद गुरु ग्रह का गोचरीय प्रभाव लग्न स्थान में होने से स्वास्थ्य में सुधार आना शुरू हो जाएगा। अच्छे स्वास्थ्य के साथ-साथ आपका खान-पान एवं दिनचर्या भी अच्छी रहेगी। लग्न स्थान पर शुभ ग्रह का प्रभाव होने से आप शुद्ध शाकाहारी भोजन ही ग्रहण करेंगे, जिससे आप का स्वास्थ्य अनुकूल बना रहेगा। आपकी धर्म पत्नी भी आपकी सेहत का पूर्ण ध्यान रखेंगी। 03 अक्टूर के बाद आपकी सेहत फिर से प्रभावित हो सकती है।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

षष्टस्थ राहु के प्रभाव से प्रतियोगिता परीक्षार्थियों को सफलता मिलेगा। आपको

करियर में स्थिरता प्राप्त होगी। जो लोग नौकरी की तलाश में हैं उनको वर्ष के पूर्वार्द्ध में ही नौकरी मिल सकती है।

26 जून के बाद विद्यार्थियों के लिए समय अच्छा हो रहा है। आप पढाई-लिखाई में आगे रहेंगे। यदि आप उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैंतो अच्छे शैक्षणिक संस्थान में आपका प्रवेश हो सकता है। तकनीकी शिक्षा या व्यावसायिक शिक्षा के लिए समय काफी अनुकूल है।

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष काफी अच्छा है। द्वादशस्थ गुरु विदेश यात्रा के अच्छे योग बना रहे हैं। इस समय के अंतराल में आपकी विदेश यात्रा होंगी।

26 जून के बाद नवमस्थ शनि पर गुरु ग्रह की दृष्टि के प्रभाव सेलम्बी यात्राओं के प्रबल योग बन रहे है। तृतीय स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि छोटी यात्राएं कराती रहेगी।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्ष का पूर्वार्द्ध धार्मिक कार्यों के लिए सामान्य रहेगा। मानसिक अस्थिरता के कारण आप धार्मिक कार्य कम ही कर पाएंगे परन्तु द्वादशस्थ गुरु के प्रभाव से आप दान पुण्य अधिक करेंगे। गरीबों, भिखारियों को खाना खिलाना, धार्मिक स्थान पर भण्डारा करना आपका नैसर्गिक गुण होगा। अष्टम स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह के गोचरीय प्रभाव से तन्त्र के प्रति आपका आकर्षण ज्यादा रहेगा। 26 जून के बाद गुरु ग्रह का गोचर लग्न स्थान में होगा। उस समय नवम एवं पंचम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपका आध्यात्मिक ज्ञान और बढ़ेगा। निःस्वार्थ भाव से आप पूजा पाठ में रूचि लेंगे। आप अपने गुरुजनों का सम्मान करेंगे एवं उनके दिये गये उपदेशों का पालन करेंगे।

- माता-पिता, गुरु, साधू, संन्यासी और अपने से बड़े लोगों का आशीर्वाद प्राप्त करें।
- मंदिर या धार्मिक स्थानों पर केला या बेसन के लड्डू वितरित करें।
- प्रत्येक दिन हनुमान चालिसा का पाठ करें।
- शनिवार के दिन काली वस्तु का दान करें।

मासिक फलादेश

जनवरी 2027 के लिए फलादेश

इस महीने में आपकी बुद्धि में निर्मलता रहेगी तथा अपने समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यो को बुद्धिमता से सम्पन्न करेंगी। इस समय आपको विभिन्न प्रकार के द्रव्य पदार्थो की प्राप्ति होगी तथा पुत्र से भी आप सुख तथा सहयोग अर्जित करेंगी। साथ ही ज्ञानार्जन में भी आपकी रूचि रहेगी। इस मास में आपके प्रभुत्व में वृद्धि होगी तथा आपकी प्रभुता तथा श्रेष्ठता को सभी लोग मन से स्वीकार करेंगे। इस समय आपके कई शुभ कार्य सम्पन्न होंगे तथा दूर से शुभ समाचार भी प्राप्त करेंगी जिससे आपका मन प्रसन्न रहेगा। देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आपके मन में श्रद्धा की भावना उत्पन्न होगी तथा श्रद्धा पूर्वक आप इनकी पूजा तथा सेवा करेंगी। इसके साथ ही सरकार या उच्चाधिकारी वर्ग से भी आप उचित लाभ अर्जित करने में सफल रहेगी। इस समय समाज में भी आपकी मान प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। इस प्रकार पूर्ण रूप से आप सन्तुष्ट रहेंगी।

साथ ही इस मास में शुभ फलों के साथ साथ अशुभ फल भी घटित होंगे। अतः आप वातोत्पन्न रोगों से पीड़ित रहेंगी तथा इस समय आप किसी ऐसे कार्य को सम्पन्न करेंगी जिससे बाद में आपको पश्चाताप करना पड़ेगा। इसके अतिरिक्त अग्नि से भी धन हानि की संभावना रहेगी अतः सतर्कता पूर्वक अपने कार्यो को सम्पन्न करें तथा शारीरिक सुरक्षा का भी ध्यान रखें।

फरवरी 2027 के लिए फलादेश

इस मास में आप सामान्यतया अशुभ फल ही प्राप्त करेंगी। अतः आपका स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहेगा तथा शरीर में दुर्बलता विद्यमान रहेगी इस समय आपके शत्रु भी प्रबल होंगे तथा आपके लिए अनावश्यक बाधाएं उत्पन्न करेंगे जिससे आप उनसे भयभीत तथा चिन्तित रहेंगी। इस मास में आपके घर में चोरी भी हो सकती है अतः सतर्क रहना श्रेयकर रहेगा। साथ ही नौकरी या व्यापार में भी उच्चाधिकारी वर्ग की आज्ञा का पालन करने में तत्पर रहें अन्यथा आप किसी प्रकार से दण्डित भी हो सकती है। इस समय आपके शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य अल्प मात्रा में ही सफल होंगे तथा धन का व्यय भी अधिक मात्रा में होगा फलतः आर्थिक रूप से भी आप शिथिल रहेंगी। इसके साथ ही आप किसी ऐसे कार्य को भी सम्पन्न करेंगी जिससे आपकी प्रतिष्ठा में अल्पता आएगी।साथ ही मित्र एवं बन्धु वर्ग से आपके संबध अच्छे नहीं रहेंगे एवं आपकी आशाएं भी इस मास में कम ही पूर्ण होगी। अतः संयमपूर्वक अपने कार्यो को सम्पन्न करें।

साथ ही इस मास में आप वातजनित रोगों से शारीरिक कष्ट प्राप्त करेंगी तथा किसी ऐसे कार्य को भी करने के लिए तत्पर होंगी जिसके लिए आपको बाद में पछताना पड़ेगा। इस समय अग्नि के द्वारा भी आपकी धन हानि हो सकती है अतः बुद्धिमता पूर्वक अपने कार्यो को सम्पन्न करें।

मार्च 2027 के लिए फलादेश

इस महीने में आप शुभ फलों की अपेक्षा अशुभ फल ही अधिक मात्रा में प्राप्त करेंगी। इस समय आप पति तथा बन्धुजनों से कष्ट प्राप्त करेंगी अथवा इनको किसी प्रकार का कष्ट हो सकता है। आपके शत्रु भी इस मास में बलवान रहेंगे फलतः आपके लिए वे समय समय पर समस्याएं उत्पन्न करेंगे जिससे आप उनसे भयभीत तथा चिन्तित रहेंगी। इस समय आप में लोलुपता के भाव की अधिकता रहेगी धन का व्यय भी अनावश्यक रूप से अधिक होगा जिससे आप आर्थिक दृष्टि से भी कमजोर होंगी। इस समय आपके मन में उत्साह के भाव की कमी स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर होंगी। साथ ही शारीरिक स्वास्थ्य भी अच्छा नहीं रहेगा इससे आप दुर्बलता की अनुभूति भी करेंगी। मित्रों एवं बन्धुओं से आपके परस्पर अच्छे संबध नहीं रहेंगे तथा ये सभी लोग ऐसे समय में शत्रुओं की तरह व्यवहार करेंगे जिससे आप मानसिक कष्ट प्राप्त करेंगी। साथ ही पारिवारिक तथा अन्य जनों से भी वाद विवाद होते रहेंगे। अतः संयम पूर्वक समय को व्यतीत करें।

साथ ही इस मास में आप अशुभ फलों के साथ साथ आप शुभ फल भी अर्जित करेंगी। इससे आप पति एवं पुत्र से सुख एवं सहयोग प्राप्त करेंगी तथा इनसे प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगी। इसके अतिरिक्त इस मास में आप नवीन वस्त्र या आभूषणों आदि को भी प्राप्त करने में समर्थ हो सकेंगी।

अप्रैल 2027 के लिए फलादेश

इस मास में आप अशुभ फल ही अधिक मात्रा में प्राप्त करेंगी ।अतः आप शत्रु पक्ष से चिन्तित एवं भयभीत रहेंगी तथा उनसे आप अनावश्यक कष्ट प्राप्त करेंगी। इस समय आपके घर में चोरी होने की भी संभावना रहेगी साथ ही धन का व्यय अधिक मात्रा में होगा जिससे आर्थिक रूप से भी आप कमजोर रहेंगी। इस समय शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यो में विध्न बाधाएं उत्पन्न होती रहेंगी तथा धर्म के प्रति आपके मन में श्रद्धा भावना में न्यूनता आएगी अतः विधिपूर्वक आप धार्मिक वृतियों कापालन नहीं करेंगी आपका स्वास्थ्य भी इस समय अच्छा नहीं रहेगा जिससे शारीरिक बल में न्यूनता आएगी। इस मास में दूर की कोई यात्रा भी सम्पन्न कर सकते है। इसके अतिरिक्त सांसारिक कार्यो में भी आप कष्ट प्राप्त करेंगी तथा मुकद्दमे आदि में धन व्यय हो सकता है जिससे मानसिक रूप से आप अप्रसन्न तथा अशान्त रहेंगी।

साथ ही इस मास में आप गर्मी या पित्तदोष से उत्पन्न रोग से पीड़ित रहेंगी तथा रक्त विकार होने की भी संभावना रहेगी। इसके अतिरिक्त अग्नि से भी आप धन हानि प्राप्त कर सकती है। अतः सावधानी पूर्वक अपने कार्य कलापों को सम्पन्न करें।

मई 2027 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए अत्यंत ही सुख एवं सौभाग्य प्रदान करने वाला रहेगा। इस समय आप प्रचुर मात्रा में धनार्जन करेंगी जिससे आपकी आर्थिक स्थिति सुदृढ़ बनेगी। आपके उच्चाधिकारी आपसे प्रसन्न एवं सन्तुष्ट रहेंगे जिससे आपके सभी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य इस

मास में यथा समय सिद्ध होंगे। इस समय आप अपने घर में किसी धार्मिक उत्सव का आयोजन भी कर सकती है। संतति से भी आपको सुख तथा सहयोग प्राप्त होगा साथ ही देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आपके मन में पूर्ण श्रद्धा रहेगी तथा इनकी पूजा तथा सेवा करने में तत्पर रहेंगी। इस मास में आपकी कीर्ति दूर दूर तक फैलेगी तथा भाग्योदय संबधी कार्य यथा समय पूर्ण होंगे। आपकी बुद्धि भी इस समय निर्मल रहेगी तथा आप दूर समीप की किसी लाभदायक यात्रा को भी कर सकेंगी। बन्धु एवं मित्रों से आपके मधुर संबध रहेंगे तथा परस्पर वांछित सहयोग प्राप्त करेंगे। इस प्रकार समाज में सर्वत्र आपकी मान प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी।

साथ ही इस मास में आप पति से पूर्ण सहयोग तथा सुख प्राप्त करने में सफल रहेंगी। इस समय आप अपनी बुद्धि के द्वारा प्रचुर मात्रा में धनार्जन करेंगी। इस प्रकार आप विविध सुखों का उपभोग करेंगी तथा समाज में आपके यश में भी वृद्धि होगी।

जून 2027 के लिए फलादेश

इस मास में आप अपने कार्य क्षेत्र में पूर्ण सफलता तथा धनार्जन करने में सफल रहेंगी तथा अपने वरिष्ठ सहयोगी एवं उच्चाधिकारी वर्ग को सन्तुष्ट तथा प्रभावित करने में सफल रहेंगी साथ ही पदोन्नति भी प्राप्त कर सकेंगी। बन्धु तथा मित्र वर्ग से आपके मधुर संबध रहेंगे तथा उनसे आप पूर्ण सहयोग प्राप्त करने में सफल रहेंगी साथ ही उनकी भलाई के लिए कार्य करने में भी आप तत्पर रहेंगी। आपके कई शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य भी इस मास में सफल होंगे अतः मानसिक रूप से भी आप प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगी। देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आपके मन में श्रद्धा का भाव उत्पन्न होगा तथा उनकी पूजा तथा सेवा करने में तत्पर रहेंगी। इस मास में आपके प्रभुत्व में वृद्धि होगी तथा सभी लोग आपकी श्रेष्ठता को स्वीकार करेंगे तथा दूर दूर तक आपकी प्रसिद्धि भी फैलेगी एवं अन्य प्रकार से भी आप लाभ अर्जित करती रहेंगी। इसके अतिरिक्त इस महीने में आप नवीन गृह या स्थान की प्राप्ति भी कर सकती हैं।

साथ ही इस मास में आप पति से पूर्ण सुख तथा सहयोग प्राप्त करेंगी एवं आपके अधिकाशं शुभ एवं महत्वपूर्ण इच्छाएं भी इस समय पूर्ण होंगी। इस प्रकार धन तथा सुख का उपभोग करते हुए प्रसन्नता पूर्वक आपका यह मास व्यतीत होगा।

जुलाई 2027 के लिए फलादेश

इस मास में आप शुभ फल प्राप्त करने में सफल रहेंगी।साथ ही पुरूष वर्ग से लाभार्जन तथा सहयोग अर्जित करने में भाग्यशाली रहेंगी। इस समय आपके सभी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य यथा समय सिद्ध होंगे तथा आपकी आर्थिक स्थिति में भी सुदृढ़ता आएगी फलतः मानसिक रूप से भी आप प्रसन्नता तथा शान्ति की अनुभूति करेंगी। साथ ही सरकार या उच्चाधिकारी वर्ग से समय समय पर आपको यथोचित लाभ होता रहेगा। इस मास में आपका शारीरिक स्वास्थ्य उत्तम रहेगा तथा ज्ञानार्जन में भी आपकी रूचि उत्पन्न होगी। मित्र एवं बन्धु जनों से आपके मधुर संबध रहेंगे एवं उनसे पूर्ण सहयोग तथा लाभ भी होता रहेगा। आपको इच्छित द्रव्यों की प्राप्ति भी इस समय होगी तथा प्रसन्नता पूर्वक आप इनका उपभोग करेंगी।

संतति पक्ष से भी आप प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगी। इसके अतिरिक्त सामाजिक जनों के मध्य आपकी प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी तथा आपके रूके हुए कार्य भी इस मास में पूर्ण होंगे।

साथ ही इस मास में आप पति से पूर्ण सहयोग प्राप्त करेंगी। आपकी बुद्धि में भी इस समय निर्मलता का भाव रहेगा तथा प्रचुर मात्रा में धन एवं सुख का आप प्रसन्नता पूर्वक उपभोग करेंगी। इसके अतिरिक्त धर्मानुपालन में भी आप प्रवृत रहेगी तथा समाज में उचित सम्मान प्राप्त करने में सफल रहेंगी।

अगस्त 2027 के लिए फलादेश

इस मास में आप शुभ तथा अशुभ दोनों प्रकार के फलों को प्राप्त करेंगी जिसमें अशुभ फल अधिक मात्रा में होंगे। अतः इस समय आप धन व्यय अधिक मात्रा में करेंगी तथा दुष्ट जनों की संगति भी प्राप्त होगी। साथ ही आपका शारीरिक स्वास्थ्य भी विशेष अच्छा नहीं रहेगा। इस मास में आपके सभी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य अत्यंत ही परिश्रम एवं पराक्रम करने पर भी अल्प मात्रा में ही सिद्ध हो सकेंगे फलतः मानसिक रूप से भी अशान्त तथा असन्तुष्ट रहेंगी। धर्म के प्रति भी आपके मन में विशेष श्रद्धा का भाव नहीं रहेगा। साथ ही अन्य प्रकार से भी धन की हानि होने की संभावना है। मित्रों एवं संबधियों से आपके संबध अच्छे नहीं रहेंगे न ही उनसे कोई विशेष सहयोग प्राप्त होगा। इस मास में आप जो भी कार्य प्रारंभ करेंगी उसमें अनावश्यक रूप से विध्न बाधाएं आएंगी तथा शत्रु पक्ष से भी इस समय आप चिन्तित तथा भयभीत रहेंगी। इसके अतिरिक्त आपके महत्वपूर्ण कार्य भी इस मास में सिद्ध नहीं होंगे।

परन्तु इस मास में अशुभ फलों के मध्य शुभ फल भी प्राप्त होंगे। इससे आप श्रेष्ठजनों एवं उच्चाधिकारी वर्ग से लाभ एवं सहयोग अर्जित करेंगी तथा आपके कार्य क्षेत्र में भी विस्तार की संभावनाएं बनेगी। आप इस समय यात्रा भी कर सकती हैं। इसके अतिरिक्त नवीन वस्त्र या वस्तुओं को भी आप इस मास में अवश्य ही प्राप्त करेंगी।

सितम्बर 2027 के लिए फलादेश

यह मास आप सुख एवं प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत करने में सफल रहेंगी। इस समय आपका शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा रहेगा एवं मन भी शान्त एवं सन्तुष्ट रहेगा। इस मास में आपके पराक्रम में वृद्धि होगी तथा दुश्मनों को पराजित करने में सफल रहेंगी। साथ ही लाभ मार्ग भी प्रशस्त रहेंगे जिससे आपकी आर्थिक स्थिति सुदृढ़ रहेगी। नौकरी या व्यापार के अतिरिक्त अन्य स्त्रोतों से भी आप प्रचुर मात्रा में लाभार्जन करने में सफल रहेंगी। इस मास में आपके भाग्योदय संबधी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न होंगे साथ ही कोई विलम्बित महत्वपूर्ण कार्य भी सिद्ध होगा जिससे आपको हार्दिक प्रसन्नता की अनुभूति होगी। अपने बन्धु वर्ग तथा मित्रों से आपके घनिष्ठ संबध रहेंगे एवं उनसे आप यथोचित सुख एवं सहयोग भी प्राप्त करेंगी। साथ ही आपके सांसारिक कार्य भी इस मास में पूर्ण रूप से सम्पन्न होते रहेंगे। इसके अतिरिक्त उच्चाधिकारी वर्ग भी आपसे पूर्ण प्रसन्न एवं सन्तुष्ट रहेगा तथा उनसे आपको यथोचित सहयोग तथा सम्मान प्राप्त होता रहेगा।

साथ ही इस मास में आप पति से पूर्ण सुख तथा सहयोग प्राप्त करेंगी तथा आपकी बुद्धि निर्मल रहेगी एवं धन लाभ भी प्रचुर मात्रा में होता रहेगा। धर्म के प्रति आपके मन में श्रद्धा की भावना रहेगी तथा किसी धार्मिक उत्सव का भी आप इस समय आयोजन कर सकेंगी। इसके अतिरिक्त समाज में आपकी मान प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी तथा सभी लोग आपको यथोचित सम्मान प्रदान करेंगे।

अक्तूबर 2027 के लिए फलादेश

इस मास आप अति उत्साह से धनार्जन करने में सफल रहेंगी साथ ही समाज में आपकी मान प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी एवं यश भी दूर दूर तक व्याप्त रहेगा। बन्धु एवं मित्रों से आपके मधुर संबध रहेंगे तथा वे आपको सभी यथोचित आदर तथा सम्मान प्रदान करेंगे। साथ ही इनसे आप वांछित सुख एवं सहयोग भी प्राप्त करेंगी। सरकार या उच्चाधिकारी वर्ग से इस मास में आपको आश्रय प्राप्त होगा जिससे आप अपने शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यो को शीघ्र ही सम्पन्न करेंगी। आपका स्वास्थ्य भी इस समय अच्छा रहेगा तथा शरीर के बल में वृद्धि होगी। साथ ही मिष्ठान का भी आप अधिक मात्रा में उपभोग करेंगी। इस मास में आपके शत्रु निर्बल रहेंगे अतः उनको पराजित करने में आप सफल रहेंगी। इसके अतिरिक्त व्यापार आदि से भी आप धन अर्जित करने में सफल रहेंगी।

साथ ही इस मास में पति या पुरूष वर्ग से आप वांछित लाभ एवं सहयोग प्राप्त करेंगी।आपके सभी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य बुद्धिमता से सम्पन्न होंगे। धर्म के प्रति आपके मन में श्रद्धा की भावना बढ़ेगी एवं इस समय आप किसी धार्मिक उत्सव का आयोजन भी कर सकती हैं। इस प्रकार यह मास आपके लिए अत्यंत ही शुभ फलदायक सिद्ध होगा।

नवम्बर 2027 के लिए फलादेश

इस महीने में आप सामान्यतया शुभ फल ही प्राप्त करेंगी तथापि न्यूनाधिक अशुभ फल भी होते रहेंगे। इस समय आप अपने पराक्रम से धन अर्जित करेंगी तथा विविध प्रकार से सुखोपभोग करने में समर्थ रहेंगी। साथ ही समाज में आपके यश एवं प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी तथा सभी लोग आपको आदर प्रदान करेंगे। देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आपके मन में श्रद्धा की भावना रहेगी तथा विधिपूर्वक आप इनकी पूजा तथा सेवा करेंगी। इस समय दूसरे लोगों की भलाई के कार्यो को करने में भी आप तत्पर रहेंगी परन्तु शारीरिक स्वास्थ्य सामान्य रहेगा। इस मास में उच्चाधिकारी वर्ग से आप आश्रय प्राप्त करेंगी एवं अपने शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यो को सफल बनाने में समर्थ रहेगी। आपके मित्रों तथा बन्धुजनों से इस समय मधुर संबध रहेंगे तथा उनसे आप पूर्ण सहयोग तथा सुख भी अर्जित करने में सफल रहेंगी। इसके अतिरिक्त आपके मानसिक संकल्प भी इस समय पूर्ण होंगे जिससे आप हृदय से प्रसन्न रहेंगी।

साथ ही इस मास में शुभ फलों के साथ साथ आप यदाकदा अशुभ फल भी प्राप्त करेंगी।अतः आप गर्मी या पित्त दोष के द्वारा शारीरिक रूप से कष्टानुभूति प्राप्त करेंगी तथा किसी प्रकार से रूधिर विकार की भी संभावना रहेगी। अतः सावधानी पूर्वक अपने कार्य कलापों

को सम्पन्न करें तथा शारीरिक सुरक्षा का भी ध्यान रखें।

दिसम्बर 2027 के लिए फलादेश

इस मास में आप सामान्यतया अशुभ फल ही अधिक मात्रा में प्राप्त करेंगी तथा शुभ फल अल्प मात्रा में ही होंगे। इस समय आपका स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहेगा तथा विविध प्रकार से आप शारीरिक कष्टानुभूति प्राप्त करेंगी। इस मास में आपके शत्रु भी प्रबल रहेंगे अतः वे भी आपके लिए अनावश्यक समस्याएं उत्पन्न करेंगे जिससे आप उनसे भयभीत तथा चिन्तित रहेंगी। इससे आप मानसिक रूप से भी परेशान रहेंगी। इस समय आपके व्यापार या आजीविका संबधी कार्यो में मन्दी आ सकती है जिससे आर्थिक रूप से भी परेशानी होगी। साथ ही आपका कोई कार्य बन्द या परिर्वतन भी हो सकता है। समाज में दूसरे लोगों से आपके विवाद आदि भी होते रहेंगे जिससे आपकी सामाजिक प्रतिष्ठा में न्यूनता आएगी। इसके अतिरिक्त धन हानि की भी संभावना होगी तथा शरीर में कोई रोग भी उत्पन्न होगा।

साथ ही इस मास में अशुभ फलों के साथ साथ शुभ फल भी घटित होंगे। अतः आप पति तथा पुत्र से पूर्ण सुख एवं सहयोग प्राप्त करेंगी तथा इनकी ओर से पूर्ण सन्तुष्ट रहेंगी। इसके अतिरिक्त इस समय आप नवीन वस्त्र तथा वस्तुएं भी प्राप्त कर सकती हैं। अतः यह मास आपके लिए सामान्य ही रहेगा।

वर्षारम्भ में मीन राशि के शनि अष्टम भाव में रहेंगे और 23 फरवरी को मेष राशि एवं नवम भाव में प्रवेश करेंगे। राहु वर्ष के शुरुआत में मकर राशि एवं षष्ठ भाव में रहेंगे और 24 मई को धनु राशि एवं पंचम भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में कन्या राशि के गुरु द्वितीय भाव में रहेंगे और वक्री होकर 28 फरवरी को सिंह राशि एवं लग्न स्थान में प्रवेश करेंगे और फिर से मार्गी होकर 24 जुलाई को कन्या राशि एवं द्वितीय भाव में प्रवेश करेंगे। इस वर्ष मंगल ग्रह अपनी सरल गति से गोचर करेंगे। 28 मई से 6 जून तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

वर्षारम्भ कार्य व्यवसाय के लिए सामान्य रहेगा। अष्टम स्थान के शनि व्यवसाय में उतार-चढ़ाव की स्थिति बना रहे है। गुप्त शत्रु आपके कार्यों में रुकावट डालने की कोशिश करेंगे परन्तु सामने नही आएंगे। फरवरी के बाद आप कोई नया कार्य प्रारम्भ कर सकते हैं। लग्नस्थ गुरु के प्रभाव से आपके अंदर नवीन विचारधाराएं नयी योजनाओं को जन्म देंगी जिसका उचित लाभ उठा कर आप अपने व्यापार को और सुदृढ़ बना सकते हैं।

नवम स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह के गोचरीय प्रभाव से आपका भाग्य भी आपके अनुकूल रहेगा। अतः कम समय में अच्छी सफलता प्राप्त कर सकते हैं। शेयर बाजार से जुड़े व्यक्तियों को इच्छित लाभ होगा। 24 जुलाई के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों की पदोन्नती होने के प्रबल योग बन रहे हैं।

धन संपत्ति

वर्ष का प्रारम्भ आर्थिक उन्नति के साथ होगा। द्वितीयस्थ गुरु के प्रभाव से रत्नाभूषण इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति होगी। संचित धन में वृद्धि होगी। फरवरी के बाद व्यापारिक अनुकूलता के कारण धनागम में वृद्धि होगी, जिससे आप इच्छित बचत करने में सफल रहेंगे। कर्जे इत्यादि से भी मुक्ति मिल सकती है। 24 जुलाई के बाद आपके रुके हुए या फंसे हुए पैसे मिल सकते है। छठे स्थान का राहु शत्रुओं से भी लाभ करा सकता है। सामाजिक व धार्मिक कार्यों में भी व्यय करेंगे।

24 जुलाई के बाद मांगलिक कार्यों में व्यय करेंगे। अष्टम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से पैतृक संपत्ति या स्थिर धन का लाभ होगा। पंचम का राहु संतान के स्वास्थ्य पर भी धन खर्च करा सकता है।

घर-परिवार, समाज

वर्षारम्भ में ही परिवार में किसी सदस्य की वद्धि होगी, जिससे आपके परिवार में खुशी का माहौल बनेगा। परिवार में एक-दूसरे के प्रति परस्पर सहयोग की भावना उत्पन्न होगी। जिससे आपस में भावनात्मक लगाव बढ़ेगा। परन्तु अष्टमस्थ शनि के प्रभाव से आपके ससुराल पक्ष के लोगों के साथ वैचारिक मतभेद हो सकते हैं।

राहु ग्रह के गोचर के बाद संतान संबंधित परेशानी हो सकती है। पंचमस्थ राहु उनका स्वास्थ्य प्रभावित कर सकता है। आप सामाजिक गतिविधियों में कम ही भाग लेंगे।

संतान

वर्षारम्भ संतान के लिए उत्तम रहेगा। द्वितीयस्थ गुरु के प्रभाव से आपके बच्चों की उन्नति होगी। शिक्षा के प्रति उनकी रूचि बढ़ेगी। वह अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे। फरवरी के बाद आपके दूसरे बच्चे के लिए समय बहुत अच्छा हो रहा है। यदि आपका दूसरा बच्चा विवाह योग्य है तो उसका विवाह हो सकता है।

24 मई के बाद पंचम स्थान का राहु आपके बच्चे का स्वास्थ्य प्रभावित कर सकता है। अतः उसके स्वास्थ्य से संबंधित किसी प्रकार की लापरवाही नहीं करनी चाहिए। आपके बच्चों को अपने कार्य क्षेत्र में सफलता प्राप्ति के लिए अधिक परिश्रम करना पड़ेगा।

स्वास्थ्य

अष्टमस्थ शनि के प्रभाव से वर्षारम्भ में आपका स्वास्थ्य सामान्य रहेगा परन्तु 28 फरवरी के बाद लग्न स्थान पर गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव के बाद समय बहुत अच्छा हो रहा है। लग्न स्थान पर शुभ ग्रह होने से आपके मन में हमेशा अच्छे विचार आएंगे, जिससे आप मानसिक रूप से सन्तुष्ट रहेंगे। प्रत्येक कार्य को सकारात्मक रूप से करेंगे। आपके अन्दर रोग प्रतिरोधक शक्ति विकसित होगी।

वर्ष के उतरार्द्ध में लग्न स्थान पर राहु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपका स्वास्थ्य किंचित प्रभावित हो सकता है। मौसमजनित बीमारी या आलस्य की भावना उत्पन्न हो सकती है परन्तु आप शीघ्र ही अच्छे हो जाएंगे और अपने स्वास्थ्य को अनुकूल रखने के लिए नियमित व्यायाम करेंगे। शुद्ध शाकाहारी भोजन ही ग्रहण करें।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

वर्षारम्भ षष्ठस्थ राहु के प्रभाव से प्रतियोगिता परीक्षाओं के लिए उत्तम रहेगा। आप अपने सारे शत्रुओं को परास्त करते हुए करियर में सफलता प्राप्त करेंगे। बेरोजगार जातकों को मनोनुकूल नौकरी मिल सकती है।

24 मई के बाद समय कुछ प्रभावित हो रहा है। विद्यार्थियों के लिए बहुत अच्छा समय नही रहेगा। उनको करियर में सफलता प्राप्ति के लिए अधिक परिश्रम करने की आवश्यकता है।

यात्रा-तबादला

द्वादश स्थान पर राहु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से वर्षारम्भ में ही विदेश यात्रा हो सकती हैं।

फरवरी के बाद नवमस्थ शनि पर गुरु ग्रह की दृष्टि के कारण आपकी लम्बी यात्रा

होगी साथ ही छोटी-मोटी यात्राएं भी होती रहेंगी।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्ष का प्रारम्भ सामान्य रहेगा। फरवरी के बाद नवम स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से धार्मिक कार्यों के प्रति आपकी रूचि बढ़ेगी, जिसके फलस्वरूप आप पूजा, पाठ, यज्ञ व अनुष्ठान अधिक करेंगे। पंचम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से ईश्वर में आपका अटूट विश्वास होगा। दान पुण्य करने मे आप आगे रहेंगे परन्तु वर्ष का उत्तरार्द्ध धार्मिक कार्यों के लिए अच्छा नहीं रहेगा।

- शनिवार के दिन काली वस्तु का दान करें एवं शनि मन्त्र का पाठ करें।
- प्रत्येक मंगलवार को हनुमान जी को चोला चढ़ाएं।
- दुर्गाजी की उपासना करें या दुर्गा बीसा कवच गले में धारण करें।

वर्ष के पूर्वार्द्ध में मेष राशि के शनि नवम भाव में रहेंगे और 08 अगस्त को वृष राशि एवं दशम भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर फिर से 05 अक्टूबर को मेष राशि एवं नवम भाव में आ जाएंगे। धनु राशि के राहु पंचम भाव में रहेंगे। वर्षारम्भ में तुला राशि के गुरु तृतीय भाव में रहेंगे और वक्री होकर 29 मार्च को कन्या राशि एवं द्वितीय भाव में प्रवेश करेंगे और फिर से मार्गी होकर 25 अगस्त को तुला राशि एवं तृतीय भाव में आ जाएंगे। वक्री मंगल 27 जुलाई तक कन्या राशि एवं द्वितीय भाव में रहेंगे। 15 फरवरी से 16 अप्रैल तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

वर्षारम्भ में कार्य व्यवसाय में उन्नति करेंगे। नवम स्थान पर शनि एवं गुरु के गोचरीय प्रभाव के चलते आपका भाग्य साथ देगा। व्यावसायिक उन्नति के सारे मार्ग प्रशस्त होंगे। व्यापार में भाइयों का अच्छा सहयोग मिलेगा। साझेदारी में कार्य कर रहे हैं तो अच्छा लाभ मिलेगा।

29 मार्च से सफलता के अच्छे अवसर मिलेंगे जिसका उचित लाभ उठा कर आप अपने कार्य में सफल होंगे। गुरु के प्रभाव से आमदनी के नये स्रोत खुलने की उम्मीद है। 25 अगस्त के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों की पदोन्नति होगी व कार्य स्थल पर मान सम्मान भी बढ़ेगा। अनुभवी व वरिष्ठ लोगों का सहयोग मिलने से आप अपने व्यापार में और अधिक सुधार करेंगे।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ उत्तम रहेगा। व्यापारिक अनुकूलता के कारण आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। भाग्य अनुकूल होने से आप बचत करने में सफल रहेंगे परन्तु द्वितीयस्थ मंगल के कारण आपके पारिवारिक खर्चे भी बढ़ेंगे। 29 मार्च के बाद रत्नाभूषण इत्यादि वस्तु की प्राप्ति हो सकती है। पुराने कर्जे इत्यादि से मुक्ति मिल सकती है। परिवार में मांगलिक कार्य होंगे उसमें भी आपके पैसे खर्च हो सकते हैं।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ करने में आपके पिता की अहम भूमिका होगी। पंचम स्थान का राहु आपकी संतान के स्वास्थ्य पर भी व्यय करा सकता है।

घर-परिवार, समाज

वर्ष का प्रारम्भ सामाजिक उन्नति के साथ होगा। तृतीयस्थ गुरु पर शनि की दृष्टि प्रभाव से सामाजिक पद प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। 29 मार्च के बाद आपके परिवार में किसी सदस्य की वृद्धि होगी। पंचमस्थ राहु आपके बच्चे का स्वास्थ्य प्रभावित कर सकता है।

25 अगस्त के बाद चतुर्थ स्थान पर शनि की दृष्टि प्रभाव से पारिवारिक अनुकूलता भंग हो सकती है। आपके माता पिता का स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहेगा। परिवार में कुछ लोगों का

बर्ताव ठीक नहीं रहेगा।

संतान

यह वर्ष संतान के लिए अच्छा नहीं रहेगा। पंचम स्थान का राहु संतान के स्वास्थ्य को प्रभावित कर सकता है और उनकी शिक्षा में भी रुकावटें उत्पन्न कर सकता है। नवविवाहित व्यक्तियों को संतान प्राप्ति में बाधा उत्पन्न हो सकती है। गर्भवती स्त्रियों अधिक ध्यान देने की आवश्यकता है नहीं तो गर्भपात भी हो सकता है।

आपकी दूसरी संतान के लिए समय अच्छा है। उनकी शिक्षा-दीक्षा के प्रति रुचि बढ़ेगी एवं अपने परिश्रम के बल पर लक्ष्य को प्राप्त करेंगे।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ सामान्य रहेगा। लग्न स्थान पर राहु की दृष्टि से अचानक स्वास्थ्य प्रभावित हो सकता है। अतः स्वास्थ्य संबंधित किसी भी प्रकार की लापरवाही आपके लिए अच्छी नहीं होगी। 29 मार्च से आपके स्वास्थ्य में सुधार होना शुरू हो जाएगा।

25 अगस्त से आपको खान-पान पर विशेष ध्यान देना होगा। चिकनाईयुक्त व तली हुई वस्तुओं का कम से कम सेवन करना चाहिए। कुछ बेवजह की यात्राएं और काम का बोझ आपको थका सकता है।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

आपको लगातार अथक परिश्रम के बाद सफलता मिलेगा। विद्यार्थियों के लिए यह वर्ष सामान्यतः अनुकूल रहेगा। नवम स्थान पर गुरु की दृष्टि व्यवसायिक शिक्षा प्राप्त करा सकती है।

छठे स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि प्रभाव से प्रतियोगिता परीक्षार्थियों को सफलता मिलेगी। बेरोजगार जातकों को रोजगार मिल सकता है।

यात्रा-तबादला

वर्ष का प्रारम्भ यात्रा की दृष्टि से अनुकूल है। गुरु के प्रभाव से छोटी यात्राओं के साथ आपकी लम्बी यात्राएं भी होंगी। तीर्थ यात्रा पर जाने की योजना भी बन सकती है। 25 अगस्त के बाद द्वादश स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि प्रभाव से विदेश यात्रा भी होगी।

चतुर्थ स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि प्रभाव से नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण हो सकता है। यह परिवर्तन आपके प्रतिकूल स्थान पर भी सकता है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्षारम्भ में गुरु ग्रह की दृष्टि नवम स्थान पर पड़ रही है जिसके कारण आपका

मन धार्मिक कार्यों की ओर आकृष्ट होगा। आप कोई विशेष अनुष्ठान करेंगे जैसे- अखण्ड रामायण का पाठ, माता की चौकी, माता का जागरण इत्यादि।

- मंगलवार के दिन हनुमान जी को लड्डू का भोग लगाकर गरीबों में वितरित करें।
- दुर्गा जी की उपासना करें या राहु मन्त्र का पाठ करें।

वार्षिक फलादेश - 2030

वर्षारम्भ में मेष राशि के शनि नवम भाव में रहेंगे और 17 अप्रैल को वृष राशि एवं दशम भाव में प्रवेश करेंगे धनु राशि के राहु पंचम भाव में रहेंगे और 04 फरवरी को वृश्चिक राशि एवं चतुर्थ भाव में प्रवेश करेंगे 25 जनवरी को गुरु वृश्चिक राशि एवं चतुर्थ भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर 01 मई को तुला राशि एवं तृतीय भाव में गोचर करेंगे और फिर से मार्गी होकर 23 सितम्बर को वृश्चिक राशि एवं चतुर्थ भाव में आ जाएंगे। इस वर्ष मंगल अपनी सरल गति से गोचर करेंगे 27 सितम्बर से 18 नवम्बर तक शुक्र अस्त रहेंगे

व्यवसाय

यह वर्ष आपके लिए कई लाभकारी अवसर लेकर आ रहा है। आप अपने व्यावसायिक जीवन में कुछ विशेष करेंगे जिससे आपके सहयोगी और अधिकारी भी प्रभावित होंगे। अपने दायित्वों का पूर्ण रूप से निर्वहन करेंगे राहु एवं गुरु का गोचर अनुकूल नहीं होने के कारण व्यावसायिक जीवन में थोड़े बहुत अवरोध आएंगे। इस दौरान आपके कार्यों में देरी भी हो सकती है जिसके चलते तनावपूर्ण स्थिति बन सकती है। जैसे ही यह प्रभाव खत्म होगा आपका समय फिर से अनुकूल हो जाएगा और सब कुछ आपके हित में होने लगेगा। आप अपने लक्ष्यों को योजनानुसार प्राप्त कर सकेंगे।

जो व्यक्ति नवीन रोजगार की तलाश में हैं उन्हें अड़चनों के बाद सफलता प्राप्त होगी। नौकरी करने वाले व्यक्तियों का प्रतिकूल स्थान पर स्थानान्तरण होगा। अप्रैल के बाद आपको रोजगार से सम्बन्धित सुखद समाचार मिलने शुरु हो जाएंगे और आप पूर्ण विश्वास के साथ आगे बढ़ेंगे।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से यह साल आपके लिए चुनौतियों के साथ अनेक लाभ भी लाएगा। 04 फरवरी के बाद नए निवेश करना सही नहीं होगा। भूमि, भवन एवं वाहनादि पर निवेश न करें नही तो आपका पैसा डूब सकता है। इस समय आप इस बात पर ध्यान दें कि भविष्य में किए जाने वाले निवेशों से लाभ किस प्रकार पाया जाए और एक सही योजना बना कर आप निवेश से लाभान्वित भी हो सकते हैं।

अप्रैल के बाद कोई खोया हुआ जरूरी दस्तावेज भी मिल सकता है। यदि ऋण के लिए आवेदन किया है तो वह भी बिना देरी के मंजूर हो जाएगा। हर प्रकार की आर्थिक परेशानिया तुरंत ही दूर हो जाएंगी। परिवार में मांलिक कार्य होंगे जिसमें आप खुले हाथों से व्यय करेंगे

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक वातावरण में उतार-चढ़ाव की स्थिति बनी रहेगी। 04 फरवरी के बाद चतुर्थस्थ राहु आपको घरेलू जीवन में कुछ चिंताएं दे सकता है जिससे परिजनों के बीच

सामंजस्य बिठाने में कठिनाई पैदा होंगी। ऐसे में विपरीत परिस्थितियों से निबटने के लिए आपको अपने अन्दर प्रतिरोधात्मक शक्ति विकसित करनी होगी।

आपके माता-पिता का स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहेगा। अचानक ही उनका स्वास्थ्य खराब हो सकता है। मई के बाद आपका समाजिक स्तर बढ़ेगा। मान-प्रतिष्ठा में भी वृद्धि होगी। इस समय के अंतराल में समाज में आपकी एक अगल पहचान होगी।

संतान

वर्ष की शुरुआत संतान के लिए शुभ नहीं है। लग्न स्थान का राहु गर्भवती स्त्रियों का गर्भपात करा सकता है। आपके बच्चों को स्वास्थ्य से संबंधित परेशानी होगी। उनकी शिक्षा-दीक्षा भी प्रभावित हो सकती है।

गुरु ग्रह के गोचर के बाद आपकी दूसरे संतान के लिए समय अच्छा हो रहा है। उस समय आपकी दूसरी संतान के साथ प्रेम व समन्वय में वृद्धि होगी। यदि संतान की इच्छा रखते हैं तो यह समय श्रेष्ठ है। आप अपने बच्चों के मनोबल को बढ़ाते रहें तो वह अपने लक्ष्य को अवश्य प्राप्त कर लेंगे।

स्वास्थ्य

वर्ष के प्रारम्भ में स्वास्थ्य को लेकर चिंता बनी रहेगी। 04 फरवरी के बाद आप अपने आप को तंदरुस्त और सेहतमंद महसूस करेंगे क्योंकि आपके अन्दर उत्साहवर्धक ऊर्जा की वृद्धि होगी।

मई से आप अपनी दिनचर्या में नयी गतिविधियों को शामिल करेंगे जैसे कि व्यायाम करना या सुबह-सुबह टहलने जाना। यदि आलस्य ने आपके अन्दर घर बना लिया है तो आपका स्वास्थ्य एक चिंताजनक विषय बन सकता है।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

करियर एवं प्रतियोगिता परीक्षा के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा। चतुर्थ स्थान में राहु एवं गुरु की युति माध्यमिक शिक्षा ग्रहण कर रहे शिक्षार्थियों के लिये भ्रम और असमंजस की स्थिति बनायेगी।

यदि आप अपने शत्रुओं को परास्त करना चाहते हैं, तो नीतियों में बदलाव करना पड़ेगा। शनि ग्रह के गोचर के बाद आप कोई विदेशी भाषा सीखने की तरफ आकर्षित होंगे। विदेश जाकर उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए उत्तम योग बन रहा है।

यात्रा-तबादला

नवमस्थ शनि के प्रभाव से छोटी-मोटी यात्राओं के साथ आप लम्बी-लम्बी यात्राएं भी करेंगे धार्मिक स्थलों की यात्रा करने का भी अवसर प्राप्त होगा।

नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण होगा। 17 अप्रैल के बाद द्वादश स्थान

पर शनि ग्रह के दृष्टि प्रभाव से आपकी विदेश यात्राएं होंगी।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

कोई भी शुभ कार्य योजनाबद्ध तरीके से ही संपन्न करें अन्यथा पूजादि कार्यों में व्यवधान आने की आशा है। 17 अप्रैल से आप अपने कार्य-व्यवसाय पर अधिक ध्यान देंगे और कर्म ही पूजा है इस वाक्य को चरितार्थ करेंगे

- प्रत्येक दिन सूर्य को जल दे एवं प्रणायाम करें।
- बुधवार के दिन चींटियों को दाना डालें एवं भूखे व्यक्तियों को खाना खिलाएं।
- नित्य हनुमान चालीसा का पाठ करें।

इस वर्ष वृष राशि के शनि दशम भाव में रहेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में वृश्चिक राशि के राहु चतुर्थ भाव में रहेंगे और 9 अगस्त को तुला राशि एवं तृतीय भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में वृश्चिक राशि के गुरु चतुर्थ भाव में रहेंगे और 17 फरवरी को धनु राशि एवं पंचम भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर 14 जून को वृश्चिक राशि एवं चतुर्थ भाव में गोचर करेंगे और फिर मार्गी होकर 15 अक्टूबर को धनु राशि एवं पंचम भाव में आ जाएंगे। 4 जनवरी से 15 अगस्त तक मंगल वक्री होकर तुला राशि एवं तृतीय भाव में रहेंगे। 2 अगस्त से 15 अगस्त तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

कार्य-व्यवसाय के लिए वर्ष का प्रारम्भ अच्छा रहेगा। व्यापार में बदलाव या फिर नौकरी में पदोन्नति की भी संभावना है। 18 फरवरी से अनुभवी और वरिष्ठ लोगों का सहयोग मिलेगा जिससे आपके कार्यों में लाभ की मात्रा और बढ़ जाएगी। साथ ही किसी बड़ी कंपनी के साथ मिलना या उसके साथ कार्य करने का अवसर प्राप्त होगा। कार्यस्थल में प्रशंसा और पहचान मिलेगी और यह आपकी आशावादी विचारधारा के कारण ही होगा।

9 अगस्त से व्यावसायिक स्तर पर समय आपके लिए काफी हितकारी होने वाला है। आपको आपकी पिछली व्यावसायिक सफलताओं के लिए पुरुस्कृत भी किया जाएगा। साथ ही आपकी कड़ी मेहनत को नजरअंदाज नहीं किया जाएगा। दशमस्थ शनि पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आप के अन्दर गजब का आत्मविश्वास उत्पन्न होगा जिससे आप अपने क्लाइंट्स को प्रभावित करने में सफल होंगे।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ बहुत बढ़िया रहेगा। 18 फरवरी के बाद आय भाव पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से धनागम के स्रोतों में वृद्धि होगी। साथ ही फंसे हुए धन या रुके हुए धन की प्राप्ति हो सकती है। धार्मिक यात्रा या मांगलिक कार्यों में धन व्यय होगा।

9 अगस्त से आर्थिक स्थिति के लिए समय और बढ़िया हो रहा है। आप कुछ बेहतरीन व्यावसायिक संबंध भी कायम करेंगे और लाभकारी निवेशकों के साथ भी निवेश करेंगे। आप किसी वित्तीय लेन-देन की योजना भी बना सकते हैं। यह समय आपके लिए अत्यंत लाभकारी रहेगा। यदि अनापेक्षित ही कोई अच्छा सौदा आपकी झोली में आ गिरे, तो चौंकिएगा मत। भूमि संबंधित कार्य करने वाले व्यक्तियों को अच्छा लाभ प्राप्त होगा। दशमस्थ शनि पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से आपके सामने कई लाभकारी अवसर आएंगे।

घर-परिवार, समाज

वर्ष का प्रारम्भघरेलू वातावरण के लिए अनुकूल है। पारिवारिक माहौल अनुकूल रहेगा। परिवार के किसी सदस्य को लेकर मन में चिंता रह सकती है अतः परिवार से जुड़े हर

मामलों में आपको सावधानी बरतने की आवश्यकता है। आपके माता-पिता के लिए समय शुभ है।

9 मई से घरेलू वातावरण के लिए समय अनुकूल हो रहा है। परिवार में सुख, शान्ति का वातावरण बनेगा। इन सबके पीछे आपका ही महत्वपुर्ण योगदान होगा क्योंकि आप बहुत से ऐसे कामों को अंजाम देने वाले हैं जो पारिवारिक जीवन के लिए हितकर होंगे। 15 अक्टूबर के बाद परिजनों के साथ आप किसी धार्मिक स्थल की यात्रा करेंगे या घर परिवार में शुभ कृत्य का आयोजन होगा।

संतान

वर्षारम्भ संतान के लिए अच्छा रहेगा किन्तु आपके बच्चों को स्वास्थ्य संबंधित चिंताएं रहेंगी। 18 फरवरी से गुरु ग्रह का गोचर शुभ हो रहा है। यह समय आपकी संतान के लिए शुभ होगा।

गर्भाधान का सुन्दर समय चल रहा है। इस समय के अंतराल में आपके बच्चे कुछ ऐसे काम करेंगे जिससे आप उन पर गर्व करेंगे। आपके दूसरे बच्चे के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की लिहाज से यह वर्ष मिला-जुला रहेगा। पारिवारिक क्लेश के कारण मानसिक अशान्ति बनी रहेगी। आपके जीवन में इस साल खुशी के पल भी आएंगे। स्वस्थ्य रहने के लिए आपको चाहिए कि आप योग और ध्यान का सहारा लें। प्रियजनों और परिजनों के साथ अधिक से अधिक समय बिताएंगे।

15 अक्टूबर के बाद समय काफी अच्छा हो रहा है। लग्न स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपके अंदर रोग प्रतिरोधक शक्ति का विकास होगा जिससे आपकी शारीरिक आरोग्यता अनुकूल बनी रहेगी और आप पूर्णरूप से स्वस्थ रहेंगे।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

वर्ष के प्रथम दो माह छोड़ दिए जाएं तो पूरा वर्ष अनुकूल बना रहेगा। विद्यार्थियों को शिक्षा के क्षेत्र में विशेष उपलब्धी प्राप्त होगी। उच्च शिक्षा प्राप्ति के लिए भी ये समय बहुत बढ़िया है। प्रतियोगिता परीक्षार्थी अपनी परीक्षा में सफल होंगे। जो व्यक्ति अपना व्यापार शुरु करना चाहते हैं। उनके लिए यह समय अनुकूल है।

15 अक्टूबर के बाद बेरोजगार लोगों को नौकरी मिलेगी। आपके लिए रोजगार के नये अवसर भी पैदा होंगे। आप व्यापार में सफलता और समाज में प्रतिष्ठा प्राप्त करेंगे।

यात्रा-तबादला

वर्ष के प्रारम्भ में विदेश यात्रा का योग बन रहा है। छोटी-मोटी यात्राएं तो होती

रहेंगी। 18 फरवरी के बाद नवम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपकी लम्बी यात्राएं भी होंगी।

गुरु ग्रह के गोचर के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों का मनोनुकूल स्थान पर स्थानान्तरण होगा। अपने घर से दूर रहने वाले व्यक्तियों की जन्म भूमि की यात्रा होगी।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्ष के शुरु में आपके धार्मिक कार्य प्रभावित होंगे। 18 फरवरी के बाद पंचमस्थ गुरु के प्रभाव से पूजा-पाठ यज्ञ अनुष्ठान व मन्त्र जाप के प्रति आपकी रूचि बढेगी। 14 जूल के बाद आप पूरे परिवार सहित घरेलू सुख शान्ति के लिए पूजा करेंगे और धार्मिक यात्रा कर पुण्यरर्जन भी करेंगे।

- अपने घर में श्रीयन्त्र की स्थापना कर उसके सामने प्रत्येक दिन दीपक जलाएं और महालक्ष्मी के मन्त्र का पाठ करें।
- प्रत्येक दिन दुर्गा कवच का पाठ करें।
- बुधवार के दिन गणेश जी को दुर्वा चढ़ाएं एवं गणेश अथर्वशीर्ष का पाठ करें।

वार्षिक फलादेश - 2032

वर्षारम्भ में शनि वृष राशि एवं दशम भाव में होंगे और 31 मई को मिथुन राशि एवं एकादश भाव में प्रवेश करेंगे। तुला राशि के राहु तृतीय भाव में रहेंगे। वर्षारम्भ में धनु राशि केगुरुपंचम भाव में रहेंगे और 5 मार्च को मकर राशि एवं छठे भाव में गोचर करेंगे और वक्री होकर 12 अगस्त को धनु राशि एवं पंचम भाव में आजाएंगे और पुनः मार्गी होकर 23 अक्तूबर को मकर राशि एवं छठे भाव में प्रवेश करेंगे। इस वर्ष मंगल अपनी सरल गति से गोचर करेंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय के लिए वर्ष का प्रारम्भश्रेष्ठतम रहेगा। बौद्धिक बल के द्वारा व्यापार को एक अलग ही मुकाम पर ले जाएंगे। आप आपनी आंतरिक क्षमता, इच्छा शक्ति, संतुलन और दृढ़ता से अपने काम पर ध्यान देंगे। बड़ी-बड़ी योजनाएं और अवसर आपके द्वार पर दस्तक देंगे।

23 अक्तूबर के बाद व्यावसायिक जीवन में उतार-चढाव का सामना करना पड़ सकता है परन्तु अपने अनुभवों से अपना विकास करेंगे। आपका धैर्य ही आपको प्रगतिशील रहने के लिए प्रेरित करता रहेगा और हर समस्या का समाधान सूझ-बूझ से निकाल लेंगे।

धन संपत्ति

आर्थिक रूप से वर्ष का प्रारम्भ आपके लिए उत्तम रहेगा। संचित धन में वृद्धि होगी। धनागम के स्रोत बढ़ेंगे। नवीन संपत्ति खरीदने की दिशा में प्रयासरत रहेंगे। इस संबंध में आपको सफलता भी मिलेगी। गुरु के गोचर के बाद क्रय-विक्रय के मामले में सावधान रहें। खर्च पर भी अंकुश लगाएं।

12 अगस्त के बाद एकादशस्थ शनि पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपके आय के स्रोतों में बढ़ोत्तरी होगी। रुके हुए या फंसे हुए पैसे मिलने की सम्भावना है। लॉटरी, शेयर इत्यादि से भी आपको अच्छा लाभ मिलेगा। कर्जे से मुक्ति मिल सकती है।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ अच्छा नहीं रहेगा। चतुर्थ स्थान पर शनि की दृष्टि से घरेलू माहौल अनुकूल नहीं रहेगा। परिवार में वैचारिक मतभेद से आप मानसिक अशान्ति महसूस सकते हैं। आपकी माता का स्वास्थ्य भी अच्छा नहीं रहेगा। 5 मार्च के बाद परिवार में सदस्य संख्या में वृद्धि होगी। परिवार में मांगलिक कार्य संपन्न होंगे।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में समय काफीअनुकूल हो रहा है। परिवार के सभी सदस्यों का अच्छा सहयोग मिलेगा। लगाव बढ़ने के कारण पारिवारिक माहौल भी अनुकूल होगा। आपके भाईयों के लिए यह समय काफी शुभ है।

संतान

संतान के लिए वर्ष का प्रारम्भ काफी शुभ रहेगा। आपके बच्चों की उन्नति होगी। नव विवाहित व्यक्तियों को संतान रत्न की प्राप्ति होगी। अच्छे शैक्षणिक संस्थान मेंबच्चों का प्रवेश हो जाएगा।

5 मार्च से गुरु का गोचरप्रतिकूल होने से संतान संबंधित चिंताएं हो सकती हैं। बच्चों का स्वास्थ्य प्रतिकूल रहने के कारण उनकीशिक्षा-दीक्षा में रूकावटें आ सकती हैं। बच्चोंके स्वास्थ्य पर विशेष ध्यान दें। शारीरिक आरोग्यता प्राप्ति के लिए आप तुला दान भी करा सकते हैं।

स्वास्थ्य

आपकी शारीरिक ऊर्जा व कार्य क्षमता में वृद्धि होगी। पूर्ण रूप से शारीरिक आरोग्यता अनुकूल बनी रहेगी। लग्न स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से आप शुद्ध शाकाहारी भोजन ही ग्रहण करेंगे जिससे आपके अंदर अच्छे विचार आएंगे और आप मानसिक रूप से संतुष्ट रहेंगे।

गुरु ग्रह के गोचर के बाद आपको छोटी-मोटी बीमारियां हो सकती हैं। मई के बाद लग्न स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि आलस्य की भावना उत्पन्न कर सकती है। समय का सदुपयोग कर अपनी जीवनशैली को उत्तमबनाने की कोशिश करें।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

विद्यार्थियों के लिए वर्ष का प्रारम्भ बहुत बढ़िया रहेगा। प्रतियोगिता परीक्षार्थियों को अपने लक्ष्य में सफलता मिलने के प्रबल योग बन रहे हैं। व्यवसायी इस समय कोई नया कार्य प्रारम्भ करेंगे और उसमें सफलता भी होंगे।

यदि आप विदेश जाकर उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं तो 5 मार्च से समय आपके लिए काफीशुभ हो रहा है।

यात्रा-तबादला

तृतीयस्थ राहु के कारण वर्षारम्भ से ही आपकी छोटी-मोटी यात्राएं होती रहेंगी। नवम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि के कारण आपकी लम्बी यात्राओं के भी प्रबल योग बन रहे हैं। चतुर्थ स्थान पर राहु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण होगा।

गुरु के गोचर के बाद आपकी विदेश यात्रा होगी। यात्रा के दौरान किसी से बहुत अच्छी मित्रता होगी। 12 अगस्त के बाद धार्मिकयात्रा का भी योग बन रहा है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्ष का प्रारम्भ उत्तम रहेगा। आप अधिक धार्मिक कार्य जैसे मन्दिर निर्माण में दान देना, धार्मिक स्थलों पर भण्डारा करना, गरीबों की सहायता करना, तीर्थ स्थलों की यात्रा इत्यादि करेंगे।

- माता-पिता, गुरु, साधू, संन्यासी और अपने से बड़े लोगों का आशीर्वाद प्राप्त करें।
- मंदिर या धार्मिक स्थानों पर केला या बेसन के लड्डू वितरित करें।
- प्रत्येक दिन सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें।
- अपने घर में स्फटिक श्रीयन्त्र की स्थापना कर उसके सामने नित्य देशी घी का दीपक जलाएं।

वार्षिक फलादेश - 2033

इस वर्ष शनि मिथुन राशि एवं एकादश भाव में रहेंगे। 30 जनवरी तक राहु तुला राशि एवं तृतीय भाव में रहेंगे उसके बाद कन्या राशि एवं द्वितीय भाव में प्रवेश करेंगे। 18 मार्च तक गुरु मकर राशि एवं छठे भाव में रहेंगे उसके बाद कुम्भ राशि एवं सप्तम भाव में प्रवेश करेंगे। 24 मार्च से 8 अक्टूबर तक मंगल वक्री होकर धनु राशि एवं पंचम भाव में रहेंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय के लिए वर्ष का प्रारम्भ अच्छा नहीं रहेगा। परन्तु 18 मार्च से गुरु ग्रह का गोचर अनुकूल होने से समय अति उत्तम हो रहा है। आप अपने परिश्रम की बदौलत व्यावसायिक जीवन में उन्नति करेंगे। एकादशस्थ शनि के प्रभाव से आपके अंदर काम करने का जुनून होगा। यही आपके व्यावसायिक उन्नति का कारण बनेगा। अष्टम स्थान के केतु आपके कार्यों में कुछ रुकावट उत्पन्न कर सकते हैं।

आप अपने बौद्धिक बल के द्वारा अपने शत्रुओं पर विजय प्राप्त कर लेंगे। यदि आप किसी के साथ मिलकर कोई नया व्यापार प्रारम्भ करेंगे तो उसमें अच्छा लाभ होगा। अपने कार्य व्यवसाय में रिश्तेदारों के साथ साझेदारी न करें। नहीं तो उनके साथ संबंध खराब हो सकते हैं। नौकरी करने वालों के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा।

धन संपत्ति

वर्ष का प्रारम्भ आर्थिक रूप से चुनौतीपूर्ण रहेगा। द्वितीयस्थ राहु के कारण बीमारी दूर करने में संचित धन का व्यय हो सकता है। गुरु ग्रह का गोचर अशुभ होने से धनागम में रुकावट व आर्थिक तंगी का योग बना हुआ है। परन्तु 18 मार्च के बाद अचानक व्यापारिक उन्नति होने से आर्थिक स्थिति में सुधार होगा।

एकादश स्थान के शनि धनागम में वृद्धि करते रहेंगे। यह समय आपके लिए उपलब्धियों से भरा रहेगा। संपत्ति में निवेश करेंगे। पुराने ऋण इत्यादि से मुक्ति मिलेगी व तरक्की के द्वार खुलेंगे। व्यावसायिक उन्नति के लिए भी आप धन निवेश करेंगे। घरेलू सुख सुविधाओं पर भी आप अधिक खर्च करेंगे।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक मामलों के लिए यह वर्ष अच्छा नहीं रहेगा। द्वितीय स्थान के राहु पारिवारिक माहौल में विषमता की स्थिति उत्पन्न करेंगे। अतः आपको पारिवारिक मामलों में बड़ी ही समझदारी से काम लेना होगा। परिवार के किसी सदस्य को लेकर मन में चिंता रह सकती है। छोटी-छोटी बातों पर झगड़ें या विवाद में न उलझें और अपनी वाणी पर पूर्ण नियंत्रण रखें, नहीं तो आपकी प्रतिक्रिया पारिवारिक वातावरण के लिए अच्छी नहीं होगी। मामा के साथ भी आपका संबंध अच्छा नहीं रहेगा।

18 मार्च से गुरु ग्रह का गोचर बहुत ही शुभ हो रहा है। उस समय धर्म पत्नी के

साथ भावनात्मक लगाव में वृद्धि होगी। प्रेम संबंध बहुत ही मधुर होंगे। तृतीय स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि के कारण सामाजिक पद प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। परिवार में मांगलिक कार्य होते रहेंगे।

संतान

वर्ष का प्रारम्भ संतान के लिए अच्छा नहीं रहेगा। छठे स्थान का गुरु आपकी संतान के लिए अच्छा नहीं है। शारीरिक कष्ट एवं मानसिक परेशानी बनी रहेगी। उनकी शिक्षा-दिक्षा में भी रूकावटें आ सकती हैं।

18 मार्च से गुरु ग्रह का गोचर अच्छा हो रहा है। अतः उस समय के बाद आपके बच्चों की उन्नति होगी। बच्चों के स्वास्थ्य से संबंधित किसी प्रकार की लपरवाही न करें। आपकी दूसरी संतान के लिए समय शुभ है। उसका चौमुखी विकास होगा।

स्वास्थ्य

वर्ष का प्रारम्भ स्वास्थ्य की दृष्टि से बहुत अच्छा नहीं है। वर्षारम्भ से ही कुछ न कुछ शारीरिक परेशानी बनी रहेगी। द्वितीयस्थ राहु के प्रभाव से मौसमजनित बीमारियों से भी ग्रस्त होंगे। आपको ऐसा लग सकता है कि आपकी शारीरिक ऊर्जा धीरे-धीरे करके कम हो रही है। रोग स्थान में गुरु ग्रह की स्थिति स्वास्थ्य के लिए अच्छी नहीं है। यदि पहले आप किसी बीमारी से पीड़ित हैं तो यह समय ज्यादा प्रभावित करने वाला है। शारीरिक कष्ट के साथ मानसित चिंता भी बनी रहेगी।

18 मार्च से लग्न स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि शारीरिक व्याधियों को दूर कर आरोग्यता प्रदान करेगी। आपके अंदर सकारात्मक ऊर्जा का विकास होगा। आप अपने को पूर्ण रूप से स्वस्थ महसूस करेंगे। अपने खान-पान पर संयम रखें। सूर्योदय से पहले उठ कर टहलना और व्यायाम करना आपके लिए लाभप्रद रहेगा। शारीरिक आरोग्यता को अनुकून बनाने के लिए आप तुला दान भी कर सकते हैं।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

वर्ष की शुरुआत करियर एवं प्रतियोगिता परीक्षा के लिए श्रेष्ठ रहेगी। परीक्षार्थी अपने लक्ष्य में सफल रहेंगे। जो लोग नौकरी की तलाश में हैं उनको 18 मार्च के बाद मनोनुकूल नौकरी मिल सकती है। व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के लिए यह समय श्रेष्ठ है।

शिक्षार्थी इस समय योग्यता के अनुसार सफलता पाने में सफल रहेंगे। शिक्षा के क्षेत्र में विशेष बड़ी कोई अड़चन नहीं आयेगी। अध्ययन कार्यों में आपकी रूचि रहेगी। विदेशी भाषा सीखने की ओर आकर्षित होंगे। आपका उत्साह व साहस बना रहेगा।

यात्रा-तबादला

वर्षारम्भ में ही विदेश यात्रा के प्रबल योग बन रहे हैं। 18 मार्च से आप अपनी पत्नी के साथ दर्शनीय स्थलों की यात्रा का आनन्द प्राप्त करेंगे। व्यावसायिक यात्राओं से आपको लाभ होगा।

वर्षान्त में नौकरी करने वाले व्यक्तियों के स्थानान्तरण के योग बन रहे हैं। परन्तु यह बदलाव आपके लिए अनुकूल नहीं रहेगा। अष्टम स्थान पर राहु एवं शनि ग्रह की दृष्टि समुद्र के माध्यम से विदेश यात्रा करा सकती है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्ष के प्रारम्भ में पूजा-पाठ में आपका मन कम ही लगेगा। अधिक आलस्यता के कारण आपका दैनिक पूजा-पाठ भी प्रभावित हो सकता है। 18 मार्च के बाद धार्मिक कार्यों में आपकी रुचि बढ़ेगी। मन्दिर जाना, योग करना, पूजा करना आपका नैसर्गिक गुण होगा। ईश्वर के प्रति आपका आकर्षण और बढ़ेगा।

- बेसन के लड्डू वीरवार के दिन विष्णु जी के मन्दिर में वितरित करें एवं गुरु ग्रह के मन्त्र का पाठ करें।
- शनिवार के दिन काली वस्तु का दान करें और प्रत्येक दिन शनि मन्त्र का पाठ करें।
- दुर्गा बीसा यन्त्र अपने घर में स्थापित करें एवं उसके सामने प्रत्येक दिन घी का दीपक जलाएं।

वार्षिक फलादेश - 2034

वर्ष के पूर्वार्द्ध में शनि मिथुन राशि एवं एकादश भाव में रहेंगे और 13 जुलाई को कर्क राशि एवं द्वादश स्थान में प्रवेश करेंगे। 12 अगस्त से पहले राहु कन्या राशि एवं द्वितीय भाव में रहेंगे और उसके बाद सिंह राशि एवं लग्न स्थान में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में गुरु कुम्भ राशि एवं सप्तम भाव में रहेंगे और 28 मार्च को मीन राशि एवं अष्टम भाव में प्रवेश करेंगे। मंगल ग्रह अपनी सरल गति से गोचर करेंगे।

व्यवसाय

वर्ष के पूर्वार्द्ध में आप कुछ विशेष करने वाले हैं। पराक्रम के बल पर अपनी व्यापारिक स्थिति को सुदृढ़ बनाएंगे। कार्य व्यवसाय में मित्रों व परिजनों से खूब मदद मिलेगी। आप महत्वपूर्ण व्यक्तियों के संपर्क में आएंगे। यदि साझेदारी में कोई व्यापार कर रहें है तो आपके लिए यह समय श्रेष्ठ रहेगा। कानून से जुड़े लोगो को अच्छा लाभ मिलेगा। 28 मार्च से गुरु ग्रह का गोचर प्रतिकूल हो रहा है। अतः उस समय के बाद कोई नया कार्य प्रारम्भ न करें।

जुलाई के बाद आपके कार्यों में गुप्त एवं प्रत्यक्ष शत्रुओं द्वारा रूकावटें डाली जा सकती हैं। आपके विरोधी बढ़ेंगे जिससे आप मानसिक रूप से अशान्त रह सकते हैं। कार्यक्षेत्र में आपका किसी से मतभेद हो सकता है। कार्यस्थल पर अपनी वाणी पर नियंत्रण रखना आपके लिए लाभप्रद रहेगा। पैसे के लेन-देन में सावधानी बरतें। किसी प्रकार का जोखिम मोल न लें नहीं तो व्यापार में हानि हो सकती है।

धन संपत्ति

वर्ष का प्रथम भाग आर्थिक दृष्टि से अच्छा रहने वाला है। एकादशस्थ शनि के कारण आर्थिक स्थिति और भी सुदृढ़ होने वाली है। विभिन्न स्रोतों से धन का आगमन होगा। शेयर बाजार से भी लाभ होने की संभावना है, परन्तु द्वितीयस्थ राहु के कारण अचानक कुछ व्यर्थ के खर्चे होते रहेंगे। अनावश्यक खर्चों पर नियंत्रण और भावनाओं पर काबू रखने की जरूरत है। व्यर्थ की चिंता करने की आवश्यकता नहीं है। वर्ष का पूर्वार्द्ध सम्पन्नता से गुजरेगा।

जुलाई के बाद द्वादश स्थान में शनि ग्रह की स्थिति आर्थिक उन्नति के लिए अच्छी नहीं है। आय कम एवं व्यय ज्यादा होने का योग बन रहा है। निवेश के मामले में सावधान रहें एवं जोखिम भरे कार्य में निवेश करने से बचें अन्यथा धन हानि हो सकती है। आप किसी को उधार पैसा न दें नहीं तो वापसी की उम्मीद कम है। धोखा या आर्थिक नुकसान का सामना करना पड़ सकता है।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक मामलों के लिए वर्ष का पूवार्द्ध सामान्य रहने वाला है। द्वितीय स्थान का राहु प्रतिकूल होने के कारण आपको घरेलू मामलों में बड़ी ही समझदारी से काम लेना होगा। परिवार के किसी सदस्य को लेकर मन में चिंता रह सकती है। छोटी-छोटी बातों पर

झगड़ा या विवाद में नही पड़ना चाहिए। मार्च के बाद अपने दांपत्य जीवन को सुखमय बनाए रखने के लिए आपको अपने जीवन साथी के साथ विशेष स्नेह व सहनशीलता से काम लेना होगा। एकादशस्थ शनि के कारण बड़े भाइ-बहनों के लिए समय काफी शुभ है।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में ससुराल पक्ष के लोगों के साथ वैचारिक मदभेद होने की संभावना बन रही है। पिता के लिए यह समय अच्छा नहीं है परन्तु माता के लिए शुभ है। आपका एवं आपके जीवनसाथी का स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहने सेघरेलू माहौल ठीक नहीं सकता है। सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। सामाजिक कार्य करने में आप हमेशा तत्पर रहेंगे।

संतान

वर्षारम्भ संतान के लिए उत्तम रहेगा। उनके विषय में शुभ समाचार प्राप्त होंगे। शिक्षा के क्षेत्र में भी अच्छी प्रगति होने के शुभ योग बनेंगे। उनके पराक्रम में भी वृद्धि होगी परंतु उसके बावजूद भी आपकी चिंताएं बनी रहेंगी।

28 मार्च से गुरु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण यह समय आपके बच्चों के लिए अच्छा नहीं रहेगा। उनको स्वास्थ्य संबंधी परेशानियां आ सकती हैं। अतः उनके स्वास्थ्य पर ध्यान देना लाभप्रद रहेगा। दूसरे संतान के लिए भी यह वर्ष ज्यादा अच्छा नहीं है।

स्वास्थ्य

वर्ष का प्रारम्भ स्वास्थ्य की दृष्टि से बढ़िया रहेगा। आप रोग-मुक्त रहने वाले हैं खान-पान पर विशेष ध्यान देंगे और अपने स्वास्थ्य को अनुकूल बनाए रखेंगे। परन्तु 28 मार्च के बाद कुछ न कुछ शारीरिक परेशनी उत्पन्न हो सकती है। मौसमजनित बीमारियों से भी आप परेशान होते रहेंगे।

जुलाई के बाद द्वादश स्थान का शनि धीरे-धीरे आपकी शारीरिक ऊर्जा कम कर सकता है, जिससे आप अपने को कमजोर व बीमार महसूस कर सकते हैं। मसालेदार और तेल वाले आहार के प्रति आपकी रुचि बढ़ेगी, इसे नियंत्रित करने की कोशिश करें। नहीं तो पेट संबंधित तकलीफें बढ़ सकती हैं। लग्न स्थान का राहु अचानक आपको बीमार कर सकता है। अतः राहु ग्रह की शान्ति स्वास्थ्य के लिए लाभप्रद रहेगी।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

वर्ष के पूर्वार्द्ध में प्रतियोगिता परीक्षार्थी अपने लक्ष्य में सफलता प्राप्त करेंगे। एकादशस्थ शनि के प्रभाव से शत्रुओं पर आपका प्रभाव बढ़ेगा और आपके समस्त विरोधी शान्त होंगे। व्यावसायिक शिक्षा, औषधि क्षेत्र, कम्प्यूटर साईंस, सिविल सर्विसेज से जुड़ लोगों को सफलता मिलेगी।

यदि आप नौकरी करते हैं तो साल का उत्तरार्द्ध कुछ खास अच्छा नहीं रहेगा। लोग आपके विरूद्ध षड्यंत्र भी बना सकते हैं। बेवजह आपके ऊपर आरोप भी लगाये जा सकते हैं,

जिससे आप काफी तनाव महसूस करेंगे। यदि आप विदेश में अपना करियर बनाना चाहते हैं तो यह समय आपके लिए अनुकूल है और आपको अच्छी सफलता मिलेगी।

यात्रा-तबादला

वर्ष का पूर्वार्द्ध यात्रा के लिए सामान्य रहेगा। ऑफिस व व्यवसाय से संबंधित छोटी-मोटी यात्राएं होंगी। मार्च के बाद घर से दूर रहने वाले व्यक्ति अपनी जन्मभूमि की यात्रा करेंगे।

जुलाई के बाद द्वादश के शनि आपको विदेश यात्रा करा सकते हैं। किसी भी प्रकार की यात्रा करते समय या वाहनादि चलाते समय सावधान रहें नहीं दुर्घटना हो सकती है। क्योंकि चोट चपेट की प्रबल सम्भावना बन रही है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्ष के प्रारम्भ में लग्न स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि धार्मिक कार्यों के लिए बहुत ही शुभ है। ईश्वर की भक्ति में आपका अटूट विश्वास होगा। आप अपनी धर्मपत्नी के साथ सभी धार्मिक कार्यों में संलग्न रहेंगे। धर्म से जुड़े सभी पर्वों को हंसी खुशी के साथ मनाएंगे। वर्ष के उत्तरार्द्ध में आप दान-पुण्य अधिक करेंगे। अष्टमस्थ गुरु के प्रभाव से गुप्त विद्याओं या तान्त्रिक सिद्धियों के प्रति भी आपका आकर्षण बढ़ेगा।

- गुरुवार के दिन केला गरीबों में दान करें एवं केले के वृक्ष की पूजा करें।
- शनि ग्रह का अशुभ प्रभाव शान्त करने के लिए शनि यन्त्र अपने पूजा घर में स्थापित कर उसकी पूजा करें।
- मदिरा और नशीले पदार्थों का सेवन बिल्कुल न करें।
- आठ मुखी रुद्राक्ष धारण करें। ऊँ नमः शिवाय मन्त्र का प्रत्येक दिन पाठ करें।

वार्षिक फलादेश - 2035

इस वर्ष कर्क राशि का शनि द्वादश भाव में और सिंह राशि का राहु लग्न स्थान में रहेंगे। 5 अप्रैल तक गुरु मीन राशि एवं अष्टम भाव में रहेंगे और उसके बाद मेष राशि एवं नवम भाव में प्रवेश करेंगे। 21 जुलाई से 9 सितम्बर तक वक्री मंगल मीन राशि एवं अष्टम भाव में रहेंगे।

व्यवसाय

व्यावसायिक जीवन के लिए वर्ष का प्रारम्भ अच्छा नहीं रहेगा। मुख्यतः सारे ग्रह प्रतिकूल होने के कारण आप व्याकुल हो सकते हैं। गुप्त शत्रुओं द्वारा आपके कार्यों में रुकावटें डाली जा सकती हैं। ऐसे में आपको बड़ी सावधानी से काम लेना चाहिए। जल्दबाजी में कोई निर्णय न लें। गैरकानूनी तरीकों से धन कमाने की कोशिश न करें वरना कानूनी वाद-विवाद में फंस सकते हैं। अर्जित की हुई संपत्ति को व्यर्थ में न गवाएं, सभी प्रकार के वित्तीय मामलों में पारदर्शिता बरतें। हालांकि 6 अप्रैल के बाद समय कुछ अनुकूल हो रहा है।

इस वर्ष आप कोई नया कार्य व्यवसाय प्रारम्भ न करें नहीं तो उस में आपको हानि हो सकती है। पहले से चले आ रहे कार्यों को सुचारु रूप से चलाते रहें। उसमें आपको सफलता मिल सकती है। नवमस्थ गुरु ग्रह के प्रभाव से अनुभवी लोगों का सफलता मिलेगी। जो लोग शेयर बाजार या रीयल एस्टेट से जुड़े हैं, उनको थोड़ा बहुत लाभ मिल सकता है।

धन संपत्ति

आर्थिक रूप से यह साल आपके लिए अच्छा नहीं रहेगा। जितना लाभकारी होगा उतना ही चुनौतीपूर्ण भी होगा। साल की शुरुआत में निवेश से सम्बन्धित योजनाओं पर ध्यान न दें और अपने दस्तावेज भी संभाल कर रखें। हड़बड़ी में कोई भी कार्य न करें नहीं तो आर्थिक हानि हो सकती है। निवेश व आर्थिक निर्णय लेते समय सतर्क रहें व जल्दबाजी न करें। इस अवधि में सकारात्मक बने रहना आपके लिए लाभप्रद रहेगा।

अधिक सतर्कता बरतने की जरूरत है। जितना ज्यादा हो सके धन की बचत करने की कोशिश करें और फिजूल के खर्चों पर नियंत्रण रखें। तृतीय स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि के कारण कोई करीबी ही आपको दगा दे सकता है। ऐसे लोगों से बचने के लिए किसी भी प्रकार के वित्तीय लेनदेन में पूरी सावधानी बरतें। यदि वह आपसे उधार मांग रहा हो तो बेहद ही सावधान रहें। जोखिम भरा निवेश करने से बचें।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक जीवन के लिए यह वर्ष अच्छा नहीं रहेगा। अधिक भागदौड़ के कारण परिजनों को अधिक समय नहीं दे पाएंगे। गृहस्थ जीवन की बात करें तो पारिवारिक सदस्यों के साथ कुछ तर्क-वितर्क होने की संभावना नजर आ रही है। हालाँकि समझदारी से इसे टाला जा सकता है। अप्रैल के बाद आपके छोटे भाई बहनों के साथ संबंध अच्छा रहेगा। आपके माता पिता

जी के लिए यह समय काफी शुभ है। परन्तु आपकी धर्मपत्नी के स्वास्थ्य में उतार-चढ़ाव की स्थिति बनी रहेगी।

6 अप्रैल से गुरु ग्रह का गोचर अनुकूल होने के कारण आपके पारिवारिक एवं सामाजिक पद व प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। समाज में आपका मान-सम्मान बढ़ेगा। जन कल्याण के लिए आप कोई विशेष कार्य संपन्न करेंगे। समाज में आपका सम्मान और बढ़ेगा। आपको बच्चों का भी अच्छा सहयोग मिलेगा।

संतान

वर्ष का प्रारम्भ संतान के लिए अच्छा नहीं है। अष्टम स्थान का गुरु संतान संबंधित चिंताएं दे सकता है। गर्भवती स्त्रियों को बड़ी सावधानी से से रहना चाहिए नहीं तो गर्भपात हो सकता है।

6 अप्रैल के बाद गुरु ग्रह का गोचर अनुकूल होने के कारण आपके बच्चों के स्वास्थ्य में सुधार आएगा। संतान के साथ संबंधों में मधुरता आएगी, जिससे घरेलू वातावरण में भी सुधार होगा। यदि आप अपने बच्चों को प्रोत्साहित करते रहे तो वे अपने लक्ष्य को अवश्य प्राप्त कर लेंगे। अतः आप उनकी सकारात्मक सोच में वृद्धि करते रहें।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से यह वर्ष अच्छा नहीं रहेगा। लग्नस्थ राहु के कारण स्वास्थ्य संबंधित चिंताएं बनी रहेंगी। मौसमजनित बीमारियों से आप परेशान होते रहेंगे। दुर्घटना या किसी प्रकार के शारीरिक कष्ट का सामना करना पड़ सकता है। साथ ही अष्टमस्थ गुरु के प्रभाव से मोटापा एवं लीवरजनित बीमारियों से परेशानी हो सकती है। 6 अप्रैल से लग्न स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपकी शारीरिक आरोग्यता अनुकूल रहेगी।

अपना स्वास्थ्य अनुकूल रखने के लिए खान-पान एवं दिनचर्या में भी सुधार करना होगा। सुबह-सुबह व्यायाम या योगा करना आपके लिए लाभप्रद रहेगा। यदि आपने स्वास्थ्य पर ध्यान नहीं दिया तो आपका स्वास्थ्य ज्यादा प्रतिकूल हो सकता है। अतः स्वास्थ्य संबंधित किसी प्रकार की लापरवाही न बरतें। आँखों में समस्या हो सकती है और चश्मा भी लग सकता है। जिन लोगों को पहले ही चश्मा लग चुका है उनके चश्मे का नम्बर बढ़ सकता है।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

करियर एवं प्रतियोगिता के लिए यह वर्ष मिला-जुला रहेगा। माध्यमिक शिक्षा ग्रहण कर रहे शिक्षार्थियों के लिये भ्रम और असमंजसता की स्थिति बनी रहेगी। विदेशी भाषा सीखने वाले विद्यार्थियों के लिए यह साल बहुत ही शुभ रहेगा।

प्रतियोगिता परीक्षार्थियों को कठिन परिश्रम के बाद सफलता मिलेगी। शत्रुओं को परास्त करने के लिये आपको अत्यधिक परिश्रक करना पड़ेगा।

यात्रा-तबादला

विदेश यात्रा के लिए वर्ष प्रारम्भ बहुत ही श्रेष्ठ है। अष्टम स्थान का गुरु प्राचीन दर्शनीय स्थलों या सामुद्रिक स्थलों की यात्रा करा सकता है। 6 अप्रैल के बाद आपकी लम्बी यात्राएं होंगे।

नवमस्थ गुरु के कारण आप धार्मिक यात्रा भी अधिक करेंगें। इन यात्राओं के अंतराल में आपकी किसी के साथ मित्रता भी हो सकती है। यह मित्रता आपके लिए लाभप्रद रहेगी।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्ष का प्रारम्भ धार्मिक कार्यों के लिए अच्छा नहीं है। आपके समस्त धार्मिक कार्यों में व्यवधान उत्पन्न होंगे। आपका मन एकाग्र नहीं रहेगा, जिससे आप पूजा-पाठ, यज्ञ, अनुष्ठान आदि क्रियाएं कम ही कर पाएंगे। 6 अप्रैल के बाद धार्मिक कार्यों के प्रति आपका आकर्षण बढ़ेगा। आपके दैनिक पूजा-पाठ व दिनचर्या में सुधार होगा। गरीबों को खाना खिलाने या उनकी सहायता करने में आपको संतुष्टि मिलेगी।

- पीली दाल, केला व बेसन की मिठाई मंदिर में दान करें एवं गुरुवार का व्रत करें।
- शनिवार के दिन गरीबों को काला कम्बल दान करें।
- अपने वजन के बराबर अन्न दान करें जिसके प्रभाव से शारीरिक व्याधियां दूर होंगी।
- आठ मुखी रुद्राक्ष धारण करें। जिससे राहु ग्रह का दुष्प्रभाव समाप्त होगा।

वर्ष के पूर्वार्द्ध में शनि कर्क राशि एवं द्वादश भाव में रहेंगे और 27 अगस्त को सिंह राशि एवं लग्न स्थान में प्रवेश करेंगे। 13 अप्रैल तक राहु सिंह राशि एवं लग्न स्थान में रहेंगे और उसके बाद कर्क राशि एवं द्वादश भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में मेषस्थ गुरु नवम भाव में रहेंगे और 15 अप्रैल को वृष राशि एवं दशम भाव में प्रवेश करेंगे और अतिचारी होकर 9 सितम्बर को मिथुन राशि एवं एकादश भाव में प्रवेश करेंगे और पुनः वक्री होकर 17 नवम्बर को वृष राशि एवं दशम भाव में आ जाएंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ अच्छा नहीं रहेगा। व्यापार में सफलता प्राप्ति के लिए आपको लगातार प्रयास करना पड़ेगा। राहु एवं शनि ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण कुछ प्रतिद्वंदी आपके कार्यों में रुकावट डाल सकते हैं। आपके कार्यों में अचानक हानि या कोई बड़ी समस्या आ सकती है, जिससे आप परेशान हो सकते हैं। परन्तु नवमस्थ गुरु के कारण आपका भाग्य साथ देगा और आप सभी समस्याओं का समाधान निकाल लेंगे।

अप्रैल के बाद कोई नया कार्य प्रारम्भ न करें नहीं तो आपका पैसा फंस सकता है। व्यापार में किसी पर अवश्यकता से ज्यादा विश्वास न करें नही तो हानि हो सकती है। 27 अगस्त के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों का पदोन्नति के साथ स्थानान्तरण भी होगा। यह तबादला आपके अनुकूल स्थान पर भी हो सकता है। भूमि से सम्बन्धित कार्य करने वाले व्यक्तियों को लाभ प्राप्त होगा।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टिकोण से यह वर्ष सामान्य फलदायक रहेगा। धनागम तो होगा परन्तु अधिक खर्च होने के कारण बचत नहीं कर पाएंगे। रोग बीमारी इत्यादि में आपका व्यय ज्यादा होगा। द्वादश स्थान का शनि अनावश्यक खर्च भी बढ़ा सकता है। अतः अपने खर्चे पर अंकुश लगाएं।

अप्रैल के बाद द्वितीय एवं चतुर्थ स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से भूमि, भवन, वाहन के साथ रत्न आभुषण इत्यादि की प्राप्ति हो सकती है। अपने परिवार के सदस्यों तथा रिश्तेदारों के मांगलिक कार्यों में धन का व्यय होगा। यदि कोई बड़ा निवेश करना पड़े तो उस क्षेत्र से जुड़े अनुभवी व्यक्तियों की सलाह अवश्य लें। यदि पैतृक संपत्ति पर कोई वाद-विवाद चल रहा हो तो फैसला आपके प्रतिकूल हो सकता है।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ अधिक अनुकूल नहीं है। व्यावसायिक व्यस्तता के चलते घर में अधिक समय दे पाना मुश्किल हो सकता है। कुछ विषम परिस्थितियां भी निर्मित होंगी अतः अच्छा यही होगा कि विपरीत परिस्थितियों का सामना करने के लिए आप

अपने अंदर प्रतिरोधात्मक शक्ति विकास करें। आपके ईष्ट मित्र भी अपने वादों से मुकर सकते हैं और उनसे आपका मतभेद हो सकता है। माता का स्वास्थ्य खराब हो सकता है।

15 अप्रैल के बाद पारिवारिक रूप से समय काफी अनुकूल हो जाएगा। आपको परिवार के बड़े सदस्यों का सहयोग प्राप्त होगा, जिससे आपको मानसिक प्रसन्नता प्राप्त होगी और परिवार के प्रति आपका आकर्षण भी बढ़ेगा। माता पिता के लिए यह समय अच्छा रहेगा। परन्तु आपके ससुराल पक्ष के लिए समय अच्छा नहीं है। उनके साथ आपके संबंध भी खराब हो सकते हैं।

संतान

संतान की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ बहुत अनुकूल रहेगा। पंचम स्थान पर गुरु की दृष्टि आपके बच्चों के लिए बहुत ही शुभ है। उनके उन्नति के बन्द सारे मार्ग खुलेंगे और आपके बच्चों का चौमुखी विकास होगा।

आपके दूसरे बच्चे के लिए समय अच्छा नहीं है। अतः उसको स्वास्थ्य संबंधित परेशानी बनी रहेगी, जिससे उनकी शिक्षा-दीक्षा व उन्नति में व्यवधान आ सकता है।

स्वास्थ्य

वर्ष के प्रारम्भ में स्वास्थ्य अच्छा रहेगा। नवमस्थ गुरु की पंचम दृष्टि लग्न पर होगी उसके प्रभाव से शारीरिक आरोग्यता की प्राप्ति व कार्य क्षमताओं में वृद्धि के प्रबल संकेत हैं। लग्न स्थान में शुभ प्रभाव के कारण सकारात्मक सोच में वृद्धि होगी। परन्तु अप्रैल के बाद संक्रामक बीमारियों की चपेट में आ सकते हैं।

राहु एवं शनि ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण रक्तचाप, वायु विकार व पित्त विकार आदि रोगों की संभावना हो सकती है। अत्यधिक आलस्यता के कारण आप स्वस्थ रहते हुए भी बीमार जैसा अनुभव करेंगे। यदि आपने स्वास्थ्य पर ध्यान नहीं दिया तो किसी बड़ी बीमारी की चपेट में आ सकते हैं। ऐसी स्थिति में आपको दवा से ज्यादा दुआ की आवश्यकता होगी।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

विद्यार्थियों के लिए वर्ष का प्रारम्भ अत्यधिक अनुकूल है। पंचम स्थान पर गुरु की दृष्टि विद्यार्थियों के लिए बहुत अच्छा योग बना रही है। शिक्षा के क्षेत्र में अच्छी उन्नति करेंगे। उच्च शिक्षा प्राप्ति के लिए अच्छे शैक्षणिक संस्थान में आपका प्रवेश मिल सकता है।

अत्यधिक भोजन एवं आलस्य से बचें। विद्याध्ययन में एकाग्रता बढ़ाने के लिए गुरुवार के दिन उपवास करें। 27 अगस्त के बाद शिक्षा प्राप्ति में व्यवधान आ सकता है। जो व्यक्ति नौकरी की तलाश में हैं उनको कुछ दिन और इंतजार करना पड़ सकता है।

यात्रा-तबादला

वर्ष के प्रारंभ में छोटी-मोटी यात्राएं होती रहेंगी। नवमस्थ गुरु के कारण लम्बी यात्रा का प्रबल योग बन रहा है। इन यात्राओं से भाग्योन्नति भी होगी। इस यात्रा के दौरान आपकी किसी के साथ मित्रता भी हो सकती है।

अप्रैल के बाद द्वादश स्थान में राहु एवं शनि ग्रह की युति विदेश यात्रा का प्रबल योग बना रही है। नौकरी वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण हो सकता है। यह परिवर्तन आपके घर के पास हो सकता है। यात्रा करते समय या वाहन चलाते समय सावधानी अत्यधिक जरूरी है। क्योंकि यात्रा के अंतराल में दुघर्टना का भी योग बन रहा है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्षारम्भ में नवमस्थ गुरु के कारण आप कोई विशेष पूजा-पाठ, यज्ञ, अनुष्ठान संपन्न करेंगे। अप्रैल के बाद आप दान पुण्य अधिक करेंगे। आप मानसिक रूप से संतुष्ट रहेंगे। आपके मन में नैसर्गिक रूप से आध्यात्मिक ज्ञान के प्रति रुचि बढ़ेगी, जिससे परमात्मा के प्रति आत्मसमर्पण का भाव उत्पन्न होगा। आध्यात्मिक ज्ञान के कारण आपको अलौकिक आनन्द की प्राप्ति होगी।

- प्रत्येक मंगलवार के दिन हनुमान जी को चोला चढाएं व हनुमान चालीसा का पाठ करें।
- शनिवार के दिन काली वस्तु का दान करें व गरीबों को लोहे का तवा दान करें।
- दुर्गा बीसा व आठ मुखी रुद्राक्ष धारण करें।

इस वर्ष शनि सिंह राशि एवं लग्न स्थान में रहेंगे। 19 अक्टूबर तक राहु कर्क राशि एवं द्वादश भाव में रहेंगे और उसके बाद मिथुन राशि एवं एकादश भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में गुरु वृष राशि एवं दशम भाव में रहेंगे। 26 अप्रैल को मिथुन एवं एकादश भाव में प्रवेश करेंगे और अतिचारी होकर 16 सितम्बर को कर्क राशि एवं द्वादश भाव में प्रवेश करेंगे। 29 अगस्त से 28 नवम्बर तक वक्री मंगल वृष राशि एवं दशम भाव में रहेंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से यह वर्ष अधिक अनुकूल नहीं रहेगा। शनि एवं राहु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण नौकरी में परिवर्तन व व्यवसाय में व्यवधान आने की संभावना बना रहा है। यदि किसी के साथ मिलकर व्यापार कर रहे हैं तो आप अपने भागीदार से असंतुष्ट रहेंगे। इस समय के अंतराल में कोई नया कार्य प्रारम्भ न करें नहीं तो जिम्मेदारियों का बोझ बढ़ेगा। व्यवसाय/नौकरी व निवेश संबंधी मामलों में जल्दबाजी में जोखिम भरा निर्णय लेना घातक होगा।

अप्रैल के बाद गुरु का गोचर किंचित शुभ हो रहा है। अतः व्यापार व नौकरी में कुछ सुधार होगा। शेयर बजार से जुड़े जोगो को लाभ मिलेगा। क्रय विक्रय, व खाद्य पदार्थ का व्यवसाय करने वाले व्यक्तियो को सावधान रहना चाहिए नही तो हानि हो सकती है।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टिकोण से यह वर्ष मिला जुला रहेगा। धनागम तो होगा परन्तु पारिवारिक खर्च अधिक होने के कारण बचत नहीं कर पाएंगे। आप अपनी भौतिक सुख सुबिधा पर अधिक खर्च करेंगे। द्वितीय एवं चतुर्थ स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपको भूमि, भवन, वाहन एवं रत्नादि वस्तुओं की प्राप्ति हो सकती है। अप्रैल के बाद आय के स्रोत बढ़ेंगे। रुके हुए व फंसे हुए पैसे मिलेंगे।

16 सितम्बर से आप का समय प्रभावित हो रहा है। मुख्यतः ग्रहों का गोचर प्रतिकूल होने के कारण आर्थिक हानि का योग बन रहा है। इस समय आपको खर्चो पर नियंत्रण और भावनाओं पर काबू रखने की जरूरत है। अचानक परिवार में कुछ ऐसे खर्चे आ सकते हैं, जिससे आपको आर्थिक कमी का एहसास हो सकता है। अतः इस समय के अंतराल में आपको सावधान रहना चाहिए।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टिकोण से वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल रहेगा। द्वितीय एवं चतुर्थ स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपके परिवार में सुख शान्ति का वातावरण बना रहेगा। आपको माता पिता सहित पूरे परिवार का सहयोग मिलेगा, जिससे आपके व्यक्तित्व में निखार व चमक पैदा होगी। अप्रैल के बाद आपको प्रेम प्रसंगो में भी सफलता प्राप्त होगी। सप्तम स्थान पर

शनि एवं गुरु ग्रह के संयुक्त दृष्टि प्रभाव से धर्मपत्नी के साथ आपके संबंध मधुर होंगे। आपके भाईयों की उन्नति होगी। सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। आप सामाजिक कल्याण के लिए कुछ विशेष कार्य संपन्न करेंगे, जिससे आपकी ख्याति समाज में और बढ़ेगी।

16 सितम्बर से आपका पारिवारिक माहौल प्रभावित हो सकता है। अचानक आपकी धर्म पत्नी का स्वास्थ्य खराब हो सकता है। कुछ लोगों का व्यवहार आपको अच्छा नहीं लगेगा। फिर भी आपको उन लोगों के साथ स्नेह व प्रेम बनाए रखना पड़ेगा। माँ के साथ कुछ नाराजगी हो सकती है तथा उन्हें स्वास्थ्य संबंधी भी कुछ परेशानियाँ हो सकती हैं। अतः उनका समुचित ख्याल रखें और व्यवहारों में संयम बरतें।

संतान

संतान की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ सामान्य रहेगा। आपके बच्चे अपने परिश्रम के बल पर आगे बढ़ेंगे। आपकी दूसरे संतान के लिए यह समय अच्छा नहीं है। उसको स्वास्थ्य संबंधित परेशानी हो सकती है। अतः उसके स्वास्थ्य पर ध्यान देना लाभप्रद रहेगा।

26 अप्रैल के बाद समय काफी शुभ हो रहा है। नवविवाहित व्यक्तियों को संतान रत्न की प्राप्ति होगी। आपके बच्चों की उन्नति होगी। प्रथम संतान के विषय में शुभ समाचार प्राप्त होंगे। शिक्षा के क्षेत्र में भी अच्छी प्रगति करेंगे। परन्तु सितम्बर के बाद समय प्रभावित हो रहा है। अतः इस समय के अंतराल उन पर ज्यादा ध्यान देना आपके लिए लाभ प्रद रहेगा।

स्वास्थ्य

इस वर्ष आपके स्वास्थ्य में उतार-चढ़ाव काफी देखने को मिलेंगे। खासकर जोड़ों में दर्द, सिर में दर्द, मानसिक चिंता एवं वायु संबंधी समस्या हो सकती है। अतः स्वास्थ्य को लेकर किसी प्रकार की लापरवाही न करें अन्यथा स्वास्थ्य ज्यादा प्रतिकूल हो सकता है। शनि की सप्तम भाव पर दृष्टि के फलस्वरूप व्यापारिक कारणों या अपने निजी कारणों की वजह से मानसिक तनाव हो सकता है। मौसमजनित बीमारियों से आप प्रभावित रह सकते हैं। आपको अपने अन्दर कमजोरी जैसा अनुभव होगा।

अप्रैल के बाद आपके स्वास्थ्य में कुछ सुधार होगा। परन्तु गुरु ग्रह का गोचर अनुकूल होने के कारण आप मोटापे का शिकार हो सकते हैं, क्योंकि आप खान-पान पर विशेष ध्यान देंगे। मसालेदार और तेल वाले आहार के प्रति आपकी रुची बढ़ेगी। इसे नियंत्रित करने की कोशिश करें। आलस्य का त्याग कर स्फूर्तिवान बनें। आपके लिए लाभप्रद रहेगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

यह वर्ष आपके लिए सामान्यतः मिला जुला रहेगा। लग्न स्थान में शनि का गोचर प्रतिकूल होने के कारण आलस्यता व दीर्घसूत्रता आपके उन्नति में बाधक बन सकती है। अतः समय के सदुपयोग के साथ मन को एकाग्र कर अपने लक्ष्य के प्रति केन्द्रित करना आपके लिए लाभ प्रद रहेगा।

26 अप्रैल के बाद समय विद्यार्थियों के लिए उच्च शिक्षा प्राप्ति हेतु उत्तम है। जो विद्यार्थी किसी नये कॉलेज में प्रवेश परीक्षा की तैयारी कर रहे हैं उन्हें मनोनुकूल अच्छे कॉलेज में दाखिला मिल जाएगा। यदि गूढ़ विज्ञान और मनोविज्ञान में आपकी रुचि है तो उनके लिए समय अनुकूल है। सितम्बर के बाद यदि शिक्षा के संदर्भ में कोई लुभावना प्रस्ताव मिल रहा है तो सावधान रहिए, क्योंकि शनि एवं गुरु ग्रह का गोचर अनुकूल नहीं होने कारण आपको धोखा मिल सकता है।

यात्रा-तबादला

लग्न में शनि की स्थिति यात्रा में विलंब या किसी प्रकार की कठिनाई का कारण बनेगी। छोटी-मोटी यात्राएं प्रभावित होंगी। परन्तु द्वादश स्थान के राहु विदेश यात्रा के प्रबल योग बना रहे हैं। अपने घर से दूर रहने वाले व्यक्तियों की अप्रैल के बाद जन्म भूमि की यात्रा होगी।

26 अप्रैल के बाद सप्तम स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह की संयुक्त दृष्टि व्यवसाय संबंधित यात्रा भी करा सकती है। इस वर्ष आपकी पूर्व निर्धारित कोई यात्रा नहीं होगी। मुख्यतः सारी यात्राएं अचानक होंगी। इन यात्राओं से आपको अच्छा लाभ मिलेगा।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए यह वर्ष अच्छा नहीं रहेगा। लग्न स्थान का शनि धार्मिक कार्यों में अरुचि उत्पन्न कर सकता है, जिससे आपका दैनिक पूजा पाठ भी प्रभावित होगा। तन्त्र, यन्त्र व सिद्धि के प्रति आपका रुचि बढ़ेगी। 26 अप्रैल के बाद आपके अंदर ईश्वर के प्रति विश्वास बढ़ेगा, जिससे आप निःस्वार्थ भाव से भगवान की पूजा करेंगे। सुबह शाम मन्दिर जाना व पूजा पाठ करना आपका नैसर्गिक गुण होगा। वर्षान्त में आप दान पुण्य भी अधिक करेंगे।

- राहु मन्त्र का पाठ करें व शनिवार के दिन काले कुत्ते को रोटी खिलाएं।
- अमावस्या तिथि को विद्वान ब्राह्मण को भोजन कराएं।
- प्रत्येक दिन हनुमान चालीसा का पाठ करें व मंगलवार के दिन हनुमान जी को चोला चढ़ाएं।
- अपने घर में पारद शिवलिंग की स्थापना करें और सुबह सुबह उसका दर्शन करें।

वार्षिक फलादेश - 2038

इस वर्ष राहु मिथुन राशि एवं एकादश भाव में रहेंगे। 22 अक्टूबर तक शनि सिंह राशि एवं लग्न स्थान मे रहेंगे और उसके बाद कन्या राशि एवं द्वितीय भाव में गोचर करेंगे। वर्षारम्भ में गुरु कर्क राशि द्वादश भाव में रहेंगे और वक्री होकर 17 जनवरी को मिथुन राशि एवं एकादश भाव में गोचर करेंगे और पुनः मार्गी होकर 11 मई को कर्क राशि एवं द्वादश भाव में आ जाएंगे और अतिचारी होकर 7 अक्टूबर को सिंह राशि एवं लग्न स्थान में प्रवेश करेंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से यह वर्ष सामान्यतः श्रेष्ठ रहेगा। वर्षारम्भ में एकादश स्थान का गुरु व्यापार में उन्नति का योग बना रहा है। आपको भाईयों का अच्छा सहयोग मिलेगा। यदि आप साझेदारी में व्यावसाय कर रहे हैं तो अपने साझेदार से संतुष्ट रहेंगे। अनुभवी लोगों व वरिष्ठ अधिकारियों का अच्छा सहयोग मिलेगा। जिसके प्रभाव से कार्यक्षेत्र में उन्नति के मार्ग प्रशस्त होंगे। मई के बाद समय कुछ प्रभावित होगा। अतः इस समय के अंतराल में आप कोई नया कार्य प्रारम्भ करेंगे।

गुरु एवं शनि ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण कोई गुप्त शत्रु आपके प्रति किसी प्रकार का षड्यन्त्र या कोई बड़ी समस्या उत्पन्न कर सकता है। इन समस्याओं के बीच आप अपने को पूर्ण रूप से फंसा हुआ महसूस करेंगे। फिर भी आप अपने बौद्धिक बल के द्वारा सभी समस्याओं का समाधान निकालने की कोशिश करेंगे और अक्टूबर के बाद काफी हद तक सफल भी रहेंगे। उस समय आपके कार्य व्यवसाय में अच्छी सफलता मिलेगी।

धन संपत्ति

आर्थिक रूप से वर्ष का प्रारम्भ उत्तम रहेगा। धनागम में निरंतरता बनी रहेगी। धनार्जन करने में आपको भाई व धर्मपत्नी का अच्छा सहयोग मिलेगा। परिवार में मांगलिक कार्य सम्पन्न होंगे उसमें भी आपका पैसा खर्च हो सकता है। परन्तु मई के बाद समय प्रतिकूल हो रहा है। अतः उस समय के अंतराल में कोई बड़ा निवेश न करें व धन के लेन देन में सावधान रहें नहीं तो आर्थिक हानि हो सकती है।

गुरु एवं शनि ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण अनावश्यक खर्चे बढ़ेंगे, जिससे संचित धन में कमी आ सकती है। जोखिम भरे कार्यों में धन निवेश न करें। शीघ्र पैसा कमाने वाले तरीकों पर अंकुश लगाएं। धन के मामले में किसी पर बहुत जल्दी विश्वास न करें। घर में रोगों की अधिकता होगी जिसके निवारण में धन का व्यय होगा। अक्टूबर के बाद समय और ज्यादा प्रभावित हो रहा है। अतः उस समय रिश्तेदारों व मित्रों के साथ पैसे का लेन देन न करें नहीं उनके साथ आपके संबंध खराब हो सकते हैं।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टिकोण से वर्ष का प्रारम्भ सामान्य रहेगा। व्यापारिक व्यस्तता के कारण आप अपने परिजनों को अधिक समय नहीं दे पाएंगे। 11 मई के बाद गुरु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण आपका पारिवारिक माहौल ज्यादा प्रभावित हो सकता है। ऐसे में आप बड़े ही विवेक से काम लें और सभी लोगों के साथ स्नेह और आपसी सौहार्द के साथ पेश आएं।

परिवार के लोगों के सुझावों पर अमल करना आपके लिए फायदे का सौदा हो सकता है और उनके विरुद्ध जाना घातक भी हो सकता है। माँ के साथ कुछ नाराजगी हो सकती है तथा उन्हें स्वास्थ्य संबंधी भी कुछ परेशानियाँ हो सकती हैं, अतः उनका समुचित ख्याल रखें और व्यवहार में संयम बरतें। आप मानसिक रूप से परेशान भी रह सकते हैं। सामाजिक पद प्रतिष्ठा के लिए यह वर्ष समान्य रहेगा। अक्टूबर के बाद जीवनसाथी के साथ प्रेम सम्बन्धों में मधुरता आएगी।

संतान

संतान की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल रहेगा। पंचम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपके बच्चों की उन्नति होगी। नवविवाहित व्यक्तियों को संतान रत्न की प्राप्ति होगी। आपके दूसरे बच्चे का चौमुखी विकास होगा। उसके उन्नति के सारे मार्ग प्रसस्त होंगे। यदि वह विवाह के योग्य हैं तो विवाह का प्रबल योग बन रहा है।

11 मई के बाद उनके स्वास्थ्य पर ध्यान देना आपके लिए लाभप्रद रहेगा। गुरु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण आपके बच्चे कुसंगति का शिकार हो सकते हैं। उनका रहन सहन व दिनचर्या भी अनुशासनहीन हो सकती है, जिससे उनकी उन्नति में किंचित व्यवधान आ सकता है, परन्तु अक्टूबर के बाद समय बहुत ही शुभ हो रहा है।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य के दृष्टिकोण से यह वर्ष अच्छा नहीं रहेगा। स्वास्थ्य संबंधित परेशानी बनी रहेगी। 11 मई के बाद चोट चपेट व वाहनादि से दुर्घटना इत्यादि का योग बन रहा है। स्वास्थ्य संबंधी कोई बड़ी समस्या भी हो सकती है। पेट संबंधी समस्या जैसे अचानक पेट दर्द, गैस, अपच या बदहजमी आदि हो सकती है। सर्जरी आदि होने की भी संभावनाएं बनी हुई हैं।

अतः आपको समय-समय पर डॉक्टर की सलाह लेते रहना चाहिए। इसके अतिरिक्त आपको अपनी रोग प्रतिरोधक क्षमताओं को बढ़ाने के लिए अपने खान पान का विशेष ध्यान रखना होगा। जहां तक हो सके शुद्ध शाकाहारी ही भोजन करें। दाल, सब्जी, फल आदि का अधिक सेवन करें। 7 अक्टूबर के बाद समय कुछ अनुकूल हो रहा है।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

यह वर्ष आपके लिए प्रतियोगिता परीक्षाओं में सफलता की दृष्टि से सामान्य रहेगा। पंचम स्थान पर गुरु की दृष्टि विद्यार्थियों के लिए शुभ है। यदि उच्च शिक्षा हेतु अच्छे

शैक्षणिक संस्थान में प्रवेश पाना चाहते हैं तो वर्ष का प्रारम्भ बहुत ही शुभ है।

मई के बाद उन्नति में व्यवधान आता रहेगा। यदि आप अपने लक्ष्य में सफलता पाना चाहते हैं तो अथक परिश्रम करने की आवश्यकता है। जो लोग नौकरी की तलाश में हैं, उनको कुछ दिन और इंतजार करना पड़ सकता है। जो लोग विदेश में अपना करियर बनाना चाह रहे हैं। उनके लिए यह वर्ष शुभ है।

यात्रा-तबादला

तृतीय स्थान पर गुरु की दृष्टि छोटी-मोटी यात्रा कराती रहेगी। इन यात्राओं से आपको अच्छा लाभ भी मिलेगा। 11 मई के बाद आपकी विदेश यात्रा होंगी। नौकरी करने वाले व्यक्तियों का प्रतिकूल स्थान पर स्थानान्तरण होगा, जिससे आप दुखी रहेंगे।

यात्रा करते समय व वाहन चलाते समय सावधानी अत्यधिक जरूरी है। क्योंकि मई के बाद गुरु एवं शनि ग्रह का गोचर प्रतिकूल है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए यह साल मिला-जुला रहेगा। लग्न स्थान का शनि आपके सारे धार्मिक कार्यों में व्यवधान उत्पन्न कर सकता है। आलस्यता के कारण आपका दैनिक पूजा पाठ भी प्रभावित होगा। परन्तु मई के बाद आप दान पुण्य अधिक करेंगे। गरीबों की सहायता करना, भूखे को खाना खिलाना ही आप अपना धर्म समझेंगे। अक्टूबर के बाद आपका मन पूजा-पाठ के प्रति आकर्षित होगा। दैनिक पूजा-पाठ सुधरेगा। परमात्मा की भक्ति व मन्त्र पाठ में ज्यादा रूचि लेंगे।

- वीरवार के दिन केला या बेसन के लड्डू दान करें।
- सातमुखी रुद्राक्ष लाल धागे में धारण करें।
- अपने घर में पारद शिवलिंग स्थापित कर नित्य उसका पूजन करें।
- महामृत्युंजय यन्त्र अपने घर में स्थपित करें और नित्य उसका पूजन करें।

वर्षारम्भ में शनि कन्या राशि एवं द्वितीय भाव में रहेंगे तथा वक्री होकर 5 अप्रैल को सिंह राशि एवं लग्न स्थान में प्रवेश करेंगे और पुनः मार्गी होकर 13 जुलाई को कन्या राशि एवं द्वितीय भाव में आ जाएंगे। 7 अप्रैल को राहु वृष राशि एवं दशम भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में गुरु सिंह राशि एवं लग्न स्थान में रहेंगे तथा 3 मार्च को वक्री होकर कर्क राशि एवं द्वादश भाव में प्रवेश करेंगे और मार्गी होकर 2 जून को सिंह राशि एवं लग्न स्थान में आ जाएंगे और अतिचारी होकर 4 नवम्बर को कन्या राशि एवं द्वितीय भाव में गोचर करेंगे।

व्यवसाय

वर्ष के प्रारम्भ में शनि ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने से कार्य क्षेत्र में उतार चढ़ाव की स्थिति बनी रहेगी। आप अपने कार्यों को अंजाम तक पहुंचाने में कठिनाई का अनुभव करेंगे। कुछ प्रतिद्वंदी आपके कार्यों में व्यवधान उत्पन्न करने की काशिश करेंगे। इसलिए बिना किसी पर विश्वास किये अपने बौद्धिक शक्ति के अनुसार कार्य करते रहें। हालांकि अप्रैल से समय काफी शुभ हो रहा है। कार्य व्ययवाय में सुधार होगा। वांछित उन्नति एवं सफलता अर्जित करेंगे।

आमदनी के नये-नये स्रोत मिलेंगे। इस अवधी में आप कोई नया कार्य प्रारम्भ करेंगे। यदि आप खनिज एवं खान विभाग व रासायनिक विभागों से संबंधित कार्य कर रहे हैं तो अच्छी सफलता मिलेगी। अनुभवी और वरिष्ठ लोगों का सहयोग मिलेगा, जिससे आपके कार्यों में सफलता की उम्मीद और बढ़ जाएगी। 4 नवम्बर के बाद समय नौकरी करने वालों के लिए शुभ नहीं है। आपके वरिष्ठ अधिकारियों के साथ वैचारिक मतभेत उत्पन्न हो सकते हैं तथा कार्य स्थल का वातावरण खराब हो सकता है।

धन संपत्ति

द्वितीय स्थान के शनि कुछ अनावश्यक खर्चे ला सकते हैं जिससे संचित धन में कमी आ सकती है। घर परिवार में रोग व्याधि की अधिकता होने से भी आपके अपव्यय होंगे। पैसे के लेन देन के समय कागजी कार्यवाही अवश्य करें। आपको अपने अनावश्यक खर्चो पर अंकुश लगाने की जरूरत है तथा जोखिम भरे कार्यो में धन निवेश करने से बचें।

5 अप्रैल से शनि ग्रह का गोचर अनुकूल होते ही धनागम के बन्द सारे मार्ग खुलेंगे तथा आपका चौमुखी विकास होगा। आपका घर सर्व प्रकारेण आधुनिक एवं भौतिक उपकरणों से सुसज्जित होगा तथा इसकी सुन्दरता एवं आकर्षण बनाए रखने में आप अत्यधिक व्यय करेंगे। परिवार में मांगलिक कार्य सम्पन्न होंगे उसमें भी आपका पैसा खर्च होगा। मित्र या भाइयों के माध्यम से भी धन लाभ हो सकता है। द्वितीयस्थ गुरु के प्रभाव से चल एवं अचल संपत्ति की प्राप्ति होगी।

घर-परिवार, समाज

द्वितीय स्थान के शनि आपके परिवार में कुछ विषम परिस्थिति उत्पन्न कर सकते हैं, जिससे आपका परिवारिक माहौल खराब हो सकता है। अतः आपको अपनी वाणी पर नियन्त्रण रखना चाहिए नहीं तो परिवार में किसी के साथ आपका वैचारिक मतभेद हो सकता है। परन्तु आपकी पत्नी के साथ समन्वय मधूर होंगे। यदि आप अविवाहित हैं तो विवाह का प्रबल योग बन रहा है।

आपके भाइयों की उन्नति होगी। पिता जी के लिए भी यह समय शुभ है। 2 जून के बाद परिवार में किसी सदस्य की वृद्धि होगी, जिससे पारिवारिक अनुकूलता बनी रहेगी। आप उच्च मान संमान एवं प्रतिष्ठा अर्जित करने में समर्थ होंगे। आपके सामाजिक प्रभाव व प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। सरकारी क्षेत्र में आपको काफी सम्मान मिलेगा। सामाजिक गतिविधियों में आप बढ़-चढ़ कर भाग लेंगे। परन्तु 4 नवम्बर से समय फिर से प्रभावित हो रहा है।

संतान

नव विवाहित व्यक्तियों को संतान रत्न की प्राप्ति होने के प्रबल योग बन रहे हैं। पंचमस्थ केतु पर गुरु की दृष्टि बच्चों की उन्नति के सारे मार्ग खोल रही है। अतः आपके बच्चे का चौमुखी विकास होगा। उनकी उन्नति के सारे मार्ग प्रशस्त होंगे।

3 मार्च के बाद समय किंचित प्रतिकूल हो रहा है। परन्तु 2 जून के बाद समय फिर से अच्छा हो जाएगा तथा उसके बाद पूरा वर्ष अनुकूल रहेगा। उस समय के अंतराल में बच्चों के विषय में शुभ समाचार प्राप्त होंगे तथा वे आपकी उम्मीदों से बढ़-चढ़ कर कार्य करेंगे जिससे आप उनसे प्रसन्न रहेंगे।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ उत्तम रहेगा। परन्तु 3 मार्च के बाद द्वादश स्थान का गुरु छोटी मोटी बीमारियों से स्वास्थ्य प्रभावित कर सकता है। मौसमजनित बीमारियों से भी परेशान हो सकते हैं। ऐसे में स्वास्थ्य का ख्याल रखना जरुरी होगा। यदि पहले से कोई लम्बी बीमारी भुगत रहे हैं तो परहेज की ज्यादा आवश्यकता है, नहीं तो आपका स्वास्थ्य ज्यादा प्रभावित हो सकता है। हालांकि 2 जून के बाद स्वास्थ्य में कुछ सुधार होना प्रारम्भ हो जाएगा।

लग्नस्थ गुरु के प्रभाव से आपका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा तथा मानसिक सन्तुष्टि भी बनी रहेगी। सभी महत्वपूर्ण कार्यों को आप सकारात्मक रूप से करेंगे। अपने स्वास्थ्य को अनुकूल बनाए रखने के लिए शुद्ध शाकाहारी भोजन की ग्रहण करेंगे। अर्थात् सादा खाना उच्च विचार वाली युक्ति आप पर पुर्ण रूप से चरितार्थ होगी। 4 नवम्बर के बाद समय किंचित प्रभावित हो रहा है।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

करियर में सफलता प्राप्ति के लिए आप को अधिक परिश्रम करने की आवश्यकता

है। जो विद्यार्थी विदेश या घर से दूर जाकर पढ़ाई करना चाहते हैं उनके लिए समय अनुकूल है। आधुनिक शिक्षा प्राप्त करने वाले व्यक्तियों को अच्छी सफलता मिलेगी।

अप्रैल से जून तक का समय नौकरी करने वालों के लिए समय अच्छा नहीं है उसके बाद आपके मान सम्मान में वृद्धि होगी। इजीनियरिंग की तैयारी करने वाले विद्यार्थियों को ज्यादा सफलता नहीं मिलेगा।

यात्रा-तबादला

3 मार्च के बाद द्वादशस्थ गुरु के कारण आपकी विदेश यात्रा हो सकती है। सामुद्रिक यात्रा का भी प्रबल योग बन रहा है। सपरिवार किसी दर्शनीय स्थल की यात्रा कर आनन्द प्राप्त करेंगे।

2 जून के बाद आपकी लम्बी यात्राएं होंगी। यह यात्रा आपके लिए बहुत ही सुखद व मनोरंजात्मक होंगी। 4 नवम्बर से सामुद्रिक स्थलों की यात्रा होने का योग बन रहा है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

लग्नस्थ गुरु के प्रभाव से पूजा पाठ के प्रति आपकी विशेष रुचि बढ़ेगी। ईश्वर के प्रति आपका अटूट विश्वास होगा। मार्च के बाद दान पुण्य करने में आप सबसे आगे रहेंगे। मन्दिर निमार्ण, गौशाला, अनाथाश्रम, वृद्धाश्रम इत्यादि स्थानों पर खुले हाथों से दान करेंगे। 2 जून के बाद आप अपनी पत्नी के साथ पारिवारिक कल्याण के लिए कोई विशेष पूजा संपन्न करेंगे, जिससे परिवार में सुख, शान्ति, समृद्धि इत्यादि में वृद्धि होगी। धार्मिक कार्य कर आप मानसिक रूप से प्रसन्न रहेंगे।

- सोमवार के दिन शिव जी पर दूध में काले तिल डाल कर चढ़ाएं तथा ऊँ नमः शिवाय इस मन्त्र का पाठ करें।
- प्रत्येक दिन हनुमान चालीसा का पाठ करें तथा मंगलवार के दिन हनुमान जी को चोला चढ़ाएं।
- वीरवार के दिन केला दान करें।
- प्रत्येक दिन सूर्योदय के समय सूर्य को अर्घ्य दें।

वार्षिक फलादेश - 2040

इस वर्ष शनि कन्या राशि एवं द्वितीय भाव में रहेंगे। पूरे वर्ष राहु वृष राशि एवं दशम भाव में रहेंगे तथा 11 दिसम्बर को मेष राशि एवं नवम भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में गुरु कन्या राशि एवं द्वितीय भाव में रहेंगे तथा वक्री होकर 6 अप्रैल को सिंह राशि एवं प्रथम भाव में गोचर करेंगे तथा मार्गी होकर पुनः 28 जून को कन्या राशि एवं द्वितीय भाव में आ जाएंगे तथा अतिचारी होकर 3 दिसम्बर को तुला राशि एवं तृतीय भाव में प्रवेश करेंगे।

व्यवसाय

इस वर्ष आप कई कार्यों में सफल होंगे। व्यापार में बड़े बड़े निर्णय लेने या विकास की योजनाओं पर ध्यान देने के लिए यह आवश्यक है कि आप पूरी जांच परख करके ही कदम बढ़ाएं। कानूनी मामलों से बचें क्योंकि वर्षारम्भ में शनि एवं गुरु की युति अच्छी नहीं है। झूठी आशाओं पर निर्भर न रहें। अधिक आत्मविश्वास आपको मुश्किल में डाल सकता है। अपनी प्रतिष्ठा के प्रति सचेत रहना भी जरूरी होगा। आप अपने मनपसंद क्षेत्र में अच्छा काम करेंगे और जनप्रिय बने रहेंगे।

अप्रैल से जून तक का समय किंचित प्रभावित रहेगा। इस समय के अंतराल में किसी पर अत्यधिक विश्वास न करें नहीं तो कार्य व्यवसाय में नुकसान हो सकता है। परन्तु जून के बाद समय फिर से अनुकूल हो रहा है। आपके मान-सम्मान में बढ़ोत्तरी होगी तथा सभी सहकर्मियों का अच्छा सहयोग मिलेगा। आप प्रसन्न रहेंगे व अपने काम को समय से पहले पूरा करने में सफल रहेंगे और प्रतिद्वंदियों को मुहतोड़ जबाब देंगे। 11 दिसम्बर के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों को अपने से बड़े अधिकारियों का पूर्ण सहयोग मिलेगा तथा कार्यस्थल पर आपकी एक अलग पहचान होगी।

धन संपत्ति

आमदनी में बढ़ोत्तरी होने के कारण आप बचत करने में भी सफल रहेंगे। किसी वसीयत के माध्यम से आपको धन लाभ हो सकता है अथवा किसी अप्रत्याशित जगह से अचानक धन की प्राप्ति हो सकती है। आप धन को धार्मिक कार्य में खर्च कर सकते हैं। परिवार के सदस्यों और अन्य लोगों के हित में भी आप खर्च करेंगे, परन्तु 6 अप्रैल के बाद धन हानि के योग हैं अतः कोई जोखिम भरा निवेश करने से बचें साथ ही पैसों की सुरक्षा को लेकर चिंतन करें। जून के बाद आपको रत्न आभूषण इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति होगी।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में चल एवं अचल सम्पत्ति की प्राप्ति होगी। आपके ऐश्वर्य में वृद्धि होगी तथा सम्पन्नता बनी रहेगी। अपने पराक्रम एवं परिश्रम से आप यथोचित सम्पत्ति अर्जित करेंगे। वर्षान्त निवेश के लिए बहुत ही शुभ है।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक रूप से वर्ष का प्रारम्भ श्रेष्ठ रहने वाला है। परिवार के सभी सदस्य

आपको यथोचित सम्मान प्रदान करेंगे। आप अपने परिवार पर पूर्ण नियंत्रण रखेंगे तथा सभी परिवारीजनों का विशेष ख्याल भी रखेंगे, परन्तु 6 अप्रैल के बाद अचानक आपकी माताजी का स्वास्थ्य खराब हो सकता है, जिसके नकारात्मक प्रभाव से पूरा परिवार प्रभावित हो सकता है। चतुर्थ स्थान का केतु वैचारिक मतभेद भी करा सकता है। आपसी मतभेदों के कारण यदा कदा संबंधो में तनाव की अनुभूति हो सकती है। परन्तु 28 जून से समय फिर से अनुकूल हो जाएगा।

वर्ष का उत्तरार्द्ध पारिवारिक शान्ति एवं सामाजिक उन्नति के लिए उत्तम है। पराक्रम व प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। समाज में आपका एक अलग प्रकार का प्रभाव होगा तथा सभी लोग आपके प्रभाव को स्वीकार करके वांछित मान सम्मान प्रदान करेंगे। सामाजिक उन्नति के लिए आप कोई विशेष कार्य करेंगे जिससे आपकी प्रतिष्ठा में और अधिक वृद्धि होगी।

संतान

संतान के लिए यह वर्ष सामान्यतः अनुकूल रहेगा। आपके बच्चे अपने परिश्रम के बल पर वांछित उन्नति एवं सफलता अर्जित करेंगे। माता पिता के प्रति उनके मन में पूर्ण आदर एवं सम्मान का भाव होगा। आज्ञापालन में वे हमेशा तत्पर रहेंगे।

आप अपनी ओर से उनकी उन्नति का यथोचित प्रबन्ध करेंगे और वे आपकी महत्वकांक्षाओं की पूर्ति करने में सफल भी होंगे। यदि आपकी संतान विवाह के योग्य है तो विवाह का प्रबल योग बन रहा है। वर्षान्त आपकी दूसरी संतान के लिए बहुत ही शुभ है।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ उत्तम रहेगा। शारीरिक आरोग्यता अनुकूल बनी रहेगी तथा आप मानसिक रूप से प्रसन्न व सन्तुष्ट बने रहेंगे। आप पराक्रमी एवं परिश्रमी स्वभाव के होंगे। आप रोग व्याधियों से दूर होंगे, परन्तु 6 अप्रैल के बाद समय कुछ प्रतिकूल हो रहा है। अतः इस समय के अंतराल में अपने स्वास्थ्य को लेकर सचेत रहना उचित होगा।

खान-पान पर संयम रखना बहुत जरूरी होगा। अधिक खान-पान व बाहर का खाना खाने से फूड पॉइजनिंग की सम्भावना है। जहां तक सम्भव हो गैर जरूरी यात्राओं से बचें। व्यवहारिक बने रहें। व्यर्थ के कार्यों में समय खराब न करें, इसके फलस्वरूप आप परेशान रह सकते हैं। अपने स्वास्थ्य का ख्याल रखें एवं अधिक आत्मविश्वासी न बनें वर्षान्त आपके लिए काफी श्रेष्ठ है।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षाओं में सफलता की दृष्टि से यह वर्ष सामान्य रहेगा। यदि उच्च शिक्षा हेतु उच्च शैक्षणिक संस्थान में प्रवेश पाना चाहते हैं तो 6 अप्रैल के बाद समय अनुकूल हो रहा है।

इंजीनियर, वकील व कानून से जुड़े लोगों के लिए यह साल मिला जुला रहेगा।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में नौकरी में अचानक पदोन्नति हो सकती है। विदेश में वांछित उन्नति के लिए वर्षान्त श्रेष्ठ है।

यात्रा-तबादला

वर्ष के प्रारम्भ में यात्रा के योग कम ही बन रहे हैं, परन्तु 6 अप्रैल के बाद छोटी मोटी यात्राओं के साथ लम्बी यात्राएं भी होंगी। व्यवसाय से संबंधित यात्राओं की अधिकता होगी।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में नौकरी करने वाले व्यक्तियों का पदोन्नति के साथ-साथ स्थानान्तरण होने का प्रबल योग बन रहे हैं।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्ष का प्रारम्भ मिला जुला रहेगा, परन्तु 6 अप्रैल के बाद पूजा पाठ के प्रति आपकी विशेष रुचि होगी। ईश्वर के प्रति आपकी निष्ठा एवं विश्वास बढ़ेगा। दैनिक पूजा-पाठ में भी सुधार होगा। साल के मध्य में आप दान पुण्य अधिक करेंगे। तन्त्र, मन्त्र व यन्त्र के प्रति भी आपकी रुचि बढ़ेगी। साधना व योग के लिए आप अधिक से अधिक समय निकालेंगे। सत्संग में जाना व गुरु वाणी सुनना आपका नैसर्गिक गुण होगा।

- अपने पूजा घर में पारद शिवलिंग स्थापित करें और उसके सामने देशी घी का दीपक जलाएं।
- शनिवार के दिन काले कुत्ते को रोटी खिलाएं एवं काली वस्तु का दान करें।
- प्रत्येक दिन हनुमान चालीसा का पाठ करें तथा मंगलवार के दिन हनुमान जी को चोला चढ़ाएं।
- श्रावण मास में शिवजी का रुद्राभिषेक करें।

वार्षिक फलादेश - 2041

इस वर्ष राहु मेष राशि एवं नवम भाव में रहेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में गुरु तुला राशि एवं तृतीय भाव में रहेंगे तथा वक्री होकर 6 मई से 30 जुलाई तक कन्या राशि एवं द्वितीय भाव में रहेंगे तथा उसके बाद पुनः मार्गी होकर तुला राशि एवं तृतीय भाव में आ जाएंगे। 25 सितम्बर तक शनि कन्या राशि एवं द्वितीय भाव में रहेंगे तथा उसके बाद तुला राशि एवं तृतीय भाव में प्रवेश करेंगे।

व्यवसाय

व्यावसायिक जीवन के लिए यह साल सामान्यतः अच्छा नहीं रहेगा। शनि ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण कुछ न कुछ परेशानियां आती रहेंगी। कुछ गलत फहमियों से भी आप व्याकुल हो सकते हैं। गुप्त शत्रुओं द्वारा आपके कार्यों में रुकावटें डाली जा सकती हैं। जल्दबाजी में कोई निर्णय न लें, गलत-सही का चुनाव करने के बाद ही निर्णय लें। हालांकि 6 मई के बाद समय अच्छा हो रहा है। उस समय आपको कुछ सकारात्मक परिणाम मिलेगा।

इस वर्ष आप कोई नया कार्य व्यवसाय प्रारम्भ न करें। पहले से चले आ रहे कार्यों को ही सुचारू रूप से चलाते रहें। यदि साझेदारी में कार्य कर करे हैं तो 26 सितम्बर के बाद आपका साझेदार धोखा दे सकता है। अतः उसके साथ सभी कार्यों में पारदर्शिता रखने की कोशिश करें। राजनीति से जुड़े लोगों के लिए यह समय ज्यादा प्रतिकूल है।

धन संपत्ति

आर्थिक रूप से यह वर्ष आपके लिए मिला-जुला रहेगा। लाभ के साथ-साथ चुनौतियां भी होंगी। वर्ष के प्रारम्भ में निवेश से सम्बंधित योजनाओं पर ध्यान न दें और अपने दस्तावेज भी संभाल कर रखें। हड़बड़ी में कोई भी कार्य न करें नहीं तो आर्थिक हानि हो सकती है। निवेश व आर्थिक निर्णय लेते समय सतर्क रहें व जल्दबाजी न करें। इस अवधि में सकारात्मक बने रहना आपके लिए लाभप्रद रहेगा।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में अधिक सतर्कता बरतने की जरूरत है। जितना ज्यादा हो सके धन की बचत करने की कोशिश करें और फिजूल के खर्चों पर नियंत्रण रखें। आपका कोई करीबी ही आपको दगा दे सकता है। ऐसे लोगों से बचने से के लिए किसी भी प्रकार के वित्तीय लेन-देन में पूरी सावधानी बरतें। जोखिम भरे निवेश करने से बचें। राजनीति एवं भूमि से संबंधित काम करने वालों को आर्थिक हानि हो सकती है।

घर-परिवार, समाज

द्वितीय स्थान में शनि ग्रह का गोचर परिवार के लिए अच्छा नहीं रहेगा। अधिक भागदौड़ के कारण परिजनों को अधिक समय नहीं दे पाएंगे। पारिवारिक सदस्यों के साथ कुछ तर्क-वितर्क होने की संभावना नजर आ रही है। हालाँकि समझदारी से इसे टाला जा सकता है। ससुराल पक्ष के लोगों के लिए यह समय अच्छा नहीं है। तृतीयस्थ गुरु के प्रभाव से आपके छोटे

भाई बहनों के साथ संबंध अच्छे रहेंगे। सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी।

6 मई के बाद पारिवारिक समस्याएं कुछ कम होंगी। लेकिन आप पारिवारिक स्थिति को लेकर चिंचित रहेंगे। 26 सितम्बर के बाद जीवनसाथी के साथ वैचारिक मतभेद होने की प्रबल संभावना है। तृतीय स्थान पर शनि की दृष्टि के कारण सामाजिक पद व प्रतिष्ठा में कुछ कमी आ सकती है।

संतान

यह साल संतान के लिए अच्छा रहने वाला है। आपके बच्चे अपने बौद्धिक बल के द्वारा उन्नति करेंगे। दूसरी संतान के लिए वर्ष का प्रारम्भ बहुत ही शुभ है। उनके विषय में शुभ समाचार प्राप्त होंगे।

शिक्षा के क्षेत्र में भी अच्छी प्रगति होने के शुभ योग बनेंगे। उनके पराक्रम में भी वृद्धि होगी परंतु उसके बावजूद भी आपकी चिंताएं बनी रहेंगी। 6 मई से जुलाई तक का समय कुछ प्रभावित रहेगा। उसके बाद पूरा वर्ष श्रेष्ठ रहने वाला है।

स्वास्थ्य

द्वितीयस्थ शनि के कारण स्वास्थ्य में उतार-चढाव की स्थिति बनी रहेगी। कमर के निचले हिस्से में कोई रोग बढ़ सकता है अतः किसी भी छोटी समस्या को छोटी ना समझते हुए तुरंत चिकित्सकीय परामर्श लें। ऋतुजनित बीमारियों के कारण स्वास्थ्य प्रतिकूल हो सकता है विशेष कर सर्दी-जुकाम इत्यादि का प्रकोप झेलना पड़ सकता है।

पहले से चली आ रही बीमारी उग्र रूप ले सकती है इसलिए सावधानी बरतें। 26 सितम्बर के बाद समय ज्यादा प्रभावित हो रहा है। उस समय कोई लम्बी बीमारी हो सकती है। अतः शारीरिक आरोग्यता प्राप्ति के लिए आप घर में कोई विशेष धार्मिक आयोजन व महामृत्यंजय का जाप कराएं जो आपकी मनोकामनाओं को पूरा करने में सहयोग करेंगे।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षार्थियों के लिए यह वर्ष सामान्य रहने वाला है। आप कोई नया कार्य प्रारम्भ करेंगे तो उसमें सफलता मिल सकती है। मैकेनिकल इंजीनियर व हार्डवेयर से संबंधित कार्य करने वालों के लिए यह समय अच्छा रहेगा। 6 मई के बाद आपको वांछित सफलता मिलेगी।

वर्ष का उत्तरार्द्ध व्यावसायिक व्यक्तियों के लिए अच्छा रहने वाला है। 26 सितम्बर के बाद नौकरी करने वालों के लिए अच्छा नहीं रहेगा। आपके बड़े अधिकारियों के साथ वैचारिक मतभेद होने की संभावना बन रही है।

यात्रा-तबादला

वर्षारम्भ में छोटी मोटी यात्राओं के साथ-साथ लम्बी यात्राएं भी अधिक होंगी।

सप्तम स्थान पर गुरु की दृष्टि व्यावसायिक यात्राएं भी कराते रहेंगे। इन यात्राओं से आपको अच्छा लाभ मिलेगा।

चतुर्थ स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि प्रभाव से नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण होगा। यह परिवर्तन आपके प्रतिकूल स्थान पर भी हो सकता है। यात्रा व वाहन चलाते समय सावधान रहें क्योंकि 26 सितम्बर के बाद दुर्घटना इत्यादि का योग बन रहा है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्ष के प्रारम्भ में तीर्थयात्रा और धार्मिक कार्य अधिक करेंगे। कोई भी शुभ कार्य योजनाबद्ध तरीके से ही संपन्न करें अन्यथा पूजादि कार्यों में व्यवधान आने की आशा है। वर्ष के उत्तरार्द्ध में कार्य व्यवसाय पर अधिक ध्यान देंगे और कर्म ही पूजा है, इस उद्देश्य पर रहेंगे। 26 सितम्बर के बाद सभी धार्मिक कार्यों में व्यवधान आएंगे।

- प्रत्येक सोमवार के दिन शिवलिंग पर जल चढ़ाएं तथा ऊँ नमः शिवाय मन्त्र का पाठ करें।
- स्फटिक श्रीयन्त्र अपने घर में स्थापित करें तथा उसके सामने देशी घी की दीपक जलाएं।
- मंगलवार का व्रत करें या हनुमान जी को चोला चढ़ाएं।
- प्रत्येक शनिवार के दिन काली वस्तु का दान करें।

इस वर्ष शनि तुला राशि एवं तृतीय भाव में रहेंगे। 22 जून तक राहु मेष राशि एवं नवम भाव में रहेंगे तथा उसके बाद मीन राशि एवं अष्टम भाव में प्रवेश करेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में गुरु वृश्चिक राशि एवं चतुर्थ भाव में रहेंगे तथा वक्री होकर 10 जून से 27 अगस्त तक तुला राशि एवं तृतीर्य भाव मे गोचर करेंगे और पुनः मर्गी होकर फिर से वृश्चिक राशि एवं चतुर्थ भाव में आ जाएंगे।

व्यवसाय

इस वर्ष नौकरी करने वाले व्यक्तियों का पदोन्नति के साथ स्थानान्तरण भी होगा। वरिष्ठ लोग व उच्च अधिकारी आपके कार्यों से प्रसन्न रहेंगे तथा सभी प्रकार से आपकी सहायता करने में तत्पर्य रहेंगे। कार्य स्थल पर आपको मान-सम्मान की प्राप्ति होगी। यह सब आपकी सकारात्मक विचारधारा के कारण होगा। व्यावसायिक व्यक्ति अपने परिश्रम के बल पर उन्नति करेंगे। 10 जून से अगस्त तक का समय किंचित प्रभावित रहेगा। अतः इस समय के अंतराल में कोई नया कार्य प्रारम्भ न करें।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में आजीविका के क्षेत्र में कुछ कमी आ सकती है, जिससे आय के स्रोत प्रभावित होंगे। प्रतिद्वंदी आपको नीचा दिखाने की कोशिश करेंगे, परन्तु आप अपने बौद्धिक बल द्वारा सभी प्रतिद्वंदियो को पीछे छोड़कर सफलता के मार्ग पर अग्रसर रहेंगे। व्यावसायिक उन्नति करने में आपको कर्ज भी लेने पड़ सकता है। भूमि, वाहन व कॉस्मेटिक से जुड़े लोगों को लाभ हो सकता है।

धन संपत्ति

आर्थिक स्थिति के लिए वर्ष का प्रारम्भ लाभप्रद रहेगा। धनागम के स्रोत बढ़ेंगे। आपको भूमि, भवन, वाहन इत्यादि का सुख प्राप्त होगा। 22 जून के बाद पैसे के मामले में आप ज्यादा सावधान रहें तथा आंख बन्द कर किसी पर विश्वास न करें। किसी के बहकावे में आकर अपने धन को निवेश न करें नहीं तो हानि हो सकती है।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में विदेशी धन व वसीयत की प्राप्ति होगी। गुप्त रूप से भी आपको धन लाभ होगा। यदि आप निवेश करना चाहते हैं तो यह समय आपके लिए श्रेष्ठ है। वर्षान्त में आपके कुछ अनावश्यक खर्च बढ़ेंगे। अतः उस समय अपने खर्चों पर अंकुश लगाएं।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक सुख, शान्ति एवं समृद्धि के लिए यह वर्ष अच्छा रहेगा। सभी पारिवारिक जन परस्पर मिल जुलकर रहेंगे, जिससे परिवार में शान्ति तथा सद्भावना का वातावरण रहेगा। आपकी माता के लिए यह समय शुभ है। जून के बाद सुख एवं सहयोग में न्यूनता आयेगी परन्तु संबंधो में मधुरता बनी रहेगी। मित्र वर्ग आप से नाराज हो सकता है। राहु के कारण आप मानसिक रूप से परेशान रह सकते हैं।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में ससुराल पक्ष के लोगों का अच्छा सहयोग मिलेगा। पराक्रम तथा कार्य क्षमताओं का विकास होगा। आपको वांछित मान सम्मान तथा प्रतिष्ठा मिलेगी तथा किसी सम्मानित उच्च पद को अर्जित करने में भी समर्थ होंगे। समाज में आपकी प्रतिष्ठा एवं प्रसिद्धि दूर-दूर तक व्याप्त होगी एवं सभी लोग आपके प्रभाव को स्वीकर करेंगे।

संतान

संतान के लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध अच्छा नहीं रहेगा। पंचम स्थान पर राहु की दृष्टि संतान को स्वास्थ्य संबंधी परेशानी दे सकती है। उनकी शिक्षा-दीक्षा में रुकावटें आ सकती हैं। आपके प्रति बच्चों में मर्यादा एवं आदर्श की भावना कम होगी। आपको अनावश्यक समस्याओं एवं परेशानियों का सामना करना पड़ेगा। बच्चों के साथ भावनात्मक लगाव में कमी आएगी।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में आपके बच्चों को किसी नौकरी या रिसर्च के कार्यों में सफलता मिलेगी। यदि वे किसी प्रतियोगिता परीक्षा में भाग लेते हैं तो सफलता सम्भव है। यदि आप दूसरी संतान की इच्छा रखते हैं तो गर्भाधान के लिए यह बहुत शुभ समय है।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य के लिए वर्ष पूर्वार्द्ध अच्छा नहीं है। लग्न स्थान पर राहु की दृष्टि के कारण आप कुछ चिन्ता का अनुभव करेंगे। अकारण चिंता करने से कुछ हासिल नहीं होगा। आप चिंताओं से उबरने की कोशिश करें वरना आपको किसी मानसिक रोग अथवा मस्तिष्क सम्बन्धी विकार का सामना करना पड़ सकता है। बदलते मौसम के कारण कुछ परेशानियां हो सकती हैं, लेकिन आप जल्द ही ठीक हो जाएंगे।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में वजन बढ़ने की संभावना है, इसलिए मक्खन, घी और मिठाई खाने से परहेज करें। यदि निरोगी काया चाहते हैं तो नियमित रूप से व्यायाम करें और खान-पान का विशेष ध्यान रखें। अपना स्वास्थ्य अनुकूल रखने के लिए तुला दान भी कर सकते हैं।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

शिक्षा की दृष्टि से यह वर्ष मिला-जुला फल देने वाला है। विद्यार्थियों की उन्नति में रुकावट व उच्च शिक्षा में व्यवधान आ सकता है। करियर में सफलता प्राप्त करने के लिए आपको अथक परिश्रम करना पड़ेगा। यदि आप विदेश में अपना करियर बनाना चाहते हैं तो यह समय काफी श्रेष्ठ है। आपका नये-नये तकनीकी विषयों की ओर रुझान रहेगा।

राहु के कारण याद करके भूलने की प्रवृति बनेगी। अष्टम स्थान का राहु मानसिक तनाव का कारण बन सकता है। आपका रुझाान राजनैतिक, तंत्र-मंत्र, विद्या सिद्धि रोमांचकारी रिसर्च से जुड़े विषयों में अधिक रहेगा।

यात्रा-तबादला

द्वादश स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से विदेश यात्रा के प्रबल योग बन रहे है। 10 जून के बाद छोटी मोटी यात्राओं के साथ लम्बी यात्राएं भी होंगी। ये सभी यात्राएं आपके लिए लाभप्रद सिद्ध होंगी।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में नौकरी करने वाले व्यक्तियों का अनुकूल स्थान पर स्थानान्तरण होगा। अपने घर से दूर रहने वाले व्यक्तियों की अपने जन्मस्थान की यात्रा होगी। आप पूरे परिवार के साथ आनन्ददायक यात्राएं करेंगे।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्ष का आरम्भ अनुकूल नहीं है। लग्न स्थान पर राहु की दृष्टि सारे धार्मिक कार्यों में व्यवधान उत्पन्न करेगा। आप चाह कर भी पूजा-पाठ, यज्ञ अनुष्ठान नहीं कर पाएंगे। मानसिक अशान्ति के कारण ध्यान योग व मन्त्रोच्चारण में आपका मन नहीं लगेगा। परन्तु काला जादू, तन्त्र व यन्त्र के प्रति आपका विश्वास बढ़ेगा।

उत्तरार्द्ध में गरीबों को दान देना, भिखारियों को खाना खिलाना एवं दुखियों की सहायता करना आपका नैसर्गिक गुण होगा। योग व ध्यान के प्रति भी आपका रुझान बढ़ेगा।

- पारद शिवलिंग अपने पूजा घर में स्थापित करें।
- दुर्गा चालीसा का पाठ करें।
- आठ मुखी रुद्राक्ष गले में धारण करें।

वार्षिक फलादेश - 2043

वर्षारम्भ में गुरु वृश्चिक राशि एवं चतुर्थ भाव में रहेंगे तथा 27 जनवरी को धनु राशि एवं पंचम भाव में प्रवेश करेंगे और पुनः वक्री होकर 30 जुलाई को वृश्चिक राशि एवं चतुर्थ भाव में गोचर करेंगे तथा अतिचारी होकर फिर से 11 सितम्बर को धनु राशि एवं पंचम भाव में आ जाएंगे। पूरे साल शनि तुला राशि एवं तृतीय भाव में रहेंगे तथा 12 दिसम्बर को वृश्चिक राशि एवं चतुर्थ भाव में प्रवेश करेंगे। 19 सितम्बर तक राहु मीन राशि एवं अष्टम भाव में रहेंगे तथा उसके बाद कुम्भ राशि एवं सप्तम भाव में गोचर करेंगे।

व्यवसाय

व्यापारियों के लिए यह वर्ष उत्तम रहने वाला है। अच्छे मुनाफे मिलने के आसार हैं। कुछ नए व्यापारिक भागीदार मिलेंगे। कारोबार का विस्तार होगा तथा सरकारी ठेके भी मिल सकते हैं। व्यापार में पूंजी लगाने वाले नए लोग भी मिलेंगे। आमदनी के नये स्रोत मिलने की उम्मीद है। इस अवधि में कोई नया कार्य प्रारम्भ करेंगे, तो उसमें सफलता मिलने की उमीद ज्यादा है। आपको अनुभवी और वरिष्ठ लोगों का सहयोग मिलेगा। अष्टमस्थ राहु के कारण कुछ विरोधी व गुप्त शत्रु आपको नीचा दिखाने की कोशिश करेंगे परन्तु अपने बौद्धिक बल के द्वारा आप उन पर विजय प्राप्त कर लेंगे।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में सेवारत लोगों को अच्छे परिणाम मिलेंगे। कार्यस्थल पर आपकी तारीफ होगी और मान सम्मान भी बढ़ेगा। नई और बेहतर नौकरी मिलने की प्रबल संभावना है। पदोन्नति के साथ-साथ अनुकूल स्थान पर परिवर्तन भी हो सकता है। नौकरी से संबंधित आपकी सभी इच्छाएं पूरी होंगी।

धन संपत्ति

एकादश स्थान पर गुरु की दृष्टि आपकी आर्थिक स्थिति में मददगार साबित होगी। आय के बाधित मार्ग खुलेंगे। आप अपने कार्यों के प्रति सजग रहेंगे। पैसे का आगमन लगातार होता रहेगा। जमापूंजी में तेजी मे वृद्धि होगी। आर्थिक रूप से वर्ष का पूर्वार्द्ध आपके लिए बेहतर साबित होगा।

30 जुलाई के बाद किसी पर भी आंख बन्द कर विश्वास करना आपके लिए घातक हो सकता है। अतः पैसे के लेन-देन में सावधानी बरतें, नहीं तो अष्टम स्थान का राहु अचानक धन हानि करा सकता है। शीघ्र पैसा कमाने वाले तरीकों पर अंकुश लगाना होगा। जोखिम भरे कार्य में निवेश करने से बचें अन्यथा आपको हानि हो सकती है। अपने खर्चों पर भी अंकुश लगाएं।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टिकोण से यह वर्ष मिला-जुला रहेगा। वर्षारम्भ में अधिक व्यस्तता के कारण परिजनों को अधिक समय नहीं दे पाएंगे। लेकिन परिवार में एक दूसरे के प्रति परस्पर

सहयोग की भावना बनी रहेगी। पंचमस्थ गुरु के प्रभाव से नवविवाहित व्यक्तियों को संतान सुख की प्राप्ति होगी। आपको भाइयों का सहयोग मिलता रहेगा। परिवार में धार्मिक कार्य व मांगलिक कार्य होते रहेंगे जिसमें परिवार के सभी लोग सम्मिलित होंगे।

तृतीयस्थ शनि के कारण आपकी सामाजिक मान-प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी तथा इस वर्ष आप अपनी सामाजिक गतिविधियों में पहले से अधिक सक्रिय होंगे। समाज में आपका दबदबा बना रहेगा। कोई भी व्यक्ति आपके विरुद्ध जाने का साहस नहीं कर पाएगा तथा आपको वांछित सम्मान प्रदान करेगा।

संतान

संतान के लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध बहुत ही शुभ है। शिक्षा के प्रति उनकी रुचि बढ़ेगी। यदि वे उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं तो अच्छे शैक्षणिक संस्थान में प्रवेश हो जाएगा। आपके बच्चों की उन्नति होगी। यदि वे विवाह के योग्य हैं, तो विवाह होने का प्रबल योग बन रहा है।

30 जुलाई से 11 सितम्बर तक का समय किंचित प्रभावित रहेगा तथा उसके बाद फिर से उत्तम हो जाएगा। आपके बच्चे धर्म कार्य व अच्छे कार्यों में समय ज्यादा व्यतीत करेंगे। आपकी आज्ञा के पालन में सदैव तत्पर्य रहेंगे। सितम्बर के बाद नवविवाहित व्यक्तियों को संतान की प्राप्ति होगी।

स्वास्थ्य

लग्न स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि स्वास्थ्य के लिए बहुत ही शुभ है। आपके अंदर सकारात्मक ऊर्जा की वृद्धि होगी, जिससे आपकी रोग प्रतिरोधक शक्ति बढ़ेगी जो आपको शारीरिक रूप से आरोग्य रखने में सहायता करेगी तथा आप अपने को पूर्ण रूप से स्वस्थ अनुभव करेंगे। यदि पहले से आप किसी बीमारी से पीड़ित हैं तो इस वर्ष उससे भी मुक्ति मिल सकती है।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में आपका स्वास्थ्य किंचित प्रभावित हो सकता है। अष्टम स्थान का राहु जल तत्व राशि होने के कारण कफ, सर्दी तथा जुखाम इत्यादि बीमारियों से पीड़ित कर सकता है। मोटापा तथा पेट संबंधित बीमारी भी हो सकती हैं। अतः उस समय घी या तला हुई वस्तु का सेवन कम करें।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षा के लिए यह वर्ष अनुकूल रहेगा। विद्यार्थियों के लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध बहुत उत्तम रहने वाला है। पंचमस्थ गुरु के प्रभाव से उच्च शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को अच्छे शैक्षणिक संस्थान में प्रवेश मिल जाएगा।

वर्ष का उत्तरार्द्ध आध्यात्मिक शिक्षा, योग शिक्षा तथा शोध कार्य करने वाले के लिए बहुत ही शुभ है। इन लोगों को वांछित उन्नति मिलेगी। प्रतियोगिता परीक्षार्थियों को अपने

लक्ष्य में सफलता प्राप्ति के लिए लगातार प्रयास करना पड़ेगा। बेराजगार जातकों को रोजगार के लिए अभी और इंतजार करना पड़ सकता है।

यात्रा-तबादला

वर्ष के पूर्वार्द्ध में आपकी छोटी बड़ी यात्राएं खूब होंगी। धार्मिक यात्रा का अधिक आनन्द लेंगे। वर्ष के प्रारम्भ में विदेश यात्राएं प्रभावित होंगी।

नौकरी करने वालों के लिए मनोनुकूल स्थान पर स्थानान्तरण के योग बने हुए हैं। आप अपने जन्मस्थल की यात्रा करेंगे। विदेश जाकर उच्च शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के लिए वर्ष का उत्तरार्द्ध बहुत अनुकूल है। विदेश यात्रा के प्रबल योग बन रहे हैं।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

- प्रत्येक दिन दुर्गा सप्तसती का पाठ करें तथा नीली वस्तु का दान करें।
- आठ मुखी रुद्राक्ष सोमवार के दिन गले में धारण करें।
- प्रतिदिन हनुमान चालीसा का पाठ करें।
- अपने पूजा घर में बुधवार के दिन श्वेतार्क गणपति स्थापित करें।

वार्षिक फलादेश - 2044

इस वर्ष शनि वृश्चिक राशि एवं चतुर्थ भाव में रहेंगे तथा राहु कुम्भ राशि एवं सप्तम भाव में रहेंगे। 16 फरवरी तक गुरु धनु राशि एवं पंचम भाव में रहेंगे तथा उसके बाद मकर राशि एवं छठे भाव में प्रवेश करेंगे। इस वर्ष मंगल वक्री होकर 4 मार्च से 13 जून तक सिंह राशि एवं लग्न स्थान में रहेंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से यह वर्ष सामान्य रहेगा। सभी व्यावसायिक मामलों में निर्णय सोच विचार ही लें। हालांकि आप कारोबार के मामले में काफी होशियार हैं फिर भी अपने स्तर पर पूरी एहतियात बरतें, क्योंकि शनि ग्रह का गोचर आपके लिए शुभ नहीं है। गैरकानूनी क्रिया-कलापों में शामिल न हों तथा कोई ऐसा कार्य न करें जिससे आपकी मानहानि होने की संभावना हो। साझेदारी में कार्य करने वाले लोगों के लिए यह वर्ष अच्छा नहीं रहेगा।

नौकरी करने वाले जातकों को अपने सहकर्मियों के साथ अच्छे संबंध बना कर रखने चाहिए। फरवरी के बाद व्यवसाय करने वालों को अपनी व्यावसायिक प्रगति में अवरोधों का सामना करना पड़ सकता है। बिजनेस में धीमी चाल से प्रगति होगी। शेयर बाजार एवं सट्टेबाजी आधारित गतिविधियों में किस्मत अजमाने का प्रयास न करें अन्यथा आपका धन लंबे समय के लिए फँस सकता है। जल्दबाजी में लिए गए निर्णय आपको आर्थिक हानि पहुँचा सकते हैं। किसी भी बिजनेस के लिए सोच समझकर ही साझेदार शामिल करें।

धन संपत्ति

वर्ष का प्रारम्भ आर्थिक स्थिति के लिए उत्तम रहेगा, परन्तु 16 फरवरी के बाद समय किंचित प्रभावित हो रहा है। अतः उस समय आपकी जमापूंजी में कमी आ सकती है। इसलिए समझदारी के साथ पैसे खर्च करें तथा वित्तीय जोखिम उठाने से बचें। बिना लिखित प्रक्रिया पूरी किए किसी को पैसे न दें और किसी पर भी आंख बन्द कर विश्वास न करें।

आर्थिक मोर्चे पर आपको विशेष सावधानी रखनी होगी क्योंकि आमदनी की तुलना में खर्च अधिक रहेगा। वैसे आमदनी का स्रोत बना रहेगा तथा दैनिक आमदनी में कोई रुकावट नहीं आएगी। अगर किसी को धन उधार दिया है तो फिलहाल उसके वापिस मिलने की संभावना कम है। आप आक्स्मिक धन लाभ की उम्मीद न रखें। मंहगी व सुख सुविधा वाली वस्तुओं में धन लगा सकते हैं जो आपके लिए धन का अपव्यय ही होगा इसके परिणामस्वरूप आर्थिक तंगी का सामना करना पड़ सकता है।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक जीवन के लिए यह समय थोड़ा तनावपूर्ण रह सकता है। सप्तम स्थान का राहु आपके दाम्पत्य जीवन में कुछ खटास उत्पन्न कर सकता है, जिससे आपके पत्नी के साथ संबंध खराब हो सकते हैं। चतुर्थ स्थान में शनि ग्रह का गोचर पारिवारिक वातावरण के

लिए अच्छा नहीं होता, अतः आपको अपने व्यवहार पर विशेष ध्यान देने की जरुरत है, वरना संबंधों में कुछ कड़वाहट आने की संभावना है।

माता व बड़े-बुजुर्गों का स्वास्थ्य आपकी चिंता का प्रमुख कारण बन सकता है। किसी करीबी व्यक्ति के साथ आपकी कहा-सुनी हो सकती है। सामाजिक स्तर पर भी आपको सतर्क रहना होगा कुछ अपमानजनक परिस्थितियाँ पैदा हो सकती हैं। आपके साथ विश्वासघात हो सकता है यानी आप जिन लोगों पर भरोसा करते हैं वे धोखा दे सकते हैं।

संतान

साल का प्रारम्भ संतान के लिए श्रेष्ठ रहने वाला है, परन्तु 16 फरवरी के बार समय सामान्य हो जाएगा। आपके बच्चे अपने परिश्रम के बल पर आगे बढेंगे। अपने जीवन में उन्नति के लिए अथक मेहनत करेंगे देर से ही सही लेकिन उनको परिश्रम का पूरा फल मिलेगा।

आपकी दूसरी संतान के लिए समय अच्छा नहीं है। अचानक उनको स्वास्थ्य संबंधित परेशानियां आ सकती हैं तथा उनकी उन्नति में व्यावधान आते रहेंगे।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य के दृष्टिकोण से यह वर्ष अच्छा नहीं रहेगा। चतुर्थ स्थान का शनि तथा सप्तम स्थान का राहु आपके स्वास्थ्य को प्रभावित कर सकता है। मौसमजनित बीमारियों से आप ज्यादा परेशान हो सकते हैं। लग्न स्थान पर राहु एवं शनि की दृष्टि सरदर्द, मांसपेशियों, रक्त और लीवर से संबंधित दिक्कतें दे सकती है। आंखो का विशेष ध्यान रखें। यदि पहले से चश्मा लगा हुआ है तो उसके नंबर की जांच करा लें। आपके आत्मवश्वास में कमी आ सकती है।

लंबे समय से चली आ रही बीमारी का सरलता से निदान नहीं होगा। उसके उपचार में दिक्कतों का सामना करना पड़ सकता है। आक्स्मिक चोट लगने की संभावनाएं भी बनी हुई हैं। अनिद्रा की शिकायत आपको परेशान कर सकती है। अपने क्रोध पर नियन्त्रण रखें नहीं तो मानसिक तनाव बढ़ सकता है। वाहन चलते समय व मशीनरी से सम्बन्धित कार्य करते समय सतर्कता बरतें। तरोताजा रहने के लिए सैर-सपाटे पर जाएँ। सुबह सुबह पार्क में घूमना आपके लिए ज्यादा लाभप्रद रहेगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षार्थियो के लिए यह साल सामान्य रहेगा। यदि आप किसी प्रतियोगिता परीक्षा में बैठने जा रहे हैं तो सफलता प्राप्ति के लिए आपको अधिक परिश्रम की आवश्यकता होगी। अंततः आपको सफलता मिलेगी भी परन्तु संघर्षात्मक परिस्थितियों में मिलेगी। अध्ययन के प्रति आपकी रुचि बढ़ेगी परन्तु आलस्य की भावना सफलता में बाधक साबित हो सकती है।

छात्रों को सफलता मिलने के पूर्ण आसार है। दी गई परीक्षाओं का परिणाम

हितकारी होगा। दोस्तों का सहयोग मिलेगा। कला और सामाजिक कार्यों से जुड़े लोगों को अवश्य लाभ मिलेगा।

यात्रा-तबादला

वर्षारम्भ में धार्मिक यात्राएं करने का अवसर प्राप्त होगा। 16 फरवरी के बाद द्वादश स्थान पर गुरु की दृष्टि आपको विदेश यात्रा करा सकती है। नौकरी करने वाले लोगों का प्रतिकूल स्थान पर तबदला होगा जिससे आप प्रसन्न नही रहेंगे।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्ष के प्रारम्भ में ईश्वर के प्रति श्रद्धा, आस्था व भक्ति बढ़ेगी। द्विज, देव, ब्राह्मण व ईष्ट देव की कृपा प्राप्त होगी। इस समय के अंतराल आप कोई विशेष पूजा, अनुष्ठान, यज्ञ, हवन आदि संपन्न कराने में सफल होंगे।

- मंगलवार के दिन हनुमान जी को चोला चढ़ाएं तथा प्रतिदिन हनुमान चालीसा का पाठ करें।
- शनिवार के दिन पीपल के वृक्ष के नीचे चौमुखी दीपक जलाएं।
- प्रतिदिन चिड़ियों तथा चींटियों को दाना डालें।
- अपने पूजा घर में पारद शिवलिंग की स्थापना करें।

वार्षिक फलादेश - 2045

इस वर्ष शनि वृश्चिक राशि एवं चतुर्थ भाव में रहेंगे। 15 जून तक राहु कुम्भ राशि एवं सप्तम भाव में रहेंगे तथा उसके बाद मकर राशि एवं छठे भाव में प्रवेश करेंगे। 2 मार्च को गुरु कुम्भ राशि एंव सप्तम भाव में प्रवेश करेंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध अच्छा नहीं रहेगा। आपको काफी मेहनत करनी होगी, क्योंकि शनि के चतुर्थ भाव में गोचर करने से आपके सारे कार्य धीमी गति से आगे बढ़ेंगे। इस समय के अंतराल में आपको मानसिक तौर पर मजबूत तथा धैर्यवान बनना होगा। बड़े स्तर की योजनाओं में सोच समझकर ही निवेश करें।

लगातार प्रयास और दृढ़ निश्चय के साथ डटे रहने से ही आप सफलता को प्राप्त कर सकेंगे। व्यापार का विस्तार करने से पहले जोखिम होने की संभावनाओं को ध्यान में अवश्य रखें। धैर्य से काम लें और जो कुछ हो रहा है उसे होने दें। 15 जुलाई के बाद आप अपने विरोधियों से मुकाबला करने में सक्षम रहेंगे। हालांकि आप कारोबार के मामले में काफी होशियार हैं फिर भी अपने स्तर पर पूरी एहतियात बरतें। नौकरी करने वाले व्यक्तियों को अपने सहकर्मियों के साथ अच्छे संबंध बनाकर रखना श्रेष्ठ रहेगा।

धन संपत्ति

वर्ष का प्रारम्भ खर्चों में बढ़ोत्तरी दर्शा रहा है। इस अवधि के दौरान धनार्जन करने के लिए आपको सतत प्रयास करने पड़ सकते हैं तथा व्यवसाय में धन की आवाजाही लगी रहेगी। आप अपनी भौतिक सुख-सुविधाओं पर अधिक खर्च करेंगे। अपनी विलासिता पर लगाम लगाएँ अन्यथा कुछ आर्थिक समस्याएँ हो सकती हैं। अगर किसी को उधार दिया है तो फिलहाल उसके वापस मिलने की संभावना कम है। आप आक्स्मिक धन लाभ की उम्मीद न रखें।

15 जून के बाद आपके बिगड़े हुए कार्यों में सुधार होगा। धन कमाने के काफी अच्छे अवसर मिलने की संभावनाएँ हैं। आर्थिक स्थिति में मजबूती आएगी व अनेक स्रोतों के माध्यम से धन मिल सकता है। आप अपने खुद के परिश्रम से अधिक धन अर्जित कर पाएंगे। पत्नी व मित्रों से भी धन लाभ होने की संभावना बन रही है।

घर-परिवार, समाज

चतुर्थ स्थान में शनि ग्रह का गोचर पारिवारिक वातावरण के लिए अच्छा नहीं है। माता के साथ आपके संबंध खराब हो सकते हैं जिसका नकारात्मक प्रभाव पूरे परिवार पर पड गा। अतः आपको अपने व्यवहार पर विशेष ध्यान देने की जरुरत है, वरना संबंधों में कुछ कड वाहट आने की संभावना है। पारिवारिक जीवन के लिए यह समय थोड़ा तनावपूर्ण रह सकता है। वर्ष के पूर्वार्द्ध में सप्तम स्थान का राहु आपके दाम्पत्य जीवन में कुछ खटास उत्पन्न कर सकता है। माता या किसी बड़े-बुजुर्ग का स्वास्थ्य आपकी चिंता का प्रमुख कारण बन सकता है।

सामाजिक स्तर पर कुछ अपमानजनक परिस्थितियाँ पैदा हो सकती हैं, हालांकि राहु ग्रह के गोचर के साथ समय कुछ अनुकूल होगा। वर्ष के दूसरे भाग से आप अपने जीवनसाथी के साथ ढेर सारी खुशियाँ मना सकेंगे। यह समय आनंद से भरपूर रहेगा। आपके व्यवहार में प्रेम और भावुकता की वृद्धि होगी। जीवनसाथी आपके प्रति अधिक समर्पित रहेंगे।

संतान

वर्ष का प्रारम्भ आपकी दूसरी संतान के लिए अच्छा नहीं है। अचानक उनको स्वास्थ्य संबंधित परेशानी हो सकती है तथा उनके उन्नति में भी व्यावधान आने की संभावना बन रही है। यदि आप दूसरी संतान की इच्छा रखते हैं तो गर्भाधान के लिए यह समय श्रेष्ठ नहीं है।

आपके बच्चे अपने परिश्रम के बल पर आगे बढ़ेंगे। अपने जीवन में उन्नति के लिए अथक मेहनत करेंगे देर से ही सही लेकिन उनको परिश्रम का फल अवश्य मिलेगा। 15 जून के बाद आपकी दूसरी संतान के लिए समय बहुत ही शुभ हो रहा है तथा उस समय उनको वांछित सफलता मिलेगी।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य के दृष्टिकोण से यह वर्ष अच्छा नहीं रहेगा। चतुर्थ स्थान का शनि तथा सप्तम स्थान का राहु आपके स्वास्थ्य को प्रभावित कर सकता है। मौसमजनित बीमारियों से आप ज्यादा परेशान हो सकते हैं। लग्न स्थान पर राहु एवं शनि की दृष्टि सरदर्द, मांसपेशियां, रक्त और लीवर से संबंधित दिक्कतें दे सकती है। आंखों का विशेष ध्यान रखें। सिर में चोट चपेट लगने की पूर्ण सभावना बन रही है। किसी लंबी चली आ रही बीमारी का सरलता से निदान नहीं होगा, जिसके कारण आपको उपचार कराने में दिक्कतों का सामना करना पड़ सकता है।

आप अपने क्रोध पर नियन्त्रण रखें वरना आपका मानसिक तनाव बढ़ सकता है। वाहन चलते समय व मशीनरी से काम करते हुए सतर्कता बरतें। तरोताजा रहने के लिए सैर-सपाटे पर जाएं। सुबह सुबह पार्क में घूमना आपके लिए ज्यादा लाभप्रद रहेगा। हालांकि 15 जून के बाद सयम काफी अनुकूल हो रहा है। उस समय आपके स्वास्थ्य में सुधार होगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षार्थियों के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा। यदि आप किसी प्रतियोगिता परीक्षा में बैठने जा रहे हैं तो सफलता प्राप्ति के लिए आपको अधिक परिश्रम की आवश्यकता होगी। अंततः आपको सफलता मिलेगी। अध्ययन के प्रति आपकी रुचि बढ़ेगी परन्तु आलस्य की भावना सफलता में बाधक साबित हो सकती है।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में आपको सफलता मिलने के पूर्ण आसार हैं। इस लिए दी गई परीक्षाओं का परिणाम हितकारी होगा। दोस्तों का सहयोग मिलेगा। कला और सामाजिक कार्यों से जुड़े लोगों को अवश्य लाभ मिलेगा।

यात्रा-तबादला

वर्षारम्भ में द्वादश पर गुरु की दृष्टि आपको विदेश यात्रा करा सकती है। नौकरी करने वाले लोगों का प्रतिकूल स्थान पर तबदला होगा जिससे आप प्रसन्न नही रहेंगे।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में व्यावसायिक यात्राएं अधिक होंगी तथा इन यात्राओं से आपको खूब लाभ मिलेगा। इस वर्ष आप ज्यादातर अपने घर से दूर ही रहेंगे।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्ष का पूर्वार्द्ध धार्मिक कार्यों के लिए अनुकूल नहीं है। मानसिक अशान्ति व आलस्यता का भाव बना रहेगा, जिससे आपका दैनिक पूजा पाठ भी प्रभावित होगा। 15 जून के बाद आपके मन में ईश्वर के प्रति आस्था व विश्वास बढ़ेगा। आप अपनी धर्म पत्नी के साथ मिल कर कोई विशेष पूजा पाठ यज्ञ, अनुष्ठान, हवन आदि संपन्न कराने में सफल होंगे।

- मंगलवार के दिन हनुमान जी को चोला चढ़ाएं तथा प्रतिदिन हनुमान चालीसा का पाठ करें।
- प्रतिदिन चिड़ियों तथा चींटियों को दाना डालें।
- वीरवार के दिन बेसन के लड्डू गरीबों को दान करें।

दशा विश्लेषण

महादशा :- राहु
(06/05/2017 - 06/05/2035)

राहु की महादशा 06/05/2017 को आरम्भ होकर 06/05/2035 को समाप्त होगी। इसकी अवधि 18 वर्ष है। आपकी जन्म कुण्डली में राहु चतुर्थ भाव में स्थित है। इस स्थान से राहु की दृष्टि दशम भाव पर है। इसके पूर्व आपकी 7 वर्ष की मंगल दशा चल रही थी। मंगल के कारण आपको यश, ख्याति, जीविका में प्रगति और समृद्धि की प्राप्ति होगी। राहु की इस दशा के दौरान आपको सम्पत्ति और लाभ की प्राप्ति, अचल सम्पत्ति तथा सुख में वृद्धि होगी।

स्वास्थ्य :

इस दशा के दौरान आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आप शक्तिशाली होंगे। एक सन्तुलित जीवन के फलस्वरूप आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। मौसम में परिवर्तन के फलस्वरूप चर्मरोग, पाचन-समस्या, हृदय संबंधी समस्या, विषाणुजन्य संक्रामक रोग आदि हो सकता है। थोड़ी सावधानी से इन रोगों से बचा जा सकता है।

अर्थ और व्यवसाय :

आपकी आर्थिक स्थिति मजबूत होगी। आपको सभी भौतिक सुख मिलेंगे। आपको माता से लाभ मिल सकता है। आपको जहाँ तक सम्भव हो सट्टे से बचना चाहिए। व्यावसायिक उपार्जन, व्यापार से आय अच्छी होगी। जीविका तथा व्यवसाय के लिए विधि के क्षेत्र, विमान उड्डयन, विमान-चालन, कला, सम्पर्क-कार्य, कम्प्यूटर, अन्तरिक्ष अनुसन्धान, व्यापार आदि का चयन कर सकते हैं। सूती कपड़ा, रत्न, दवा, चमड़ा, एण्टी-बायोटिक दवा, प्लास्टिक, रबड़ आदि का व्यापार लाभप्रद हो सकता है। नौकरीपेशा लोगों की आय में वृद्धि, सम्मान, वरिष्ठ कर्मचारियों के अनुग्रह तथा वांछित लक्ष्य की प्राप्ति होगी। व्यवसाय-व्यापार से जुड़े लोगों को साझेदारों से लाभ, व्यापार में सफलता, विदेश यात्रा, आय में वृद्धि और उपार्जन होगा। जीविका में प्राप्ति के लिए यह दशा उत्तम है।

वाहन, यात्रा, जमीन-जायदाद :

इस दशा के दौरान आपको सभी भौतिक समृद्धि मिलेगी और सुखों में वृद्धि होगी। आप अपना आवास परिवर्तित कर सकते हैं। इस दशा में आपको चल सम्पत्ति, जमीन-जायदाद की प्राप्ति हो सकती है। बुध की अन्तर्दशा में आपकी छोटी व दूर की यात्रा होगी। छोटी यात्रा में सम्भावित नुकसान से बचने के लिए सावधानी बरतनी चाहिए।

शिक्षा :

आपकी बुनियादी शिक्षा उत्तम होगी। उच्च शिक्षा के लिए आप अपनी संस्था में परिवर्तन कर सकते हैं। लक्ष्य की प्राप्ति के लिए आप कठिन परिश्रम करेंगे। दशा की प्रगति के साथ स्थिति में सुधार आएगा। विज्ञान, कला, कम्प्यूटर-विज्ञान, व्यापार आदि में आपकी रुचि हो सकती है। आपकी इच्छा शक्ति मजबूत है, आप स्वभाव से स्वतंत्र हैं और अपनी शिक्षा में अच्छा करेंगे।

परिवार :

आपके बच्चों के जीवन में कुछ परिवर्तन होगा और उन्हें आपकी सहायता तथा मार्गदर्शन की आवश्यकता हो सकती है। आपका आपके जीवनसाथी के साथ संबंध सन्तोषजनक रहेगा। आपकी माता की सम्पत्ति में वृद्धि होगी, आर्थिक-समृद्धि की प्राप्ति होगी और उन्हें स्वास्थ्य के प्रति सावधानी बरतनी होगी। आपके पिता की यात्रा, अचानक लाभ की प्राप्ति तथा आध्यात्मिक विकास होगा। आपके छोटे भाई-बहनों को अचानक धन-लाभ और जीवन का सुख मिलेगा जबकि बड़े भाई-बहनों को प्रतिद्वंद्वियों पर विजय और भौतिक समृद्धि की प्राप्ति होगी।

अन्तर्दशा :

राहु की महादशा में राहु की अन्तर्दशा के कारण आपको सुख, अचल सम्पत्ति की प्राप्ति तथा लाभ मिलेगा। गुरु की अन्तर्दशा भाग्यशाली सिद्ध होगी यद्यपि प्रतिद्वन्द्वियों के कारण कुछ समस्याएं उत्पन्न हो सकती हैं। शनि की अन्तर्दशा कष्टकारक सिद्ध हो सकती है किन्तु, भौतिक कला व यात्रा का अवसर प्रदान करेगी। बुध की अन्तर्दशा छोटे भाई-बहनों के लिए सहायक होगी और इसके फलस्वरूप उनको यात्रा और व्यय होगा। केतु की अन्तर्दशा में कुछ समस्याएं हो सकती हैं। शुक्र की अन्तर दशा के फलस्रूप लाभ और सम्पत्ति में वृद्धि होगी जबकि सूर्य की अन्तर्दशा के कारण पारिवारिक सुख मिलेगा और सम्पत्ति में वृद्धि होगी। चन्द्र की अन्तर्दशा के फलस्वरूप स्वास्थ्य उत्तम रहेगा और सम्पत्ति तथा सुख की प्राप्ति होगी जबकि योगकारक मंगल के कारण सुख की प्राप्ति, बच्चे का जन्म और जीविका में प्रगति होगी।

अंर्तदशा :- राहु - बुध
(17/04/2025 - 05/11/2027)

राहु महादशा की अवधि 18 वर्ष होती है। आपके लिए यह 06/05/2017 को प्रारंभ होकर 06/05/2035 को समाप्त होगी। इस महादशा में बुध अंतर्दशा की अवधि 2 वर्ष 6 मास 18 दिन रहेगी जो आपके लिए 17/04/2025 को प्रारंभ होकर 05/11/2027 को समाप्त होगी।

बुध आपकी जन्मपत्री में दशम भाव में स्थित है। दशम भाव सम्मान और सत्ता, सफलता, पद और साख, दुनियादारी, प्रोन्नति, नियुक्ति, धार्मिक कार्य, सरकार से सम्मान और जांघों का परिचायक है। दशम भाव में स्थित होकर बुध कुंडली के चतुर्थ भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसे अपने कारकत्व से प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आप विभिन्न विषयों के विद्वान हो सकते हैं। स्पष्टवादी हो सकते हैं। दान-धर्म में रुचि होगी। व्यापार, धर्म और अध्यात्म में सफल होंगे। यह अंतर्दशा बहुत शुभ रहेगी। नेत्र के रोगों से बचाव करना श्रेयस्कर रहेगा।

शुभत्व में वृद्धि और अरिष्ट से बचाव के लिए बुध के तांत्रिक मंत्र के 36000 जाप करें।

अंर्तदशा :- राहु - केतु
(05/11/2027 - 22/11/2028)

राहु महादशा की अवधि 18 वर्ष होती है। आपके लिए यह 06/05/2017 को प्रारंभ होकर 06/05/2035 को समाप्त होगी। इस महादशा में केतु अंतर्दशा की अवधि 1 वर्ष 18 दिन होगी जो आपके लिए 05/11/2027 को प्रारंभ होकर 22/11/2028 को समाप्त होगी।

केतु आपकी जन्मपत्रिका में दशम भाव में स्थित है। दशम भाव सम्मान, जनता, सत्ता, सफलता, पद और साख, दुनियादारी, प्रोन्नति, नियुक्ति, धार्मिक कार्य, सरकार से सम्मान, जांघों का परिचायक है। दशम भाव में स्थित होकर शुक्र आपकी कुंडली के चतुर्थ भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उनके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

राहु और केतु छाया ग्रह हैं। इनकी स्वयं की कोई राशि नहीं होती। सामान्यतः इन्हें अशुभ समझा जाता है परंतु वास्तव में वे शुभ या अशुभ कुंडली में अपनी स्थिति के अनुसार होते हैं।

इस अवधि में आप साहसी, शक्तिशाली और प्रसिद्ध बनेंगे मगर पापकर्म में भी रुचि हो सकती है। इस कारण कार्यों में बाधाएं आ सकती हैं। आप प्रसन्नचित्त और धार्मिक होंगे। तीर्थयात्राएं हो सकती हैं। समाजसेवा करेंगे, गरीबों की मदद करेंगे।

अरिष्ट से बचाव के लिए केतु के तांत्रिक मंत्र के 72,000 जाप करें।

अंर्तदशा :- राहु - शुक्र
(22/11/2028 - 23/11/2031)

राहु महादशा की अवधि 18 वर्ष होती है। आपके लिए यह 06/05/2017 को प्रारंभ होकर 06/05/2035 को समाप्त होगी। इस महादशा में शुक्र अंतर्दशा की अवधि 3 वर्ष होगी जो आपके लिए 22/11/2028 को प्रारंभ होकर 23/11/2031 को समाप्त होगी।

शुक्र आपकी जन्मपत्री में दशम भाव में स्थित है। दशम भाव सम्मान, जनता, सत्ता, सफलता, पद और साख, दुनियादारी, प्रोन्नति, नियुक्ति, धार्मिक कार्य, सरकार से सम्मान और जांघों का परिचायक है। शुक्र शुभ ग्रह है। दशम भाव में स्थित होकर शुक्र आपकी कुंडली के चतुर्थ भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आप विपरीत लिंग के व्यक्तियों से संबंधित गतिविधियों में भाग ले सकते हैं। सौंदर्य प्रसाधन, फैशन आदि से संबधित व्यापार में लाभ हो सकता है। समाज में सफल रहेंगे, प्रसिद्ध बनेंगे। मन में कुछ नये, विचित्र विचार आ सकते हैं।

अरिष्ट से बचाव और शुभत्व में वृद्धि के लिए :

- लक्ष्मीजी की उपासना करें
- चींटियों को चीनी और आटा खिलाएं
- भोजन के समय पहली रोटी गाय को खिलाएं

अंर्तदशा :- राहु - सूर्य
(23/11/2031 - 17/10/2032)

राहु महादशा की अवधि 18 वर्ष होती है। आपके लिए यह 06/05/2017 को प्रारंभ होकर 06/05/2035 को समाप्त होगी। इस महादशा में सूर्य की अंतर्दशा 10 मास 24 दिन की होगी जो आपके लिए 23/11/2031 को प्रारंभ होकर 17/10/2032 को समाप्त होगी।

सूर्य आपकी जन्मपत्री में दशम भाव में स्थित है। दशम भाव सम्मान, जनता, सत्ता, सफलता, पद और साख, दुनियादारी, प्रोन्नति, नियुक्ति, धार्मिक कार्य, सरकार से सम्मान और जांघों का परिचायक है। सूर्य आत्मा और पिता का कारक है। सूर्य शक्तिशाली ग्रह है। दशम भाव में स्थित होकर सूर्य आपकी कुंडली के चतुर्थ भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

यह अंतर्दशा बहुत शुभ रहेगी। प्रत्येक कार्य में सफलता मिलेगी। धनी बनेंगे ; ज्ञानार्जन करेंगे। बुद्धिमत्ता, प्रसिद्धि और वाहन का योग है। विरासत में जायदाद प्राप्त हो सकती है। व्यक्तित्व प्रभावशाली होगा, संगीत में रुचि होगी, लोकप्रियता बढ़ेगी।

अरिष्ट से बचाव और शुभत्व में वृद्धि के लिए सूर्य वैदिक मंत्र के 7000 जाप करें।

प्रातःकाल सूर्योदय के समय सूर्य नमस्कार करते हुए सूर्य को जल अर्पित करें।

महादशा :- गुरु
(06/05/2035 - 06/05/2051)

आपकी कुण्डली में गुरु की महादशा को 06/05/2035 आरम्भ और 06/05/2051 को समाप्त होगी। इसकी अवधि 16 वर्ष है।

आपकी जन्म कुण्डली में गुरु नवम् भाव में स्थित है तथा नवम भाव विश्वास, भाग्य, अन्तर्ज्ञान, त्याग और दान, पिता, गुरु, दूर की यात्रा, उच्च शिक्षा तथा विदेश यात्रा का द्योतक है। गुरु स्वभावतः एक शुभ ग्रह है तथा जन्म कुण्डली में नवम् भाव में स्थित होकर प्रथम, तृतीय एवं पंचम् भाव को देख रहा है और इन भावों पर अच्छा प्रभाव डाल रहा है। सोलह वर्ष का यह दशा काल आपके लिए बहुत अच्छा होगा।

स्वास्थ्य :

नवम भाव में स्थित होकर प्रथम भाव पर गुरु की दृष्टि के फलस्वरूप आप एक स्वस्थ जीवन व्यतीत करेंगे तथा दैनिक कार्य और उत्सव का भरपूर आनन्द उठाएंगे। आपके साथ कोई बड़ी घटना या दुर्घटना नहीं होगी।

व्यवसाय :

आपको नौकरी में पदोन्नति के अच्छे अवसर मिलेंगे जिससे आपकी आर्थिक तथा कार्यालयीय स्तर में वृद्धि होगी। व्यवसाय के प्रति आपके दिमाग में कुछ नवीन विचार आएंगे जिन्हें कार्यान्वित करने में आप सक्षम होंगे। आपको विदेश-गमन का अवसर मिलेगा और आप वहाँ अच्छा धनोपार्जन कर सकते हैं।

पारिवारिक जीवन :

गुरु पंचम भाव को देखते हुए नवम भाव में स्थित है जिससे आपका पारिवारिक जीवन उत्साहपूर्ण तथा आनंदमय होगा। आपके जीवन साथी पूर्ण सहयोग करेंगे और बच्चे आज्ञाकारी होंगे जिनसे आपको आनंद मिलेगा।

शिक्षा/प्रशिक्षण :

आपका झुकाव पुराणों तथा धर्मिक पुस्तकों की ओर होगा तथा अपना अधिकतर समय आप इन्हीं विषयों के अध्ययन में लगाएंगे।

अंर्तदशा :- गुरु - गुरु
(06/05/2035 - 23/06/2037)

आपके लिए बृहस्पति की महादशा 06/05/2035 को प्रारंभ हो रही है। इस महादशा में पहली अंतर्दशा बृहस्पति की होगी जिसकी अवधि 2 वर्ष 1 मास 18 दिन रहेगी। आपके लिए यह 06/05/2035 को प्रारंभ होकर 23/06/2037 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी बृहस्पति बुद्धि, उच्चज्ञान, जीवन और धन का कारक है।

इस अवधि में आप धनी बनेंगे। सब कार्यों में सफलता मिलेगी। मानसिक क्षमता की वृद्धि होगी; सफलता के अवसर मिलेंगे। तीर्थयात्रा हो सकती है। अध्यात्म में रुचि होगी ; शिक्षा पूर्ण होगी, रोज़गार मिलेगा। तीर्थयात्रा पर जा सकते हैं। दान-धर्म में रुचि होगी। ध्यान, पूजा-पाठ आदि में समय व्यतीत कर सकते हैं। नये मित्र बनेंगे; सब कार्य पूर्ण होंगे।

आपके जीवनसाथी को कला में रुचि से लाभ होगा। आपके पिता सफल और धनी बनेंगे। माता को स्पर्धियों पर विजय मिलेगी। आपके भाई-बहनों के लिए साझेदारी से लाभ, हर प्रकार से धनार्जन और प्रभावशाली मित्रों का संकेत है।

आपकी संतान को परीक्षा में सफलता मिलेगी। अगर वे कार्यरत हैं तो निवेश से लाभ हो सकता है; धनी और भाग्यशाली होंगे।

अगर आप सेवारत हैं तो प्रोन्नति होगी, वांछित स्थान पर तबादला हो सकता है, प्रसिद्धि मिलेगी। परामर्शदाताओं के खर्चे बढ़ सकते हैं; यात्राएं होंगी। व्यापारियों का लाभ बढ़ेगा ; लघु यात्राएं हो सकती हैं।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। शुभत्व में वृद्धि के लिए विष्णुजी की उपासना करें।

अंर्तदशा :- गुरु - शनि
(23/06/2037 - 05/01/2040)

आपकी बृहस्पति की महादशा 06/05/2035 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में दूसरी अंतर्दशा शनि की होगी जिसकी अवधि 2 वर्ष 6 मास 12 दिन रहेगी। आपके लिए यह 23/06/2037 को प्रारंभ होकर 05/01/2040 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी शनि आयु, संन्यास और दार्शनिक स्वभाव का कारक है।

इस अवधि में आपकी आय बढ़ेगी। स्वयं के परिश्रम से धन कमाएंगे। सुख-साधन उपलब्ध होंगे, मगर कुछ देर लग सकती है। कटु शब्द बोलने से बचें क्योंकि इससे परिवार की शांति भंग हो सकती है। अचल संपत्ति क्रय कर सकते हैं। सफलता प्राप्त करने के लिए बाधाएं पार करनी होंगी। कार्यों के लिए प्रशंसा होगी। बड़े भाई-बहनों और चाचा से संबंध मधुर रहेंगे। आपके जीवनसाथी को अप्रत्याशित लाभ हो सकता है। वसीयत या साझेदारी से लाभ हो सकता है।

आपके पिता को स्पर्धियों पर सफलता मिलेगी। माता का धनार्जन उत्तम होगा।

अगर वे कार्यरत हैं तो प्रोन्नति होगी।

अगर आप सेवारत हैं तो भाग्यशाली रहेंगे, उच्चाधिकारी प्रसन्न रहेंगे, यात्राएं होंगी। परामर्शदाता सफल होंगे। व्यापारियों के कार्य में अप्रत्याशित लाभ हो सकता है, परिवर्तन संभव है।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। नेत्रों और दांतों का ध्यान रखें। अरिष्ट से बचाव के लिए शिवजी की भैरव रुप में पूजा करें।

अंर्तदशा :- गुरु - बुध
(05/01/2040 - 12/04/2042)

आपके लिए बृहस्पति की महादशा 06/05/2035 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में तृतीय अंतर्दशा बुध की होगी, जिसकी अवधि 2 वर्ष 3 मास 6 दिन होगी। आपके लिए यह 05/01/2040 को प्रारंभ होकर 12/04/2042 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी बुध बुद्धि, स्मृति और हाज़िरजवाबी का कारक है।

इस अवधि में आप कार्यक्षेत्र में सफल होंगे। सब कार्य पूर्ण होंगे। लक्ष्य की ओर उन्मुख रहेंगे। व्यापार, विज्ञान और संचार माध्यमों के कार्य में दक्ष होंगे। वर्षों तक लोग आपके नाम और काम को याद रखेंगे। साहित्यिक प्रतिभा के लिए प्रशंसा होगी। कार्यक्षेत्र में लाभकारी परिवर्तन हो सकता है। घरेलू सुख मिलेगा, माता से संबंध उत्तम रहेंगे। भूमि, जायदाद और वाहन का सुख मिलेगा। परिवार से प्रसन्नता प्राप्त होगी।

आपके जीवनसाथी को अचल संपत्ति प्राप्त हो सकती है; धनार्जन उत्तम होगा। आपके पिता की आय अच्छी होगी। माता को व्यापार में लाभ होगा। आपके भाई-बहनों के लिए विभिन्न माध्यमों से लाभ, सत्कार्यों पर खर्च, यात्रा और विरोधियों पर विजय का संकेत है।

आपकी संतान की स्पर्धियों पर विजय होगी, स्वास्थ्य उत्तम होगा, शिक्षा में प्रगति करेंगे। अगर वे कार्यरत हैं तो कार्यों में सफलता मिलेगी, सम्मानित होंगे।

अगर आप सेवारत हैं तो प्रोन्नति होगी। परामर्शदाताओं की आय अच्छी होगी ; उत्कृष्टता प्राप्त करेंगे। व्यापारियों को निवेश से लाभ होगा; व्यापार में भी अच्छी आय होगी।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। त्वचा रोग और गठिया आदि से बचाव करें। शुभत्व में वृद्धि के लिए बुध मंत्र का जाप करें।

ऊँ बुं बुधाय नमः

अंर्तदशा :- गुरु - केतु
(12/04/2042 - 19/03/2043)

आपके लिए बृहस्पति की महादशा 06/05/2035 प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में चौथी अंतर्दशा केतु की होगी जिसकी अवधि 11 मास 6 दिन होगी। आपके लिए यह

12/04/2042 को प्रारंभ होकर 19/03/2043 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी केतु मोक्ष और शल्य चिकित्सा का कारक है।

इस अवधि में आप सफल और प्रसन्न होंगे। समाज और कार्यक्षेत्र में प्रगति होगी। माता-पिता और आयु में बड़े लोगों से लाभ होगा। सामाजिक कार्यों में रुचि लेंगे जिससे सम्मान मिलेगा।

माता से संबंध मधुर रहेंगे। अचल संपत्ति प्राप्त कर सकते हैं। बहुत से मित्र होंगे जो सहायता करेंगे। माता के माध्यम से लाभ हो सकता है। अचल संपत्ति से आय में वृद्धि हो सकती है।

आपके जीवनसाथी सुखसाधनसंपन्न होंगे। आपके पिता की आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। माता को साझेदारी से लाभ होगा, यात्राएं होंगी। आपके भाई-बहनों के लिए अप्रत्याशित लाभ, अचानक घटना, परिवर्तन, यात्रा और अधिक खर्च का संकेत है।

आपकी संतान को स्पर्धियों पर विजय मिलेगी। अगर वे कार्यरत हैं तो सहकर्मियों से मधुर संबंध होंगे।

अगर आप सेवारत हैं तो भाग्यशाली रहेंगे। परामर्शदाताओं की आय अच्छी होगी। व्यापारी निवेश कर सकते हैं।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। कोई मामूली व्याधि हो सकती है। अरिष्ट से बचाव के लिए उड़द, कंबल, सतनजा और तिल दान करें।

अंर्तदशा :- गुरु - शुक्र
(19/03/2043 - 17/11/2045)

आपके लिए बृहस्पति महादशा 06/05/2035 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में पांचवी अंतर्दशा शुक्र की होगी, जिसकी अवधि 2 वर्ष 8 मास रहेगी। आपके लिए यह 19/03/2043 को प्रारंभ होकर 17/11/2045 के समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी शुक्र सौंदर्य, सुख और कला का कारक है।

इस अवधि में आप लोकप्रिय और सफल होंगे। प्रसिद्धि, सम्मान और धन का योग है। विभिन्न विषयों में महारत हासिल कर सकते हैं। उच्चपद पर आसीन हो सकते हैं। तीर्थयात्रा पर जा सकते हैं। प्रत्येक कार्य कर्मठता से करेंगे। शिक्षा उत्तम होगी; लोकप्रिय बनेंगे। भूमि से विशेषकर फलों से आय अच्छी होगी। घरेलू सुख उत्तम होगा।

आपके जीवनसाथी धन का संचय करेंगे। आपके पिता को विभिन्न माध्यमों से धनागम होगा। माता को साझेदारी से लाभ होगा; आय अच्छी होगी।

आपके भाई-बहनों को साझेदार के माध्यम से अप्रत्याशित लाभ हो सकता है, खर्चे बढ़ सकते हैं।

आपकी संतान स्पर्धियों पर विजयी होगी और परीक्षा में सफल रहेगी।

अगर आप सेवारत हैं तो भाग्यशाली रहेंगे। परामर्शदाताओं की आय अच्छी होगी, प्रसिद्धि प्राप्त करेंगे। व्यापारियों को पहले किये निवेश से लाभ होगा।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। हाथ-पैरों में मामूली व्याधि हो सकती है। शुभत्व में वृद्धि के लिए भोजन करने से पूर्व गाय को रोटी दें।

अंर्तदशा :- गुरु - सूर्य
(17/11/2045 - 05/09/2046)

आपके लिए बृहस्पति की महादशा 06/05/2035 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में छठी अंतर्दशा सूर्य की होगी जिसकी अवधि 9 मास 18 दिन रहेगी। आपके लिए यह 17/11/2045 को प्रारंभ होकर 05/09/2046 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी सूर्य आत्मा, पिता, कार्यक्षमता और स्वास्थ्य का कारक है।

इस अवधि में आप कार्यक्षेत्र में सफल रहेंगे; उच्चपद प्राप्त होगा। स्पर्धियों और बाधाओं पर विजय होगी। सब कार्यों में कामयाबी मिलेगी। राजनीति में सफल हो सकते हैं। सरकार से लाभ हो सकता है। माता-पिता और बड़ों से लाभ होगा। बहुत से मित्र होंगे, जिनसे लाभ होगा, शिक्षा उत्तम होगी। समाज में सफलता मिलेगी; भाग्य साथ देगा।

आपके जीवनसाथी अचल संपत्ति क्रय कर सकते हैं। आपके पिता को कई माध्यमों से धनलाभ होगा। माता को साझेदारी से लाभ होगा, व्यापार में धनार्जन उत्तम होगा। आपके भाई-बहनों के लिए परिवर्तन, अप्रत्याशित धन, यात्रा, अधिक खर्चों का संकेत है।

आपकी संतान स्पर्धा में सफल होगी। अगर वे कार्यरत हैं तो शत्रुओं पर विजय होगी।

अगर आप सेवारत हैं तो कार्यों में सफलता मिलेगी, किस्मत उत्तम रहेगी। परामर्शदाता उत्कृष्टता प्राप्त करेंगे। व्यापारियों को निवेश से लाभ होगा।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। पित्त की मामूली व्याधि हो सकती है। शुभत्व में वृद्धि के लिए सूर्य गायत्री मंत्र का जाप करें।

एस्ट्रोग्राफ

एस्ट्रोग्राफ, जीवन के किसी भी पहलू की ग्राफ द्वारा प्रस्तुति है। इससे स्वास्थ्य, आर्थिक, बुद्धि, प्रेम या अन्य किसी भी क्षेत्र में, एक समय के दौरान, होने वाली घटनाओं में रूचि रखने वालों को जानकारी मिलती है। एस्ट्रोग्राफ हमें सही रूप जानने और उन्हें आसानी से समझने में सहायक होते है।

अगले पृष्ठों में आपके जीवन के तीन महत्वपूर्ण पहलू - स्वास्थ्य, धन तथा मानसिक स्तर एस्ट्रोग्राफ द्वारा दिखाये गये हैं। ये एस्ट्रोग्राफ 100 मापक्रम के अनुसार हैं।। यदि आपका एस्ट्रोग्राफ 50 से अधिक अंक दिखाता है तो वह शुभ है। 65 से ऊपर बहुत अच्छा होता है और 80 से ऊपर अति उत्तम होता है। 50 से नीचे सामान्य होता है, 35 से नीचे बुरा तथा 20 से नीचे बहुत बुरा माना जाना चाहिए।

0-20	निकृष्ट	50-65	श्रेष्ठ
20-35	नेष्ट	65-80	उत्तम
35-50	सामान्य	80-100	अत्युत्तम

एस्ट्रोग्राफ - 2026

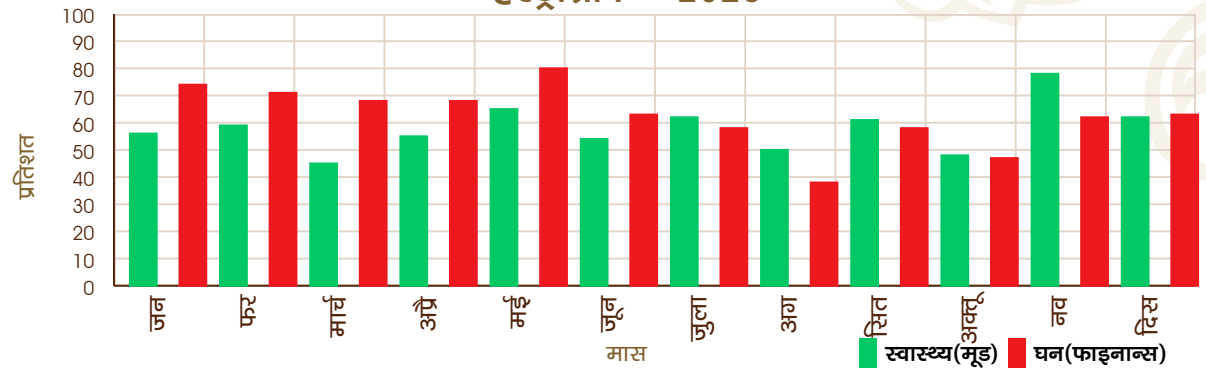

एस्ट्रोग्राफ - 2027

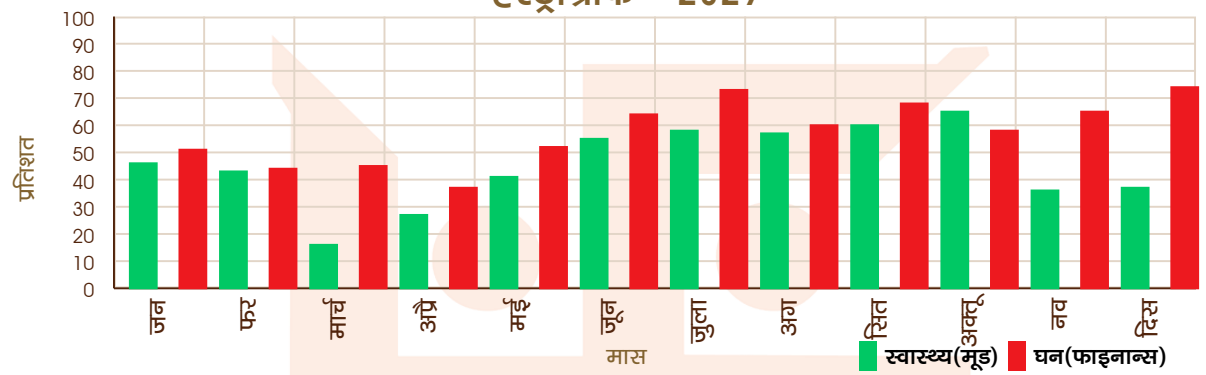

एस्ट्रोग्राफ - 2028

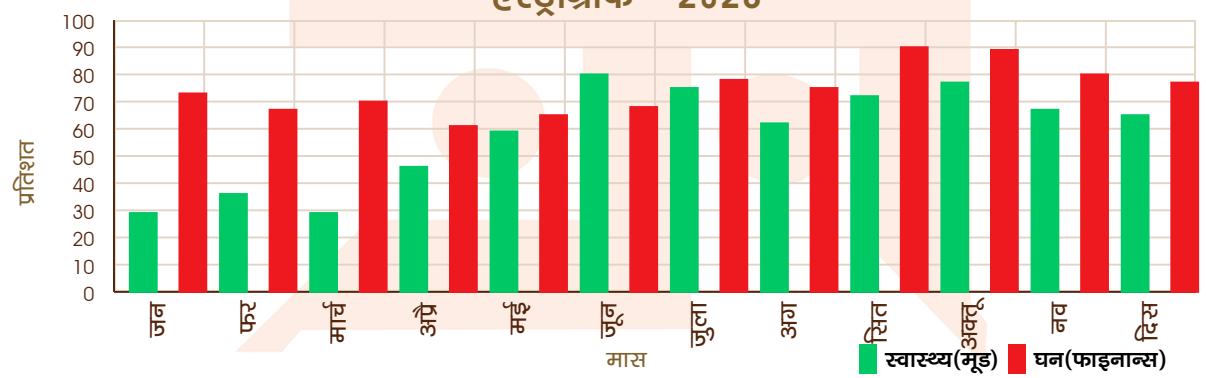

एस्ट्रोग्राफ - 2029

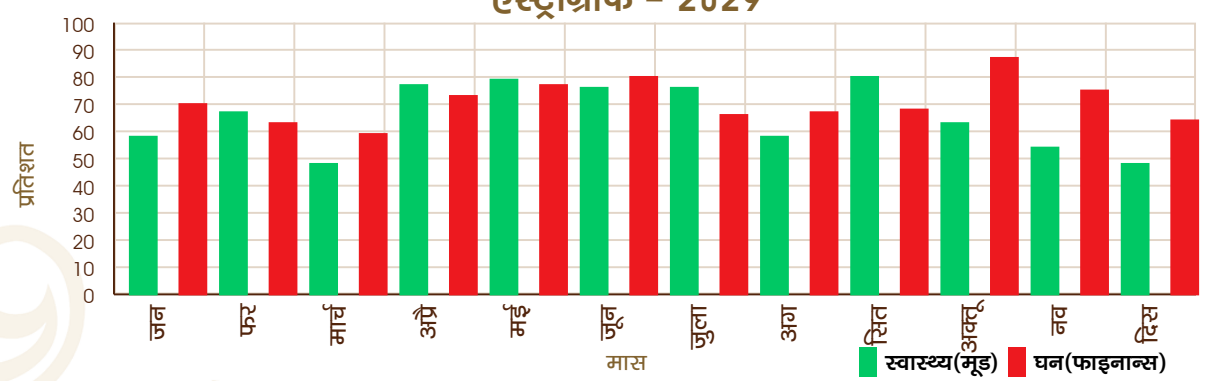

एस्ट्रोग्राफ - 2030

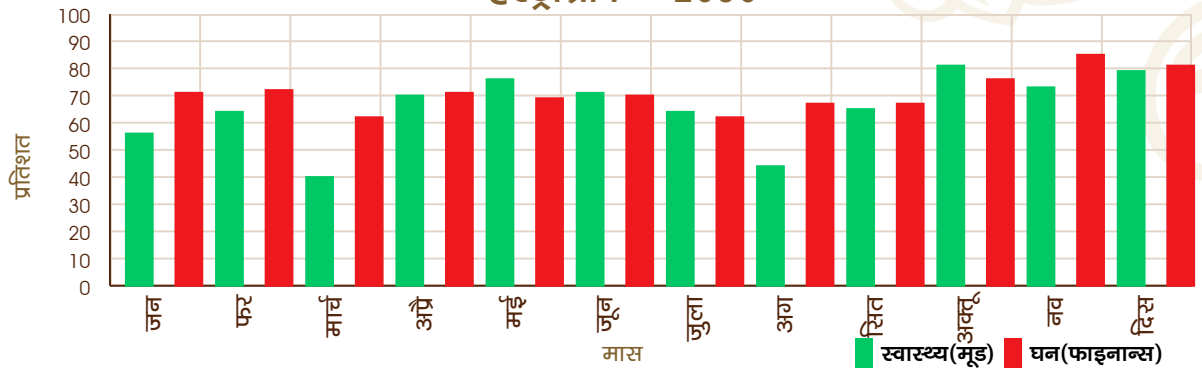

एस्ट्रोग्राफ - 2031

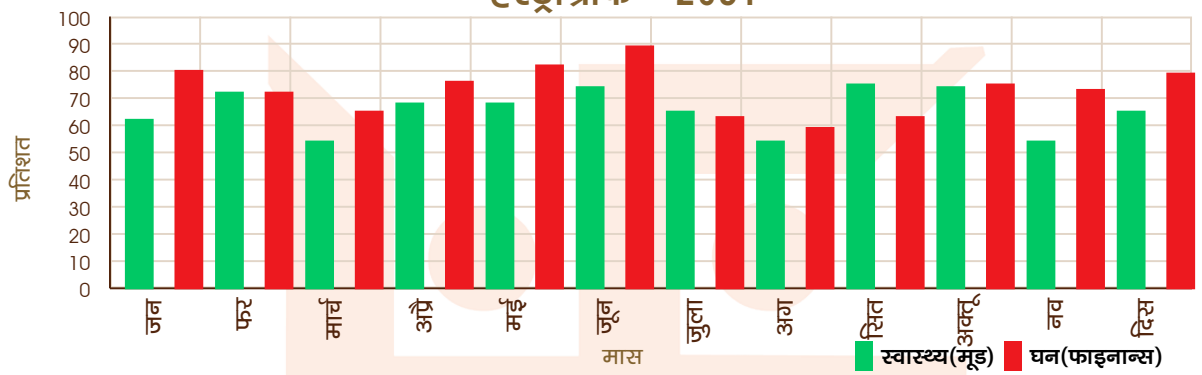

एस्ट्रोग्राफ - 2032

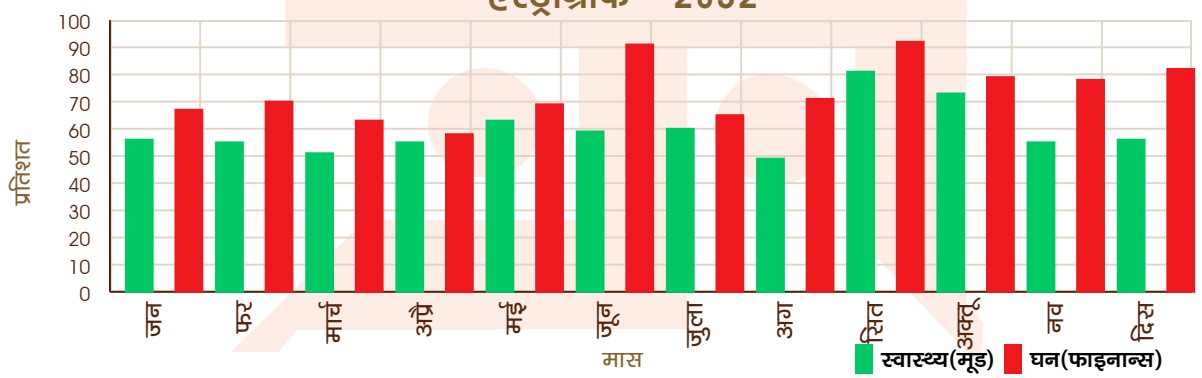

एस्ट्रोग्राफ - 2033

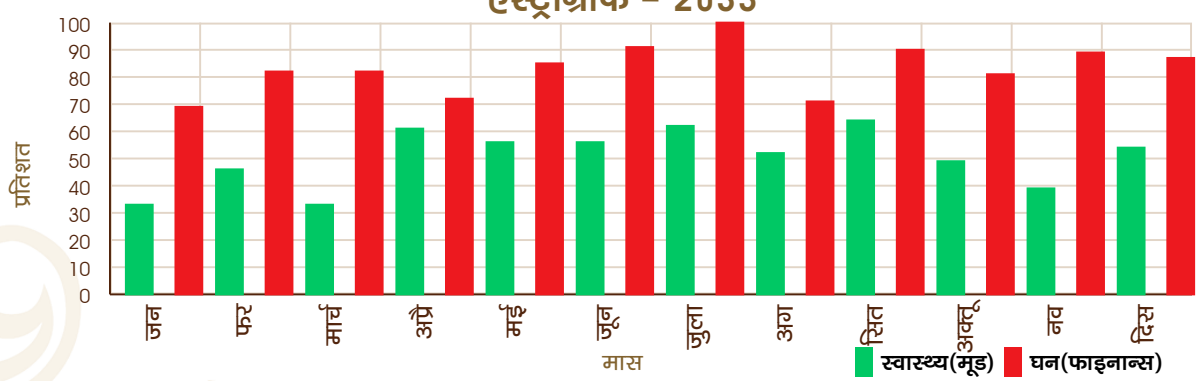

एस्ट्रोग्राफ - 2034

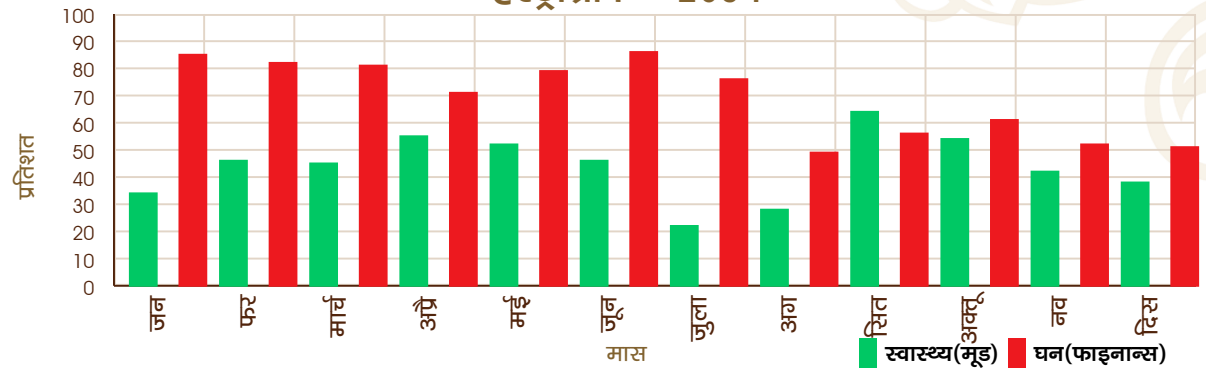

एस्ट्रोग्राफ - 2035

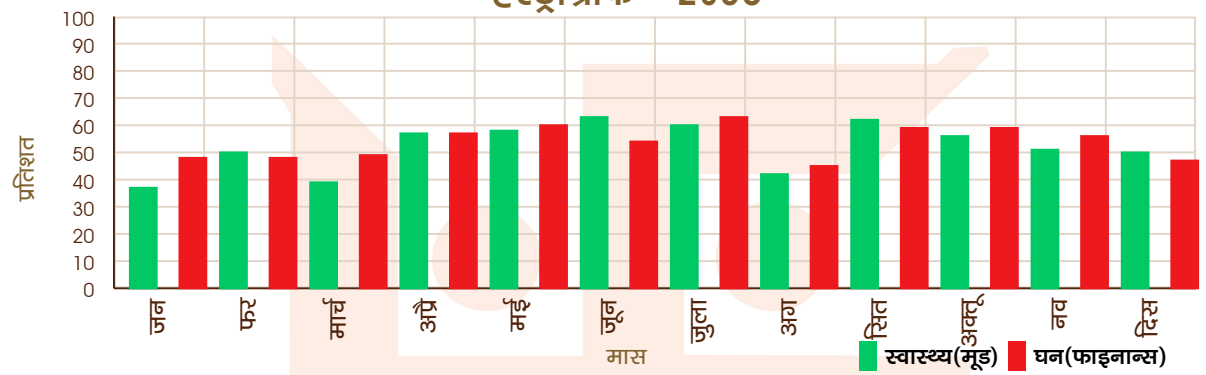

एस्ट्रोग्राफ - 2036

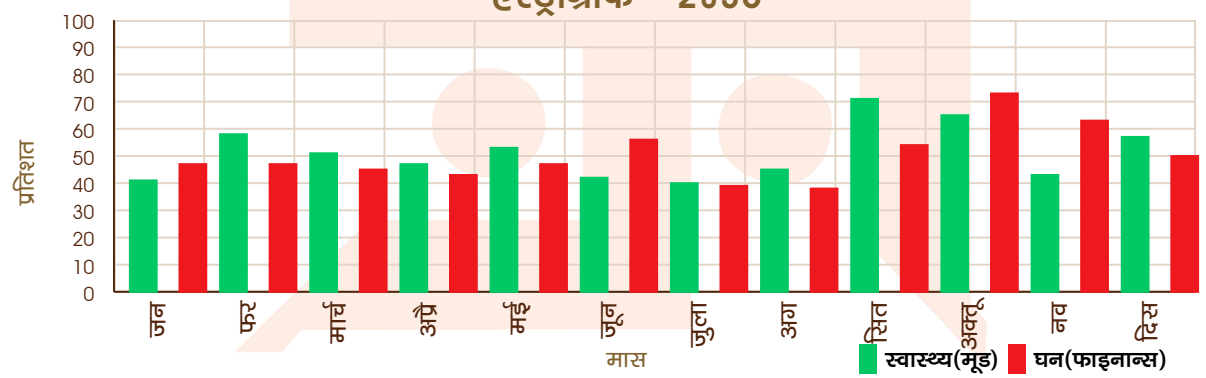

एस्ट्रोग्राफ - 2037

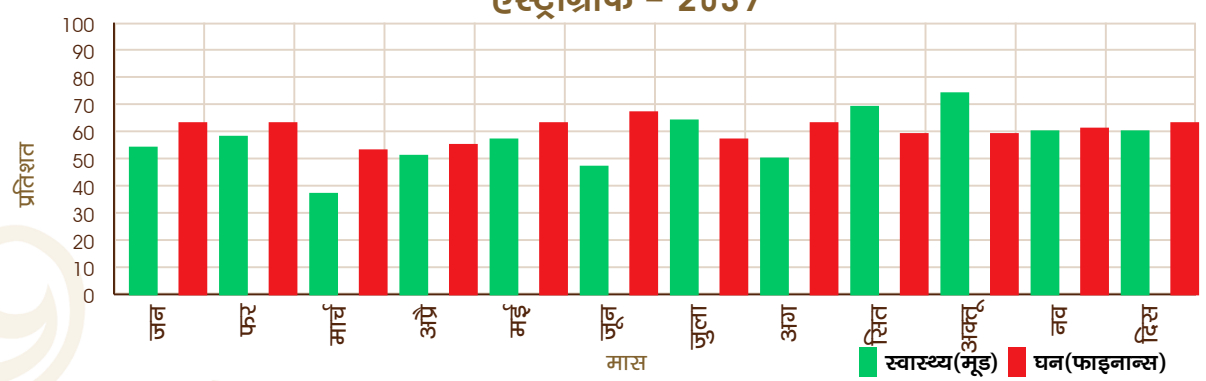

एस्ट्रोग्राफ - 2038

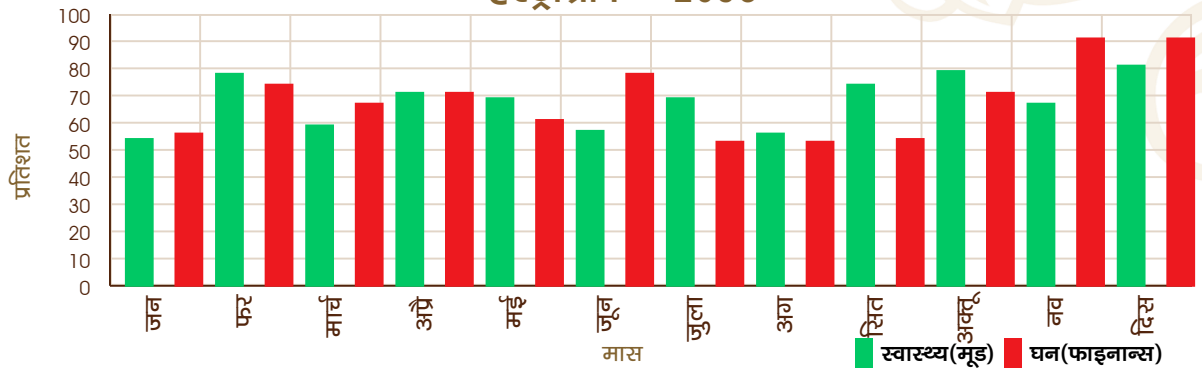

एस्ट्रोग्राफ - 2039

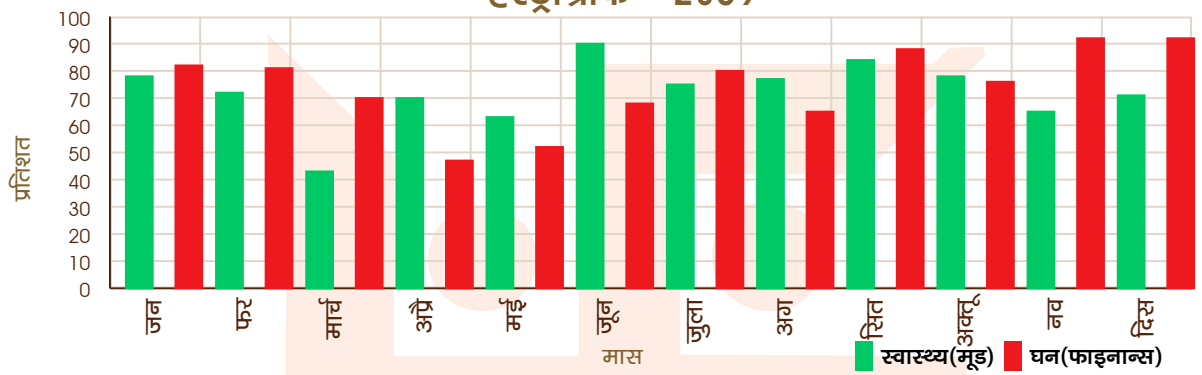

एस्ट्रोग्राफ - 2040

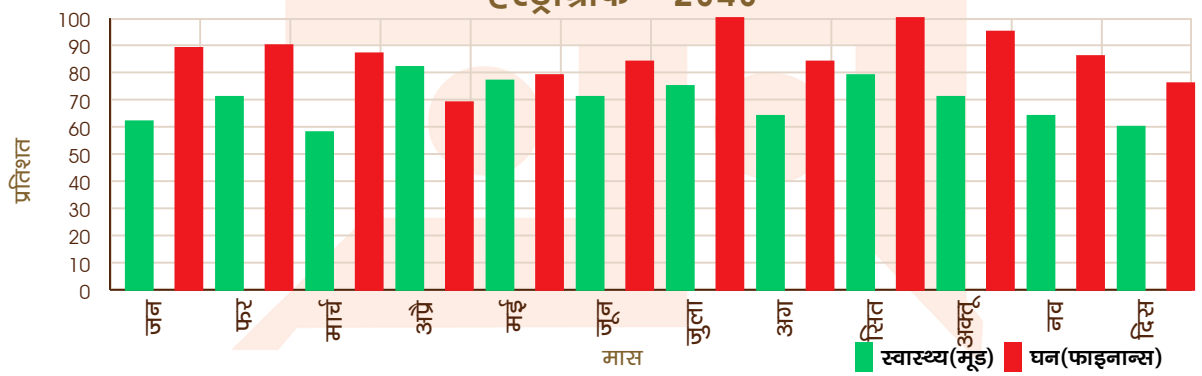

एस्ट्रोग्राफ - 2041

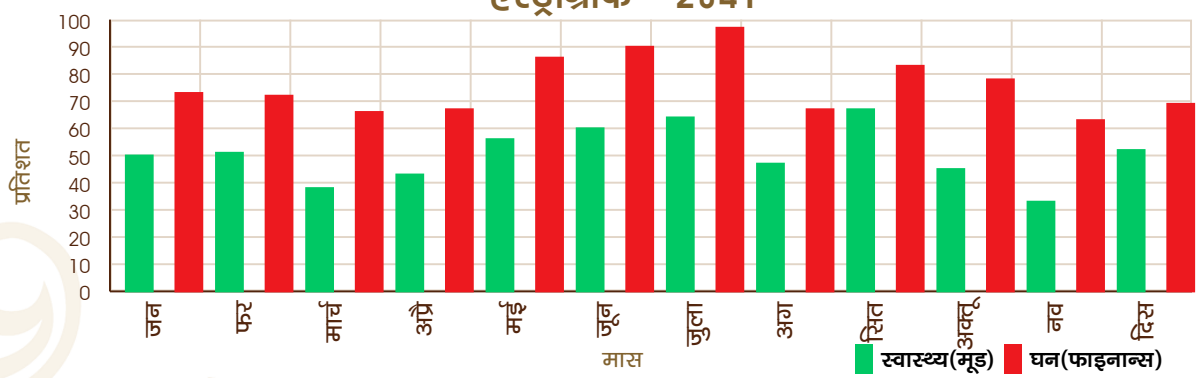

एस्ट्रोग्राफ - 2042

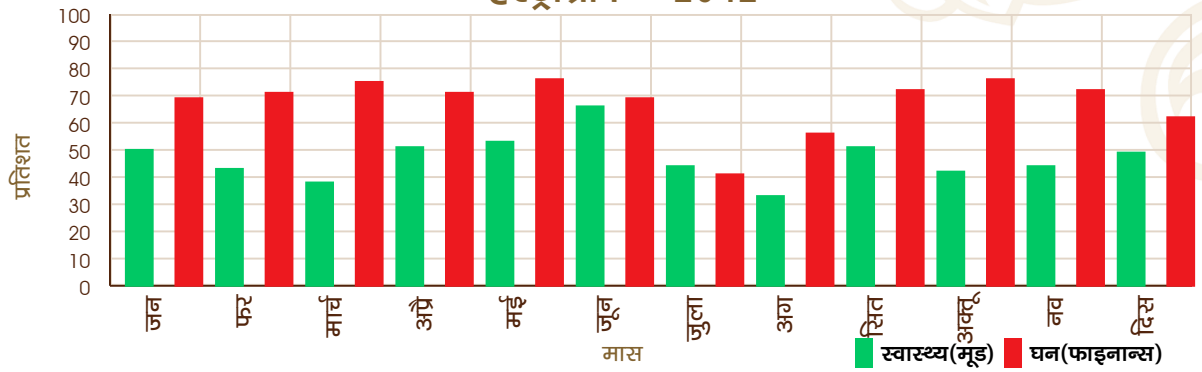

एस्ट्रोग्राफ - 2043

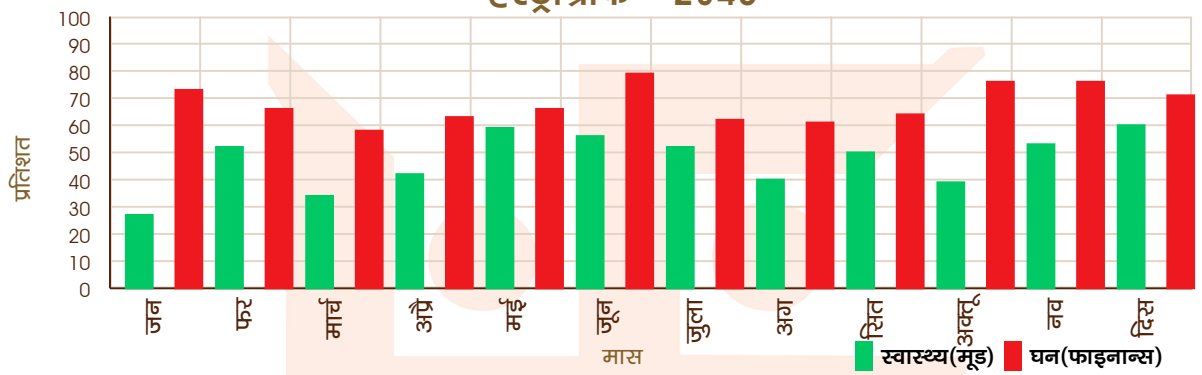

एस्ट्रोग्राफ - 2044

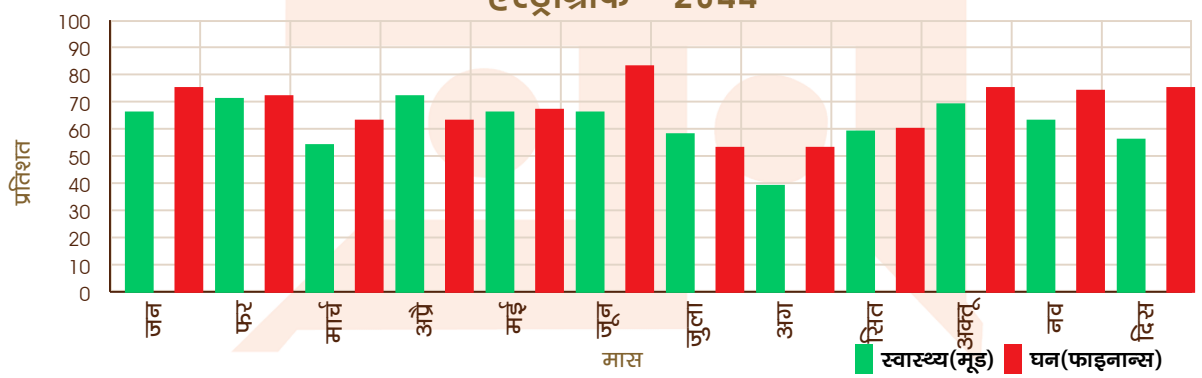

एस्ट्रोग्राफ - 2045

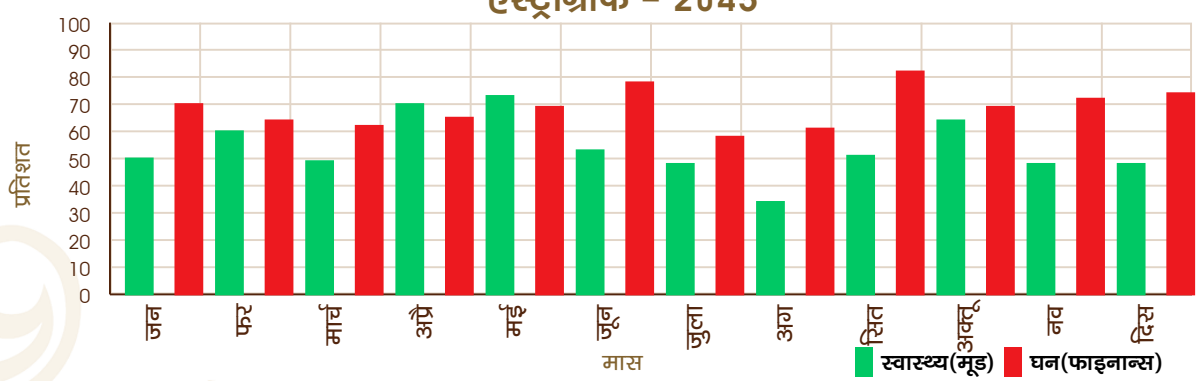

योग

मालव्य योग

स्वगेहतुङ्गाश्रयकेन्द्रसंस्थैरुच्चोपगैर्वाचनसूनुमुख्यैः।
क्रमेण योगा रुचकाख्यभद्रहंसाख्यमालव्यशशाभिधानाः।।
अस्थूलोष्ठोऽप्यविषमवपुर्नैव रक्ताङ्गसन्धि-
र्मध्ये क्षामः शशिधररुचिर्हस्तिनासः सुगण्डः।
सद्दीप्ताक्षः समितिविदितो जानुदेशाप्रपाणि-
र्मालव्योऽयं विलसति नृपः सप्ततिर्वत्सराणाम् ।।
वक्त्रं त्रयोदशमिताङ्गुलमस्य दीर्घं
तिर्यग्दशाङ्गुलमितं श्रवणान्तरालम्।
मालव्यसंज्ञनृपतिः ससुतो भुनक्ति
लाटांश्च मालवससिन्धुसुपारियात्रान्।।

।। मानसागरी ।। अ.4/श्लोक 2, 9 1-2।।

यदि जन्मपत्रिका में स्वराशि या उच्चहोकर शुक्र केन्द्र में हो तो मालव्य योग बनता है।

मालव्यनामक योग में समुत्पन्न जातक सर्वावयव सम्पन्न शरीरवाला, चन्द्रवत कान्तिवाला, युद्ध में मान रखने वाला, आजान बाहु (घुटनापर्यन्त बांह वाला) और दीर्घायु राजा होता है। मुख की लम्बाई 13 अङ्गुल एवं 10 अङ्गुल दोनों कानों के मध्य वाला होता है। लाट, मालवा, सिन्धु और परियात्र पर्वतीय देशों का प्रधान शासन अपने पुत्रों के साथ करता है।

योग कारक ग्रह : शुक्र योग की संभावना : 12 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्णरूपेण से घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप उच्चकोटि के कानून विशेषज्ञ, राजनेता, इलेक्ट्रोनिक्स विशेषज्ञ, संगीतज्ञ, अभिनेता, कलाकार, सिनेमा क्षेत्र में प्रसिद्ध, मीडिया में श्रेष्ठ, ज्योतिष के प्रति श्रद्धालु, एक्सपोर्ट अर्थात् निर्यात के क्षेत्र में ख्याति प्राप्त करने वाले व्यक्ति होंगे।

वाशि योग

सूर्याद्व्ययगैर्वाशिर्द्वितीयगैश्चन्द्रवर्जितैर्वेशि।
उत्कृष्टवचाः स्मृतिमानुद्योगयुतो निरीक्षते तिर्यक्।
सर्वशरीरे पृथुलो नृपतिसमः सात्त्विको वाशौ।।

।। सारावली ।। अ.14/श्लोक 1, 6।।

यदि जन्मकुंडली में सूर्य से द्वादश स्थान में चंद्रमा को छोड़कर अन्य ग्रह विद्यमान हो तो वाशि नामक योग बनता है।

योग कारक ग्रह : मंगल,गुरु,सूर्य योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्णरूप से घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप उत्कृष्ट वाणी वाले, स्मरण शक्ति वाले, उद्यमी, तिरछी दृष्टि वाले, स्थूल शरीर वाले, राजा के समान व्यक्तित्व वाले तथा सात्विक प्रवृत्ति वाले होंगे।

चक्रवर्ती राजयोग

एकोऽपि विहगः कुर्यात्पंचमांशगतो नृपम्।
समस्तबलसम्पन्नश्चक्रवर्तिनमेव च ।।
।। सारावली ।। अ. 35 /श्लोक 64।।

यदि कोई भी ग्रह कुण्डली में अपने पंचमांश में स्थित हो तो जातक राजा होता है और यदि पूर्णबली हो तो चक्रवर्त्ती राजा होता है।

योग कारक ग्रह : चंद्र योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण प्रतिष्ठत हो रहा है। फलस्वरूप आप एक प्रसिद्ध सम्मानित देश-विदेशों में प्रतिष्ठा प्राप्त करने वाले राष्ट्राध्यक्ष/राज्याध्यक्ष अथवा सर्वोच्चाधिकारी होकर पूर्ण राज-सुख प्राप्त करेंगे।

शकट योग

जीवान्त्याष्टारिसंस्थे शशिनि तु शकटः।।
क्वचित्क्वचिद्भाग्यपरिच्युतः सन् पुनः पुनः सर्वमुपैति भाग्यम्।
लोकेऽप्रसिद्धोऽपरिहार्यमन्तः शल्यं प्रपन्नः शकटेऽतिःदुखी।।
।। फलदीपिका ।। अ. 6/श्लोक 14, 17 ।।

यदि पत्रिका में चंद्रमा से 6, 8 या 12 वें स्थान में बृहस्पति हो तो शकट योग बनता है।

योग कारक ग्रह : चंद्र,गुरु योग की संभावना : 12 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्णरूपेण स्थापित हो रहा है। फलस्वरूप जन्मभर दुःखी रहना, जीवन व्यथित रहना, प्रसिद्धि प्राप्त करना, सामान्य जीवन व्यतीत करना, भाग्यहीनता तथा पुनः भाग्य प्राप्ति के योग बनेंगे।

अमलयोग

चन्द्राद्योम्न्यमलाह्वयः शुभखगैर्योगो विलग्नादपि।
क्ष्मेशः स्यादमले धनी सुतयशः संपद्युतो नीतिमान्।
।। फलदीपिका ।। अ. 6/श्लोक 19-20 ।।

यदि पत्रिका में लग्न या चंद्रमा से दशम स्थान में शुभ ग्रह हो तो अमला योग

होता है।

योग कारक ग्रह : बुध,शुक्र योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्णरूपेण स्थापित हो रहा है। फलस्वरूप आप भूमि के स्वामी, धनी, नीतिवान् पुत्र एवं संपत्ति से युक्त यशस्वी व्यक्ति होंगे।

पर्वत योग

लग्नाधिप्राप्तभूपतिस्थितराशिनाथः
स्वोच्चस्वभेषु यदि कोणचतुष्टयस्थः।
योगः स पर्वताख्यः।
स्थिरार्थसौख्यः स्थिरकार्यकर्त्ता क्षितीश्वरः पर्वतयोगजातः।।
।। फलदीपिका ।। अ. 6/श्लोक 35, 36।।

यदि जन्मपत्रिका में लग्नेश जिस राशि में है, उस राशि का स्वामी अपनी उच्च राशि या स्वराशि में स्थित होकर केंद्र या त्रिकोण में स्थित हो तो पर्वत योग बनता है।

योग कारक ग्रह : सूर्य योग की संभावना : 8 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्णरूप से घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपका सुख और धन दोनों स्थिर रहेगा। आप स्थिर कर्म करेंगे। मकान बनवाना, बाग लगाना, कल-कारखाने की स्थापना आदि आपके स्थिर कार्य होंगी,

शौर्ययोग

भावैः सौम्ययुतेक्षिततैस्तदधिपैः सुस्थानगैर्भास्वरैः
स्वोच्चस्वर्क्षगतैर्विलग्नभवनाद्योगाः क्रमाद्द्वादश।
कीर्तिमद्भिरनुजैरभिष्टुतो लालितो महितविक्रमयुक्तः।
शौर्यजो भवति राम इवासौ राजकार्यनिरतोऽतियशस्वी।।
।। फलदीपिका ।। अ.6/श्लोक 44, 47।।

यदि जन्मपत्रिका में सहजस्थान में शुभ ग्रह हों अथवा तीसरे भाव पर शुभ ग्रह की दृष्टि पड़ रही हों तथा तृतीयेश अस्त न हो और अपनी राशि या उच्चराशि में स्थित होकर उत्तम स्थान में हो तो शौर्ययोग बनता है।

इस योग में उत्पन्न जातक बहुत पराक्रमी होता है और उसके छोटे भाई यशस्वी और भ्रातृयुक्त होता है। इसके भाई लोग इसकी प्रशंसा करते हैं। तात्पर्य यह है कि तृतीय स्थान का भाई, वहन, पराक्रम संबंधी पूर्ण सुख प्राप्त होता है। ऐसे जातक स्वयं भी अत्यधिक यशस्वी होता है और राज्य कर्म में रत रहता है। मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम के समान पराक्रमी होता है।

योग कारक ग्रह : गुरु,शुक्र योग की संभावना : 96 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्णरूप से घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप उत्तम राजयोग प्राप्त कर शौर्यशाली व्यक्ति होंगे।

जलधियोग

भावैः सौम्ययुतेक्षिततैस्तदधिपैः सुस्थानगैर्भास्वरैः
स्वोच्चस्वर्क्षगतैर्विलग्नभवनाद्योगाः क्रमाद्द्वादश।
गोसंपद्धनधान्यशोभिसदनं बन्धुप्रपूर्णं वर-
स्त्रीरत्नाम्बरभूषणानि महितस्थानं च सर्वोत्तमम्।
प्राप्नोत्यम्बुधियोगजः स्थिरसुखो हस्त्यश्वयानादिगो
राजेड्यो द्विजदेवकार्यनिरतः कूपप्रपाकृत्पथि।।
।। फलदीपिका ।। अ.6/श्लोक 44, 48।।

यदि जन्मकुंडली में सुखस्थान में शुभग्रह हों अथवा चतुर्थस्थान पर शुभग्रह की दृष्टि पड़ रही हो और चतुर्थेश अस्त न हो तथा अपनी स्वराशि या उच्चराशि में स्थित होकर उत्तम स्थान में हो तो जलधि (समुद्र) योग बनता है।

योग कारक ग्रह : बुध,मंगल　　योग की संभावना : 96 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्णरूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप धन-धान्य गोधन से युक्त उच्च भवन में निवास करेंगे तथा बंधु-बाधवों से सुख प्राप्त करेंगे। पत्नी, रत्न, वस्त्र, आभूषण आदि सुख से सुखी होंगे। आप स्थिर लक्ष्मीवान होंगे तथा धार्मिक कार्यों में रूचि रखेंगे। हर प्रकार का सुख आपके भाग्य से प्राप्त होता रहेगा।

पृथ्वीपति योग

पत्यौ कुटुम्बस्य तृतीयराशौ स्थिते यदा पुंग्रहसौम्यदृष्टे।
शुभ स्थिते खेचरनायके स्यात्स्वतुङ्गगे सर्वजनावनीशः।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ. 3/श्लोक 17।।

यदि जन्मकुण्डली में द्वितीय भाव का स्वामी तीसरे शुभ ग्रह तथा पुरुष ग्रह (सूर्य, मंगल, गुरु) से दृष्ट हो और शुभग्रह की राशि में या अपनी उच्च राशि में हो तो जातक पृथ्वी का राजा होता है।

योग कारक ग्रह : सूर्य,बुध　　योग की संभावना : 72 में 1

आपकी जन्मकुण्डली में यह योग पूर्ण रूप से घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप कई देशों में सेवा करने वाले राष्ट्राध्यक्ष, राजदूत और उच्चस्तरीय राज्याधिकारी होंगे।

भ्रातृवृद्धि योग

भ्रातृपे कारके वापि शुभयोगनिरीक्षिते ।

भावे वा बलसंपूर्णे भ्रातृणां वर्धनं भवेत् ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.4/श्लो. -16 ।।

यदि जन्मपत्रिका में तृतीय स्थान तथा तृतीय भाव कारक शुभग्रहों से युक्त या दृष्ट हो एवं पूर्णबली हो तो भाइयों की वृद्धि होती है।

योग कारक ग्रह : गुरु,मंगल योग की संभावना : 8 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपके भाइयों में वृद्धि हो, ऐसा प्रतीत होता है।

युद्ध कुशल एवं कलह प्रवीण योग

धैर्यान्वितो विक्रमराशिनाथसंयुक्तराश्यंशपतौ यदंशे ।
तदंशनाथे स्वगृहादिवर्गे युद्धे विदग्धः कलहप्रवीणः ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.4/श्लो.-33 ।।

यदि जन्मपत्रिका में तृतीयेश जिसकी राशि अंश में है, वह ग्रह अपने राश्यादि वर्ग में हो तो जातक धैर्यवान, युद्ध में चतुर और कलह करने में निपुण होता है।

योग कारक ग्रह : शुक्र योग की संभावना : 9 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप धैर्यधारण करने वाले, युद्ध में चतुर और कलह प्रिय प्राणी होंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

सात्त्विक बुद्धि योग

शौर्याधिपे सौम्यान्विते सात्त्विकबुद्धियुक्तः।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.4/श्लो.-40

यदि जन्मकुंडली में तृतीयेश बुध से युक्त हो तो जातक सात्त्विक बुद्धि का होता है।

योग कारक ग्रह : बुध,शुक्र योग की संभावना : 12 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप सात्त्विक बुद्धि के प्राणी होंगे, ऐसा प्रतीत होता है।

कर्णरोग योग

तृतीयनाथे पापान्विते पापनिरीक्षिते वा वदन्ति कर्णोद्भवरोगमत्र ।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.4/श्लो.-49 ।।

यदि जन्मपत्रिका में तृतीयेश पाप युक्त या दृष्ट हो तो कर्णरोग होता है।

योग कारक ग्रह : सूर्य,राहु,केतु,शुक्र योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्णरूप से घटित हो रहा है फलस्वरूप आपको कर्णरोग होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

हृदय रोग योग

।। भारतीय ज्योतिष ।। पृ.-285।।

यदि जन्मपत्रिका में तृतीयेश के साथ केतु स्थित हो तो जातक को हृदय रोग होता है।

योग कारक ग्रह : केतु,शुक्र योग की संभावना : 12 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप हृदय रोग के रोगी होंगे ऐसा प्रतीत होता है।

मातृस्नेह योग

यदा लग्नसुखेशौ वा मित्रभूतौ परस्परम् ।
शुभेक्षितौ शुभैर्युक्तौ मातृस्नेहं विनिर्दिशेत् ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.4/श्लो.-148 ।।

यदि जन्मपत्रिका में लग्नेश चतुर्थेश परस्पर मित्र हों, शुभ ग्रहों से युक्त और दृष्ट हो तो माता का विशेष स्नेह प्राप्त होता है।

योग कारक ग्रह : मंगल,सूर्य योग की संभावना : 36 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपको अपनी माता का विशेष स्नेह प्राप्त हो ऐसा प्रतीत होता है।

पुत्रनाश योग

पापमध्ये तु यद्भावे तदीशेऽपि तथा स्थिते ।
कारके पापसंयुक्ते पुत्रनाशं वदेत्तदा ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ. 5/श्लो.-14 ।।

यदि जन्मपत्रिका में पंचम भाव या पंचमेश पाप ग्रहों के बीच हो, तथा संतान कारक ग्रह भी पाप युक्त हो तो पुत्रनाश योग बनता है।

योग कारक ग्रह : मंगल,गुरु योग की संभावना : 6 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपको संतान सुख में बाधा हो ऐसा प्रतीत होता है।

तीव्रबुद्धि योग

बुद्धिस्थानाधिपस्यांशराशीशे शुभवीक्षिते ।
वैशेषिकांशके वापि तीव्रबुद्धिं समादिशेत् ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ. 5/श्लो.-35 ।।

यदि जन्मपत्रिका में पंचमेश जिसके नवांशक में हो वह शुभ ग्रह से दृष्ट अथवा वैशेषिकांश में हो तो तीव्र बुद्धि योग बनता है।

योग कारक ग्रह : शुक्र,बुध योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्णरूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप तीव्र बुद्धि के होंगे, ऐसा प्रतीत होता है।

बहुपुत्र योग

पुत्रस्थानपतौ तु वा नवमपे पुंवर्गे पुरुषग्रहेक्षितयुते जातस्तु पुत्राधिकः।
।। जातकपारिजात ।। अ. 13/श्लो.-9 ।।

यदि जन्मपत्रिका में पंचमेश अथवा नवमेश पुरुष ग्रह के वर्ग में हो तथा पुरुष ग्रह से दृष्टिगत या युत हो तो बहुपुत्र योग बनता है।

योग कारक ग्रह : गुरु,मंगल योग की संभावना : 4 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपको अनेक पुत्रों का सुख प्राप्त हागा। ऐसा प्रतीत होता है।

शिर मुख या गुल्म रोग योग

बलहीनेऽरिनाथे वा लग्नस्थे वा धरासुते।
मूर्धार्तिर्मुखरोगो वा गुल्मविद्रधिभाग्भवेत्।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि-अ.-5/श्लो.-42 ।।

यदि जन्मकुंडली में षष्ठेश निर्बल हो या लग्नस्थ हो अथवा लग्न में मंगल हो तो शिर में पीड़ा या मुखरोग अथवा गुल्मरोग होता है।

योग कारक ग्रह : शनि योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपको शिर रोग, मुखरोग या गुल्म रोग से पीड़ित होंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

विना पीड़ा मृत्यु योग

सौम्यांशके सौम्यगृहेऽथ सौम्य सम्बन्धगे वा क्षयेशे।
अक्लेशजातं मरणं नराणाम्।।
।। फलदीपिका-अ.14/श्लो.-21।।

यदि जन्मकुंडली में द्वादशेश सौम्यग्रह की राशि या सौम्य ग्रह के नवांश या सौम्य ग्रह के साथ स्थित हो तो विना पीड़ा की मृत्यु होती है।

योग कारक ग्रह : चंद्र योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपका मरण बिना क्लेश का होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

बहुभार्या योग

कुटुम्बकलत्रनाथाभ्यां समेतैर्ग्रहनायकैर्वा कलत्रसंख्यां प्रवदन्ति सन्तः ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.-6/श्लो.-14।।

यदि जन्मकुण्डली में द्वितीयेश या सप्तमेश के साथ जितने ग्रह हों उतनी पत्नी होती हैं।

योग कारक ग्रह : सूर्य,शुक्र,केतु,बुध योग की संभावना : 12 में 1

आपकी जन्मकुण्डली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपके दो या दो से अधिक जीवनसाथी हो सकते हैं। ऐसा प्रतीत होता है।

बहुभार्यायोग

कलत्रेशे बहुगुणे तुङ्गवक्रादिहेतुभिः ।
बहुभार्यं नरं विद्यादुदयर्क्षगतेऽपि वा।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.-6/श्लो.-15 ।।

यदि जन्मपत्रिका में सप्तमेश उच्च वक्र आदि बहुत गुणों से युक्त हो अथवा लग्नस्थ हो तो मनुष्य बहुत स्त्रियों से युक्त होता है।

योग कारक ग्रह : शनि योग की संभावना : 12 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्णरूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपके अधिक जीवनसाथी होंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

द्विविवाह योग

कारके पापसंयुक्ते नीचराश्यंशकेऽपि वा ।
पापग्रहेण संदृष्टे विवाहद्वयमादिशेत् ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.-6/श्लो.-19 ।।

यदि जन्मकुण्डली में सप्तमभाव कारक ग्रह पाप युक्त हो अथवा नीचराशि नीचांशक में पाप ग्रह से दृष्ट हो तो द्विविवाह योग बनता है।

योग कारक ग्रह : शुक्र,सूर्य,राहु,केतु योग की संभावना : 3 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप दो जीवन साथी होंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

सुलक्षणी स्त्री योग

दारेशे शुभसंयुक्ते शुभखेचरवीक्षिते ।
शुभग्रहाणां मध्यस्थे सत्कलत्रादिभाग्भवेत् ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.-6/श्लो.-40 ।।

यदि जन्मपत्रिका में सप्तमेश शुभ ग्रह से युक्त, शुभ ग्रह से दृष्ट तथा शुभ ग्रहों के मध्य में हो तो जातक को सुलक्षणी स्त्री प्राप्त होती है।

योग कारक ग्रह : शनि,चंद्र योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मकुण्डली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपका जीवनसाथी सुलक्षणी होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

विवाहोपरान्त भाग्योदय योग

भाग्यं विवाहत्परतो वदन्ति शुक्रेस्तगे चोपचयान्विते वा ।
कुटुम्बमेतादृशभावयुक्ते लग्नेश्वरे वा शुभदृष्टियोगे ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.-6/श्लो.-62 ।।

जन्मपत्रिका में यदि शुक्र सप्तम में हो अथवा उपचय 3/6/11/10 स्थानों में हो अथवा द्वितीयस्थ हो अथवा लग्नेश इन भावों में से किसी भी स्थान में हो एवं शुभ ग्रह द्वारा निरीक्षित हो तो विवाहोपरांत भाग्योदय होता है।

योग कारक ग्रह : सूर्य,शुक्र,बुध योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपका भाग्योदय विवाहोपरांत होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

पारिजात योग

''सपारिजातद्युचरः सुखानि ।''

।। बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 34 ।।

जिसकी पत्रिका के "पारिजात" भाग में ग्रह हों तो उसे सभी प्रकार के उत्तम सुख की प्राप्ति होती है।

योग कारक ग्रह : सूर्य,चंद्र,शनि योग की संभावना : 2 में 1

आपकी पत्रिका में ग्रह "पारिजात" वर्ग में स्थित है। फलस्वरूप आपको सभी प्रकार का उत्तम सुख प्राप्त होगा।

उत्तमवर्ग योग

''नीरोगतामुत्तमवर्गयातः।''

।बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 34 ।।

जिस जातक की पत्रिका के "उत्तमवर्ग" भाग में ग्रह हों तो वह प्राणी सभी प्रकार से निरोग रहता है।

योग कारक ग्रह : मंगल योग की संभावना : 3 में 1

आपकी पत्रिका में ग्रह "उत्तमवर्ग" में स्थित है। फलस्वरूप आप सभी प्रकार से निरोग रहेंगे।

गोपुरांश योग

''सगोपुरांशो यदि गोधनानि ''

।। बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 34 ।।

जिस जातक की पत्रिका में "गोपुरांश" भाग में ग्रह स्थित हो, वह मनुष्य गौ और धन दोनों से युक्त होता है।

योग कारक ग्रह : शुक्र योग की संभावना : 4 में 1

आपकी पत्रिका में "गोपुरांश" योग का सृजन हो रहा है। फलस्वरूप आप गो धन अर्थात् पशुओं और धन से पूर्ण रहेंगे।

केमद्रुम योग

''चेत्वित्तव्ययगाः भवन्ति न खगाः केमद्रुमः स्यात्तदा।
प्राचीनैर्मुनिभिः स्मृताः श्रुतिमिताः योगाः शशाङ्कोद्भवाः।।''

।। बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 43 ।।

यदि जन्मपत्रिका में चन्द्र से द्वितीय अथवा द्वादश भाव में कोई भी ग्रह न हों तो "केमद्रुम" योग का सृजन होता है।

योग कारक ग्रह : चंद्र योग की संभावना : 32 में 1

आपकी पत्रिका में पूर्णरूपेण "केमद्रुम" योग का सृजन हो रहा है। फलस्वरूप आप धन(अर्थ), पुत्र, पत्नी, भाई से हीन, नौकरी पेशा वाले (दास) एवं परदेश में निवास करेंगे।

वासि योग

''व्ययखेटैर्वाशि दिनेशात्।''

।। बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 51 ।।

यदि जन्मपत्रिका में सूर्य से बारहवें भाव में कोई ग्रह हो तो "वासि" योग का निरूपण होता है।

योग कारक ग्रह : मंगल,गुरु,सूर्य योग की संभावना : 3 में 1

आपकी पत्रिका में पूर्णरूपेण "वासि" योग का सृजन हो रहा है। फलस्वरूप आपकी दृष्टि मन्द अर्थात् आपमें दृष्टिदोष रहेगा। आप परिश्रमी, नीचेदेखनेवाला एवं असत्यवादी होंगे।